Drishti IAS

करेंट अफेयर्स

(संग्रह)

अप्रैल (भाग-1)

2025

C-171/2, Block-A, Sector-15, Noida

641, Mukherjee Nagar, Opp. Signature View Apartment, New Delhi

21, Pusa Road, Karol Bagh New Delhi

Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj, Uttar Pradesh

Tonk Road, Vasundhra Colony, Jaipur, Rajasthan

Burlington Arcade Mall, Burlington Chauraha, Vidhan Sabha Marg, Lucknow

12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh

E-mail : care@groupdrishti.in

Phone: +91-87501-87501

अनुक्रम

शासन व्यवस्था 5

- तटीय नौवहन विधेयक एवं वायुयान वस्तुओं में हित संरक्षण विधेयक..... 5
- पर्सपेक्टिव: न्यायिक जवाबदेही सुनिश्चित करने की आवश्यकता 8
- हिरासत में यातना और पुलिस सुधार की आवश्यकता..... 9

अंतर्राष्ट्रीय संबंध 14

- बलूचिस्तान में उग्रवाद..... 14
- अमेरिका और भारत की सॉफ्ट पावर..... 16
- 6th बिम्सटेक शिखर सम्मेलन..... 19
- शांति स्थापक के रूप में ग्लोबल साउथ..... 21
- वैश्विकवाद से क्षेत्रवाद की ओर परिवर्तन..... 23
- भारत-श्रीलंका संबंध..... 24
- अमेरिका-चीन टैरिफ वृद्धि 2025..... 27
- भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा..... 29

भारतीय अर्थव्यवस्था 33

- भारतीय रेलवे में सुधार..... 33
- भारत में शहरी परिवहन..... 35
- एशिया-प्रशांत में जलवायु-प्रेरित आर्थिक क्षति..... 36
- आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण 2024..... 38

आंतरिक सुरक्षा..... 43

- तकनीक संचालित सीमा सुरक्षा और भारत..... 43

सामाजिक न्याय 47

- भारत में सिंथेटिक ड्रग की तस्करी 47
- भारत में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों से संबंधित चुनौतियाँ..... 49
- मातृ मृत्यु दर की प्रवृत्ति 51
- सामाजिक सुरक्षा स्थिति रिपोर्ट 2025..... 55
- जलवायु संवेदनशीलता का महिलाओं पर प्रभाव..... 58

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी..... 62

- अमेरिका भारत में स्मॉल मॉड्यूलर रिएक्टर बनाएगा..... 62
- स्थानीय डेटा केंद्रों की आवश्यकता..... 65

पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी..... 70

- भारत में लाइट फिशिंग का बढ़ता खतरा..... 70

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 — SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस — SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स — SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप — SCAN ME

नोट :

- खाद्य एवं कृषि हेतु पादप आनुवंशिक संसाधनों पर FAO की रिपोर्ट 71

भारतीय इतिहास 73

- टैगोर की चीन यात्रा की शताब्दी 73
- अंबेडकर और गांधी: वैचारिक समानताएँ और मतभेद 74

कृषि 80

- भारत में कपास उत्पादन में गिरावट 80
- कृषि क्षेत्र का मशीनीकरण 82

प्रिलिम्स फैक्ट्स 86

- म्याँमार भूकंप 86
- टोमैटो चिली और कन्नडिप्पया को GI टैग 89
- बर्ड फ्लू 90
- FBR के विकल्प के रूप में HALEU ईंधन चक्र 93
- प्रधानमंत्री मुद्रा योजना की 10वीं वर्षगाँठ 94
- जीनोमइंडिया 96
- ओटावा लैंडमाइन कन्वेंशन 98
- थार रेगिस्तान 100
- जापान ने बनाया 3D प्रिंटेड ट्रेन स्टेशन 101
- ऋण मैट्रिक्स 104
- भारत द्वारा बांग्लादेश के लिये पारगमन सुविधा का समापन 105
- तमिलनाडु में हाथियों का अवैध शिकार 107
- ज्योतिबा फुले 109
- आंतरिक वायु गुणवत्ता 110
- वायुमंडलीय नदी 112
- रोंगाली बिहू 115
- भारत में झींगा पालन 117

रैपिड फायर 120

- IOS सागर और AIKEYME 120
- राष्ट्रीय तकनीकी वस्त्र मिशन के 5 वर्ष 121
- त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय विधेयक 2025 123
- ट्रांसजेनिक अनुसंधान 123
- ऑस्ट्रेलियाई प्रवाल भित्तियों में प्रवाल विरंजन 124
- राणा सांगा 126
- KV और JNV में ऐस्बेस्टॉस पर प्रतिबंध 127
- माता कर्मा बाई पर डाक टिकट 128
- पूर्वोत्तर राज्यों में AFSPA का विस्तार 128
- श्यामजी कृष्ण वर्मा की पुण्यतिथि 129
- न्यायाधीशों की संपत्ति का सार्वजनिक प्रकटीकरण 129
- टाइगर ट्रायम्फ 2025 130
- भारत-चीन संबंधों के 75 वर्ष 131
- Fram2 मिशन और ध्रुवीय कक्षा 132
- देवराय प्रथम और विजयनगर साम्राज्य 133
- चंद्रयान-3 चैस्ट 134

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- यूफेआ वायनाडेन्सी 136
- डेनमार्क द्वारा ग्रीनलैंड की संप्रभुता की पुष्टि..... 137
- श्री हरिचंद ठाकुर की जयंती..... 138
- ऑडिबल एन्क्लेव और PAL प्रौद्योगिकी 138
- NITI NCAER राज्य आर्थिक मंच पोर्टल 138
- पिपलापंका बाँध से रुशिकुल्या नदी को खतरा 139
- डिएगो गार्सिया और चागोस द्वीप समूह 140
- फ्लोराइड संदूषण..... 141
- महाबोधि मंदिर 143
- बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय..... 144
- विदेशी निधियों की वैधता पर सीमाएँ 144
- यूरेनियम संवर्द्धन की अपकेंद्रित्र प्रक्रिया..... 145
- उद्योगों के लिये "ब्लू श्रेणी" 147
- कश्मीर में वसंत ऋतु का आगमन..... 147
- इंडिया स्किल्स एक्सेलेरेटर..... 148
- डायर वुल्फ..... 148
- अंतर-संसदीय संघ की 150वीं सभा..... 149
- जलवायु परिवर्तन पर भारत का पहला स्टेशन..... 149
- नौसैनिक अभ्यास इंद्र-2025..... 151
- दौलताबाद किला 151
- WMO द्वारा वर्ष 2024 की सूची से हरिकेन के नाम हटाना 152
- अगस्त्यमलाई बायोस्फीयर रिज़र्व..... 153
- भारत में ओलिव रिडले कछुए..... 154
- पनामा नहर..... 156
- माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण तथा कल्याण अधिनियम 2007..... 157
- न्यू पंबन ब्रिज..... 157
- फलों को पकाने वाले परिष्कारक..... 158
- विषाक्त शैवाल प्रस्फुटन का सी लॉयन पर प्रभाव..... 160
- कैप्चा 161
- सियाचिन दिवस..... 162
- भारत के राष्ट्रपति को सिटी की ऑफ ऑनर पुरस्कार..... 163
- नौवहन पर पहले वैश्विक कार्बन टैक्स को भारत का समर्थन..... 164
- लंबी दूरी का ग्लाइड बम 'गौरव' 165
- कवच 5.0..... 165
- गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य..... 167

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

शासन व्यवस्था

तटीय नौवहन विधेयक एवं वायुयान वस्तुओं में हित संरक्षण विधेयक

चर्चा में क्यों?

लोक सभा ने दो प्रमुख विधेयक पारित किये हैं - **तटीय नौवहन विधेयक, 2024** और **वायुयान वस्तुओं में हित संरक्षण विधेयक, 2025,** जिनका उद्देश्य तटीय नौवहन और विमानन क्षेत्र को मज़बूत करना है।

तटीय नौवहन विधेयक, 2024 क्या है?

- **परिचय:**
  - इसका उद्देश्य **तटीय शिपिंग के माल ढुलाई हिस्से को वर्तमान 5% (यूरोपीय संघ में 40% की तुलना में) से बढ़ाकर लागत प्रभावी और धारणीय तटीय व्यापार को प्रोत्साहित करना** तथा **सड़कों (66%)** और **रेलमार्गों (31%) पर अत्यधिक निर्भरता को कम करना** है, जिससे **प्रदूषण, यातायात भीड़ और रसद लागत में कमी** आएगी।
    - MoEFCC (वर्ष 2021) के अनुसार, **भारत के GHG उत्सर्जन में परिवहन का योगदान 10-11%** है, जिसमें **सड़कों का योगदान 90%, रेल का 3%** और **जलमार्ग का 1% से भी कम** है।
  - जलमार्ग **सड़क और रेल की तुलना में अधिक ऊर्जा कुशल हैं,** जिससे तटीय नौवहन सबसे अधिक पर्यावरण अनुकूल परिवहन साधन बन जाता है।
    - यह **अंतर्देशीय जलमार्गों के साथ एकीकरण का समर्थन** करता है और **राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति** और **आत्मनिर्भर भारत दृष्टिकोण** के साथ संरेखित है।
- **प्रमुख प्रावधान:**
  - **समर्पित कानूनी ढाँचा:** यह विधेयक **वाणिज्य पोत परिवहन अधिनियम, 1958** के अंतर्गत **पुराने पोत-केंद्रित प्रावधानों** के स्थान पर भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप एक **अग्रगामी, स्वतंत्र कानून** प्रस्तुत करता है।
    - यह **7,500 किलोमीटर लंबी तटरेखा** की आर्थिक क्षमता को खोलने के लिये **वैश्विक कैबोटेज (Cabotage) मानदंडों** और **भारत के समुद्री अमृत काल विजन 2047 के साथ संरेखित** एक **स्पष्ट, आधुनिक कानूनी संरचना** स्थापित करता है।
  - **कैबोटेज** से तात्पर्य एक ही देश के दो बंदरगाहों के बीच माल/यात्रियों के परिवहन से है।
  - **सरलीकृत लाइसेंसिंग तंत्र:** यह **भारतीय जहाज़ों के लिये सामान्य व्यापार लाइसेंस की आवश्यकता को हटा देता है** तथा **विदेशी जहाज़ों के लिये एक संरचित लाइसेंसिंग प्रक्रिया** शुरू करता है।
    - **नौवहन महानिदेशक** को राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए **व्यापार में सुगमता** सुनिश्चित करने के लिये **विनियमन, निगरानी और अनुपालन लागू करने** का अधिकार दिया गया है।
  - **रणनीतिक समुद्री विजन और मल्टीमॉडल एकीकरण:** विधेयक में **राष्ट्रीय तटीय और अंतर्देशीय नौवहन रणनीतिक योजना** तैयार करने का प्रावधान है, जिसे **राज्यों, बंदरगाहों और समुद्री बोर्डों** के प्रतिनिधियों वाली समिति द्वारा **द्विवार्षिक रूप से संशोधित** किया जाएगा।
    - यह **क्षेत्र-विशिष्ट विकास को बढ़ावा** देता है, **तटीय नौवहन को अंतर्देशीय जलमार्गों के साथ एकीकृत** करता है, तथा **कुशल, कम उत्सर्जन वाले मल्टीमॉडल परिवहन** को बढ़ावा देता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **डेटा-संचालित शासन और पारदर्शिता:** साक्ष्य-आधारित नीति, परिचालन समन्वय और संवर्धित पारदर्शिता को सुगम बनाने के लिये **तटीय नौवहन के लिये एक राष्ट्रीय डाटाबेस** का प्रस्ताव किया गया है।
  - विधेयक में निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिये NRI, OCI और LLP को **जहाज़ किराये पर देने की पात्रता का भी विस्तार** किया गया है।
- **सहकारी संघवाद और समावेशी शासन:** विधेयक मार्ग नियोजन, बुनियादी ढाँचे और नीति का मार्गदर्शन करने तथा विकेंद्रीकृत, समावेशी और स्थानीय रूप से उत्तरदायी समुद्री विकास को बढ़ावा देने के लिये बहु-हितधारक समिति (खंड 8 (3)) के माध्यम से **राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की सक्रिय भागीदारी** सुनिश्चित करता है।

भारत के समुद्री क्षेत्र की स्थिति क्या है?

- **सामरिक और व्यापारिक आधार:** भारत **16वाँ सबसे बड़ा समुद्री राष्ट्र** है, जो **मात्रा की दृष्टि से 95%** और **मूल्य की दृष्टि से 70%** व्यापार संभालता है, जिसमें **12 प्रमुख** और **200 से अधिक छोटे बंदरगाह** प्रमुख वैश्विक नौवहन मार्गों पर स्थित हैं।
- **क्षमता और बेड़े का विस्तार:** प्रमुख बंदरगाहों की कार्गो-हैंडलिंग क्षमता **87%** (वर्ष 2014-24) बढ़कर **1,629.86 मिलियन टन** तक पहुंच गई, जिसमें **वित्त वर्ष 24 में 819.22 मीट्रिक टन का संचालन** किया गया; **भारत 1,530 पंजीकृत जहाज़ों** का बेड़ा संचालित करता है।
  - **विश्व बैंक की लॉजिस्टिक्स परफॉर्मेंस इंडेक्स (LPI) रिपोर्ट 2023 में भारत 139 देशों में से 38वें स्थान पर है,** जो बेहतर लॉजिस्टिक्स और व्यापार दक्षता का संकेत देता है।
    - वर्ष 2023 LPI के अनुसार **सिंगापुर और फिनलैंड** सबसे कुशल और उच्चतम रैंक वाले LPI देश हैं, जिनसे भारत सीख सकता है।
- **ग्लोबल शिप रीसाइक्लिंग हब:** भारत विश्व में **तीसरा सबसे बड़ा जहाज़ पुनर्चक्रणकर्त्ता (Recycler) है**, जिसकी **वैश्विक हिस्सेदारी 30%** है, तथा **अलंग** विश्व का सबसे बड़ा शिप-ब्रेकिंग यार्ड है।
- भारत अपनी लंबी तटरेखा के बावजूद जहाज़ निर्माण में अभी पीछे है, लेकिन **नई जहाज़ निर्माण और मरम्मत नीति** जैसी हालिया पहलों का उद्देश्य घरेलू क्षमताओं को मज़बूत करना और भारत को वैश्विक समुद्री विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करना है।
  - **नीतिगत समर्थन और निर्यात वृद्धि: स्वचालित मार्ग के तहत 100% FDI, 10-वर्षीय कर मुक्तता** और बुनियादी ढाँचे के आधुनिकीकरण जैसे उपायों से बंदरगाह विकास को बढ़ावा मिला है और **वित्त वर्ष 23 में निर्यात बढ़कर 451 बिलियन अमेरिकी डॉलर हुआ**।

वायुयान वस्तुओं में हित संरक्षण विधेयक, 2025 क्या है?

- **उद्देश्य:**
  - इसका उद्देश्य भारतीय विधि को अंतर्राष्ट्रीय अभिसमयों के अनुरूप बनाकर भारत में **विमान वित्तपोषकों और पट्टादाताओं के लिये विधिक संरक्षण का सुदृढ़ीकरण** करना है।
- **प्रमुख प्रावधान:**
  - **अंतर्राष्ट्रीय दायित्वों की सर्वोच्चता:** इस विधेयक के अंतर्गत **केपटाउन अभिसमय** और **एयरक्राफ्ट प्रोटोकॉल** को अधिभावी प्रभाव प्रदान किया गया है, तथा टकराव की स्थिति में घरेलू विधियों {जैसे **दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता (IBC)**} को अधिक्रमित किया गया है।
    - इसके अंतर्गत केप टाउन अभिसमय के अनुरूप विवादों को सुलझाने के लिये **अंतर्राष्ट्रीय मध्यस्थता तंत्र** के उपयोग की अनुमति प्रदान की गई है।
  - भारत ने **वर्ष 2008** में **केपटाउन अभिसमय** और इसके **एयरक्राफ्ट प्रोटोकॉल** पर हस्ताक्षर किये थे, लेकिन **संसदीय अनुसमर्थन** और सामर्थ्यकारी विधान के अभाव में, इसके प्रावधान **भारत के न्यायालयों में प्रवर्तनीय नहीं** हो सके।
    - इसके परिणामस्वरूप भारतीय एयरलाइनों को **विमान पट्टे पर देने के लिये उच्च जोखिम वाले प्रीमियम,** गो फर्स्ट संकट जैसे **दिवालियापन मामलों के दौरान विधिक अनिश्चितताएँ,** तथा विमानन कार्य समूह (AWG) के साथ **अनुपालन स्कोर में गिरावट** जैसी घटनाएँ हुईं।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 — SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस — SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स — SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप — SCAN ME

नोट:

- **दायरा और कवरेज:** यह अधिनियम विमान प्रोटोकॉल के तहत परिभाषित **विमान एयरफ्रेम, इंजन, हेलीकॉप्टर और अन्य उच्च मूल्य वाले विमानन उपकरणों** पर अनुप्रयोज्य है।
- **सुव्यवस्थित पुन: कब्ज़ा प्रक्रिया:** यह विधेयक विमान पट्टादाताओं को चूक की स्थिति में न्यायालयी हस्तक्षेप के बिना पट्टे पर दिये गए यान और उपकरण को पुन: कब्ज़ा करने में सक्षम बनाता है, जिससे त्वरित समाधान और परिसंपत्ति वसूली सुनिश्चित होती है।
- **बेहतर अनुपालन स्कोर:** विधेयक के अंतर्गत **केपटाउन कन्वेंशन इंडेक्स (AWG)** के साथ भारत के अनुपालन में सुधार किया गया है, जिससे भारतीय एयरलाइन्स कन्वेंशन के तहत **8-10% पट्टा लागत छूट के लिये पात्र** हो जाएंगी।

भारत में विमानन क्षेत्र की स्थिति क्या है?

- भारत विश्व स्तर पर **तीसरा सबसे बड़ा घरेलू विमानन बाज़ार** है, जिसका **दक्षिण एशिया के वायु यातायात में 69% का योगदान** है, तथा **यात्रियों की संख्या लगभग 196.91 मिलियन** है।
- विमानन क्षेत्र का **सकल घरेलू उत्पाद** में **1.5%** का योगदान है और इससे **7.7 मिलियन रोज़गार** (प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष) का सृजन हुआ है, तथा इसका **53.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर का आर्थिक उत्पादन** है।
  - **परिचालनगत हवाई अड्डों** की संख्या **74 (2014)** से बढ़कर 157 (2024) हो गई, तथा **वर्ष 2047 तक** इसे **350-400** करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।
    - विमानों की आवाजाही **3.85% (वित्त वर्ष 17-वित्त वर्ष 24)** की **CAGR** से बढ़ी है, और **अनेक ग्रीनफील्ड हवाई अड्डे** और **टर्मिनल** विकास के अधीन हैं (जैसे, **बागडोगरा सिविल एन्क्लेव, देहरादून टर्मिनल)**।

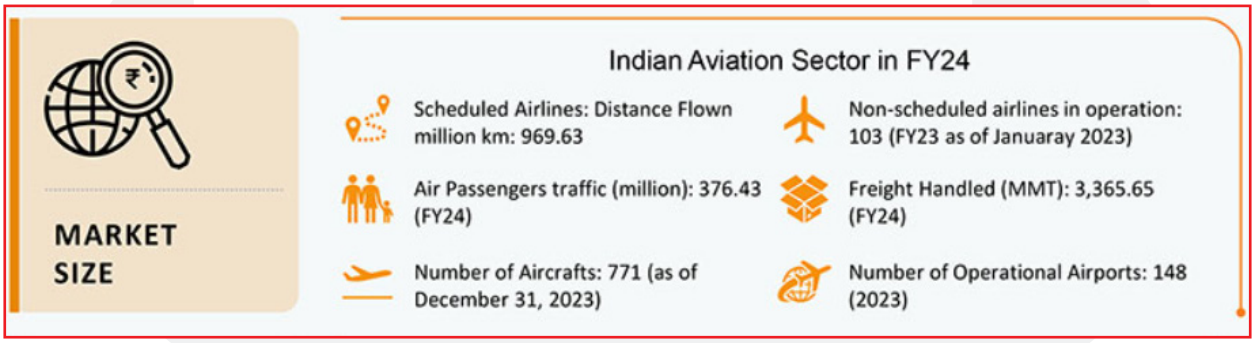

भारत के समुद्री और विमानन क्षेत्र संबंधी सरकार की हालिया पहलें कौन-सी हैं?

- समुद्री क्षेत्र:
  - एक राष्ट्र-एक बंदरगाह प्रक्रिया (ONOP)
  - सागर अंकलन - लॉजिस्टिक्स पोर्ट परफॉर्मेंस इंडेक्स (LPPI) 2023-24
  - भारत ग्लोबल पोर्ट्स कंसोर्टियम
  - मैत्री प्लेटफॉर्म (अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और विनियामक इंटरफेस के लिये मास्टर एप्लीकेशन)
  - राष्ट्रीय हरित बंदरगाह एवं शिपिंग उत्कृष्टता केंद्र (NCoEGPS)
  - मैरीटाइम इंडिया विज़न- 2030
  - ग्रीन टग ट्रांज़िशन प्रोग्राम (GTTP)

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **विमानन क्षेत्र:**
  - उड़ान योजना (उड़े देश का आम नागरिक)।
  - राष्ट्रीय नागरिक विमानन नीति, 2016
  - ओपन स्काई संधि
  - डिजी यात्रा

दृष्टि मेन्स प्रश्न:

प्रश्न. तटीय अवसंरचना के विकास का भारत की ब्लू इकॉनोमी के दृष्टिकोण में किस प्रकार योगदान है? उदाहरणों सहित समझाइये।

पर्सपेक्टिव: न्यायिक जवाबदेही सुनिश्चित करने की आवश्यकता

चर्चा में क्यों?

दिल्ली उच्च न्यायालय के एक न्यायाधीश के शासकीय निवास पर कथित तौर पर बड़ी मात्रा में नकदी बरामद होने के बढ़ते विवाद के कारण पुन: **न्यायिक सुधार**, **पारदर्शिता** और **जवाबदेही** की आवश्यकता को लेकर चिंता व्यक्त की गई है।

कॉलेजियम प्रणाली क्या है?

- **परिचय:**
  - **कॉलेजियम प्रणाली** न्यायाधीशों की नियुक्ति और स्थानांतरण की प्रणाली है, जो **संसद** के किसी अधिनियम या संविधान के प्रावधान द्वारा स्थापित न होकर सर्वोच्च न्यायालय के निर्णयों के माध्यम से विकसित हुई है।
- **कॉलेजियम प्रणाली का विकास:**
  - **प्रथम न्यायाधीश मामला (1981):**
    - इसमें यह निर्धारित किया कि न्यायिक नियुक्तियों और तबादलों पर **भारत के मुख्य न्यायाधीश (CJI)** के सुझाव की **"प्रधानता"** को **"तर्कपूर्ण कारणों"** से अस्वीकार किया जा सकता है।
    - इस निर्णय ने अगले 12 वर्षों के लिये न्यायिक नियुक्तियों में न्यायपालिका पर **कार्यपालिका की प्रधानता** स्थापित कर दी है।
  - **द्वितीय न्यायाधीश मामला (1993):**
    - सर्वोच्च न्यायालय ने यह स्पष्ट करते हुए **कॉलेजियम प्रणाली** की शुरुआत की कि **"परामर्श"** का अर्थ वास्तव में **"सहमति"** है।
    - इस मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने आगे कहा कि यह **CJI की व्यक्तिगत राय नहीं** होगी, बल्कि सर्वोच्च न्यायालय के **दो वरिष्ठतम न्यायाधीशों** के परामर्श से ली गई एक **संस्थागत राय** होगी।
  - **तृतीय न्यायाधीश मामला (1998):**
    - **राष्ट्रपति** के संदर्भ (**अनुच्छेद 143**) पर सर्वोच्च न्यायालय ने **पाँच सदस्यीय निकाय** के रूप में कॉलेजियम का विस्तार किया, जिसमें **CJI** और उनके चार वरिष्ठतम सहयोगी शामिल होंगे।

नोट:

- **राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग (NJAC)** का गठन **99वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2014** और **NJAC अधिनियम, 2014** के माध्यम से किया गया था। **NJAC** ने न्यायिक नियुक्तियों के लिये **कॉलेजियम प्रणाली** को बदलने की मांग की।
- हालाँकि, **वर्ष 2015** में **सर्वोच्च न्यायालय** ने **कार्यपालिका के हस्तक्षेप** और **न्यायिक स्वतंत्रता के उल्लंघन** का हवाला देते हुए दोनों अधिनियमों को रद्द कर दिया था।

भारत में न्यायिक जवाबदेही सुनिश्चित करने में कौन-सी चुनौतियाँ हैं?

- **न्यायिक कार्यप्रणाली में पारदर्शिता का अभाव:** भारत में **न्यायिक जवाबदेही** सुनिश्चित करने में सबसे गंभीर चुनौतियों में से एक न्यायपालिका की कार्यप्रणाली में **पारदर्शिता का अभाव** है।
  - **विधायिका** या कार्यपालिका के विपरीत, न्यायिक कार्यप्रणाली, विशेषकर **नियुक्तियों, स्थानांतरणों** और **अनुशासनात्मक कार्रवाइयों** के मामलों में, प्रमुख रूप से **सार्वजनिक जाँच** उन्मुक्त है।
- **जवाबदेही के लिये एक मजबूत संस्थागत ढाँचे का अभाव:** वर्तमान में, **न्यायिक कदाचार के आरोपों** को न्यायपालिका के

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

अपने तंत्र (इन-हाउस इन्क्वायरी) के माध्यम से आंतरिक रूप से निपटाया जाता है, जो न तो पारदर्शी है और न ही जनता के प्रति जवाबदेह है।

- यद्यपि **न्यायाधीश (जाँच) अधिनियम, 1968** में **सिद्ध कदाचार के लिये न्यायाधीशों के महाभियोग का प्रावधान** है, लेकिन यह प्रक्रिया अत्यधिक **कठिन, दुर्लभ** और न्यायिक कदाचार या नैतिक चूक के अधिकांश मामलों को संबोधित करने में **व्यावहारिक रूप से अप्रभावी** है।
- संविधान में केवल **संसद** द्वारा **महाभियोग** चलाने का प्रावधान है, जिसके लिये दोनों सदनों में **विशेष बहुमत** की आवश्यकता होती है। यह प्रक्रिया न केवल **राजनीतिक रूप से संवेदनशील** है, बल्कि इसे सफलतापूर्वक **क्रियान्वित करना भी अत्यंत कठिन** है।

- **कॉलेजियम प्रणाली में भाई-भतीजावाद:** कॉलेजियम प्रणाली में प्राय: योग्यता के बजाय **व्यक्तिगत संबंधों** के आधार पर नियुक्तियाँ की जाती हैं, जिसमें **न्यायाधीशों के रिश्तेदारों** और **निकट सहयोगियों** को प्राथमिकता दी जाती है।
  - प्रतिकूल खुफिया रिपोर्टों के बावजूद, कॉलेजियम की सिफारिशें **राष्ट्रपति के लिये बाध्यकारी** हैं, जिससे **जवाबदेही और पारदर्शिता** में कमी आती है।
- **न्यायिक कदाचार और नैतिक चिंताएँ: वर्ष 1997** में अपनाई गई सलाहकारी **'न्यायिक जीवन के मूल्यों का पुनर्स्थापन'** के अलावा **न्यायाधीशों के लिये कोई बाध्यकारी** या **लागू करने योग्य आचार संहिता नहीं** है।
  - **'न्यायिक जीवन के मूल्यों का पुनर्स्थापन'** सर्वोच्च न्यायालय द्वारा अपनाई गई **न्यायिक नैतिकता की एक संहिता** है, जो **स्वतंत्र और निष्पक्ष न्यायपालिका के लिये मार्गदर्शक** के रूप में कार्य करती है तथा न्याय के निष्पक्ष प्रशासन को सुनिश्चित करती है।

आगे की राह

- **जवाबदेही के लिये संस्थागत तंत्र: न्यायिक स्वतंत्रता को कम किये बिना न्यायिक कदाचार, भ्रष्टाचार** या **नैतिक उल्लंघन** के आरोपों की जाँच करने के लिये एक **स्वतंत्र, वैधानिक निकाय** की स्थापना करना।
- **कॉलेजियम प्रणाली में सुधार:** न्यायाधीशों की नियुक्तियों और स्थानांतरणों में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिये **स्पष्ट पात्रता आवश्यकताएँ स्थापित करना, चयन मानदंडों का दस्तावेज़ीकरण करना** तथा चयन प्रक्रिया तक सार्वजनिक पहुँच बढ़ाना।
- **न्यायाधीशों के लिये आचार संहिता:** न्यायिक आचरण में **नैतिक मानकों** और **सत्यनिष्ठा** को सुनिश्चित करने के लिए **संपत्ति और देनदारियों की नियमित घोषणा** के साथ-साथ न्यायाधीशों के लिये एक **बाध्यकारी आचार संहिता** तैयार करना और उसे लागू करना।
- **समयबद्ध जाँच तंत्र:** न्यायाधीशों के विरुद्ध **शिकायतों की जाँच** के लिये **समयबद्ध प्रक्रिया** शुरू करना, ताकि मामलों को **अनिश्चित काल तक लंबित रहने या त्यागपत्र** अथवा **विलंब की रणनीति** के कारण समाप्त होने से रोका जा सके।
- **न्यायिक कार्यप्रणाली में अधिक पारदर्शिता:** नियमित रिपोर्टों और प्रकटीकरणों के माध्यम से **जनता के लिये प्रासंगिक जानकारी सुलभ बनाकर न्यायालयी कार्यवाही, नियुक्ति प्रक्रियाओं** और **अनुशासनात्मक कार्यवाहियों** में **पारदर्शिता को संस्थागत** बनाना।
- **महाभियोग प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाना: न्यायाधीश (जाँच) अधिनियम, 1968** पर पुन: विचार करना तथा सिद्ध कदाचार के मामलों में महाभियोग प्रक्रिया को अधिक **प्रभावी, पारदर्शी** और **सुलभ** बनाने के लिये इसे सुव्यवस्थित करना।

हिरासत में यातना और पुलिस सुधार की आवश्यकता

चर्चा में क्यों?

लोकनीति-CSDS और NGO कॉमन कॉज़ (एक गैर सरकारी संगठन) द्वारा 17 राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों के 8,276 पुलिस कर्मियों से प्राप्त इनपुट के आधार पर तैयार की गई भारत में पुलिस व्यवस्था की स्थिति रिपोर्ट, 2025 से पता चलता है कि पुलिस कर्मियों में हिरासत में यातना और बलपूर्वक तरीकों की स्वीकार्यता बनी हुई है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- ये अंतर्दृष्टि दुर्व्यवहार को रोकने तथा संवैधानिक अधिकारों को बनाए रखने के क्रम में **संस्थागत पुलिस सुधारों** की तत्काल आवश्यकता पर केंद्रित है।

पुलिस द्वारा हिरासत में किये जाने वाले व्यवहार पर CSDS सर्वेक्षण के मुख्य निष्कर्ष क्या हैं?

- **हिरासत में हिंसा की स्वीकार्यता:** 63% पुलिस कर्मियों ने बलात्कार और हत्या जैसे **गंभीर अपराधों के संदिग्धों के विरुद्ध हिंसा** को उचित ठहराया।
  - यहाँ तक कि चोरी जैसे छोटे अपराधों के लिये भी **30% लोग थर्ड डिग्री पद्धति** का समर्थन करते हैं।
- **यातना का संस्थागत समर्थन:** 42% पुलिस कर्मियों ने **आतंकवाद के मामलों** में यातना का समर्थन किया तथा 28% ने हिस्ट्रीशीटरों के मामले में इसका समर्थन किया।
  - **25%** पुलिस कर्मियों ने **यौन उत्पीड़न या बाल अपहरण** जैसे मामलों में **भीड़ द्वारा न्याय को उचित** ठहराया जबकि 22% ने **"खतरनाक अपराधियों"** की न्यायेतर हत्या का समर्थन किया।
  - जबकि **74%** का मानना था कि खतरनाक अपराधियों से निपटने के दौरान भी **विधिक प्रक्रियाओं का पालन** किया जाना चाहिये, केवल **41% ने गिरफ्तारी प्रोटोकॉल** का लगातार पालन करने की बात स्वीकार की।
    - **केरल में सबसे अधिक इसके अनुपालन** के पक्ष में थे, **जहाँ 94% लोगों** ने कहा कि गिरफ्तारी के दौरान हमेशा विधिक मानदंडों का पालन किया जाए।
- **अनिवार्य रिपोर्टिंग के प्रति दुविधा:** 39% पुलिस कर्मियों ने **हिरासत में यातना की अनिवार्य रिपोर्टिंग** का समर्थन किया, जबकि **41% ने केवल चुनिंदा मामलों में ही इसका समर्थन** किया, जो सशर्त जवाबदेहिता को दर्शाता है।
  - **स्टेशन स्तर के अधिकारी** वरिष्ठों की तुलना में रिपोर्टिंग के प्रति अधिक सहायक थे।
- **सुधार की तत्परता:** 79% पुलिस कर्मियों ने **मानवाधिकार प्रशिक्षण** और **यातना-विरोधी तंत्र** का समर्थन किया। **यदि कानूनी रूप से संरक्षित हों** तो **75% से अधिक पुलिस कर्मी हिरासत में हिंसा की रिपोर्ट** करने के समर्थन में थे और **79% ने साक्ष्य-आधारित पूछताछ तकनीक** का समर्थन किया, जो सुधार और जवाबदेहिता के क्रम में मज़बूत आंतरिक मांग को दर्शाता है।
- **विधिक सुरक्षा बनाम वास्तविकता: अनुच्छेद 21** के तहत विधिक सुरक्षा और ***डीके बसु बनाम पश्चिम बंगाल राज्य, 1997 मामले*** में सर्वोच्च न्यायालय के दिशानिर्देशों के बावजूद, हिरासत मानदंडों का **नियमित रूप से उल्लंघन** किया जाता है।
- **मजिस्ट्रेटों की निष्क्रियता, अप्रभावी चिकित्सा जाँच और NHRC की सीमित शक्तियों** से संस्थागत अंतराल पर प्रकाश पड़ता है जबकि **हिरासत में मौत के मामलों में शून्य दोषसिद्धि (वर्ष 2018-2022)** सोचनीय विषय है।

भारत में पुलिस सुधार की आवश्यकता क्यों है?

- **अत्यधिक कार्यभार एवं जनशक्ति की कमी:** भारत में **प्रति 1,00,000 लोगों पर केवल 155.78 पुलिसकर्मी** हैं, जो संयुक्त राष्ट्र के मानक 222 से काफी कम है। पश्चिम बंगाल (39.42%), मिज़ोरम (35.06%), हरियाणा (32%) जैसे राज्यों में उच्च रिक्ति दर इस बोझ को और अधिक बढ़ा देती है।
  - अधिकारी **प्रतिदिन 16-18 घंटे कार्य** करते हैं, जिनमें से **83.8% अत्यधिक तनाव** की रिपोर्ट करते हैं, जिससे **कुशलता, प्रतिक्रिया समय** और **मामलों की गुणवत्ता** प्रभावित होती है।
  - वे **वीआईपी सुरक्षा और चुनावी ड्यूटी** जैसे कई दायित्वों का निर्वहन भी करते हैं, अक्सर कम वेतन और बहुत कम विश्राम के साथ, जिससे **तनाव, थकान** और **भ्रष्टाचार की संभावनाएँ** बढ़ जाती हैं।
- **राजनीतिकरण और कमज़ोर जवाबदेहिता:** पुलिस की स्वायत्तता प्राय: **राजनीतिक हस्तक्षेप** के कारण प्रभावित होती है। ***'स्टेटस ऑफ पोलिसिंग इन इंडिया रिपोर्ट'*** के अनुसार, **दिल्ली के 72% पुलिस अधिकारियों** ने स्वीकार किया कि उन्हें जाँच के दौरान **राजनीतिक दबाव** का सामना करना पड़ा।
  - पत्रकारों, कार्यकर्त्ताओं और अल्पसंख्यकों के विरुद्ध देशद्रोह जैसे कानूनों का दुरुपयोग **कानून के शासन** और **जनता के विश्वास** को कमज़ोर करता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

भारत में पुलिस सुधार

संवैधानिक स्थिति:

- पुलिस एवं लोक व्यवस्था: राज्य सूची के विषय (7वीं अनुसूची)

सुधार की आवश्यकता:

- औपनिवेशिक कानून
- हिरासत में मौत
- जवाबदेहिता की कमी
- राजनीतिक हस्तक्षेप
- लैंगिक संवेदनशीलता की खराब स्थिति
- सांप्रदायिक/जातिगत पूर्वाग्रह
- कोई अत्याचार विरोधी कानून नहीं

संबंधित डेटा:

- पुलिस-पीपल अनुपात: 153 पुलिस/100,000 लोग (वैश्विक बेंचमार्क: 222 पुलिस/100,000 लोग)
- हिरासत में मौतें: 2021-2022 में 175 (गृह मंत्रालय के अनुसार)
- महिलाओं की हिस्सेदारी: संपूर्ण बल का 10.5% (इंडिया जस्टिस रिपोर्ट 2021)
- अवसंरचना: 3 में से 1 पुलिस स्टेशन सीसीटीवी से लैस है (इंडिया जस्टिस रिपोर्ट 2021)

पुलिस सुधार पर महत्त्वपूर्ण समितियाँ/आयोग:

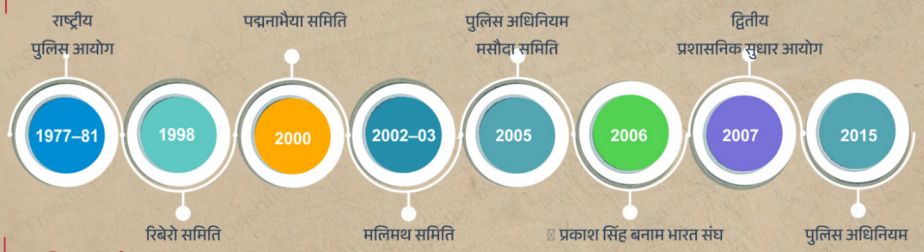

संबंधित पहलें:

- स्मार्ट पुलिसिंग (अखिल भारतीय)
- स्वचालित मल्टीमॉडल बायोमेट्रिक पहचान प्रणाली (AMBIS) (महाराष्ट्र)
- रियल टाइम विज़िटर मॉनिटरिंग सिस्टम (ए.आई. और ब्लॉकचेन आधारित) (आंध्र प्रदेश)
- साइबरडोम (टेक आर एंड डी सेंटर) (केरल)

पुलिसिंग के साथ चुनौतियाँ:

- निम्न पुलिस-जनसंख्या अनुपात
- राजनीतिक अधिरोपण
- असंतोषजनक पुलिस-पब्लिक संबंध
- इन्फ्रा घाटा
- भ्रष्टाचार
- कम कर्मचारी/अत्यधिक भार

आगे की राह:

- ↑ पुलिस बजट, संसाधन
- ↑ भर्ती प्रक्रिया
- भ्रष्टाचार को कम करने के उपाय लागू करें
- ↑ पुलिसकर्मियों का कौशल
- बेहतर प्रतिनिधित्व (महिलाएँ, अल्पसंख्यक)

Drishti IAS

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- प्रदर्शनों के दौरान अत्यधिक बल प्रयोग (जैसे **CAA-NRC**, 2023 में किसान आंदोलन, पहलवानों का विरोध) तथा वर्ष **2017 से 2022 के बीच हुईं 669 हिरासत में मौतें** सुरक्षा तंत्र के बढ़ते सैन्यीकरण को दर्शाती हैं और **गंभीर मानवाधिकार संबंधी चिंताएँ** उत्पन्न करती हैं।

- **अपर्याप्त प्रशिक्षण:** अधिकांश राज्यों में उचित प्रशिक्षण बुनियादी ढाँचे का अभाव है, जैसा कि **CAG** द्वारा उजागर किया गया है, **प्रशिक्षित कर्मियों का अनुपात कम है। हथियार प्रशिक्षण पुराना हो चुका है, और पुलिस को साइबर अपराध जाँच** या **फोरेंसिक विज्ञान** जैसी आधुनिक तकनीकों में शायद ही कभी प्रशिक्षित किया जाता है।
  - भारत में प्रति 0.1 मिलियन लोगों पर केवल **0.33 फोरेंसिक विशेषज्ञ हैं,** जबकि **विकसित देशों में यह संख्या 20-50 है,** जिससे वैज्ञानिक जाँच में बाधा उत्पन्न होती है।
  - सीमित **लैंगिक संवेदनशीलता प्रशिक्षण घरेलू हिंसा, यौन उत्पीड़न और तस्करी** के मामलों में न्याय वितरण को और कमज़ोर करता है।
- **पुराना ढाँचा:** अनेक थानों में **आधुनिक निगरानी उपकरणों और डिजिटल केस प्रबंधन प्रणाली की कमी** है। वर्ष 2022 तक औसतन **प्रत्येक 11 पुलिसकर्मियों पर केवल एक कंप्यूटर** उपलब्ध था, जबकि कुछ राज्यों में **प्रत्येक 30 अधिकारियों पर मात्र एक कंप्यूटर** ही था।
  - पुलिस बल अभी भी **पुराने हथियारों और मैनुअल रिकॉर्ड-कीपिंग पर निर्भर** हैं, जिससे **साइबर अपराध,** आतंकवाद और अन्य उभरते खतरों से प्रभावी ढंग से निपटना कठिन हो रहा है।
- **जन विश्वास की कमी और लैंगिक असंतुलन:** केरल की **जनमैत्री** तथा महाराष्ट्र की **मोहल्ला समिति** जैसी **सामुदायिक पुलिसिंग** अपवाद हैं, न कि सामान्य परिपाटी। इस कारण **स्थानीय स्तर पर जनसहभागिता सीमित** रह जाती है।
  - **दलितों और अल्पसंख्यकों जैसे हाशिये पर पड़े समुदाय** प्राय: पुलिस को **भेदभावपूर्ण और अस्वीकार्य** मानते हैं, जिससे विश्वास और सहयोग कम हो जाता है।
  - **महिलाओं के विरुद्ध बढ़ते अपराधों, रिपोर्टिंग में हतोत्साहन** तथा लिंग आधारित हिंसा के प्रति प्रतिक्रिया की **संवेदनशीलता और प्रभावशीलता पर प्रभाव पड़ने** के बावजूद पुलिस बल में **महिलाओं की संख्या केवल 11.75%** है।

पुलिस प्रणाली में सुधार के लिये क्या कदम उठाए जाने चाहिये?

- **कार्यभार कम करना :** त्वरित भर्ती और अधिक वित्तपोषण के माध्यम से पुलिस की कमी को दूर करना।
  - ***प्रकाश सिंह केस, 2006*** में सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों के अनुसार, **2 वर्ष का निश्चित न्यूनतम कार्यकाल,** कार्यकुशलता में सुधार लाएगा और राजनीतिक हस्तक्षेप को कम करेगा।
- **स्वायत्तता और गैर-राजनीतिकरण सुनिश्चित करना:** राष्ट्रीय पुलिस आयोग की सिफारिश के अनुसार, पुलिस को राजनीतिक हस्तक्षेप से सुरक्षा प्रदान करने हेतु **राज्य सुरक्षा आयोग** (State Security Commission - SSC) की स्थापना की जानी चाहिये।
  - **रिबेरो समिति** के सुझाव के अनुसार, **पुलिस स्थापना बोर्ड (PEB)** को स्थानांतरण और पदोन्नति को स्वतंत्र रूप से संभालने का अधिकार दिया जाना चाहिये।
  - **मॉडल पुलिस अधिनियम (2006)** के अनुरूप **पुलिस अधिनियम, 1861** में संशोधन करके इन सुधारों को कानूनी रूप से स्थापित किया जा सकता है।
- **बुनियादी ढाँचे का आधुनिकीकरण:** बेहतर अपराध नियंत्रण के लिये **AI-संचालित पुलिसिंग, बिग डेटा विश्लेषण और ड्रोन निगरानी** को अपनाना।
  - **CCTV नेटवर्क, फोरेंसिक प्रयोगशालाओं, GPS-सक्षम वाहनों** और **बॉडी कैमरों** में निवेश करने के लिये **पुलिस बलों के आधुनिकीकरण (MPF) योजना** का विस्तार करना।
  - **पद्मनाभैया समिति** के अनुसार **साइबर अपराध इकाइयों** को मज़बूत करना और जवाबदेही बढ़ाने के लिये पुलिस थानों में नाइट-विज़न CCTV पर **NHRC के 2021 के निर्देश** को लागू करना।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- **विशेषज्ञता और कार्यात्मक प्रभाग: मलिमथ समिति** के अनुसार, **जाँच और कानून-व्यवस्था संबंधी कर्त्तव्यों को अलग** किया जाना चाहिये तथा **जटिल मामलों के लिये एक विशेष अपराध जाँच संवर्ग का** गठन किया जाना चाहिये।
  - इसने यह भी सिफारिश की कि **वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के समक्ष दिये गए इकबालिया बयान को साक्ष्य** के रूप में स्वीकार किया जाएगा, तथा इसमें जबरदस्ती के विरुद्ध सुरक्षा उपाय भी शामिल किये जाएंगे।
- **सामुदायिक पुलिस व्यवस्था और विश्वास निर्माण: मॉडल पुलिस अधिनियम (2006)** और **NHRC के दिशा-निर्देशों** के अनुसार **सामुदायिक पुलिस व्यवस्था के मॉडल को** अपनाना। **जनमैत्री सुरक्षा** (केरल) और **मोहल्ला समितियों** (महाराष्ट्र) जैसी सफल पहलों को बढ़ावा देना।
  - संवेदनशील मामलों को संभालने के लिये पुलिस थानों में **सामाजिक कार्यकर्त्ताओं और मनोवैज्ञानिकों** की नियुक्ति करना। विश्वास बनाने के लिये **नियमित रूप से जनता और पुलिस के मध्य संवाद** (खासकर हाशिए पर पड़े समुदायों में) को बढ़ावा देना।
- **लिंग संवेदीकरण: पुलिस में महिलाओं के लिये 33% आरक्षण** लागू करना, **प्रत्येक ज़िले में पूर्णत: महिला पुलिस थाने** तथा सभी थानों में महिलाओं की उपस्थिति सुनिश्चित करना।
  - **लिंग संवेदीकरण प्रशिक्षण** को अनिवार्य बनाएँ तथा प्रतिधारण में सुधार के लिये सहायक सुविधाएँ प्रदान करना।
- **न्यायिक समन्वय और सुधार: FRI का डिजिटलीकरण, पुलिस रिकॉर्ड को ई-कोर्ट से जोड़ना,** तथा **मलिमथ समिति** की सिफारिश के अनुसार **विचाराधीन मामलों को तेज़ी** से निपटाना।
  - **विलंब को कम करने तथा समय पर न्याय सुनिश्चित करने के लिये संपर्क अधिकारी** नियुक्त करना तथा दलील सौदेबाजी का विस्तार करना।
- **क्षमता निर्माण: फोरेंसिक, मानवाधिकार और प्रौद्योगिकी पर ध्यान केंद्रित करते हुए प्रशिक्षण** को आधुनिक बनाने के लिये एक पुलिस प्रशिक्षण सलाहकार परिषद (PTAC) की स्थापना करना। **सॉफ्ट स्किल और नागरिक** इंटरफेस मॉड्यूल शामिल करना।
  - **छात्रवृत्ति** के माध्यम से उच्च शिक्षा को प्रोत्साहित करना तथा **व्यावसायिक विकास के लिये CBI, NIA और IB** के साथ क्रॉस-एजेंसी प्रशिक्षण को सक्षम बनाना।

निष्कर्ष

भारत में **उत्तरदायी, पेशेवर और जन-केंद्रित पुलिस व्यवस्था** बनाने के लिये पुलिस सुधार बहुत ज़रूरी हैं। लंबे समय से **लंबित सिफारिशों** को लागू करना, **स्वायत्तता सुनिश्चित करना, तकनीक का लाभ उठाना कानून** प्रवर्तन को बदल सकता है। **लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा, न्याय सुनिश्चित** करने और कानून के शासन को बनाए रखने के लिये एक सुधारित पुलिस बल आवश्यक है।

दृष्टि मेन्स प्रश्न:

प्रश्न. भारत में पुलिस सुधार क्यों आवश्यक हैं? पुलिस व्यवस्था में सुधार के लिये प्रमुख उपाय सुझाएँ।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

अंतर्राष्ट्रीय संबंध

बलूचिस्तान में उग्रवाद

चर्चा में क्यों?

पाकिस्तान के **बलूचिस्तान** प्रांत में **उग्रवाद और अशांति** फिर से बढ़ रही है। हाल ही में **बचिस्तान लिबरेशन आर्मी (BLA)** के आतंकवादियों द्वारा अपने साथियों की रिहाई की मांग को लेकर **ट्रेन अपहरण की घटना** क्षेत्र में बिगड़ती सुरक्षा स्थिति को उजागर करती है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

बलूचिस्तान और उग्रवाद का इतिहास

- **भूगोल: बलूचिस्तान** पाकिस्तान का दक्षिण-पश्चिमी प्रांत है जिसकी सीमा **अफगानिस्तान, ईरान, पंजाब और सिंध** (पाकिस्तान के प्रांत) और **अरब सागर** से लगती है।
- **जनसांख्यिकी:** यह **देश के कुल भू-क्षेत्र का 44% हिस्सा** कवर करता है, लेकिन इसकी **केवल 5% जनसंख्या** यहाँ निवास करती है, जिसमें मुख्य रूप से **बलूच** लोग रहते हैं, जो एक **सुन्नी मुस्लिम जातीय समूह** है, जिनके महत्त्वपूर्ण समुदाय **ईरान और अफगानिस्तान** में भी हैं।
  - यह **सबसे बड़ा और सबसे कम आबादी वाला प्रांत** है, जो **प्राकृतिक गैस, कोयला, स्वर्ण और ताँबे** जैसे **प्राकृतिक संसाधनों** से समृद्ध है, लेकिन **अत्यधिक गरीब** बना हुआ है, तथा इसकी 70% आबादी बहुआयामी गरीब के रूप में वर्गीकृत है।
- **उग्रवाद का इतिहास: भारत के विभाजन (वर्ष 1947)** के समय, बलूचिस्तान में 4 रियासतें शामिल थीं: **खारन, मकरान, लास बेला और कलात**, कलात ने **स्वतंत्रता** का विकल्प चुना, जबकि अन्य पाकिस्तान में शामिल हो गए।
  - यद्यपि **जिन्ना ने शुरू में कलात की संप्रभुता को स्वीकार कर लिया था,** लेकिन ब्रिटिश दबाव के कारण इसे रणनीतिक रूप से अलग-थलग करने के बाद **वर्ष 1948 में ज़बरन उस पर कब्ज़ा** कर लिया गया।
  - पाकिस्तानी शासन के प्रति प्रतिरोध पिछले **कुछ वर्षों में तीव्र** होता गया। **पहला बड़ा विद्रोह वर्ष 1954** में पाकिस्तान की **एक-इकाई नीति** के बाद शुरू हुआ, जिसके तहत वर्ष 1955 में बलूचिस्तान को पश्चिमी पाकिस्तान में मिला दिया गया, जिससे **असंतोष और गहरा** गया।
  - **वर्ष 1958** में कलात के खान **नवाब नौरोज़ खान** ने स्वतंत्रता की घोषणा की लेकिन उन्हें धोखे से आत्मसमर्पण के लिये मज़बूर कर दिया गया और कैद कर लिया गया।
  - **वर्ष 1963 में तीसरे विद्रोह** में **पाकिस्तानी सैनिकों की वापसी** और **बलूचिस्तान को एक प्रांत** के रूप में मान्यता देने की मांग की गई (जो वर्ष 1970 में साकार हुआ)।
  - **बांग्लादेश की वर्ष 1971 की आज़ादी** से प्रेरित होकर, बलूच नेताओं ने स्वायत्तता की मांग की, लेकिन **पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने वर्ष 1973 में बलूचिस्तान सरकार को बर्खास्त कर दिया, जिससे 4 वर्ष तक विद्रोह** चला।
  - **कथित सैन्य ज्यादतियों** के कारण **2000 के दशक** के मध्य में **संघर्ष का पाँचवाँ चरण शुरू हुआ। संसाधनों के दोहन और राजनीतिक हाशिये पर होने** की शिकायतों के कारण उग्रवाद जारी है, जिसका कोई समाधान नजर नहीं आ रहा है।
- **एमनेस्टी इंटरनेशनल की** रिपोर्ट के अनुसार **वर्ष 2011 से अब तक पाकिस्तान में 10,000 से अधिक बलूच गायब** हो चुके हैं।

बलूचिस्तान में संघर्ष के क्या कारण हैं?

- **ऐतिहासिक कारक: वर्ष 1948 में पाकिस्तान द्वारा बलूचिस्तान पर जबरन कब्ज़ा करने** और **वर्ष 1973 में इसकी प्रांतीय सरकार को बर्खास्त करने** से इसका अलगाव और गहरा हो गया।
  - इस क्षेत्र में समस्या के प्रभावी निवारण तंत्र का अभाव है जहाँ **नौकरशाही में पंजाबी संभ्रांत वर्ग का प्रभुत्व है** और **बलूच समुदाय का अल्प प्रतिनिधित्व** है।
- **आर्थिक शोषण: प्राकृतिक संसाधनों** जैसे **गैस, सोना और लोहे** की प्रचुरता के बावजूद, बलूचिस्तान आर्थिक रूप कमज़ोर है, जहाँ स्थानीय लोग **निम्न गुणवत्ता वाली शिक्षा और बुनियादी ढाँचे** के कारण **अल्प-कुशल नौकरियों** तक ही सीमित हैं। यहाँ पाकिस्तान में **निम्नतम साक्षरता दर** है और साथ ही यहाँ का **लैंगिक समानता सूचकांक (GPI)** निम्नतम है।
  - बलूच राष्ट्रवादी **ग्वादर पोर्ट और CPEC** जैसे **चीनी निवेशों को पाकिस्तान के अभिजात वर्ग के लिये लाभकारी** मानते हैं, जबकि **स्थानीय लोगों का इससे हाशियाकरण हो रहा है,** जिससे उन्हें **जनसांख्यिकीय परिवर्तन** तथा और अधिक शोषण का भय है।
- **मानवाधिकार उल्लंघन और सैन्यीकरण:** जबरन अपहरण, **न्यायेतर हत्याएँ** और **फर्जी मुठभेड़ों** का प्रयोग सामान्यत: **आतंकवाद-रोधी रणनीति** के रूप में उपयोग किया जाता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **वर्ष 2011** में पाकिस्तान द्वारा गठित **कमीशन ऑफ इन्क्वायरी ऑन एन्फोर्स्ड डिसअपीयरेंस** ने **2,752 मामले** दर्ज किये, जबकि नागरिक समाज समूहों ने **7,000 से अधिक व्यक्तियों के लापता होने का दावा किया (2002-2024)**।

- **धार्मिक उग्रवाद:** बलूचिस्तान में **अल-कायदा, तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (TTP)** और **सांप्रदायिक संगठनों** जैसे समूहों द्वारा **आतंकवादी भर्ती** की समस्याएँ हैं, और **हजारा शिया** समुदाय प्राय: सांप्रदायिक हिंसा का निशाना बनता है।
- **भू-राजनीतिक कारक:** पाकिस्तान के कारण बलूचिस्तान में **उग्रवाद और अलगाववादी प्रवृत्तियों** का कारण **विदेशी समर्थन** है, तथा **अफगानिस्तान में अस्थिरता और ईरान** के कुछ आतंकवादी समूहों को इसके लिये उत्तरदायी कारक बताया है।

बलूचिस्तान मुद्दे पर भारत का रुख क्या है?

- **भारत का सतर्क दृष्टिकोण: भारत** ने **बलूचिस्तान के मामलों** में अपनी संलिप्तता से इनकार किया है और बलूच आतंकवादियों को समर्थन देने के **पाकिस्तान के आरोपों को खारिज किया** है। **भारत ने पाकिस्तान से** दूसरों पर दोषारोपण करने के बजाय **अपने आंतरिक मुद्दों का निवारण करने का आग्रह किया है।**
- **कूटनीतिक रुख:** बलूचिस्तान पर भारत का रुख **भू-राजनीतिक विचारों, क्षेत्रीय स्थिरता** और पाकिस्तान के साथ उसके जटिल संबंधों से प्रभावित है। **भारत** अपने **लोकतांत्रिक और पंथनिरपेक्ष मूल्यों के अनुरूप** बलूचिस्तान में **अल्पसंख्यक अधिकारों और संबंधित चिंताओं को उजागर करता रहता है।**
  - **वर्ष 2016** में, प्रधानमंत्री ने अपने **स्वतंत्रता दिवस भाषण** में **बलूचिस्तान की मानवाधिकार स्थिति** का मुद्दा उठाया था।
- **क्षेत्रीय स्थिरता:** बलूचिस्तान में अशांति और **चीन की CPEC में भागीदारी के कारण** दक्षिण एशिया में सुरक्षा चुनौतियाँ उत्पन्न हो रही हैं।
  - भारत अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों के अंतर्गत बलूच अधिकारों का समर्थन करते हुए अपने सामरिक हितों में संतुलन बनाए रखता है।

निष्कर्ष

बलूचिस्तान का मुद्दा पूर्व से निरंतर बनी समस्याओं, आर्थिक शोषण और शासन विषयक हाशियाकरण से उत्पन्न हुआ है। पाकिस्तान का सैन्य दृष्टिकोण अप्रभावी रहा है, जिससे राजनीतिक सुधारों और उचित संसाधन वितरण की आवश्यकता उजागर हुई है। भारत क्षेत्रीय सुरक्षा प्रभाव को ध्यान में रखते हुए इस स्थिति को रणनीतिक रूप से देखता है।

दृष्टि मेन्स प्रश्न:

प्रश्न. बलूचिस्तान में उग्रवाद को बढ़ावा देने वाले ऐतिहासिक और भू-राजनीतिक कारकों की विवेचना कीजिये। यह स्थिति क्षेत्रीय स्थिरता को किस प्रकार प्रभावित करती है, और भारत का रणनीतिक दृष्टिकोण क्या होना चाहिये?

अमेरिका और भारत की सॉफ्ट पावर

चर्चा में क्यों?

राष्ट्रपति ट्रंप प्रशासन के तहत "अमेरिका फर्स्ट" एजेंडे से प्रेरित हाल के नीतिगत परिवर्तनों के कारण **अमेरिका की सॉफ्ट पावर में कमी आई है**, जिससे विश्व में उसका प्रभाव और रणनीतिक प्रभुत्व कम हो गया है।

सॉफ्ट पावर क्या है?

- राजनीति विज्ञानी **जोसेफ नाई** के अनुसार **हार्ड पावर का प्रयोग करने के स्थान पर आकर्षण और अनुनय** के माध्यम से **दूसरों की प्राथमिकताओं को आकार देने की क्षमता सॉफ्ट पावर** है।
  - इसके अंतर्गत वैश्विक मामलों को प्रभावित करने के लिये **संस्कृति, मूल्यों और कूटनीति का प्रयोग** शामिल है।
- **हार्ड पावर** से तात्पर्य किसी राष्ट्र की **सैन्य बल, आर्थिक प्रतिबंध** और **दबाव के अन्य रूपों** सहित **बल प्रयोग के माध्यम से दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता से है।**
  - एक सफल राज्य **हार्ड और सॉफ्ट पावर, तात्कालिक लक्ष्यों के लिये बल प्रयोग** और अपने दीर्घकालिक दृष्टिकोण और प्राथमिकताओं को आकार देने के लिये प्रभाव के बीच संतुलन बनाए रखता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- उदाहरण के लिये: अमेरिका सैन्य हस्तक्षेप में हार्ड पावर और कूटनीति और सांस्कृतिक पहुँच के माध्यम से सॉफ्ट पावर का इस्तेमाल करता है। चीन दोनों का मिश्रण करता है जिसमें सैन्य मुखरता और प्रभाव का विस्तार करने के लिये BRI जैसी पहल का उपयोग करता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका की सॉफ्ट पावर में हुई कमी के क्या कारण हैं?

- **कमज़ोर होते गठबंधन: वैश्विक संघर्षों (जैसे रूस-यूक्रेन)** में एकपक्षीय कार्रवाई, **उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (NATO)** और **AUKUS** की आलोचना, और जापान तथा कनाडा जैसे **सहयोगियों पर बदलती नीतियों से अमेरिका की साख प्रभावित** हुई है।
  - **गाजा संघर्ष में इज़रायल को अमेरिका के पुरज़ोर समर्थन** से **ग्लोबल साउथ और नॉर्थ एशिया** के साथ उसके संबंध तनावपूर्ण हो गए हैं।
    - उदाहरण के लिये, दक्षिण अफ्रीका ने कथित नरसंहार को लेकर **अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय** में इज़रायल पर मुकदमा दायर किया है।
- **मानवीय सहभागिता में कमी: USAID** के वित्तपोषण में भारी कटौती (कार्यक्रमों के 17% तक) और US इंस्टीट्यूट ऑफ पीस और वॉयस ऑफ अमेरिका जैसे **संस्थानों के समापन होने से कूटनीति और विकास में अमेरिकी प्रभाव कम हो गया है।**
  - अमेरिका द्वारा **विविधता, समानता और समावेश (DEI) नीतियों को अस्वीकार करने से लोकतंत्र, समान प्रतिनिधित्व और धार्मिक स्वतंत्रता** के लिये उसके वैश्विक समर्थन को संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है।
- **अस्थिर व्यापार और आव्रजन नीतियाँ: "पारस्परिक टैरिफ"** सहित संरक्षणवाद की ओर अमेरिका के झुकाव से आर्थिक विश्वसनीयता और कनाडा, मैक्सिको, ऑस्ट्रेलिया तथा भारत के साथ व्यापार संबंधों के लिये जोखिम उत्पन्न होते हैं।
  - इसी प्रकार की एक नीति, **वर्ष 1930 के स्मूट-हॉले टैरिफ**, से **महामंदी के दौरान अमेरिकी अर्थव्यवस्था की स्थिति और अधिक प्रभावित हुई थी।**
  - व्यापक स्तर पर निर्वासन, **वैध प्रवास पर प्रतिबंध, H-1B** और **ग्रीन कार्ड धारकों पर कड़ी जाँच,** तथा **जन्मसिद्ध नागरिकता पर प्रतिबंध** से अवसरों और विविधता के देश के रूप में अमेरिका की छवि धूमिल होती है।
- **उच्च शिक्षा में छात्रों का अरुचिकर होना: छात्र विरोधों पर दमन, विदेशी छात्रों का निर्वासन,** तथा **विश्वविद्यालयों के लिये वित्त पोषण में कटौती के कारण** अंतर्राष्ट्रीय नामांकन कम हो रहे हैं, जिससे अमेरिकी सॉफ्ट पावर का एक प्रमुख स्तंभ प्रभावित हो रहा है।

विदेशी संबंधों में पारस्परिकता के प्रति भारत का दृष्टिकोण

- **गुजराल सिद्धांत** में भारत की प्रबलता को इसकी **क्षेत्रीय स्थिरता** से जोड़ते हुए **भारत के विदेशी संबंधों को निर्देशित करने वाले पाँच सिद्धांतों** को रेखांकित किया गया है।
- इसका एक प्रमुख सिद्धांत, बांग्लादेश, भूटान, मालदीव, नेपाल और श्रीलंका जैसे लघु पड़ोसी देशों को **पारस्परिकता की अपेक्षा किये बिना एकपक्षीय रियायतें प्रदान कर मैत्रीपूर्ण संबंधों को प्राथमिकता देना,** तथा संबद्ध क्षेत्र में **सद्भावना और विश्वास** को बढ़ावा देना है।

भारत की सॉफ्ट पावर के प्रमुख तत्त्व क्या हैं?

- **सांस्कृतिक प्रभाव: योग, आयुर्वेद,** बॉलीवुड, भारतीय व्यंजन और **हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म जैसी आध्यात्मिक परंपराएँ** भारत के वैश्विक आकर्षण को बढ़ाती हैं।
- **ऐतिहासिक एवं प्रवासी संबंध:** भारत विशेष रूप से एशिया और अफ्रीका के साथ सुदृढ़ सांस्कृतिक संबंध साझा करता है जहाँ **35 मिलियन की संख्या वाला वैश्विक भारतीय प्रवासी वर्ग** व्यापार, राजनीति और सांस्कृतिक प्रभाव का सुदृढ़ीकरण करता है।
- **लोकतंत्र और वैश्विक नेतृत्व:** भारत का लोकतांत्रिक मॉडल विकासशील देशों को प्रेरित करता है। **अहिंसा के गांधीवादी आदर्शों** ने **नेल्सन मंडेला** और **मार्टिन लूथर किंग जूनियर** जैसे वैश्विक नेताओं को प्रभावित किया।
  - भारत ने **गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM)** का नेतृत्व किया है और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर ग्लोबल साउथ का समर्थन किया।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **आर्थिक और तकनीकी विकास:** **सूचना प्रौद्योगिकी, डिजिटल भुगतान (जैसे UPI और आधार) और फार्मास्यूटिकल्स** में अग्रणी देश के रूप में, भारत ने **वैक्सीन कूटनीति** के माध्यम से टीके और औषधि प्रदान कर **कोविड-19** महामारी के दौरान महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **शिक्षा और ज्ञान का आदान-प्रदान:** भारत विश्व भर से छात्रों को **IIT और IIM** जैसे शीर्ष संस्थानों की ओर आकर्षित करता है।
  - **ITEC जैसे छात्रवृत्ति और प्रशिक्षण कार्यक्रमों** के माध्यम से भारत कई विकासशील देशों को कौशल और ज्ञान निर्माण में मदद करता है।
- **भारत की मानवीय सहायता:** भारत वैश्विक आपदा राहत और वित्तीय सहायता प्रदान करता है, जिसमें **ऑपरेशन ब्रह्मा (2025 म्याँमार-थाईलैंड भूकंप)** और **श्रीलंका** को वित्तीय सहायता शामिल है।
  - यह **CDRI** को समर्थन प्रदान करता है तथा विकासशील देशों में बुनियादी ढाँचे और क्षमता निर्माण में सहायता करता है।
- **बहुपक्षीय कूटनीति:** भारत **संयुक्त राष्ट्र, WHO, BRICS** और **G-20** में सक्रिय भूमिका निभाता है, भारत **वैश्विक मामलों में एकपक्षीय कार्यवाही की बजाय बहुपक्षीय समाधान को बढ़ावा** देता है।

भारत की सॉफ्ट पावर कूटनीति के समक्ष क्या चुनौतियाँ हैं?

- **संस्थागत अंतराल: विदेश मामलों की समिति की रिपोर्ट (वर्ष 2022-23)** के अनुसार, **ICCR, आयुष और पर्यटन** जैसी संस्थाओं के बीच **अपर्याप्त समन्वय** के कारण भारत के सॉफ्ट पावर प्रयास **खंडित** बने हुए हैं। **ICCR के पास स्पष्ट अधिदेश और रणनीतिक दिशा का अभाव** है, जबकि **विदेश मंत्रालय ने अभी तक भारत की सॉफ्ट पावर परिसंपत्तियों का व्यापक मूल्यांकन नहीं** किया है।
- **सीमित बहुपक्षीय कूटनीति:** भारत को अपनी सॉफ्ट पावर कूटनीति को आगे बढ़ाने के लिये **यूनेस्को, BRICS, SAARC और G-20** जैसे **बहुपक्षीय मंचों का अभी तक पूरी तरह से लाभ नहीं** मिला है।
  - इसके अलावा, **ट्रैक 2 (गैर-सरकारी) और ट्रैक 3 (लोगों से लोगों के बीच) कूटनीति में सीमित भागीदारी** ने इसके वैश्विक प्रभाव को सीमित कर दिया है।
- **सीमित वित्तीय संसाधन:** चीन और अमेरिका जैसे देशों के विपरीत, भारत **सॉफ्ट पावर पहलों के लिये न्यूनतम धन** आवंटित करता है।
  - यह वित्तीय बाधा **भारत** की वैश्विक स्तर पर अपनी सांस्कृतिक और कूटनीतिक पहुँच बढ़ाने की **क्षमता को सीमित** करती है।
- **औपचारिक अध्ययन का अभाव:** सॉफ्ट पावर के प्रति भारत का दृष्टिकोण **अनियमित** बना हुआ है, क्योंकि इसमें वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं पर **औपचारिक अध्ययन** का अभाव है।
  - जबकि **चीन (कन्फ्यूशियस इंस्टीट्यूट्स), UK (ब्रिटिश काउंसिल), और फ्राँस (एलायंस फ्राँसेज़)** जैसे देशों ने व्यवस्थित रूप से अपनी संस्कृति और भाषाओं को बढ़ावा दिया है, भारत ने अभी तक सांस्कृतिक कूटनीति के लिये एक संरचित मॉडल नहीं अपनाया है।
- **अप्रयुक्त प्रवासी:** विश्व के सबसे बड़े प्रवासी समुदायों में से एक होने के बावजूद, भारत में अंतर्राष्ट्रीय धारणाओं को आकार देने में प्रवासी भारतीयों को प्रभावी रूप से शामिल करने के लिये एक **संरचित तंत्र का अभाव** है।
  - यद्यपि **प्रवासी भारतीय दिवस** और **डायस्पोरा पुरस्कार** मौजूद हैं, फिर भी उन्हें **विदेश नीति में एकीकृत करने** के लिये और अधिक कार्य किये जाने की आवश्यकता है।
- **सार्वजनिक कूटनीति के प्रति निष्क्रिय दृष्टिकोण:** यद्यपि भारत को अपनी संस्कृति के माध्यम से स्वाभाविक रूप से सॉफ्ट पावर का आकर्षण प्राप्त है, लेकिन इसने **इन लाभों को सक्रिय रूप से रणनीतिक प्रभाव में परिवर्तित नहीं** किया है।
  - चीन के विपरीत, जो वैश्विक मीडिया और शिक्षा में सक्रिय रूप से निवेश करता है, भारत को **अभी भी अपनी सांस्कृतिक और कूटनीतिक ताकत का पूरी तरह से लाभ उठाना शेष** है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

आगे की राह

- **सॉफ्ट पावर पर व्यापक नीति:** भारत को **सांस्कृतिक कूटनीति** के लिये एक **संरचित राष्ट्रीय रणनीति** विकसित करनी चाहिये और वैश्विक पहुंच बढ़ाने के लिये **ट्रैक 2 और ट्रैक 3 कूटनीति को अपनी विदेश नीति में औपचारिक रूप से एकीकृत** करना चाहिये।
- **संस्थाओं का पुनर्गठन:** भारत को **ICCR (वीना सीकरी समिति)** का पुनर्गठन करना चाहिये, **PPP** के माध्यम से **सांस्कृतिक कूटनीति** को बढ़ाना चाहिये, **वैश्विक मीडिया उपस्थिति** (जैसे, **दूरदर्शन** इंटरनेशनल) का विस्तार करना चाहिये, और **ICCR, दूतावासों और विदेश मंत्रालय** के बीच समन्वय में सुधार करना चाहिये।
  - विश्व स्तर पर **योग, आयुर्वेद, हिंदी, शास्त्रीय नृत्य और व्यंजनों** को बढ़ावा देने के लिये एक समर्पित **सांस्कृतिक कूटनीति टास्क फोर्स** बनाई जानी चाहिये।
- **बहुपक्षीय मंचों का लाभ उठाना:** भारत को **यूनेस्को परियोजनाओं में भागीदारी बढ़ानी चाहिये, विदेशों में सांस्कृतिक केंद्रों का विस्तार करना चाहिये, सांस्कृतिक कूटनीति के लिये वैश्विक शिखर सम्मेलनों का उपयोग करना चाहिये,** तथा अंतर्राष्ट्रीय साझेदारी को मज़बूत करने के लिये द्विपक्षीय सांस्कृतिक समझौतों को मज़बूत करना चाहिये।
- **अंतर्राष्ट्रीय सर्वोत्तम प्रथाओं का अध्ययन:** भारत को **वैश्विक सॉफ्ट पावर रणनीतियों का औपचारिक अध्ययन** करना चाहिये और सांस्कृतिक कूटनीति को मज़बूत करने के लिये चीन, ब्रिटेन, फ्राँस और जापान के कार्यक्रमों के समान सफल मॉडल अपनाना चाहिये।
- **प्रवासी एवं शैक्षिक कूटनीति:** वैश्विक छात्रों को आकर्षित करने के लिये **ITEC और भारत में अध्ययन कार्यक्रमों** के तहत छात्रवृत्ति का विस्तार करते हुए **वकालत, व्यापार और नीति निर्माण में भारतीय प्रवासियों** को शामिल करने के लिये एक **संरचित ढाँचा** स्थापित करना।

निष्कर्ष

अमेरिकी सॉफ्ट पावर में गिरावट **सैन्य शक्ति और सांस्कृतिक प्रभाव के बीच संतुलन** की आवश्यकता को रेखांकित करती है। भारत **बहुध्रुवीय विश्व** में **सांस्कृतिक कूटनीति और रणनीतिक साझेदारी** को मज़बूत करके अपनी वैश्विक स्थिति को बढ़ाने के लिये **सॉफ्ट और हार्ड पावर के रणनीतिक मिश्रण 'स्मार्ट पावर'** का लाभ उठा सकता है।

दृष्टि मेन्स प्रश्न:

प्रश्न. "सॉफ्ट पावर किसी राष्ट्र के वैश्विक प्रभाव का एक अनिवार्य घटक है, जो उसकी हार्ड पावर क्षमताओं का पूरक है।" भारत की विदेश नीति में सॉफ्ट पावर के महत्त्व पर चर्चा कीजिये और इसकी वैश्विक पहुँच बढ़ाने के उपाय सुझाइए।

6th बिम्सटेक शिखर सम्मेलन

चर्चा में क्यों?

भारतीय **प्रधानमंत्री ने थाईलैंड की अध्यक्षता** में आयोजित **छठे बिम्सटेक शिखर सम्मेलन** में भाग लिया।

- शिखर सम्मेलन का विषय था **"बिम्सटेक: समृद्ध, लचीला और खुला"**, जिसका ध्यान क्षेत्रीय सहयोग को मज़बूत करने और प्रमुख चुनौतियों का समाधान करने पर था।
- इसके अलावा, शिखर सम्मेलन के दौरान भारत और थाईलैंड ने अपने द्विपक्षीय संबंधों को **रणनीतिक साझेदारी** तक बढ़ाने की घोषणा की।

छठे बिम्सटेक शिखर सम्मेलन की मुख्य बातें क्या हैं?

- **विज़न 2030 दस्तावेज़:** शिखर सम्मेलन में **शिखर सम्मेलन घोषणा और बैंकॉक विज़न 2030 को अपनाया गया, जिसमें आर्थिक एकीकरण, वैश्विक चुनौतियों के प्रति लचीलापन** और **बुनियादी ढाँचे और प्रौद्योगिकी में सहयोग** पर ध्यान केंद्रित करते हुए **क्षेत्रीय समृद्धि** के लिये एक रोडमैप की रूपरेखा तैयार की गई।
- **भारत द्वारा घोषित प्रमुख कार्य योजना : भारत के प्रधानमंत्री** ने संपर्क, व्यापार, आपदा प्रबंधन और तकनीकी एकीकरण के माध्यम से क्षेत्रीय सहयोग बढ़ाने के लिये' **21 सूत्री कार्य योजना** प्रस्तावित की। इसमें शामिल हैं:
  - **बिम्सटेक उत्कृष्टता केंद्र: भारत ने आपदा प्रबंधन, सतत समुद्री परिवहन, पारंपरिक चिकित्सा** और **कृषि में अनुसंधान और प्रशिक्षण** पर ध्यान केंद्रित करते हुए भारत में **बिम्सटेक उत्कृष्टता केंद्रों की** स्थापना की घोषणा की।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- इसके अलावा, **भारत के UPI को बिम्सटेक भुगतान प्रणालियों से जोड़ने** तथा बेंगलुरु में बिम्सटेक ऊर्जा केंद्र को शुरू करने की पहल भी की गई।
  - इसने बिम्सटेक में शासन और सेवा वितरण को बढ़ाने के लिये **डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (DPI) पर एक पायलट अध्ययन का भी प्रस्ताव रखा।**
- **बोधि कार्यक्रम:** भारत ने बिम्सटेक देशों के विभिन्न पेशेवरों के लिये **कौशल विकास, प्रशिक्षण, छात्रवृत्ति और क्षमता निर्माण** प्रदान करने के लिये **बोधि कार्यक्रम (मानव संसाधन अवसंरचना के संगठित विकास के लिये बिम्सटेक)** की शुरुआत की।
- **कैंसर देखभाल क्षमता निर्माण:** भारत ने बिम्सटेक क्षेत्र में **कैंसर देखभाल** के लिये **क्षमता निर्माण कार्यक्रम का प्रस्ताव रखा।**
- **वाणिज्य मंडल एवं व्यवसाय शिखर सम्मेलन:** सदस्य देशों के बीच **क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देने के लिये** बिम्सटेक वाणिज्य मंडल की स्थापना और वार्षिक **बिम्सटेक व्यवसाय शिखर सम्मेलन की मेज़बानी का** प्रस्ताव किया गया।
- **लोगों से लोगों के बीच संबंध:** भारत ने सांस्कृतिक और लोगों से लोगों के बीच संबंधों को मज़बूत करने के लिये पहल की घोषणा की, जिसमें **बिम्सटेक एथलेटिक्स मीट (2025), प्रथम बिम्सटेक खेल (2027),** समूह की 30वीं वर्षगाँठ, बिम्सटेक पारंपरिक संगीत महोत्सव, युवा नेताओं का शिखर सम्मेलन और युवा जुड़ाव के लिये **हैकाथॉन,** सांस्कृतिक सहयोग को गहरा करने के लिये **युवा पेशेवर आगंतुक कार्यक्रम शामिल हैं।**

भारत और थाईलैंड द्वारा घोषित रणनीतिक साझेदारी के प्रमुख क्षेत्र कौन से हैं?

- **समुद्री सहयोग: आसियान आउटलुक ऑन इंडो-पैसिफिक (AOIP)** और भारत के **हिंद-प्रशांत महासागर पहल (IPOI)** जैसे ढाँचे के माध्यम से **इंडो-पैसिफिक** में सहयोग, जिसमें समुद्री सुरक्षा, नौसैनिक आदान-प्रदान और **भारत-म्याँमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग** के माध्यम से क्षेत्रीय संपर्क पर ज़ोर दिया जाएगा।
- **रक्षा और सुरक्षा: रक्षा वार्ता** का विस्तार, **मैत्री अभ्यास** जैसे संयुक्त सैन्य अभ्यास, तथा **आतंकवाद-रोधी, साइबर सुरक्षा** और खुफिया जानकारी साझा करने जैसे क्षेत्रों में सहयोग।
- **व्यापार और आर्थिक सहभागिता: द्विपक्षीय व्यापार** को बढ़ावा देने, **आपूर्ति शृंखला लचीलापन** बढ़ाने, **निजी क्षेत्र के निवेश** को बढ़ावा देने और **मुक्त व्यापार समझौते (FTA)** के उन्नयन और **डिजिटल अर्थव्यवस्था** में सहयोग की संभावनाएँ तलाशने की पहल।
- **सांस्कृतिक और जन संबंध:** शैक्षिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देना, **बौद्ध सांस्कृतिक संबंधों** का उत्सव मनाना, पर्यटन को बढ़ावा देना और थाईलैंड में भारतीय प्रवासियों के साथ सहभागिता बढ़ाई जाएगी।
- **विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार: नवीकरणीय ऊर्जा,** अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, **डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना** के विकास और स्वास्थ्य सेवा और **जैव प्रौद्योगिकी** में नवाचार जैसे क्षेत्रों में संयुक्त सहयोग किया जाएगा।
- **क्षेत्रीय और बहुपक्षीय सहयोग:** नियम-आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को बढ़ावा देने के लिये **BIMSTEC, दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ (ASEAN), इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन (IORA)** और **संयुक्त राष्ट्र (UN)** जैसे क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों में समन्वित प्रयास किये जाएंगे।

बिम्सटेक क्या है?

- **बिम्सटेक (बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिये बंगाल की खाड़ी पहल) के बारे में:** बिम्सटेक (बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिये बंगाल की खाड़ी पहल) एक क्षेत्रीय संगठन है, जिसमें बांग्लादेश, भूटान, भारत, म्यांमार, नेपाल, श्रीलंका और थाईलैंड जैसे **7 सदस्य देश** शामिल हैं।
  - **उद्देश्य: इसका उद्देश्य बंगाल की खाड़ी क्षेत्र के** देशों के बीच बहुमुखी **तकनीकी और आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देना है।**
- **उत्पत्ति:** इसकी **स्थापना वर्ष 1997 में बैंकॉक घोषणा को** अपनाने के साथ हुई थी।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- शुरुआत में इसमें 4 सदस्य शामिल थे, इसे **BIST-EC** (बांग्लादेश, भारत, श्रीलंका और थाईलैंड आर्थिक सहयोग) के नाम से जाना जाता था। वर्ष 1997 में म्यांमार इसमें शामिल हो गया और समूह का नाम बदलकर **BIMST-EC कर दिया गया।**
- **2004 में नेपाल** और **भूटान को** इसमें शामिल करने के बाद इसका नाम बदलकर **बिम्सटेक कर दिया गया।**

- **महत्त्व:**
  - **1.7 बिलियन (विश्व की कुल जनसंख्या का 22%)** की आबादी वाले बिम्सटेक देशों की **संयुक्त GDP लगभग 5.2 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर (2023)** है।

बिम्सटेक का महत्त्व क्या है?

- **एक्ट ईस्ट नीति के साथ संरेखण:** बिम्सटेक **भारत की एक्ट ईस्ट नीति के साथ संरेखित** है, जो **हिंद महासागर और भारत-प्रशांत क्षेत्रों** में **भारत के व्यापार और सुरक्षा महत्त्व को बढ़ाता है।**
- **SAARC का विकल्प:** यह **क्षेत्रीय सहयोग के लिये एक उचित मंच** के रूप में उभरा है, जो दक्षिण एशिया में **SAARC के लिये एक व्यवहार्य विकल्प** प्रस्तुत करता है।
- **क्षेत्रीय सहयोग मंच:** यह **दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के बीच** विशेष रूप से **सुरक्षा मामलों** और **मानवीय सहायता और आपदा राहत (HADR)** प्रबंधन में **गहन सहयोग को** बढ़ावा देने के लिये एक प्रमुख मंच के रूप में कार्य करता है।
  - **यह बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI)** के माध्यम से **चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने** के लिये क्षेत्रीय सहयोग के एक मंच के रूप में भी कार्य करता है।
- **अमूर्त संस्कृति को बढ़ावा देना: नालंदा विश्वविद्यालय में बंगाल की खाड़ी अध्ययन केंद्र (CBS)** जैसी भारत की पहल का उद्देश्य क्षेत्र की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करना है, जबकि बिम्सटेक **क्षेत्रीय सहयोग और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है।**

निष्कर्ष

छठे **बिम्सटेक शिखर सम्मेलन** ने आर्थिक एकीकरण, आपदा प्रतिरोधक क्षमता और सांस्कृतिक संबंधों पर ध्यान केंद्रित करते हुए क्षेत्रीय सहयोग को आगे बढ़ाया। **उत्कृष्टता केंद्रों** और **कौशल विकास कार्यक्रमों जैसी पहलों के माध्यम से भारत का नेतृत्व** इस क्षेत्र की भविष्य की संभावनाओं को सुदृढ़ करता है। चूँकि बिम्सटेक-2027 में अपनी 30वीं वर्षगाँठ मनाएगा, इसलिये शिखर सम्मेलन के परिणाम बंगाल की खाड़ी क्षेत्र को और अधिक **समृद्ध** एवं **समुत्थानशील बनाने में सहायक होंगे।**

दृष्टि मेन्स प्रश्न:

प्रश्न. बिम्सटेक अपने सदस्य देशों के बीच आर्थिक और तकनीकी सहयोग के लक्ष्यों को प्राप्त करने में कितना सफल रहा है?

शांति स्थापक के रूप में ग्लोबल साउथ

चर्चा में क्यों?

हाल की कूटनीतिक सफलताएँ, जिनमें **रियाद द्वारा मध्यस्थता से किये गए युद्धविराम समझौते** भी शामिल हैं, **ग्लोबल साउथ** की एक विश्वसनीय शांति स्थापक के रूप में बढ़ती भूमिका को उजागर करती हैं, जिसमें **संयुक्त राष्ट्र** समर्थित मिशन यूक्रेन में पश्चिमी नेतृत्व वाली पहलों के लिये **एक तटस्थ विकल्प है।**

ग्लोबल साउथ क्या है?

- **"ग्लोबल साउथ"** अमेरिकी विद्वान **कार्ल ओग्लेसबी** द्वारा **वर्ष 1969** में **सृष्ट पद** है, जिसका प्रयोग राजनीतिक और आर्थिक संदोहन के माध्यम से **ग्लोबल नॉर्थ** के **"प्रभुत्व"** से घिरे देशों के समूह को दर्शाने के लिये किया गया था।
- **"ग्लोबल साउथ"** वाक्यांश मुख्य रूप से **लैटिन अमेरिका, एशिया, अफ्रीका और ओशिनिया** के क्षेत्रों को संदर्भित करता है जो **ब्रांट रेखा** द्वारा अलग किये गए हैं।
  - यह **यूरोप और उत्तरी अमेरिका** के बाह्य क्षेत्रों को दर्शाता है, जो अधिकतर निम्न आय वाले और सामान्यत: राजनीतिक या सांस्कृतिक रूप से हाशिये पर हैं।
  - **चीन और भारत** ग्लोबल साउथ के अग्रणी समर्थक हैं।
- **ब्रांट लाइन प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद** के आधार पर, संपन्न नॉर्थ और निर्धन साउथ के बीच **विश्व के आर्थिक विभाजन** का दृश्यात्मक प्रतिनिधित्व है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- इसे 1970 के दशक में **विली ब्रांट** द्वारा प्रस्तावित किया गया था और यह लगभग **30° उत्तरी** अक्षांश पर विश्व को घेरे हुए है।

शांति स्थापक के रूप में ग्लोबल साउथ की क्या भूमिका हो सकती है?

- **तटस्थ मध्यस्थ:** ग्लोबल साउथ को, अपनी गुटनिरपेक्षता की परंपरा के कारण, प्राय: एक **विश्वसनीय और निष्पक्ष मध्यस्थ** के रूप में देखा जाता है।
  - **उदाहरण: रूस-यूक्रेन संघर्ष** में भारत के संतुलित कूटनीतिक रुख ने उसे दोनों पक्षों के साथ वार्ता करने में सक्षम बनाया है।
- **शांति स्थापना योगदानकर्त्ता:** ग्लोबल साउथ के देश **संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना मिशनों** में सबसे बड़े योगदानकर्त्ताओं में से हैं, जो संघर्ष-पश्चात क्षेत्रों में स्थिरता प्रदान करते हैं।
  - **उदाहरण:** कांगो में भारत की उपस्थिति और **सोमालिया में अफ्रीकी संघ का शांति अभियान।**
- **कूटनीतिक संयोजक:** ग्लोबल साउथ मंच पश्चिमी-प्रभुत्व वाली संस्थाओं से स्वतंत्र होकर **संवाद और तनाव कम करने के लिये वैकल्पिक मंच** के रूप में कार्य करते हैं।
  - **उदाहरण:** BRICS राष्ट्रों द्वारा यूक्रेन युद्ध में युद्ध विराम और वार्ता का आह्वान।
- **न्याय के लिये नैतिक आवाज़:** साझी **औपनिवेशिक विरासत** ग्लोबल साउथ के देशों को **संप्रभुता, समानता और गैर-हस्तक्षेप की वकालत करने के लिये मानक वैधता** प्रदान करती है। (अफ्रीकी देश वैश्विक शासन में संप्रभु समानता पर ज़ोर देते हैं)।
- **समावेशी शांति निर्माण: लैंगिक-संतुलित शांति पहल** को बढ़ावा देकर, ग्लोबल साउथ अधिक समावेशी और सतत् शांति प्रक्रियाओं में योगदान देता है।
  - **उदाहरण:** भारत द्वारा **लाइबेरिया में एक पूर्ण महिला संयुक्त राष्ट्र पुलिस इकाई** की तैनाती।

शांति रक्षक के रूप में ग्लोबल साउथ के लिये विवाद के प्रमुख क्षेत्र क्या हैं?

- **नाजुक युद्ध विराम गतिशीलता:** ग्लोबल साउथ के नेतृत्व वाले मिशन के लिये पहले से मौजूद और लागू करने योग्य युद्धविराम की आवश्यकता होती है, जिसके बिना शांति प्रयासों के सक्रिय संघर्ष क्षेत्रों में उलझने का जोखिम हो सकता है।
- **प्रादेशिक सीमाओं पर अस्पष्टता:** विवादित सीमाओं पर आम सहमति का अभाव, विशेष रूप से रूस-यूक्रेन जैसे संघर्षों में, परिचालन तैनाती को जटिल बनाता है और नए सिरे से शत्रुता का खतरा बढ़ाता है।
- **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के अधिदेश पर निर्भरता:** अपनी नैतिक स्थिति के बावजूद, ग्लोबल साउथ देशों को कानूनी अधिकार और वैश्विक वैधता हासिल करने के लिये संयुक्त राष्ट्र के अधिदेश की आवश्यकता है - जो कि ध्रुवीकृत सुरक्षा परिषद में चुनौतीपूर्ण है।
  - तटस्थता की वकालत करते हुए भी, इन मिशनों को **अभी भी पश्चिमी सैन्य, वित्तीय और तकनीकी सहायता की आवश्यकता है,** जो स्वतंत्रता के दावों को जटिल बना सकती है।
- **क्षमता और समन्वय संबंधी बाधाएँ:** शांति स्थापना के अनुभव में समृद्ध होने के बावजूद, कई ग्लोबल साउथ देशों को **समन्वय, प्रशिक्षण, वित्तपोषण और तीव्र तैनाती क्षमता में चुनौतियों का सामना** करना पड़ रहा है।

निष्कर्ष

यूक्रेन संघर्ष ग्लोबल साउथ के लिये अपनी कूटनीतिक परिपक्वता दिखाने का करने का एक महत्त्वपूर्ण अवसर प्रस्तुत करता है। संयुक्त राष्ट्र समर्थित शांति मिशन का नेतृत्व करने से इसकी विश्वसनीयता और वैश्विक प्रभाव बढ़ेगा। भारत के लिये, **यह तटस्थता को नेतृत्व में परिवर्तित करने का अवसर प्रदान करता है।** इस अवसर का लाभ उठाने से आने वाले दशकों में वैश्विक शक्ति गतिशीलता को फिर से परिभाषित किया जा सकता है।

दृष्टि मेन्स प्रश्न:

प्रश्न. अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति में शक्ति गतिशीलता और मानदंडों को पुन: निर्धारित करने के लिये ग्लोबल साउथ के नेतृत्व वाले मिशन की क्षमता का आकलन कीजिये।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

वैश्विकवाद से क्षेत्रवाद की ओर परिवर्तन

चर्चा में क्यों?

वैश्विक व्यवस्था सार्वभौमिक वैश्विकवाद से हित-संचालित **क्षेत्रवाद और लघुपक्षवाद** की ओर परिवर्तित हो रही है, क्योंकि राष्ट्र संयुक्त राष्ट्र जैसी अप्रभावी बहुपक्षीय संस्थाओं की तुलना में छोटे गठबंधनों को अधिक प्राथमिकता दे रहे हैं।

विश्व वैश्विकवाद से क्षेत्रवाद की ओर कैसे परिवर्तित हो रहा है?

- **वैश्विक संघर्ष और संस्थागत निष्क्रियता:** **रूस-यूक्रेन संघर्ष** और **इज़रायल-गाज़ा संकट** जैसे चल रहे संघर्षों ने वैश्विक शासन संरचनाओं की सीमित प्रभावकारिता को उजागर कर दिया है।
  - **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद** में गतिरोध, जो प्राय: महाशक्तियों के बीच प्रतिद्वंद्विता के कारण होता है, ने बहुपक्षीय संघर्ष समाधान में विश्वास को कम कर दिया है।
- **क्षेत्रवाद और लघुपक्षवाद का उदय:** क्षेत्रवाद की पहचान भौगोलिक और सांस्कृतिक रूप से संरेखित साझेदारियों से होती है, जबकि लघुपक्षवाद में केंद्रित सहयोग के लिये **क्वाड** और **I2U2** जैसे छोटे, हित-आधारित समूह शामिल होते हैं।
  - यूरोपीय संघ का विकास यूरोपीय आर्थिक समुदाय से हुआ है, तथा **आसियान**, सार्क, **बिम्सटेक** और **IORA** जैसी पहल क्षेत्रवाद को प्रतिबिंबित करती हैं, यद्यपि इनकी सफलता भिन्न-भिन्न रही है।
  - **क्वाड**, **ब्रिक्स** और **IMEC** जैसे उभरते लचीले गठबंधन सुरक्षा, प्रौद्योगिकी और बुनियादी ढाँचे जैसे क्षेत्रों में रणनीतिक स्वायत्तता, तीव्र निर्णय लेने और लक्षित सहयोग को बढ़ावा देते हैं।
- **राष्ट्रीय संप्रभुता की पुनर्स्थापना:** कोविड-19 महामारी ने वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला की कमज़ोरियों और असंगत वैक्सीन पहुँच को उजागर किया, जिससे इस विचार को बल मिला कि राष्ट्रीय तैयारी वैश्विक एकजुटता से बेहतर है।
  - देशों ने वैश्विक एकीकरण की तुलना में आत्मनिर्भरता, स्वास्थ्य संप्रभुता और आर्थिक लचीलेपन को प्राथमिकता देना शुरू कर दिया।
- **ऐतिहासिक मोहभंग:** भारत समेत विकासशील देशों ने **विश्व व्यापार संगठन**, **अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष** और **विश्व बैंक** जैसी वैश्विक संस्थाओं में असमान शक्ति गतिशीलता की आलोचना की है। सुधारों की कमी ने देशों को ब्रिक्स और AIIB जैसे वैकल्पिक प्लेटफार्मों की तलाश करने के लिये प्रेरित किया है।
- **भारत का रणनीतिक पुनर्मूल्यांकन:** भारत **बिम्सटेक** और **IORA** जैसी क्षेत्रीय पहलों में सक्रिय रूप से शामिल हो रहा है, साथ ही लघु-पक्षीय संबंधों को भी मज़बूत कर रहा है।
  - यह विदेश नीति में आदर्शवादी बहुपक्षवाद से लेकर हित-संचालित क्षेत्रीय सहयोग और रणनीतिक साझेदारी की ओर एक व्यावहारिक बदलाव को रेखांकित करता है।

क्षेत्रीय एकीकरण में भारत की भूमिका क्या है?

- **क्षेत्रीय संपर्क का आधार:** भारत दक्षिण एशिया में आर्थिक और भौतिक संपर्क में सुधार के लिये **BBIN (बांग्लादेश-भूटान-भारत-नेपाल)** और **कलादान मल्टी-मॉडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट** जैसे सीमा पार बुनियादी ढाँचे और व्यापार गलियारों को बढ़ावा देने में केंद्रीय भूमिका निभाता है।
- **सुरक्षा प्रदाता और मानवीय प्रत्युत्तरदाता:** **हिंद महासागर क्षेत्र** में नौसेना की उपस्थिति और **ऑपरेशन मैत्री (नेपाल)** तथा **ऑपरेशन ब्रह्मा (म्याँमार)** जैसे आपदा राहत मिशनों के माध्यम से एक सुरक्षा प्रदाता के रूप में भारत की भूमिका इसकी रणनीतिक विश्वसनीयता को मज़बूत करती है तथा क्षेत्रीय विश्वास को सुदृढ़ करती है।
- **व्यापार एवं निवेश केंद्र:** दक्षिण एशिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में, भारत पड़ोसी देशों के लिये व्यापार एवं निवेश केंद्र के रूप में कार्य करता है, तथा तरजीही व्यापार व्यवस्थाएँ प्रदान करता है और साथ ही ऋण एवं विकास सहायता प्रदान करता है।
  - वर्ष 2023 में, ASEAN के साथ भारत का व्यापार लगभग 101.9 बिलियन अमेरिकी डॉलर रहा, जो ASEAN के कुल व्यापार का 2.86% था।
- **साझा सांस्कृतिक और लोकतांत्रिक मूल्य:** भारत **अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन**, **नालंदा विश्वविद्यालय के पुनरुद्धार** और

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

संघर्षोत्तर लोकतंत्रों को समर्थन जैसी पहलों के माध्यम से साझा सांस्कृतिक और लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देता है, जिससे इसका सभ्यतागत प्रभुत्व प्रबलित होता है।

- **बौद्ध सर्किट और दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय** जैसी परियोजनाओं से क्षेत्रीय सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा मिलता है, आपसी समझ में विस्तार होता है और पड़ोसी देशों में भारत विरोधी बयानों का प्रत्युत्तर करने में मदद मिलती है।

भारत के क्षेत्रीय एकीकरण प्रयासों के समक्ष कौन-सी प्रमुख चुनौतियाँ हैं?

- **आधिपत्य की धारणा:** दक्षिण एशिया के छोटे **राष्ट्रों के अनुसार भारत के प्रभुत्व की प्रकृति मनमाना है,** जिसके कारण उनमें भारत के नेतृत्व वाली पहलों को अपनाने में अविश्वास और अनिच्छा जैसे कारक विद्यमान रहते हैं, जिससे क्षेत्रीय सहयोग की प्रभावशीलता सीमित हो जाती है।
- **द्विपक्षीय राजनीतिक तनाव:** पाकिस्तान के साथ निरंतर जारी कश्मीर विवाद और चीन के साथ अनसुलझे सीमा तनाव, जैसे कि वर्ष 2020 का गलवान घाटी गतिरोध, से भारत के क्षेत्रीय संबंधों में तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है।
  - ये संघर्ष प्राय: सैन्य टकराव और कूटनीतिक गतिरोध में परिणत होते हैं, जिससे सहयोगात्मक क्षेत्रीय विकास पहलों से ध्यान विचलित होता है।
  - निरंतर जारी इस विद्वेष और तनावपूर्ण संबंधों से SAARC का प्रभुत्व कम हुआ है और क्षेत्रीय बहुपक्षवाद में बाधा उत्पन्न हुई है।
- **आर्थिक क्षमताओं में विषमता:** दक्षिण एशिया की विशाल आर्थिक असमानताओं से नीतिगत संरेखण और न्यायसंगत एकीकरण में बाधा उत्पन्न होती है। अंतर-क्षेत्रीय व्यापार लगभग 5% पर बना हुआ है, जो ASEAN के 25% से बहुत कम है।
  - भारत-पाकिस्तान तनाव के कारण SAARC अवरुद्ध हुआ, जबकि BBIN जैसी पहल और भारत-नेपाल पंचेश्वर बहुउद्देशीय परियोजना जैसी परियोजनाओं में अभी भी काफी देरी हो रही है।
- **चीन की रणनीतिक दृढ़ स्थिति:** बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) और बुनियादी ढाँचा कूटनीति के माध्यम से दक्षिण एशिया में चीन की बढ़ती उपस्थिति भारत के क्षेत्रीय नेतृत्व के लिये एक रणनीतिक प्रतिबल है, जो भारत के एकीकरण एजेंडे को जटिल बना रही है।

आगे की राह

- **क्षेत्रीय संस्थाओं में सुधार और पुन: प्रवर्तित किया जाना:** भारत को **नियमित शिखर सम्मेलनों**, अधिक वित्त पोषण और कार्यात्मक सचिवालयों के माध्यम से **BIMSTEC और IORA** के संस्थागत पुनरोद्धार का नेतृत्व करना चाहिये और साथ ही व्यापार, ऊर्जा, आपदा प्रबंधन और डिजिटल कनेक्टिविटी में क्षेत्र-विशिष्ट सहयोग को बढ़ावा देना चाहिये।
- **उप-क्षेत्रीय साझेदारी का सुदृढ़ीकरण:** भारत को **BBIN** जैसे प्लेटफॉर्मों के माध्यम से साझेदारी में विस्तार करना चाहिये और विशेषकर SAARC में आम सहमति का अभाव होने की स्थिति में स्वास्थ्य, शिक्षा एवं हरित ऊर्जा पर केंद्रित कार्यात्मक मिनीलेटरल को बढ़ावा देना चाहिये।
- **क्षेत्रीय व्यापार और कनेक्टिविटी में सुधार:** सरलीकृत सीमा शुल्क, साझा मानकों और एकीकृत परिवहन और डिजिटल बुनियादी ढाँचे के माध्यम से व्यापार को बढ़ाने से आर्थिक निर्भरता और क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा मिल सकता है।
- **समावेशी सहभागिता को बढ़ावा देना:** बाह्य शक्तियों के बढ़ते प्रभाव का सामना करने के लिये, भारत को पारदर्शी विकास सहायता, सांस्कृतिक कूटनीति और नेबरहुड फर्स्ट नीति के तहत जन-केंद्रित पहलों के साथ नेतृत्व करना चाहिये।

दृष्टि मेन्स प्रश्न:

प्रश्न. क्षेत्रीय एकीकरण को बढ़ावा देने तथा अपने राष्ट्रीय और पड़ोसी देशों के हितों की रक्षा के लिये रणनीतिक गठबंधन बनाने में भारत की उभरती भूमिका का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिये।

भारत-श्रीलंका संबंध

चर्चा में क्यों?

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की श्रीलंका यात्रा के दौरान श्रीलंका के राष्ट्रपति के साथ 7 सहमति ज्ञापनों (MoU) पर हस्ताक्षर किये गए।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

यह यात्रा भारत की '**नेबरहुड फर्स्ट नीति**' के प्रति प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है और क्षेत्रीय सुरक्षा और विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से '**MAHASAGAR**' दृष्टिकोण के अनुरूप है।

भारत-श्रीलंका द्विपक्षीय वार्ता संबंधी मुख्य तथ्य क्या हैं?

- **श्रीलंका मित्र विभूषण:** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान '**श्रीलंका मित्र विभूषण**' से सम्मानित किया गया।
  - पुरस्कार में एक प्रशस्ति पत्र और **नवरत्न** (नौ श्रीलंकाई रत्न) से सुसज्जित एक रजत पदक शामिल है। पदक में एक **पुन कलश** (समृद्धि का प्रतीक), **सूर्य और चंद्रमा** (अनंत काल) और एक **धर्म चक्र शामिल है,** जो साझा बौद्ध विरासत को दर्शाता है।
- **रक्षा सहयोग:** भारत और श्रीलंका ने एक ऐतिहासिक **5-वर्षीय रक्षा समझौता ज्ञापन** पर हस्ताक्षर किये, जो संयुक्त अभ्यास, समुद्री निगरानी और रक्षा उद्योग सहयोग की संरचना के उद्देश्य से एक व्यापक समझौता है।
  - श्रीलंका ने यह सुनिश्चित करने की अपनी **प्रतिबद्धता** दोहराई कि उसके भू-क्षेत्र का उपयोग भारत के हितों के विरुद्ध नहीं किया जाएगा।
- **ऊर्जा एवं अवसंरचना:** दोनों पक्षों ने विद्युत व्यापार के लिये भारत-श्रीलंका ग्रिड इंटरकनेक्शन पर सहमति व्यक्त की।
  - इसके अतिरिक्त, **त्रिंकोमाली (श्रीलंका) को ऊर्जा केंद्र** के रूप में विकसित करने के लिये **संयुक्त अरब अमीरात** के साथ एक त्रिपक्षीय समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये गए, जिसमें बहु-उत्पाद ऊर्जा पाइपलाइन का निर्माण भी शामिल है।
- **विकास और वित्त:** भारत ने श्रीलंका के ऋण नवीनीकरण में सहायता प्रदान करने हेतु **100 मिलियन अमेरिकी डॉलर** से अधिक के ऋणों को अनुदान में परिवर्तित कर दिया तथा अन्य ऋणों पर ब्याज़ दरें कम कर दीं।
  - प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने श्रीलंका में प्रमुख परियोजनाओं का शुभारंभ किया, जिनमें पुनर्निर्मित **माहो-ओमानथाई रेलवे लाइन** (91.27 मिलियन अमेरिकी डॉलर की भारतीय सहायता से समर्थित), **सामपुर सौर ऊर्जा परियोजना** और श्रीलंका में 5,000 धार्मिक स्थलों के लिये सोलर पैनल पहल (भारत की 17 मिलियन अमेरिकी डॉलर की ऋण सहायता से) शामिल हैं, जिससे 25 मेगावाट हरित ऊर्जा उत्पन्न होगी।
- **सांस्कृतिक और धार्मिक कूटनीति:** प्रधानमंत्री ने घोषणा की कि **गुजरात के अरावली में पाए गए भगवान बुद्ध के अवशेषों** को **मई 2025** में **वेसाक दिवस** समारोह के दौरान प्रदर्शनी के लिये श्रीलंका भेजा जाएगा।

भारत और श्रीलंका के बीच संबंध किस प्रकार रहे हैं?

- **व्यापार और वाणिज्य:** भारत, श्रीलंका के शीर्ष व्यापार साझेदारों में से एक है और **दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (SAARC)** में **भारत भी श्रीलंका के शीर्ष व्यापारिक साझेदारों में से एक है।**
  - वर्ष 1998 के **मुक्त व्यापार समझौते (FTA)** से वर्ष 2023-24 में द्विपक्षीय व्यापार बढ़कर 5.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया, जिसमें भारत का निर्यात 4.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर और श्रीलंका का 1.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर रहा।
  - भारत श्रीलंका में **प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI)** में प्रमुख योगदानकर्त्ता है, जिसका वर्ष 2023 तक संचयी निवेश 2.25 बिलियन अमेरिकी डॉलर था।
- **पर्यटन और कनेक्टिविटी:** भारत श्रीलंका में पर्यटकों का प्रमुख स्रोत है (वर्ष 2024 में लगभग 4.16 लाख (कुल 2.05 मिलियन का ₹ 20%)।
  - श्रीलंका द्वारा भारत की UPI को अपनाने तथा व्यापार निपटान के लिये रूपए के उपयोग से **फिनटेक कनेक्टिविटी** को बढ़ावा मिलेगा।
- **विकास सहयोग: भारत** ने **श्रीलंका** को **7 बिलियन अमेरिकी डॉलर** से अधिक का ऋण और 780 मिलियन अमेरिकी डॉलर का अनुदान दिया है।
  - श्रीलंका के वर्ष 2022 के संकट के दौरान, भारत ने लगभग **4 बिलियन अमरीकी डालर** की सहायता प्रदान की, और भारत ने कोविड-19 महामारी के दौरान टीकों तथा चिकित्सा आपूर्ति के साथ श्रीलंका की सहायता भी की।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **रक्षा एवं सुरक्षा सहयोग:** प्रमुख द्विपक्षीय अभ्यासों में **स्लिनेक्स (नौसेना)** और **मित्र शक्ति (थल सेना)** शामिल हैं, जो दोनों देशों में क्रमशः आयोजित किये जाते हैं।
  - भारत मानवीय सहायता और आपदा राहत के क्षेत्र में श्रीलंका के लिये **'प्रथम प्रतिक्रियाकर्त्ता'** के रूप में कार्य करता है, जैसा कि **एमवी एक्सप्रेस पर्ल घटना (2021)** से सुस्पष्ट होता है, जिसमें एक कंटेनर जहाज़ में आग लगने की दुर्घटना के कारण पर्यावरण को काफी नुकसान हुआ था।
- **सांस्कृतिक और सभ्यतागत संबंध: पवित्र जया श्री महा बोधि वृक्ष** सहित बौद्ध और हिंदू धर्म के दृढ़ संबंध, सुदृढ़ सांस्कृतिक संबंधों को उजागर करते हैं। भारत अपने सांस्कृतिक कूटनीति प्रयासों के तहत मंदिर जीर्णोद्धार और धार्मिक पर्यटन का समर्थन करता है।
- **भारतीय समुदाय:** श्रीलंका में लगभग 10,000 भारतीय मूल के लोग (PIO) और लगभग 1.6 मिलियन भारतीय मूल के तमिल (IOT) रहते हैं।

नोट: माना जाता है कि श्रीलंका में जया श्री महा बोधि वृक्ष **बोधि वृक्ष (बिहार)** की एक शाखा से विकसित हुआ है जिसके नीचे बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था। इसे **सम्राट अशोक** की बेटी **संघमित्रा** द्वारा लाया गया था।

भारत और श्रीलंका एक दूसरे के लिये महत्त्वपूर्ण क्यों हैं?

- **श्रीलंका के लिये भारत का महत्त्व:** भारत ने श्रीलंका के आर्थिक सुधार के लिये मज़बूत प्रतिबद्धता दिखाई है, उसने अभूतपूर्व **4 बिलियन अमेरिकी डॉलर** की सहायता प्रदान की है तथा IMF बेलआउट कार्यक्रम के लिये समर्थन का आश्वासन देने वाला पहला ऋणदाता है।
  - भारत श्रीलंका का **सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार, प्रमुख FDI स्रोत** और **शीर्ष पर्यटक योगदानकर्त्ता** है।
  - भारत ने प्रमुख बुनियादी ढाँचे और डिजिटल परियोजनाओं (जैसे आवास, कांकेसंथुराई बंदरगाह, डिजिटल आईडी) के लिये **अनुदान और रियायती ऋण** प्रदान किये।
- **भारत के लिये श्रीलंका का महत्त्व:** प्रमुख **हिंद महासागर व्यापार मार्ग (पाक जलडमरूमध्य)** के निकट स्थित, श्रीलंका भारत की **समुद्री सुरक्षा और ऊर्जा जीवनरेखा** के लिये आवश्यक है।
  - भारत की **'नेबरहुड फर्स्ट' पॉलिसी** और **महासागर (क्षेत्रों में सुरक्षा और विकास के लिये पारस्परिक और समग्र उन्नति) दृष्टिकोण** में श्रीलंका का केंद्रीय स्थान है ।
  - **बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI)** और बंदरगाह विकास (जैसे, हंबनटोटा) के माध्यम से **चीनी रणनीतिक घेराबंदी का** मुकाबला करने में श्रीलंका एक बफर के रूप में कार्य करता है।
  - इसके अतिरिक्त, श्रीलंका ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (वर्ष 2028-29) में अस्थायी सीट के लिये भारत की उम्मीदवारी का समर्थन किया है।
  - **BIMSTEC, हिंद महासागर रिम एसोसिएशन** जैसे क्षेत्रीय मंचों के सक्रिय सदस्य के रूप में, श्रीलंका क्षेत्रीय सहयोग में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भारत-श्रीलंका संबंधों में चुनौतियाँ क्या हैं?

- **श्रीलंका में चीन की उपस्थिति: चीन की BRI** परियोजनाएँ, जैसे हंबनटोटा बंदरगाह (श्रीलंका) **का 99 वर्ष की लीज,** सामरिक घेराबंदी को लेकर भारतीय चिंताओं को बढ़ाती हैं।
  - भारतीय जल क्षेत्र के निकट **चीनी निगरानी जहाज़ों** का बार-बार आना भू-राजनीतिक संवेदनशीलता को उजागर करता है।
- **कच्चातिवु द्वीप:** श्रीलंकाई नौसेना द्वारा **कच्चातिवु द्वीप** के निकट भारतीय मछुआरों की कथित समुद्री सीमा उल्लंघन के आरोप में बार-बार की जाने वाली गिरफ्तारियाँ एक गंभीर मुद्दा बनी हुई हैं।
  - कच्चातिवु द्वीप, वर्ष 1974 के भारत-श्रीलंका समझौते के तहत भारतीय प्रशासन द्वारा श्रीलंका को सौंप दिया गया था, जिसने एक दूसरे के **विशेष आर्थिक क्षेत्रों** में मत्स्यन पर रोक लगा दी थी, हालाँकि, इस समझौते ने भारतीय मछुआरों के लिये सीमित पहुँच की अनुमति दी थी, इसकी शर्तों की अलग-अलग व्याख्याओं के कारण लगातार विवाद हुए हैं।
- **नृजातीय सुलह: श्रीलंका के संविधान में 13वाँ संशोधन** वर्ष 1987 में **भारत-श्रीलंका समझौते** के बाद लागू किया गया था।
  - इसका उद्देश्य प्रांतीय परिषदों को, विशेषकर तमिल-बहुल क्षेत्रों में, शक्तियाँ हस्तांतरित करना था। हालाँकि, श्रीलंका

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

द्वारा इस संशोधन को पूरी तरह से लागू करने में विफलता, विशेष रूप से तमिल बहुल उत्तरी और पूर्वी प्रांतों में, तमिल राजनीतिक अधिकारों की अवहेलना के रूप में देखी जाती है।
    - सिंहली राष्ट्रवादी विघटन का विरोध कर रहे हैं, जबकि तमिल समूह व्यापक स्वायत्तता की मांग कर रहे हैं, जिससे भारत कूटनीतिक बंधन में पड़ गया है।
- **घरेलू राजनीतिक संवेदनशीलताएँ:** घरेलू राजनीतिक आख्यान भारत और श्रीलंका दोनों की विदेश नीति को महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। भारत में, तमिलनाडु श्रीलंका के प्रति नीति को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
    - इसके विपरीत, श्रीलंका में कुछ राजनीतिक गुटों, विशेषकर वामपंथी दलों ने ऐतिहासिक रूप से **भारत विरोधी भावनाओं** का शोषण किया है।

भारत-श्रीलंका संबंधों को बेहतर बनाने के लिये क्या किया जा सकता है?

- **आर्थिक विकास के लिये प्रौद्योगिकी:** श्रीलंका का बढ़ता IT क्षेत्र **भारत को** श्रीलंका की डिजिटल अर्थव्यवस्था में **निवेश करने** और अपनी सेवाओं को उसके साथ एकीकृत करने का **अवसर** प्रदान करता है।
- **नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश:** सौर और पवन ऊर्जा में भारत की विशेषज्ञता **श्रीलंका को जीवाश्म ईंधन पर अपनी निर्भरता कम करने** और सतत् ऊर्जा बुनियादी ढाँचे को विकसित करने में मदद कर सकती है।
- **आर्थिक एवं व्यापार सहयोग समझौता (ETCA) कार्यान्वयन:** ETCA के त्वरित कार्यान्वयन से व्यापारिक बाधाएँ कम हो सकती हैं तथा भारत-श्रीलंका द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ावा मिल सकता है।
- **समुद्री विनियमों को लागू करना:** अंतर्राष्ट्रीय समुद्री सीमा रेखा (IMBL) पर गश्त बढ़ाने और एक समर्पित संयुक्त कार्य समूह से अवैध मत्स्यन पर अंकुश लगाने और निरंतर संवाद सुनिश्चित करने में मदद मिल सकती है।

दृष्टि मेन्स प्रश्न:
प्रश्न. भारत-श्रीलंका द्विपक्षीय संबंधों में क्या चुनौतियाँ हैं? साझेदारी को और सुदृढ़ करने के लिये रोडमैप सुझाइए।

अमेरिका-चीन टैरिफ वृद्धि 2025

चर्चा में क्यों?

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा **चीनी आयात पर 145% तक की बढ़ोतरी के जवाब में** चीन ने अमेरिकी वस्तुओं पर टैरिफ **84% से बढ़ाकर 125%** कर दिया है। इससे पहले, राष्ट्रपति ट्रंप ने भारत सहित अधिकांश देशों के लिये **पारस्परिक टैरिफ को 90 दिनों के लिये स्थगित करने की** घोषणा की थी, **लेकिन चीन को इससे बाहर रखा था।**

- अमेरिका और चीन के बीच इन जवाबी कदमों से वैश्विक आर्थिक स्थिरता को लेकर चिंताएँ बढ़ गई हैं।

अमेरिका और चीन के बीच टैरिफ में वृद्धि के क्या कारण रहे?

- **अमेरिका: वर्ष** 2024 में चीन के साथ 295 बिलियन अमेरिकी डॉलर का अमेरिकी व्यापार घाटा अमेरिकी टैरिफ बढ़ोतरी के पीछे एक प्रमुख कारण बना हुआ है।
    - **अमेरिका ऐसे घाटे को वैश्विक व्यापार में हानि** का संकेत मानता है तथा चीन के अधिशेष को **अनुचित और रणनीतिक रूप से जोखिमपूर्ण मानता है।**
    - अमेरिका ने चीन पर **बौद्धिक संपदा की** चोरी और जबरन प्रौद्योगिकी हस्तांतरण का आरोप लगाया है, जो निष्पक्ष प्रतिस्पर्द्धा को विकृत करता साथ ही उसने अपने घरेलू उद्योगों की रक्षा के लिये टैरिफ बढ़ा दिये हैं।
- **चीन:** चीन ने अमेरिका द्वारा चीनी आयात पर टैरिफ बढ़ाकर 145% करने के बाद प्रतिक्रिया व्यक्त की है। यह कदम दोनों देशों के बीच चल रहे व्यापार विवाद का हिस्सा है।
- **आपूर्ति शृंखला सुरक्षा:** दोनों राष्ट्रों का लक्ष्य **आपसी निर्भरता को कम करना है, विशेष रूप से** अर्द्धचालक, दुर्लभ मृदा तत्त्व और इलेक्ट्रिक वाहन (EV) घटकों जैसे महत्त्वपूर्ण वस्तुओं में।
- अमेरिका चीन पर अपनी निर्भरता कम कर रहा है, चिप्स एक्ट और भारत (भारत-अमेरिका कॉम्पैक्ट पहल) तथा वियतनाम के साथ साझेदारी जैसे कदमों का उद्देश्य आपूर्ति शृंखलाओं को जोखिम मुक्त करना तथा उनमें विविधता लाना है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता:** अमेरिका-चीन तनाव व्यापार से परे है, जो **ताइवान, दक्षिण चीन सागर और तकनीकी प्रभुत्व** (**कृत्रिम बुद्धिमत्ता**, **क्वांटम**) पर रणनीतिक संघर्षों में निहित है।
- **तीसरे देशों के माध्यम से टैरिफ चोरी:** चीनी कंपनियाँ अमेरिकी टैरिफ से बचने के लिये वियतनाम और मलेशिया जैसे देशों के माध्यम से माल भेजती हैं।
  - इससे चीन से परे व्यापक व्यापार तनाव पैदा हो गया है, क्योंकि अमेरिका क्षेत्रीय मध्यस्थों के माध्यम से अपने बाज़ारों तक गुप्त पहुँच को रोकना चाहता है।

अमेरिका और चीन के बीच पूर्ण पैमाने पर व्यापार युद्ध के जोखिम क्या हैं?

- **मंदी का जोखिम:** अमेरिका और चीन संयुक्त रूप से वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (**अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) 2024** अनुमान) **में लगभग 43% हिस्सेदारी रखते हैं।**
  - एक साथ आर्थिक सुस्ती या मंदी वैश्विक विकास की गति को धीमा कर देगी। **विश्व व्यापार संगठन (WTO) ने** चेतावनी दी है कि अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध वैश्विक **सकल घरेलू उत्पाद में 7% तक की गिरावट ला सकता है।**
  - टैरिफ को लेकर अनिश्चितता भी **निवेश को कमज़ोर** कर रही है तथा **बाज़ार में अस्थिरता** की स्थिति उत्पन्न हो रही है।
  - भारी टैरिफ व्यवस्था से **रोज़मर्रा की वस्तुओं की कीमतें बढ़ने, मुद्रास्फीति को बढ़ावा मिलने तथा उपभोक्ता व्यय सीमित होने का जोखिम होता है, जिसके चलते वैश्विक मंदी** का खतरा बढ़ सकता है।
- **उत्पाद डंपिंग जोखिम:** अमेरिकी बाज़ार तक पहुँच कम होने के कारण, चीन स्टील और सौर पैनलों जैसी अधिशेष वस्तुओं को **सब्सिडी वाले मूल्यों पर अन्य बाज़ारों में भेज सकता है।**
- यह **यूरोपीय संघ, ब्रिटेन और भारत** जैसे क्षेत्रों के स्थानीय उद्योगों पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है, जिससे रोजगार और मजदूरी पर असर पड़ सकता है तथा व्यापारिक विवादों और **संरक्षणवाद** में वृद्धि हो सकती है।
- **सामरिक संसाधनों का शस्त्रीकरण:** गैलियम, जर्मेनियम और लिथियम जैसे दुर्लभ मृदा तत्त्वों पर चीन की पकड़ अमेरिका-चीन तनाव को एक तकनीकी शीत युद्ध में बदल सकती है, जिससे वैश्विक आपूर्ति शृंखलाएँ संकट में पड़ सकती हैं।
- भारत के लिये, यह विशेष रूप से इलेक्ट्रॉनिक्स और नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्रों में '**मेक इन इंडिया**' अभियान के मार्ग में बाधा उत्पन्न कर सकता है।
- **वैश्विक आपूर्ति शृंखलाओं में बाधा:** चीन में विनिर्मित उत्पादों या अमेरिका द्वारा विकसित तकनीकों (जैसे, सॉफ्टवेयर, चिप्स) पर निर्भर देशों को सीमा पार आर्थिक अस्थिरताओं का सामना करना पड़ सकता है।
- रीशोरिंग और नियर-शोरिंग जैसी पहलें महंगी और समय-साध्य होती हैं।
- **भू-राजनीतिक ध्रुवीकरण:** वैश्विक विभाजन देशों को किसी एक पक्ष का समर्थन करने के लिये विवश कर सकता है, जिससे बहुपक्षीय सहयोग कमजोर पड़ सकता है तथा वैश्विक आर्थिक शासन व्यवस्था बिखर सकती है।

अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध के भारत पर क्या प्रभाव होंगे?

- **आपूर्ति शृंखला में व्यवधान:** भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटो पार्ट्स और फार्मास्यूटिकल्स मुख्य रूप से चीनी घटकों पर निर्भर हैं।
- टैरिफ के कारण लागत में वृद्धि या शिपमेंट में देरी के कारण **भारत में गैजेट, वाहन महंगे हो सकते हैं या उन्हें प्राप्त करना कठिन हो सकता है।**
- **फार्मास्युटिकल क्षेत्र में जोखिम:** भारतीय दवाओं में प्रयुक्त होने वाले लगभग 70% सक्रिय फार्मास्युटिकल घटक (API) चीन से आयात किये जाते हैं।
- टैरिफ से जुड़ी लागत वृद्धि या आपूर्ति बाधाएँ दवाओं की कीमतें बढ़ा सकती हैं और भारत के स्वास्थ्य सेवा और फार्मा निर्यात को प्रभावित कर सकती हैं।
- **GDP और मुद्रास्फीति पर प्रभाव:** वैश्विक मांग की सुस्ती भारत की आर्थिक वृद्धि को प्रभावित कर सकती है। इसका उदाहरण वर्ष 2018 के अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध के दौरान देखा गया, जब भारत की GDP वृद्धि दर वर्ष 2017-18 के 8.3% से घटकर वर्ष 2019-20 में 4.2% पर आ गई थी।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- महंगे आयात के कारण मुद्रास्फीति बढ़ सकती है, जिससे घरेलू खर्च और व्यावसायिक लागत प्रभावित होगी।
- **निर्यात के नए अवसर:** अमेरिका द्वारा चीन पर उच्च टैरिफ लगाए जाने के चलते, वस्त्र और चमड़ा जैसे भारतीय उद्योगों के पास प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त हासिल करने तथा अमेरिकी बाज़ार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने का अच्छा अवसर है।

अमेरिका-चीन व्यापार संघर्ष के प्रभाव को कम करने के लिये क्या किया जा सकता है?

- **वैश्विक कार्यवाहियाँ:** विश्व व्यापार संगठन का **अपीलीय निकाय वर्ष 2019 से पंगु हो गया है।** G-20 और क्वाड **देशों** के बीच आम सहमति बनाकर इसे पुनर्जीवित करना बड़े पैमाने पर टैरिफ विवादों को कानूनी रूप से मध्यस्थता करने के लिये महत्त्वपूर्ण है।
  - दक्षिणी देशों को **दक्षिण-दक्षिण व्यापार गलियारों** (जैसे, भारत-अफ्रीका-आसियान) में निवेश करके **अमेरिका-चीन धुरी पर अपनी निर्भरता कम करनी होगी।**
  - यदि यूरोप एशिया के साथ अपने संबंधों को मजबूत करता है, तो **दीर्घावधि में वैश्विक व्यापार अमेरिकी प्रभुत्व से विकेंद्रित हो सकता है।**
  - एशिया-प्रशांत आर्थिक सहयोग और ब्रिक्स जैसे मंचों को एकतरफावाद की तुलना में आर्थिक **तनाव कम करने और सहयोग को प्राथमिकता देनी चाहिये।**
- **राष्ट्रीय स्तर पर कार्रवाई:** भारत को **भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौता (FTA), भारत-यूके FTA** और **भारत-GCC FTA** जैसे समझौतों को शीघ्रता से आगे बढ़ाना चाहिये, ताकि अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध से उत्पन्न आपूर्ति संबंधी झटकों से भारतीय निर्यात को सुरक्षित रखा जा सके।
- चीनी आयात पर अत्यधिक निर्भरता को रोकने के लिये सेमीकंडक्टर, इलेक्ट्रॉनिक्स, APIs और सौर मॉड्यूल में **उत्पादन सह प्रोत्साहन योजनाओं** और **मेक इन इंडिया को** मजबूत करना।
- PM गति शक्ति और इन्वेस्ट इंडिया प्लेटफॉर्म के तहत भूमि, श्रम, रसद और अनुपालन को आसान बनाकर चीन से बाहर निकलने की इच्छुक आपूर्ति श्रृंखलाओं को आकर्षित करने के लिये भारत को एक पसंदीदा **चीन+1 गंतव्य के रूप में स्थापित करना।**
- **आपूर्ति श्रृंखलाओं के गैर-राजनीतिकरण को** बढ़ावा देने और विकासशील देशों के व्यापार अधिकारों की रक्षा के लिये **क्वाड, ब्रिक्स, जी-20 और शंघाई सहयोग संगठन (SCO)** जैसे मंचों का उपयोग करना।
- भारतीय निर्यातकों के लिये टैरिफ परिवर्तनों, पुन: मार्गित वस्तुओं तथा पूर्व चेतावनी प्रणालियों की निगरानी के लिये एक **राष्ट्रीय व्यापार निगरानी संस्था की स्थापना करना।**

दृष्टि मेन्स प्रश्न:

प्रश्न. वर्ष 2025 में अमेरिका और चीन के बीच टैरिफ में वृद्धि के चलते भारत की अर्थव्यवस्था एवं वैश्विक व्यापार पर संभावित प्रभावों का विश्लेषण कीजिये। साथ ही, इन चुनौतियों को कम करने हेतु भारत द्वारा उठाए जा सकने वाले संभावित कदमों पर प्रकाश डालिये।

भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा

चर्चा में क्यों?

केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री ने नई दिल्ली में **कनेक्टिविटी और आर्थिक विकास पर उच्च स्तरीय गोलमेज़ सम्मेलन** में **भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे (IMEC)** को एक पारमहाद्वीपीय पहल के रूप में रेखांकित किया, जो वैश्विक व्यापार गतिशीलता को पुनर्परिभाषित करने और अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग बढ़ाने का कार्य करेगा।

भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा क्या है?

- **परिचय:** IMEC एक रणनीतिक मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी पहल है जिसे **नई दिल्ली में वर्ष 2023 में आयोजित** G20 **शिखर सम्मेलन** के दौरान एक समझौता ज्ञापन (MoU) के माध्यम से लॉन्च किया गया था। इसके हस्ताक्षरकर्त्ताओं में **भारत, अमेरिका, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, फ्राँस, जर्मनी, इटली और यूरोपीय संघ** शामिल हैं।
  - यह पहल वर्ष 2021 में G7 द्वारा शुरू की गई **पार्टनरशिप फॉर ग्लोबल इन्फ्रास्ट्रक्चर एंड इन्वेस्टमेंट (PGII)** का एक हिस्सा है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- IMEC का उद्देश्य राष्ट्रीय संप्रभुता को अक्षुण्ण रखते हुए पारदर्शी, संधारणीय और ऋण-मुक्त बुनियादी ढाँचे को बढ़ावा देकर इसे **चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI)** का एक व्यवहार्य विकल्प बनाना है।

- **कॉरिडोर खंड:** IMEC के दो भाग हैं: **पूर्वी कॉरिडोर (भारत से खाड़ी)** और **उत्तरी कॉरिडोर (खाड़ी से यूरोप)**।
- **उद्देश्य:** भारत, मध्य पूर्व और यूरोप के बीच व्यापार को बढ़ाने के उद्देश्य से बंदरगाहों, रेलवे, सड़कों, समुद्री लाइनों, ऊर्जा पाइपलाइनों और डिजिटल बुनियादी ढाँचे का एक एकीकृत नेटवर्क विकसित करना।
- **भारत के लिये महत्त्व:** IMEC के उपयोग से स्वेज़ नहर समुद्री मार्ग की तुलना में रसद लागत 30% तक कम हो जाएगी और परिवहन समय में 40% तक की कमी आएगी, जिससे भारतीय निर्यात की वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्द्धा बढ़ जाएगी।
  - भारत की **वन सन, वन वर्ल्ड, वन ग्रिड (OSOWOG)** पहल **IMEC के ऊर्जा लक्ष्यों के अनुरूप है,** जिससे भारत मध्य पूर्व से सौर और हरित हाइड्रोजन ऊर्जा का दोहन करने में सक्षम होगा, जो नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता से समृद्ध क्षेत्र है।
  - IMEC में व्यापार और ऊर्जा सहयोग बढ़ाने के लिये **ऊर्जा पाइपलाइन, स्वच्छ ऊर्जा अवसंरचना और अधोसमुद्री केबल** शामिल है।
    - यह भारत में **प्रत्यक्ष विदेशी निवेश** आकर्षित करेगा, विशेष रूप से बुनियादी ढाँचे, लॉजिस्टिक्स, हरित ऊर्जा और डिजिटल प्रौद्योगिकियों में, जिससे भारत को **अल्प लागत वाली नवीकरणीय ऊर्जा** का अभिगम प्राप्त करने और **निम्न कार्बन अर्थव्यवस्था में संक्रमण** करने में मदद मिलेगी।
- **IMEC की स्थिति: वर्ष 2023** में **इजरायल-हमास संघर्ष** के कारण इस परियोजना में अत्यधिक विलंब हुआ। मध्य पूर्व में भू-राजनीतिक अस्थिरता से अस्थायी रूप से इसकी विकास गति मंद हो गई है।
  - इसके बावजूद, कूटनीतिक सहभागिता जारी है जहाँ **भारत और UAE** ने वर्ष 2024 में एक अंतर-सरकारी रूपरेखा समझौते (IGFA) पर हस्ताक्षर किये, यह परिचालन सहयोग और IMEC के लिये एक संयुक्त रसद मंच के निर्माण पर केंद्रित है।

IMEC की प्रगति के समक्ष कौन-सी चुनौतियाँ हैं?

- **भू-राजनीतिक अस्थिरता:** इसकी प्रगति के समक्ष **गाज़ा संघर्ष** एक गंभीर चिंता का विषय है, जिससे पश्चिम एशिया में कूटनीतिक सामान्यीकरण बाधित हो रहा है, जो IMEC की सफलता का एक प्रमुख आधार है।
  - **सऊदी-ईरान प्रतिद्वंद्विता और इराक तथा सीरिया** में अस्थिरता सहित क्षेत्रीय अस्थिरता, IMEC के तहत बुनियादी ढाँचे के विकास और आपूर्ति शृंखला सुरक्षा के लिये गंभीर खतरा है।
- **स्पष्ट वित्तीय प्रतिबद्धता का अभाव:** IMEC का लक्ष्य बुनियादी ढाँचे के अभाव को पूरा करने के लिये **वर्ष 2027** तक **600 बिलियन अमेरिकी डॉलर** जुटाना है, लेकिन इसमें हितधारकों के बीच स्पष्ट वित्तीय रोडमैप और लागत-साझाकरण योजना का अभाव है।
  - इस स्तर के बुनियादी ढाँचे के विकास के लिये **दीर्घकालिक निवेश (लगभग 3 बिलियन अमेरिकी डॉलर से 8 बिलियन अमेरिकी डॉलर)** की आवश्यकता है, जो वैश्विक आर्थिक मंदी के बीच अनिश्चित बना हुआ है।
- **व्यापार व्यवधान की संभावना:** **स्वेज़ नहर अवरोध (2021)** और **काला सागर नौवहन व्यवधान** (रूस-यूक्रेन संघर्ष के कारण) जैसे उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि समुद्री व्यापार अति संवेदनशील है।
  - IMEC क्षेत्र में इसी प्रकार की घटनाओं से **विश्वसनीयता प्रभावित हो सकती है,** जबकि **हिंद महासागर** में चीन जैसी अतिरिक्त आंचलिक शक्तियों के बढ़ते सैन्यीकरण और नौसेना की उपस्थिति से **समुद्री विवाद** की आशंका बढ़ती है।
- **सीमित भौगोलिक समावेशन: तुर्की, ईरान, कतर और मिस्र** जैसे प्रमुख क्षेत्रीय देश वर्तमान में IMEC का हिस्सा नहीं हैं, जिससे इसकी भू-राजनीतिक और आर्थिक पहुँच सीमित हो गई है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- IMEC की दीर्घकालिक सफलता **सतत् राजनीतिक सहयोग** पर निर्भर करती है, जो इसमें शामिल देशों के भिन्न-भिन्न राष्ट्रीय हितों और गठबंधनों के कारण चुनौतीपूर्ण है।

- **स्थापित मार्गों से प्रतिस्पर्द्धा: स्वेज़ नहर मार्ग** अच्छी तरह से स्थापित है, और इसकी तुलना में IMEC की लागत प्रभावशीलता पर अभी भी बहस चल रही है।
  - यदि क्षेत्रीय चुनौतियाँ बनी रहीं तो IMEC एक **महँगा विकल्प** हो सकता है, जिसमें कोई गारंटीकृत रिटर्न नहीं होगा।
- **तकनीकी चुनौतियाँ:** समुद्र के नीचे डेटा केबलों सहित IMEC के डिजिटल बुनियादी ढाँचे को सदस्य देशों के बीच अलग-अलग तकनीकी मानकों के कारण एकीकरण संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।
  - निर्बाध कनेक्टिविटी सुनिश्चित करना जटिल है, और **अमेरिका में कोलोनियल पाइपलाइन घटना** जैसे साइबर हमलों का जोखिम वैश्विक डिजिटल प्रणालियों की भेद्यता को रेखांकित करता है।

भारत IMEC को प्रभावी कार्यान्वयन की ओर कैसे ले जा सकता है?

- **IMEC की तैयारी के लिये घरेलू बुनियादी ढाँचे को मज़बूत करना:** भारत पश्चिम एशिया में धीमी प्रगति की इस अवधि का उपयोग **अपने बंदरगाहों** (मुंद्रा (गुजरात), कांडला (गुजरात) और जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट (नवी मुंबई)) **को मज़बूत करने, IMEC नोड्स के साथ आर्थिक क्षेत्रों को विकसित करने** और वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में बेहतर एकीकरण के लिये घरेलू रसद को उन्नत करने और भारत को एक विश्वसनीय वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला विकल्प के रूप में स्थापित करने के लिये कर सकता है।
- **व्यापार प्रक्रिया का मानकीकरण:** IMEC के तहत कुशल सीमा पार व्यापार के लिये सभी सदस्य देशों को कागज़ी कार्यवाही को न्यूनतम करने और विलंब को कम करने के लिये इंडिया-UAE वर्चुअल ट्रेड कॉरिडोर जैसे ढाँचे को अपनाने की आवश्यकता है।
- **लचीले बुनियादी ढाँचे की ओर:** भारत सतत्, जलवायु-लचीले और भू-राजनीतिक रूप से अनुकूलनीय परियोजनाओं के निर्माण के लिये **गुणवत्ता बुनियादी ढाँचे के निवेश (QII) के G-20 सिद्धांतों** को अपनाने के लिये IMEC देशों का नेतृत्व कर सकता है।
  - यह दृष्टिकोण **ग्रीन बॉण्ड और सतत् वित्त** के माध्यम से **सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP)** और निजी पूंजी को आकर्षित कर सकता है, जिससे राष्ट्रीय बजट पर दबाव कम हो सकता है।
- **क्षेत्रीय सुरक्षा ढाँचे में वृद्धि:** भारत IMEC को आतंकवाद, समुद्री डकैती और साइबर खतरों से बचाने के लिये हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (IORA) और खाड़ी सहयोग परिषद (GCC) के माध्यम से मज़बूत सुरक्षा संबंधों पर ज़ोर दे सकता है।
- **तकनीकी एकीकरण को बढ़ावा देना:** भारत एकीकृत भुगतान इंटरफेस (UPI) आधारित भुगतान प्रणाली, समुद्र के नीचे केबल, 5G अवसंरचना को बढ़ावा देकर, ई-कॉमर्स, फिनटेक और स्मार्ट सिटी पहलों का समर्थन करते हुए IMEC के साथ डिजिटल विभाजन को कम करते हुए डिजिटल कनेक्टिविटी में अग्रणी हो सकता है।

भारत की अन्य प्रमुख रणनीतिक अवसंरचना पहल

- **अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (INSTC):** इसे वर्ष 2000 में रूस के **बाल्टिक सागर तट को ईरान के माध्यम से भारत के पश्चिमी बंदरगाहों** से जोड़ने के लिये प्रस्तावित किया गया था।
  - रूस, भारत और ईरान ने 7,200 किलोमीटर लंबी अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन कॉरिडोर (INSTC) के विकास के लिये वर्ष 2002 में प्रारंभिक समझौतों पर हस्ताक्षर किये थे।
  - **वर्तमान में इसमें 13 सदस्य हैं:** भारत, ईरान, रूस, अज़रबैजान, आर्मेनिया, कज़ाकिस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान, तुर्की, यूक्रेन, बेलारूस, ओमान और सीरिया, तथा बुल्गारिया एक पर्यवेक्षक राज्य है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **चाबहार बंदरगाह परियोजना:** भारत, ईरान और अफगानिस्तान ने **चाबहार बंदरगाह** पर शाहिद बेहेश्टी टर्मिनल विकसित करने के लिये एक त्रिपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किये, जो भारत की पहली विदेशी बंदरगाह परियोजना है।
  - इस परियोजना का उद्देश्य **पाकिस्तान को दरकिनार कर** भारत को अफगानिस्तान और मध्य एशिया तक पहुँच प्रदान करना है, जिससे तीनों देशों के बीच पारगमन व्यापार को बढ़ावा मिलेगा।
- **भारत-म्याँमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग:** इस परियोजना का उद्देश्य भारत के मणिपुर राज्य के मोरेह से शुरू होकर म्याँमार से गुज़रते हुए थाईलैंड के माई सोत पर समाप्त होने वाला सड़क संपर्क बनाना है।
- **कलादान मल्टीमॉडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट:** इस प्रोजेक्ट का उद्देश्य कोलकाता के पूर्वी बंदरगाह को म्याँमार के सित्तवे बंदरगाह से समुद्र के रास्ते जोड़ना है, जिससे दक्षिण पूर्व एशिया के साथ व्यापार और संपर्क में वृद्धि होगी।

निष्कर्ष

भारत के नेतृत्व में IMEC कनेक्टिविटी को बढ़ाकर और क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देकर वैश्विक व्यापार को नया आकार देने का वादा करता है। **IMEC सचिवालय** की स्थापना परिचालन को सुव्यवस्थित करने और परियोजना के सुचारू निष्पादन को सुनिश्चित करने में महत्त्वपूर्ण होगी। इसके कार्यान्वयन से सतत् आर्थिक विकास और वैश्विक समृद्धि का एक नया युग शुरू होगा।

दृष्टि मेन्स प्रश्न:

प्रश्न. क्षेत्रीय भूराजनीति और व्यापार गतिशीलता को नया आकार देने में भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे के रणनीतिक महत्त्व पर चर्चा कीजिये।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

भारतीय अर्थव्यवस्था

भारतीय रेलवे में सुधार

चर्चा में क्यों?

रेल मंत्रालय पर **नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG)** की ऑडिट रिपोर्ट में भारतीय रेलवे के कामकाज में विभिन्न **चिंताओं** पर प्रकाश डाला गया है।

भारतीय रेलवे के बारे में मुख्य तथ्य क्या हैं?

- **परिचय:** भारत में विश्व का **चौथा सबसे बड़ा रेलवे नेटवर्क** है, जिसकी **लंबाई 65,000 किलोमीटर** से अधिक है।
  - वर्ष 2022 में, भारतीय रेलवे ने **8 बिलियन यात्रियों, 1.4 बिलियन टन माल ढुलाई** की, और **वर्ष 2050** तक वैश्विक रेल गतिविधि में **40%** योगदान देने की उम्मीद है।
- **बुनियादी ढाँचे पर व्यय:** सरकार ने बुनियादी ढाँचे में **1.4 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर** के व्यापक **निवेश लक्ष्य (वर्ष 2019-2023)** के हिस्से के रूप में **वर्ष 2030 तक 750 बिलियन अमेरिकी डॉलर** का निवेश करने की योजना बनाई है।
  - रेलवे क्षेत्र में **100% FDI की अनुमति,** वैश्विक भागीदारी को प्रोत्साहन।
- **नवोन्मेष:** भारत की अपनी **ट्रेन कोलिज़न अवॉइडेंस सिस्टम, कवच, को 37,000 किलोमीटर** रेलवे लाइनों पर तैनात किया जाएगा।
  - **15,000 किलोमीटर** पटरियों को **स्वचालित सिग्नलिंग क्षेत्रों** में परिवर्तित किया जाएगा, जिससे सुरक्षा और दक्षता बढ़ेगी।
  - **वंदे भारत ट्रेनों** में त्वरित गति, स्वचालित दरवाजे, CCTV, **जैव-शौचालय,** GPS सूचना प्रणाली और ऑनबोर्ड इन्फोटेनमेंट की सुविधा है।
- **वित्तीय प्रदर्शन:** वर्ष 2023-24 में, भारतीय रेलवे ने यातायात राजस्व में **32.18 बिलियन अमेरिकी डॉलर** अर्जित किया, जो इसकी कुल आय का **99.8%** है, जो **मज़बूत दक्षता** और सार्वजनिक निर्भरता को दर्शाता है।
- **भविष्य की योजनाएँ:**
  - **हाई-स्पीड रेल:** मुंबई-अहमदाबाद **बुलेट ट्रेन** और अन्य सेमी-हाई स्पीड ट्रेनें।
  - **सिग्नलिंग एवं दूरसंचार:** लगभग 15,000 किमी को **स्वचालित सिग्नलिंग** तथा 37,000 किमी को **कवच** के साथ अपग्रेड करने की योजना है।
  - **डिजिटलीकरण:** रेलवे पूर्वानुमानित रखरखाव, परिसंपत्ति प्रबंधन और **GPS सूचना प्रणाली** पर ज़ोर देता है।
  - **अंतरमॉडल परिवहन:** सुगम रसद के लिये **रेल, सड़क और बंदरगाहों** का एकीकरण।
- **शुद्ध शून्य कार्बन उत्सर्जन लक्ष्य:** भारतीय रेलवे का लक्ष्य **वर्ष 2030 तक शुद्ध शून्य कार्बन उत्सर्जन** करना है। शुरुआत में, इसकी योजना **हाइड्रोजन फॉर हेरिटेज कार्यक्रम** के तहत **35 हाइड्रोजन ट्रेनें** चलाने की है।

भारतीय रेलवे का महत्त्व क्या है?

- **राष्ट्र की जीवन रेखा:** भारतीय रेल भारत के परिवहन का आधार है, जो **किफायती, विश्वसनीय** यात्रा उपलब्ध कराती है तथा राष्ट्रव्यापी आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देती है।
- **औद्योगिक विस्तार:** यह कोयला, लौह अयस्क, सीमेंट और कृषि उत्पादों जैसी **आवश्यक वस्तुओं के परिवहन को सक्षम** बनाता है, जिससे **निर्बाध औद्योगिक परिचालन** सुनिश्चित होता है।
  - **समर्पित माल ढुलाई गलियारे (DFC) से लॉजिस्टिक्स लागत कम** हो जाती है, जिससे भारतीय विनिर्माण वैश्विक बाज़ार में अधिक **प्रतिस्पर्द्धी** बन जाता है।
  - **रोज़गार: 1.2 मिलियन से अधिक कर्मचारियों** के साथ, यह **विश्व का 9वाँ सबसे बड़ा नियोक्ता** है।
  - **क्षेत्रीय विकास: रेलवे ग्रामीण क्षेत्रों को** शहरी बाज़ारों से जोड़ने, अविकसित क्षेत्रों में **शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा** और **नौकरियों तक पहुँच** में सुधार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **हरित परिवहन: ऊर्जा-कुशल इंजनों, हरित जैव-शौचालय** और **विद्युतीकृत मार्गों** का उपयोग **पर्यावरणीय ज़िम्मेदारी** के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।
- **राष्ट्रीय सुरक्षा: पूर्वोत्तर** जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में रणनीतिक रेल संपर्क **राष्ट्रीय सुरक्षा** और तीव्र गतिशीलता को बढ़ावा देते हैं।

भारतीय रेलवे से जुड़ी चिंताएँ क्या हैं?

- **उच्च परिचालन अनुपात:** सत्र 2024-2025 के लिये **परिचालन अनुपात (ओआर) 98.2** रुपए अनुमानित है, जो **2023-2024 में 98.7 रुपए** से थोड़ा बेहतर है, लेकिन वर्ष 2016 में 97.8 रुपये से निम्न है।
  - उच्च OR (**100 रुपए कमाने के लिये व्यय की गई राशि**) के कारण **पूंजीगत व्यय के लिये कम संसाधन** बचते हैं और रेलवे को **बजटीय** सहायता एवं **अतिरिक्त बजटीय संसाधनों (EBR) पर अधिक निर्भर** बनाता है।
- **धीमा बुनियादी ढाँचा विकास:** DFC (वर्ष 2005 में प्रस्तावित) में से **केवल पूर्वी DFC ही पूरी तरह से चालू** है और **पश्चिमी DFC पूरा होने के करीब** है।
  - पूर्वी तट, पूर्व-पश्चिम और उत्तर-दक्षिण उप-गलियारा DFC **अभी योजना चरण में** हैं।
  - भूमि अधिग्रहण संबंधी समस्याओं के कारण **मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना** वर्ष 2023 से 2028 तक **विलंबित** हो गई है।
- **अपर्याप्त सुरक्षा प्रौद्योगिकियाँ:** हालाँकि कवच स्वचालित ब्रेकिंग और अलर्ट के माध्यम से टकरावों को रोक सकता है, लेकिन इसका **सीमित रोलआउट** इसके समग्र प्रभाव को कम कर देता है।
  - फरवरी 2024 तक, इसे केवल **1,465 मार्ग किमी. पर स्थापित किया गया** था, जो **कुल रेलवे नेटवर्क का केवल 2%** है।
- **धीमी यात्रा: मेल और एक्सप्रेस ट्रेनें अभी भी मात्र 50-51 किमी. प्रति घंटे की औसत गति** से चल रही हैं, जो **मिशन रफ्तार के तहत निर्धारित लक्ष्यों से कम** है।
  - मिशन रफ़्तार (सत्र 2016-17 बजट) का लक्ष्य **5 वर्षों के भीतर मालगाड़ियों की गति को दोगुना** करना और **यात्री ट्रेनों की गति को 25 किमी प्रति घंटा बढ़ाना** है।

रेलवे में सुधार के लिये विभिन्न समितियों ने क्या सिफारिशें की हैं?

- **राकेश मोहन समिति (वर्ष 2010): हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर** सहित **लंबी दूरी और अंतर-शहर परिवहन** के विकास पर ज़ोर दिया गया।
  - **राष्ट्रीय परिवहन अवसंरचना वित्त का गठन, गतिशीलता, संधारणीयता और समावेशन लक्ष्यों** के संबंध में **तटस्थता सुनिश्चित करना।**
- **काकोदकर समिति (वर्ष 2012):** एक **वैधानिक रेलवे सुरक्षा प्राधिकरण के गठन** का आह्वान किया गया।
  - सुरक्षा संबंधी परियोजनाओं के लिये 5 वर्षों में **1 लाख करोड़ रुपए** का **गैर-समाप्ति योग्य राष्ट्रीय रेल सुरक्षा कोष (RRSK)** प्रस्तावित किया गया।
- **बिबेक देबरॉय समिति (वर्ष 2014):** सरकार को **प्रतिस्पर्द्धा, दक्षता और मितव्ययिता को बढ़ावा देने** जैसे मुद्दों पर सूचित निर्णय लेने में मदद करने के लिये एक **सलाहकार निकाय के रूप में रेलवे अवसंरचना प्राधिकरण** के निर्माण की सिफारिश की गई।
  - भारतीय रेलवे पर कार्यकुशलता बढ़ाने और परिचालन भार कम करने के लिये **गैर-प्रमुख गतिविधियों** (जैसे: स्कूल, अस्पताल) **को आउटसोर्स करने का सुझाव** दिया गया।

आगे की राह

- **माल ढुलाई पोर्टफोलियो का विस्तार:** उच्च मूल्य और संवेदनशील वस्तुओं जैसे **फार्मास्यूटिकल्स, इलेक्ट्रॉनिक्स और शीघ्र खराब होने वाले सामान के लिये विशेष माल ढुलाई समाधान** पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिये।
- **हाई-स्पीड रेलवे: 160-200 किमी/घंटा** की गति के लिये रेलवे के बुनियादी अवसंरचना को उन्नत करने से यात्रा के समय में काफी कमी आ सकती है, जिससे प्रमुख अंतर-शहरी मार्गों पर रेल, हवाई यात्रा का एक सुदृढ़ विकल्प बन सकता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **मल्टीमॉडल लॉजिस्टिक्स अवसंरचना: एकीकृत मल्टीमॉडल लॉजिस्टिक्स पार्कों को प्राथमिकता** दी जानी चाहिये, जिसमें उच्च दक्षता के लिये **स्वचालन,** स्मार्ट इन्वेंट्री सिस्टम और सुचारू **इंटरमॉडल स्थानान्तरण की सुविधा** हो।
- **निजी क्षेत्र की भागीदारी:** भारतीय रेलवे को **रोलिंग स्टॉक, खानपान और लॉजिस्टिक्स** जैसे क्षेत्रों में **निजी भागीदारी को बढ़ावा** देना चाहिये।
  - **व्यस्त मार्गों पर प्रतिस्पर्द्धी बोली** से कार्यकुशलता बढ़ सकती है और **सरकार का बोझ कम** हो सकता है।

दृष्टि मेन्स प्रश्न:
प्रश्न. रेलवे समावेशी आर्थिक विकास और क्षेत्रीय विकास के लिये एक इंजन के रूप में कार्य करता है। चर्चा कीजिये।

भारत में शहरी परिवहन

चर्चा में क्यों?

फरवरी 2025 में किराए में अत्यधिक वृद्धि के बाद बंगलूरू की नम्मा मेट्रो भारत की सबसे महँगी मेट्रो सेवा बन गई है। इस कदम से **शहरी परिवहन** की सामर्थ्य को लेकर चिंताएँ बढ़ गई हैं। उचित मूल्य निर्धारण के बिना, सार्वजनिक परिवहन में यात्रियों का विश्वास खोने का जोखिम है।

शहरी परिवहन प्रणालियों के संबंध में चिंताएँ क्या हैं?

- **वहनीयता: मेट्रो** (बंगलूरू में 30 किमी से अधिक दूरी के लिये 90 रुपए किराया) और बस सेवाओं में **बढ़ते किराए** के कारण निम्न और मध्यम आय वर्ग के लिये दैनिक यात्रा महँगी होती जा रही है।
  - इसके अतिरिक्त, पीक आवर्स या खराब मौसम के दौरान मोबिलिटी ऐप्स द्वारा मूल्य निर्धारण में बढ़ोतरी से यात्रा महँगी हो जाती है, जिससे **राष्ट्रीय शहरी परिवहन नीति (NUTP) 2006** और **स्मार्ट सिटीज़ मिशन** कमज़ोर हो जाता है, जो सभी के लिये लागत प्रभावी और सुलभ गतिशीलता पर ज़ोर देता है।
- **कमज़ोर गैर-मोटर चालित परिवहन (NMT) बुनियादी ढाँचा:** अधिकांश भारतीय शहरों में NMT के लिये सुरक्षित और सुलभ बुनियादी ढाँचे का अभाव है, जैसे पैदल यात्री क्षेत्र (दिल्ली, कोलकाता, बंगलूरू में पैदल यात्री मृत्यु दर >40%) और साइकिल ट्रैक।
  - जहाँ ऐसे रास्ते मौजूद हैं, वहाँ प्राय: **अतिक्रमण है, उनका डिज़ाइन निम्नस्तरीय है, या उनका रखरखाव ठीक से नहीं किया गया है,** जिसके कारण वे असुरक्षित और अनुपयोगी हैं।
  - भूमि उपयोग और परिवहन नियोजन का एकीकरण ठीक से नहीं किया गया है, तथा **पारगमन-उन्मुख विकास (TOD) का कार्यान्वयन** भी कमज़ोर है।
- **भीड़भाड़:** भारतीय शहरों में यातायात की गंभीर समस्या है, **निजी वाहन, 20% से भी कम** यात्रियों को सेवा प्रदान करने के बावजूद, **सड़क पर 90% स्थान घेरते** हैं। यह असंतुलन, तथा स्थिर सड़क अवसंरचना, लंबी यात्रा तथा कम उत्पादकता का कारण बनते हैं।
- **पर्यावरणीय प्रभाव:** वर्ष 2020 में, भारत के परिवहन क्षेत्र का **कुल ऊर्जा-संबंधित CO_2 उत्सर्जन में 14% योगदान** था। दिल्ली जैसे शहरों में वाहन **पार्टिकुलेट मैटर (PM 2.5)** और **NOx उत्सर्जन** का सबसे बड़ा स्रोत बने हुए हैं, जिससे गंभीर स्वास्थ्य समस्याएँ और पर्यावरणीय क्षति हो रही है, जिससे **वर्ष 2070 तक भारत के नेट ज़ीरो लक्ष्य** को प्राप्त करने के प्रयास कमज़ोर हो रहे हैं।
  - स्वच्छ ईंधन नीतियों की कमी और **इलेक्ट्रिक मोबिलिटी को धीमी गति से अपनाने** से संकट और गहरा गया है।
- **अपर्याप्त सार्वजनिक परिवहन प्रणाली: 1 लाख से अधिक आबादी वाले 458 शहरों में से केवल 63 में औपचारिक बस सेवा** है। भारत में प्रति 1,000 लोगों पर केवल 1.2 बसें हैं, जबकि वैश्विक मानक 5-8 हैं (नीति आयोग, 2018)।
  - अधिकांश शहरों में भली प्रकार से संयोजित परिवहन नेटवर्क का अभाव है जहाँ मेट्रो सेवाओं का नगरीय क्षेत्रों तक विस्तार नहीं है, जबकि ऑटो और ई-रिक्शा जैसे अनियमित अनौपचारिक साधन को लेकर सुरक्षा संबंधी चिंताएँ हैं।
- **वित्तीय एवं क्षमता संबंधी बाधाएँ: नगरीय स्थानीय निकायों (ULB)** में वित्तीय स्वायत्तता का अभाव है तथा वे राज्य या केंद्रीय वित्तपोषण पर बहुत अधिक निर्भर हैं।
  - भूमि मूल्य अधिग्रहण, संकुलता मूल्य निर्धारण अथवा **ग्रीन बॉण्ड** जैसे साधनों के माध्यम से संसाधन जुटाने की उनकी सीमित क्षमता से संवहनीय और संधारणीय परिवहन परियोजनाओं में बाधा उत्पन्न होती है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

नगरीय क्षेत्रों में संधारणीय और समावेशी आवागमन हेतु क्या किया जा सकता है?

- **NMT में निवेश: आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय** के अनुसार, भारत के नगरों में की जाने वाली यात्राओं में से लगभग 50% 5 किमी. से कम की होती हैं, जो उन्हें NMT के लिये आदर्श बनाती हैं।
  - पैदल चलने और साइकिल चलाने के लिये समर्पित लेन और सुरक्षित बुनियादी ढाँचे से संवहनीय और संधारणीय नगरीय आवागमन को बढ़ावा मिल सकता है।
- **सर्वोत्तम प्रथाओं का अंगीकरण: कोच्चि** (सबसे अधिक संधारणीय परिवहन प्रणाली), **भुवनेश्वर** (सर्वश्रेष्ठ सार्वजनिक परिवहन) और **श्रीनगर** (सर्वश्रेष्ठ गैर-मोटर चालित परिवहन) जैसे शहरों का मॉडल अनुकरणीय है। इन प्रथाओं को पहचानना और उनका विस्तार करने से अधिक तेज़ी से परिवर्तन होगा।
- **संवहनीय सार्वजनिक परिवहन अभिगम:** यात्रियों पर वित्तीय बोझ कम करने के लिये **रियायती किराया संरचनाओं** (जैसे, मासिक पास) को बढ़ावा देने और **गैर-किराया राजस्व स्रोतों** (जैसे स्टेशनों पर विज्ञापन और खुदरा पट्टे) को उपयोग में लाए जाने की आवश्यकता है।
- **स्वच्छ परिवहन:** FAME II, PM ई-बस सेवा के माध्यम से स्वच्छ आवागमन को बढ़ावा देने, तथा इलेक्ट्रिक बसों और हरित आवागमन को अपनाने में तेज़ी लाने के लिये इलेक्ट्रिक वाहनों पर सब्सिडी अथवा कर कटौती प्रदान करने की आवश्यकता है।
- **नगरीय स्थानीय निकायों का सशक्तीकरण:** नगरीय स्थानीय निकायों को वित्तपोषण चुनौतियों का समाधान करने और संधारणीय आवागमन सेवाओं का समर्थन करने के लिये **आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय** की **मूल्य अधिग्रहण वित्त (VCF) नीति 2017** के अंतर्गत भूमि मूल्य अधिग्रहण, संकुलता मूल्य निर्धारण, ग्रीन बॉण्ड और पार्किंग शुल्क का समुपयोजन करने में सक्षम बनाया जाना चाहिये।
- **एकीकृत सार्वजनिक परिवहन प्रणाली:** वाहनों के बजाय लोगों के आवागमन पर केंद्रित एकीकृत सार्वजनिक परिवहन प्रणालियों हेतु निधि का आवंटन किया जाना चाहिये। निजी वाहनों के उपयोग को कम करने के लिये **पारगमन-उन्मुख विकास नीति, 2017** के तहत मल्टीमॉडल परिवहन, निर्बाध टिकटिंग, रियल-टाइम ट्रैकिंग और TOD को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।
  - **स्मार्ट शहरों** और AMRUT लक्ष्यों के साथ समन्वित आवागमन नियोजन के लिये **एकीकृत महानगर परिवहन प्राधिकरणों (UMTA)** को अधिक सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है।

भारत के नगरीय क्षेत्रों में आवागमन से संबंधित पहलें कौन-सी हैं?

- अटल शहरी कायाकल्प एवं परिवर्तन मिशन (AMRUT)।
- भारतमाला परियोजना।
- इलेक्ट्रिक वाहनों को तेज़ी से अपनाने और विनिर्माण (FAME) योजना- I और II
- मेट्रो रेल नीति (2017)।
- शहरी अवसंरचना विकास निधि (UIDF)
- मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्ट हब
- राष्ट्रीय इलेक्ट्रिक मोबिलिटी मिशन योजना

दृष्टि मेन्स प्रश्न:

प्रश्न. भारत में नगरीय क्षेत्रों के परिवहन के समक्ष बहुआयामी चुनौतियाँ हैं, इसे संधारणीय और समावेशी बनाने के लिये एक व्यापक रणनीति का सुझाव दीजिये।

एशिया-प्रशांत में जलवायु-प्रेरित आर्थिक क्षति

चर्चा में क्यों?

एशिया और प्रशांत के लिये संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक आयोग (UNESCAP) की **"इकोनॉमिक एंड सोशल सर्वे ऑफ एशिया एंड द पैसिफिक 2025"** शीर्षक वाली रिपोर्ट में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि एशिया-प्रशांत के एक तिहाई देशों को जलवायु संबंधी घटनाओं, जिनमें बाढ़, हीटवेव, सूखा और चक्रवात शामिल हैं, के कारण प्रतिवर्ष सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के कम से कम 6% के बराबर आर्थिक क्षति का सामना करना पड़ता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

जलवायु परिवर्तन एशिया-प्रशांत क्षेत्र में व्यापक आर्थिक स्थिरता को किस प्रकार प्रभावित करता है?

- **औसत वार्षिक क्षति (AAL):** ESCAP ने AAL का उपयोग किया, जो जोखिम आकलन के आधार पर आपदाओं से होने वाली अनुमानित वार्षिक आर्थिक क्षति को दर्शाता है, जिसमें खतरे की आवृत्ति, तीव्रता, जोखिम और सुभेद्यता को ध्यान में रखा जाता है।
  - **एशिया-प्रशांत क्षेत्र के 30 देशों में,** AAL का औसत सकल घरेलू उत्पाद का 4.8% है, तथा कंबोडिया में यह लगभग 11% तथा फिजी, म्याँमार और पाकिस्तान में कम से कम 7% है।
- **विकासशील अर्थव्यवस्थाओं की सुभेद्यता:** विश्लेषण किये गये 30 देशों में से 11 देश (अफगानिस्तान, कंबोडिया, ईरान, कज़ाकिस्तान, लाओस, मंगोलिया, म्याँमार, नेपाल, ताजिकिस्तान, उज्बेकिस्तान और वियतनाम) **व्यापक आर्थिक दृष्टिकोण** से **जलवायु जोखिमों** के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील हैं।
  - तेज़ी से हो रहे शहरीकरण और कमज़ोर बुनियादी ढाँचे, विशेष रूप से तटीय क्षेत्रों में, जलवायु जोखिम को बढ़ाते हैं, जिससे अत्यधिक क्षति होती है।
  - वर्ष 2024 में वैश्विक आर्थिक विकास में **60%** योगदान देने के बावजूद, कई एशिया-प्रशांत देश जलवायवीय आघातों से निपटने के लिये अपर्याप्त रूप से सुसज्जित हैं।
- **क्षेत्रीय जोखिम:** वर्ष 2050 तक कृषि में **चावल की उपज में 14% तक की कमी** आ सकती है, जिससे भारत जैसे देशों में खाद्य सुरक्षा और किसानों की आय प्रभावित होगी।
  - कोयला और तेल पर निर्भर देशों (जैसे इंडोनेशिया, **भारत** और चीन) को नवीकरणीय ऊर्जा के लिये वैश्विक संक्रमण के कारण बड़े आर्थिक व्यवधानों का सामना करना पड़ रहा है, जिससे रोज़गार में कमी और राजस्व में गिरावट का अनुमान है।
  - **मत्स्य स्टॉक में कमी के कारण** वर्ष 2050 तक उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में मत्स्य स्टॉक में 30% तक की कमी आ सकती है।

भारत की अर्थव्यवस्था पर जलवायु परिवर्तन के प्रमुख प्रभाव क्या हैं?

- **भारत का आर्थिक प्रभाव:** एशियाई विकास बैंक (ADB) के अनुसार, जलवायु-प्रेरित आर्थिक प्रभावों के कारण भारत को **वर्ष 2070 तक 24.7% GDP क्षति** का सामना करना पड़ सकता है।
- **आर्थिक क्षति के प्रमुख कारक:**
  - **अत्यधिक उष्णता:** भारत में पहले से ही तापमान में वृद्धि हो रही है, इसके साथ ही हीटवेव की आवृत्ति और प्रसार में वृद्धि होने की संभावना है।
    - वर्ष 2030 तक, **हीट स्ट्रेस** से प्रेरित उत्पादकता में गिरावट के कारण **अनुमानित 80 मिलियन वैश्विक रोज़गार में से 34 मिलियन रोज़गार** भारत में कम हो सकते हैं (विश्व बैंक, 2022)।
    - इसके अतिरिक्त, अत्यधिक उष्णता और आर्द्रता की स्थिति के कारण श्रम घंटों के क्षति के कारण भारत की सकल घरेलू उत्पाद का 4.5% जोखिम हो सकता है।
- **कृषि में गिरावट:** हीटवेव में वृद्धि और अनियमित वर्षा के कारण चावल और गेहूँ की उपज कम हो रही है। **विश्व बैंक** के अनुसार, 2050 के दशक तक 2°C तापमान वृद्धि के तहत, भारत को जलवायु परिवर्तन के बिना परिदृश्य की तुलना में **दोगुने से अधिक मात्रा** में खाद्यान्न आयात करने की आवश्यकता हो सकती है।
- **समुद्र का बढ़ता स्तर:** भारत की 7,500 किलोमीटर लंबी तटरेखा समुद्र के बढ़ते स्तर के प्रति संवेदनशील होती जा रही है, जिसका **32% हिस्सा वर्ष 1990 से वर्ष 2018 तक अपरदन से प्रभावित** हुआ है।
  - मुंबई और कोलकाता जैसे तटीय शहरों में बाढ़ का खतरा बढ़ सकता है, तथा सुंदरवन वर्ष 2100 तक 80% तक संकुचित हो सकता है।
- **चरम मौसम घटनाएँ:** जर्मनवाच के **जलवायु जोखिम सूचकांक** के अनुसार, वर्ष 1993 से वर्ष 2023 की अवधि में घटित चरम मौसम की घटनाओं से सबसे अधिक प्रभावित शीर्ष 10 देशों में भारत 6वें स्थान पर है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- भारत में 400 से अधिक चरम घटनाएँ घटीं, जिसके परिणामस्वरूप 180 बिलियन अमेरिकी डॉलर की आर्थिक क्षति हुई और इस अवधि के दौरान लगभग 80,000 लोगों की मृत्यु हुई।

जलवायु-जनित आर्थिक क्षति की रोकथाम हेतु एशिया-प्रशांत क्या रणनीति अपना सकता है?

- **सर्कुलर/वृत्तीय अर्थव्यवस्था को समाविष्ट किया जाना:** एशिया-प्रशांत देशों को **वृत्तीय अर्थव्यवस्था** प्रणालियों को बढ़ावा देना चाहिये, जहाँ अपशिष्ट का अन्य क्षेत्रों में पुन: उपयोग किया जाता है, जिससे उत्सर्जन में कटौती होगी और संसाधनों का अल्प दोहन होगा।
  - भारत को अपशिष्ट और संसाधन खपत को न्यूनतम करने के लिये **वेस्ट-टू-वेल्थ पहल** को प्रोत्साहित कर **अपशिष्ट मुक्त शहरों (Zero Waste Cities)** पर ध्यान केंद्रित करना चाहिये।
- **हरित नवाचार को बढ़ावा:** **कार्बन कैप्चर**, तथा नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन और भंडारण जैसे क्षेत्रों में जलवायु-तकनीक स्टार्टअप को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।
  - भारत जलवायु-तकनीक उपक्रमों का समर्थन करके **अटल इनोवेशन मिशन** और स्टार्ट-अप इंडिया के माध्यम से जलवायु नवाचार को बढ़ावा दे सकता है। **ग्रीन क्लाइमेट फंड (GCF)** से प्राप्त अतिरिक्त निधि से इन हरित समाधानों का विस्तार करने में सहायता मिल सकती है।
- **जलवायु-प्रतिरोधी अवसंरचना:** नगरीय क्षेत्रों को जलवायवीय प्रभावों से सुरक्षा प्रदान करने हेतु बाढ़-रोधी और ताप-प्रतिरोधी अवसंरचना में निवेश किया जाना चाहिये।
  - भारत जलवायु अनुकूलन और शमन को एकीकृत करने के लिये **स्मार्ट सिटी मिशन** को **राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना (NAPCC)** के साथ संरेखित कर सकता है।
  - हरित अवसंरचना के साथ जलवायु-प्रतिरोधी **विशेष आर्थिक क्षेत्रों (SEZ)** का विकास करने से, **संयुक्त अरब अमीरात के मसदर शहर** जैसे मॉडलों से प्रेरित होकर, अल्प कार्बन वाले उद्योगों को आकर्षित किया सकता है।
- **हरित वर्गीकरण:** भारत संधारणीय क्षेत्रों में निवेश को बढ़ावा देने हेतु एक **हरित वर्गीकरण पद्धति** विकसित कर सकता है तथा पर्याप्त हरित वित्तपोषण हेतु इसे NAPCC के साथ संरेखित कर सकता है।
- **वैश्विक जलवायु कोष:** **लॉस एंड डैमेज फंड (LDF)** जैसे वित्तीय साधन जलवायु लचीलापन, बेहतर कृषि पद्धतियों और नवीकरणीय ऊर्जा संक्रमणों को वित्तपोषित कर एशिया-प्रशांत देशों को सहायता प्रदान करते हैं। प्रभावी अनुकूलन के लिये LDF का विस्तार करना महत्त्वपूर्ण है।

दृष्टि मेन्स प्रश्न:

प्रश्न. एशिया-प्रशांत क्षेत्र में विकासशील देशों की जलवायु संबंधी सुभेद्यताओं की विवेचना कीजिये तथा अनुकूली नीतिगत उपायों का सुझाव दीजिये।

आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण 2024

चर्चा में क्यों?

सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) ने **आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS)** 2024 जारी किया। यह डेटा ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में भारत के उभरते श्रम बाज़ार की गतिशीलता के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण

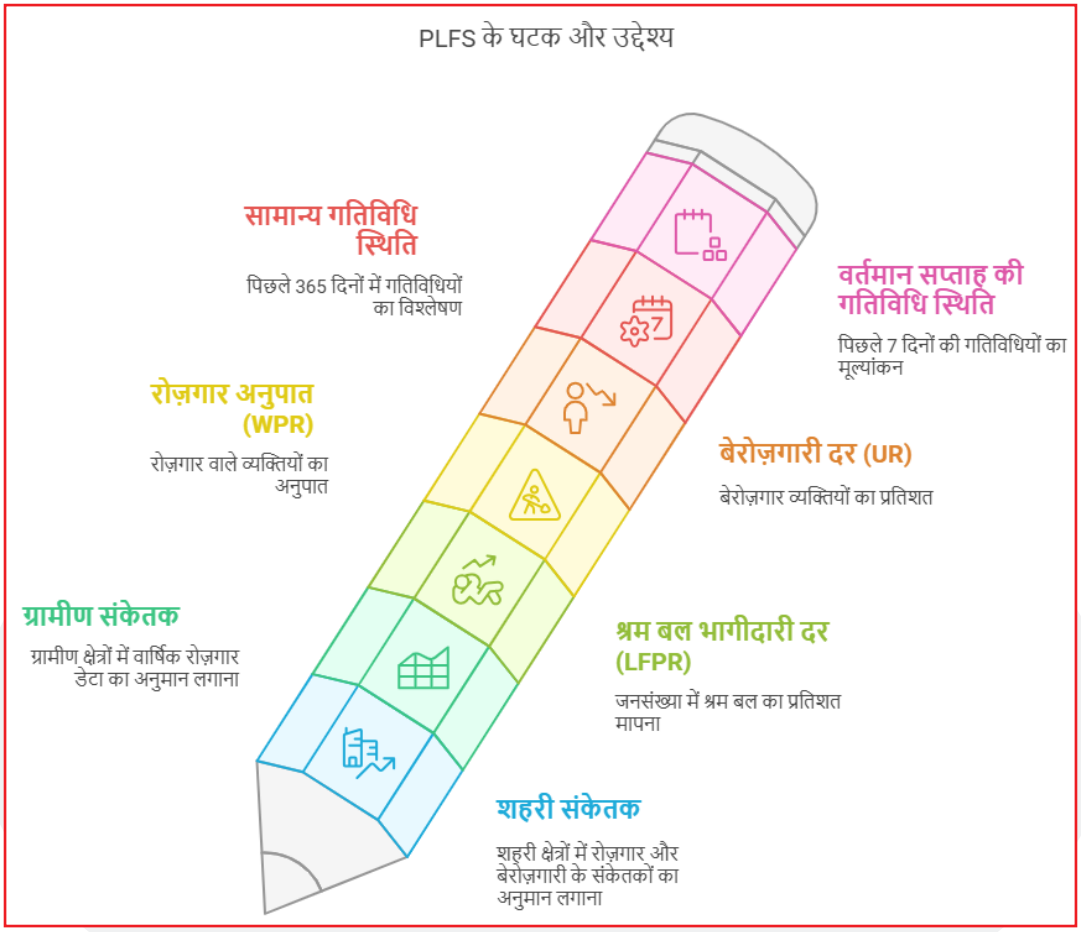

PLFS 2024 के प्रमुख निष्कर्ष क्या हैं?

- **वर्तमान साप्ताहिक स्थिति में श्रम बल संकेतक (CWS):**
  - **श्रम बल भागीदारी दर (LFPR):** शहरी LFPR पुरुषों के लिये (74.3% से 75.6%) बढ़ा और महिलाओं के लिए थोड़ा बढ़ा (25.5% से 25.8%), जिससे समग्र शहरी LFPR बढ़कर 51.0% हो गया। अखिल भारतीय LFPR 56.2% पर स्थिर रहा।
  - **बेरोज़गारी दर (UR):** ग्रामीण बेरोज़गारी दर में अल्प गिरावट आई और यह 4.2% पर आ गई। शहरी पुरुषों की बेरोज़गारी दर में वृद्धि हुई, जबकि महिलाओं की बेरोज़गारी दर में गिरावट आई, जिससे कुल शहरी बेरोज़गारी दर 6.7% पर बनी रही। **अखिल भारतीय बेरोज़गारी दर 5.0% से घटकर 4.9% हो गई।**
  - **बेरोज़गारी दर (UR):** ग्रामीण बेरोज़गारी दर में अल्प गिरावट आई और यह 4.2% पर आ गई। शहरी पुरुषों की बेरोज़गारी दर में वृद्धि हुई, जबकि महिलाओं की बेरोज़गारी दर में गिरावट आई, जिससे कुल शहरी बेरोज़गारी दर 6.7% पर बनी रही। **अखिल भारतीयबेरोज़गारी दर 5.0% से घटकर 4.9% हो गई।**

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

LFPR, WPR and UR (in per cent) in Current Weekly Status (CWS) from PLFS conducted during January 2023 – December 2023 and January 2024 – December 2024 for persons of age 15 years and above

all-India

Indicator	Rural			Urban			Rural + Urban		
	male	female	person	male	female	person	male	female	person
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
January 2023 – December 2023									
LFPR	78.3	39.6	58.8	74.3	25.5	50.3	77.0	35.4	56.2
WPR	74.6	38.0	56.2	69.9	23.2	47.0	73.2	33.7	53.4
UR	4.6	3.8	4.3	6.0	8.9	6.7	5.0	4.9	5.0
January 2024 – December 2024									
LFPR	79.2	38.6	58.6	75.6	25.8	51.0	78.1	34.7	56.2
WPR	75.7	37.1	56.1	71.0	23.7	47.6	74.2	33.0	53.5
UR	4.3	3.9	4.2	6.1	8.2	6.7	4.9	4.9	4.9

- **प्रमुख और सहायक स्थिति में श्रम बल संकेतक (PS+SS):**
  - **LFPR:** 59.8% से 59.6% की नगण्य गिरावट के साथ, राष्ट्रीय स्तर पर काफी हद तक स्थिर रहा।
  - **WPR:** अखिल भारतीय WPR 58.0% से नगण्य रूप से घटकर 57.7% हो गया, जो रोज़गार में अल्प गिरावट को दर्शाता है।
  - **UR:** अखिल भारतीय UR 3.1% से थोड़ा बढ़कर 3.2% हो गया, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों में आँकड़े भिन्न-भिन्न रहे।

LFPR, WPR and UR (in per cent) in usual status (ps+ss) from PLFS conducted during January 2023 – December 2023 and January 2024 – December 2024 for persons of age 15 years and above

all-India

Indicator	Rural			Urban			Rural + Urban		
	male	female	person	male	female	person	male	female	person
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
January 2023 – December 2023									
LFPR	79.8	47.3	63.4	74.9	27.2	51.4	78.3	41.3	59.8
WPR	77.7	46.4	61.9	71.6	25.2	48.8	75.8	40.1	58.0
UR	2.7	1.9	2.4	4.4	7.5	5.2	3.2	3.0	3.1
January 2024 – December 2024									
LFPR	80.6	45.8	62.9	76.2	27.6	52.2	79.2	40.3	59.6
WPR	78.4	44.8	61.4	72.8	25.8	49.6	76.6	39.0	57.7
UR	2.8	2.1	2.5	4.4	6.7	5.0	3.3	3.1	3.2

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

भारत की श्रम शक्ति के संबंध में चिंताएँ क्या हैं?

- **लैंगिक अंतराल: महिला LFPR पुरुषों की तुलना में काफी कम है,** शहरी महिला बेरोज़गारी दर **8.2%** है। 25 वर्ष से अधिक आयु की कार्यरत महिलाओं में से केवल 3% के पास उन्नत डिग्री है, जिससे **शिक्षित महिलाओं का कम उपयोग** तथा **कौशल और नौकरी के अवसरों के बीच असंतुलन** का पता चलता है।
- **रोज़गार में स्थिरता:** WPR और LFPR में **वर्ष-दर-वर्ष न्यूनतम परिवर्तन** दिखातें है, जो रोज़गार सृजन की धीमी गति को दर्शाता है।
  - **रोज़गार वृद्धि आर्थिक वृद्धि के अनुपात में नहीं है,** जो बेरोज़गारी या निम्न-गुणवत्ता वाली नौकरी वृद्धि को दर्शाता है।
- **युवा बेरोज़गारी:** बेरोज़गार कार्यबल का एक बड़ा हिस्सा युवाओं का है, विशेषकर वे जो माध्यमिक या उच्च शिक्षा प्राप्त हैं। ILO के अनुसार, वर्ष 2023 में वैश्विक युवा बेरोज़गारी 13.3% थी। इसके विपरीत, भारत की युवा बेरोज़गारी दर वर्ष 2023-24 में 10.2% थी।
- **निम्न उत्पादकता:** अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) के अनुसार, भारत में वैश्विक स्तर पर दूसरा सबसे दीर्घतम औसत कार्य सप्ताह 46.7 घंटे का है, जिसमें **51** % लोग 49 घंटों से अधिक कार्य करते हैं। यह भूटान में सर्वाधिक है।
  - इसके बावजूद, भारत की श्रम उत्पादकता निम्न बनी हुई है जहाँ प्रति कार्य घंटे **सकल घरेलू उत्पाद (GDP)** केवल **8 अमेरिकी डॉलर** है और **वर्ष 2023** में इसका स्थान विश्व में **133वाँ** था।
- **ग्रामीण रोज़गार की निर्भरता:** ग्रामीण कार्यबल का एक व्यापक हिस्सा **निम्न उत्पादकता अथवा जीवन निर्वाह के कार्य में संलग्न** है, जिससे **अल्परोज़गार** और गुणवत्तापूर्ण, कौशल-प्रधान रोज़गार की तुलना में **अनौपचारिक, असुरक्षित नौकरियों** के प्रचलन को लेकर चिंताएँ बढ़ रही हैं।

रोज़गार से संबंधित भारत में कौन-सी पहलें हैं?

- **पीएम-दक्ष (प्रधानमंत्री दक्ष और कुशल संपन्न हितग्राही) योजना**
- **महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम (MGNREGA)**
- **प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY)**
- **रोज़गार मेला**
- **आजीविका और उद्यम हेतु उपेक्षित व्यक्तियों की सहायता (SMILE)**

भारत के श्रमिक बल का वर्द्धन करने हेतु क्या किया जा सकता है?

- **कौशल-उद्योग असंतुलन को पाटना:** निजी अभिकर्त्ताओं के साथ **राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (NSDC)** की साझेदारी के माध्यम से परिणाम-आधारित कौशल को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।
  - युवाओं को **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस,** डेटा एनालिटिक्स और साइबर सुरक्षा जैसे **उद्योग 4.0** कौशल से लैस करने के लिये **फ्यूचर स्किल्स प्राइम इकोसिस्टम** को एकीकृत किया जाना चाहिये।
- **समावेशिता के साथ औपचारिकता को बढ़ावा देना: ई-श्रम, आधार** और **यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI)** के संयोजन का उपयोग कर असंगठित श्रमिकों के लिये **'एक राष्ट्र, एक पंजीकरण'** को संस्थागत बनाने की आवश्यकता है।
  - **पीएम विश्वकर्मा** और **उद्यम पोर्टल** जैसी योजनाओं के माध्यम से माइक्रो क्रेडिट पहुँच और MSME की डिजिटल ऑनबोर्डिंग की सुविधा प्रदान किये जाने की आवश्यकता है।
- **नगरीय रोज़गार और आवागमन को संस्थागत बनाना: केरल की अय्यंकाली नगरीय रोज़गार योजना** के आधार पर नगरीय पारिश्रमिक रोज़गार मॉडल का विस्तार करना (नगरीय क्षेत्रों के परिवारों में अकुशल शारीरिक कार्य करने के इच्छुक वयस्कों को प्रति वर्ष 100 दिनों का मज़दूरी रोज़गार की गारंटी देना)।
  - अंतरराज्यीय प्रवासी श्रमिकों के लिये आवास और बीमा सहायता के साथ **श्रमिक आवागमन गलियारों** का निर्माण किया जाना चाहिये।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **रोज़गार सृजन में जलवायु परिवर्तन की उपयोगिता:** पर्यावरणीय लाभ के साथ रोज़गार सृजन के लिये हरित क्षेत्रों (सौर, ई.वी., अपशिष्ट से ऊर्जा) में निवेश को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।
  - उच्च कार्बन क्षेत्रों के श्रमिकों को पुन: कौशल प्रदान करने के लिये न्यायोचित संक्रमण सिद्धांतों को शामिल किया जाना चाहिये।
- **लैंगिक आधारित श्रम सुधारों की रूपरेखा तैयार करना:** राज्यों को ज़िला स्तर की बाधाओं (जैसे, परिवहन, देखभाल कार्य, पितृसत्तात्मक मानदंड) का मानचित्रण करने और लक्षित हस्तक्षेपों की रूपरेखा तैयार करने के लिये **महिला कार्यबल भागीदारी सूचकांक** का संचालन करना चाहिये।
  - **कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व** व्यय अधिदेशों को **महिलाओं के कौशल विकास, मार्गदर्शन और कार्य पर वापसी कार्यक्रमों** के समर्थन के साथ संबद्ध करने की आवश्यकता है।
- **नियोक्ताओं को प्रोत्साहित करना: रोज़गार-संबद्ध प्रोत्साहन योजनाएँ (ELI)** प्रदान करना, जहाँ कर राहत नए औपचारिक रोज़गारों के सृजन के अनुपात में हो।
  - समावेशी नियुक्ति प्रथाओं (महिलाओं, दिव्यांगजनों, वृद्धजनों और ट्रांसजेंडर व्यक्तियों) को अपनाने वाली कंपनियों के लिये वित्तीय लाभ प्रदान करना।

दृष्टि मेन्स प्रश्न:

प्रश्न. उच्च आर्थिक विकास के बावजूद, भारत को रोज़गार विहीन संवृद्धि और युवा बेरोज़गारी की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। चर्चा कीजिये।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

आंतरिक सुरक्षा

तकनीक संचालित सीमा सुरक्षा और भारत

चर्चा में क्यों?

जम्मू और कश्मीर के कठुआ की यात्रा के दौरान केंद्रीय गृहमंत्री ने चार वर्षों के भीतर **संपूर्ण भारत-पाकिस्तान सीमा को व्यापक इलेक्ट्रॉनिक निगरानी के अंतर्गत लाने की योजना** की घोषणा की।

- यह कदम **मार्च 2025 में कठुआ के निकट हुए आतंकवादी हमले** के बाद उठाया गया है, जिसने उन्नत, **प्रौद्योगिकी-संचालित सीमा सुरक्षा उपायों** की आवश्यकता को रेखांकित किया था।
- इस पहल के भाग के रूप में, सीमा सुरक्षा को बढ़ाने के लिये **एंटी ड्रोन सिस्टम, टनल डिटेक्शन सिस्टम,** तथा **हाई-मास्ट लाइटिंग और वॉचटावर** विकास के प्रमुख क्षेत्र होंगे।

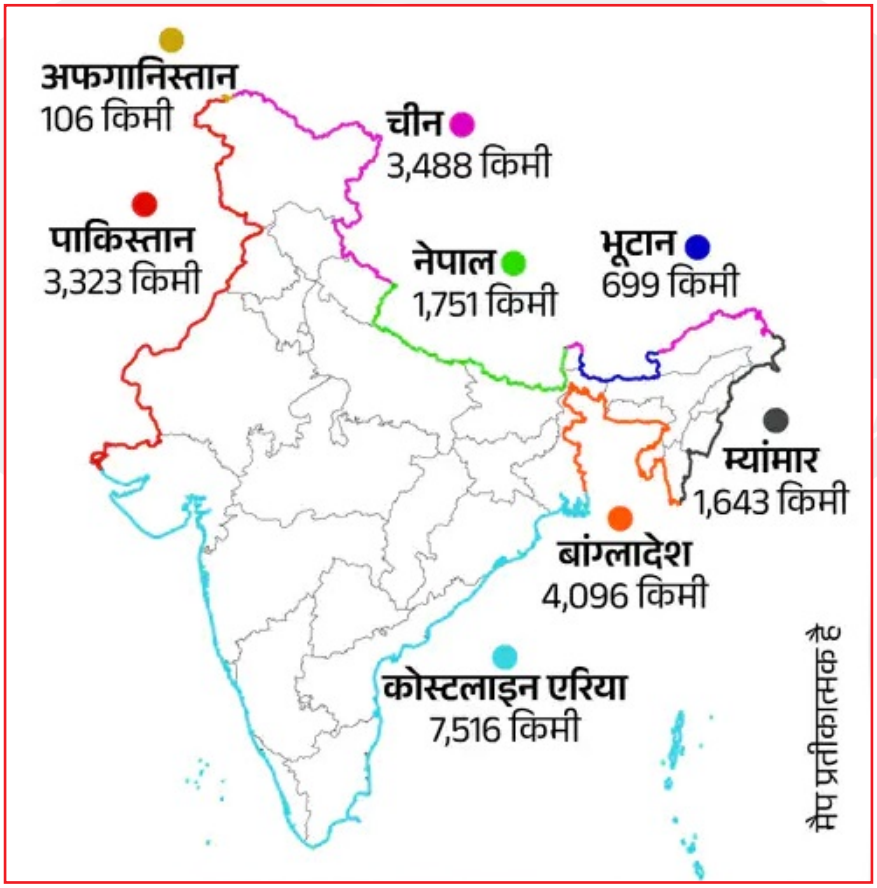

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

भारत के लिये उन्नत सीमा प्रबंधन क्यों महत्त्वपूर्ण है?

- **सीमा पार आतंकवाद:** पाकिस्तान स्थित आतंकवादी संगठनों (जैसे, **लश्कर-ए-तैयबा, जैश-ए-मोहम्मद**) से लगातार खतरों के कारण, विशेष रूप से **भारत-पाकिस्तान सीमा** और **नियंत्रण रेखा (LoC)** पर चौबीसों घंटे निगरानी की आवश्यकता होती है।
  - **उदाहरण के लिये, वर्ष 2016 का उरी हमला** और **वर्ष 2019 का पुलवामा हमला** दोनों ही इन आतंकवादी समूहों द्वारा किये गए थे।
  - **भारत -पाकिस्तान सीमा 3,323 किलोमीटर लंबी है,** जिसमें 744 किलोमीटर **नियंत्रण रेखा** और जम्मू-कश्मीर में लगभग 200 किलोमीटर अंतर्राष्ट्रीय सीमा शामिल है - **यह क्षेत्र प्राय: घुसपैठ और सीमा पार आतंकवाद द्वारा लक्षित** होता है।
    - वर्ष 2021 से अब तक जम्मू क्षेत्र से **30 से अधिक आतंकवाद संबंधी घटनाएँ** सामने आई हैं।
- **तस्करी, हथियारों और मादक पदार्थों के व्यापार से निपटना:** भारत की खुली सीमाओं, विशेषकर पंजाब, जम्मू और पूर्वोत्तर में, प्राय: **मादक पदार्थों की तस्करी, हथियारों की तस्करी** और **जाली मुद्रा की आवाजाही** के लिये उपयोग किया जाता है।
  - प्रभावी सीमा प्रबंधन अवैध वस्तुओं के प्रवाह को रोकता है जो आंतरिक अपराध और **उग्रवाद** को बढ़ावा देते हैं।
  - एक हालिया उदाहरण में **मार्च 2025 में पंजाब पुलिस द्वारा एक सीमा पार ड्रग कार्टेल का भंडाफोड़ शामिल है, जो 'डेथ क्रिसेंट'** द्वारा भारत के लिये उत्पन्न मुद्दे को उजागर करता है।
    - डेथ क्रिसेंट में **अफगानिस्तान, ईरान और पाकिस्तान** शामिल हैं, जो भारत में हेरोइन की तस्करी का प्राथमिक स्रोत है।
- **सीमावर्ती क्षेत्रों में विकास को सुगम बनाना:** सुरक्षा जोखिमों के कारण सीमावर्ती क्षेत्र प्राय: अविकसित रह जाते हैं। सीमावर्ती बुनियादी ढाँचे को मज़बूत करने से **वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम** जैसी योजनाओं को लागू करना संभव हो सकेगा।
  - यह **वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) पर गाँवों का विस्तार करने के चीन के प्रयासों का मुकाबला करने** में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- **राष्ट्रीय संप्रभुता और रणनीतिक प्रतिरोध को मज़बूत करना:** दृश्यमान, सुव्यवस्थित सीमाएँ संप्रभुता के प्रतीक के रूप में कार्य करती हैं।
  - वे प्रतिकूल गतिविधियों को रोकने में मदद करते हैं और भारत के अपने क्षेत्र पर दृढ़ नियंत्रण को दर्शाते हैं, विशेष रूप से जम्मू-कश्मीर और अरुणाचल प्रदेश जैसे विवादित क्षेत्रों में (**चीन ने हाल ही में अपने नए जारी मानचित्र में इस क्षेत्र पर दावा किया है**)।

सीमा प्रबंधन के लिये भारत की मौजूदा पहल क्या हैं?

- **व्यापक एकीकृत सीमा प्रबंधन प्रणाली (CIBMS):** सभी स्तरों पर बेहतर स्थितिजन्य जागरूकता सुनिश्चित करने तथा भारत-पाकिस्तान और भारत-बांग्लादेश सीमाओं पर किसी भी स्थिति पर त्वरित प्रतिक्रिया करने के लिये **CIBMS** को डिजाइन किया गया है।
  - यह **जनशक्ति, सेंसर, संचार नेटवर्क, खुफिया जानकारी और कमांड नियंत्रण प्रणालियों** को एक एकीकृत सेटअप में लाता है।
- **एकीकृत चेक पोस्ट (ICP):** अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं पर **एकीकृत चेक पोस्ट** का उद्देश्य सीमा पार लोगों और वस्तुओं की सुचारू, सुरक्षित और कुशल आवाजाही सुनिश्चित करना है।
- **सीमा अवसंरचना विकास: वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम,** और **सीमा क्षेत्र विकास कार्यक्रम** के तहत, अवसंरचना उन्नयन से रक्षा और स्थानीय विकास दोनों में मदद मिलती है।
- **सीमा अवसंरचना और प्रबंधन (BIM) योजना:** इसका उद्देश्य सीमावर्ती बुनियादी ढाँचे, **जैसे सीमा बाड़, सीमा सड़कें और अन्य संबंधित सुविधाओं** के विकास पर केंद्रित परियोजनाओं को कार्यान्वित करके देश की अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं पर सुरक्षा को मज़बूत करना है।
- **स्मार्ट फेंसिंग: संवेदनशील सीमा क्षेत्रों में निगरानी और नियंत्रण को मज़बूत करने** के लिये तकनीकी रूप से उन्नत सीमा सुरक्षा बुनियादी ढाँचे को डिज़ाइन किया गया है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- इस पहल के हिस्से के रूप में, **गृह मंत्रालय** भारत-म्याँमार सीमा पर 100 किलोमीटर की **स्मार्ट फेंसिंग प्रणाली बनाने की योजना** बना रहा है।

सीमा पर निगरानी के वैश्विक मॉडल

देश	सीमा निगरानी मॉडल	प्रमुख विशेषताएँ
USA	इंटीग्रेटेड फिक्स्ड टावर्स और SBInet	फिक्स्ड और मोबाइल वीडियो निगरानी प्रणाली, थर्मल इमेजिंग उपकरण, रडार, ग्राउंड सेंसर और **रेडियो फ्रीक्वेंसी सेंसर**।
इज़राइल	स्मार्ट फेंस टेक्नोलॉजी	AI-सक्षम प्रणालियाँ, भूमिगत सेंसर, गति पहचान और चेहरे की पहचान।
चीन	BeiDou उपग्रह-आधारित निगरानी	स्मार्ट टावर, उपग्रह से जुड़ा सीमा प्रबंधन।
यूरोपीय संघ	EUROSUR	ड्रोन, उपग्रह और **AI-आधारित विश्लेषण** का उपयोग करके वास्तविक समय की निगरानी।
दक्षिण कोरिया	विसैन्यीकृत क्षेत्र निगरानी	हीट सेंसर, भूकंपीय सेंसर, स्मार्ट फेंस, और **ड्रोन समर्थन के साथ चौबीसों घंटे मानव निगरानी।**

नोट: अमेरिका और इज़राइल जैसे कुछ देशों ने सुरक्षा चिंताओं को दूर करने और अवैध गतिविधियों पर नियंत्रण करने के लिये **बॉर्डर वॉल बनाने पर विचार** किया है, जैसे कि **अमेरिका-मेक्सिको बॉर्डर वॉल** और **इज़राइल का वेस्ट बैंक बैरियर**, जिसका उद्देश्य अवैध आव्रजन और तस्करी पर अंकुश लगाना है।

तकनीक आधारित सीमा सुरक्षा हेतु भारत की योजना से संबंधित प्रमुख मुद्दे क्या हैं?

- **भूभाग की जटिलता और अनुकूलन की आवश्यकताएँ:** पाकिस्तान के साथ भारत की सीमा मरुस्थलीय, दलदली भूमि और पर्वतीय इलाकों तक विस्तृत है, जिससे एक **समान अनुवीक्षण मॉडल** अप्रभावी हो जाता है। स्थानीय परिस्थितियों, विशेष रूप से वनों और पर्वतों (कश्मीर घाटी) के अनुकूल तकनीक को अपनाना एक प्रमुख चुनौती बनी हुई है।
- **अंतर-एजेंसी समन्वय अभाव: प्रभावी सीमा प्रबंधन** के लिये सीमा सुरक्षा बल (BSF), भारतीय सेना, आसूचना ब्यूरो, स्थानीय पुलिस और केंद्रीय मंत्रालयों के बीच निर्बाध सहयोग की आवश्यकता होती है।
  - हालाँकि, क्षेत्राधिकारों में अतिव्यापन, **वास्तविक समय में आसूचना साझा करने की कमी, तथा एकीकृत कमान संरचना के अभाव** से सामान्यत: घुसपैठ अथवा ड्रोन घुसपैठ के दौरान अनुक्रिया करने में देरी होती है।
- **तकनीकी विश्वसनीयता और अनुरक्षण:** ड्रोन और सेंसर जैसे उच्च तकनीक वाले निगरानी उपकरणों को **नियमित अनुरक्षण** और विशेषज्ञ प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।
  - ऋतुओं की विषम स्थिति **(राजस्थान में अत्यधिक उष्णता, जम्मू-कश्मीर में शीत और कोहरा)** से प्राय: उपकरणों का निष्पादन प्रभावित होता है।
  - इससे ज़मीन पर इन उपकरणों की **स्थिरता और चिरस्थायित्व** को लेकर प्रश्न किये जाते हैं।
- **वित्तीय और तार्किक बाधाएँ:** हालाँकि सरकार ने "पर्याप्त बजट" होने का आश्वासन दिया है, लेकिन बृहद स्तर पर निगरानी कार्यान्वयन हेतु **उच्च पूंजी और परिचालन व्यय** की आवश्यकता है।
  - कुशल परियोजना प्रबंधन और उपयुक्त विक्रेता जवाबदेही, विशेष रूप से दूरदराज़ के क्षेत्रों में उपकरणों की खरीद, परिनियोजन और जीवनचक्र अनुरक्षण के लिये आवश्यक है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **नागरिक स्वतंत्रता और पर्यावरण संबंधी चिंताएँ:** अनुवीक्षण तंत्र के वर्द्धन को गोपनीयता सुरक्षा और पारिस्थितिकी संबंधी चिंताओं के साथ संतुलित किया जाना चाहिये।
  - उदाहरण के लिये, **वन (संरक्षण) संशोधन अधिनियम, 2023** के तहत सीमा के 100 किलोमीटर के भीतर रणनीतिक परियोजनाओं को वन मंज़ूरी से छूट प्रदान की गई है, जिससे विशेषकर जनजातीय और **पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों** में **वनोन्मूलन** और **विस्थापन** को लेकर चिंताएँ बढ़ रही हैं।

भारत की सीमाएँ और उन पर परिनियोजित सेनाएँ

सीमा	परिनियोजित बल
भारत-नेपाल सीमा	सशस्त्र सीमा बल (SSB)
भारत-पाकिस्तान सीमा	सीमा सुरक्षा बल (BSF)
भारत-चीन सीमा	भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (ITBP)
भारत-बांग्लादेश सीमा	सीमा सुरक्षा बल (BSF)
भारत-भूटान सीमा	सशस्त्र सीमा बल (SSB)
भारत-म्यांमार सीमा	असम राइफल्स
भारत-श्रीलंका समुद्री सीमा	भारतीय तटरक्षक बल (ICG)

तकनीक आधारित सीमा सुरक्षा में तेज़ी लाने के लिये भारत क्या उपाय अपना सकता है?

- **संवेदनशील क्षेत्रों में त्वरित परिनियोजन:** जम्मू और पंजाब जैसे क्षेत्रों को प्राथमिकता दी जानी चाहिये, जहाँ घुसपैठ के प्रयास बढ़ गए हैं।
  - उदाहरण के लिये, **वर्ष 2024** के **पुंछ आतंकवादी हमले** से वन क्षेत्रों की सुभेद्यताएँ उजागर हुईं, तथा ऐसे उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में इलेक्ट्रॉनिक निगरानी और ड्रोन आधारित टोही की तत्काल आवश्यकता पर बल दिया।
- **सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) और स्वदेशी नवाचार:** भारत को लागत प्रभावी निगरानी प्रणाली विकसित करने के लिये **iDEX (रक्षा उत्कृष्टता के लिये नवाचार)** के तहत स्टार्टअप का लाभ उठाना चाहिये।
  - उदाहरण के लिये, **मुंबई स्थित ड्रोन निर्माता कंपनी आइडियाफोर्ज** पूर्व में भारतीय सेना और BSF को दुर्गम क्षेत्रों में निगरानी के लिये ड्रोन की आपूर्ति कर चुकी है।
- **गश्त अनुकूलन के लिये AI और डेटा एनालिटिक्स का उपयोग: प्रोजेक्ट हिमशक्ति** जैसे मॉडल का विस्तार किया जाना चाहिये, जो उपग्रह इमेजरी को संसाधित करने और पूर्वी लद्दाख में सीमा पार आवाजाही का पूर्वानुमान करने हेतु AI के उपयोग पर आधारित है।
  - गश्ती योजना को बेहतर बनाने और अचानक होने वाली घुसपैठ की घटनाओं को कम करने के लिये **पश्चिमी सीमा** पर भी इसी प्रकार का नीति क्रियान्वित की जा सकती है।
- **समन्वय के लिये एकीकृत सीमा कमान: अमेरिकी गृह सुरक्षा विभाग** के **सीमा शुल्क और सीमा सुरक्षा (CBP) मॉडल** की तरह एक एकीकृत कमान को संस्थागत बनाया जाना चाहिये, जो एक केंद्रीय प्रणाली के तहत सीमा बलों, आव्रजन और निगरानी का समन्वय करता है।
  - भारत BSF, सेना, CRPF और आसूचना एजेंसियों के बीच **बेहतर तालमेल के लिये इसका अनुकरण कर सकता है।**
- **उपग्रह निगरानी और GIS मानचित्रण का एकीकरण:** भारत को **वास्तविक समय सीमा निगरानी के लिये कार्टोसैट के उपयोग का विस्तार करना चाहिये** और सुदूर क्षेत्रों में सुरक्षा बलों के बीच निर्बाध समन्वय सुनिश्चित करने के उद्देश्य से उन्नत संचार के लिये **GSAT-7 (रुक्मिणी) का उपयोग करना चाहिये।**
  - उच्च-रिज़ॉल्यूशन उपग्रह इनपुट **घुसपैठ-प्रवण क्षेत्रों के मानचित्रण** और वास्तविक समय ट्रैकिंग में सहायता कर सकते हैं।

दृष्टि मेन्स प्रश्न:

प्रश्न. भारत की सीमा प्रबंधन चुनौतियों के संदर्भ में, आंतरिक सुरक्षा को मज़बूत करने में इलेक्ट्रॉनिक निगरानी की भूमिका का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिये।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 — SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस — SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स — SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप — SCAN ME

नोट:

सामाजिक न्याय

भारत में सिंथेटिक ड्रग की तस्करी

चर्चा में क्यों?

भारत **सिंथेटिक ड्रग तस्करी** में वृद्धि का सामना कर रहा है। प्रतिक्रियास्वरूप, हरियाणा के नारकोटिक्स नियंत्रण ब्यूरो ने नेटवर्क पर नज़र रखने, प्रीकर्सर केमिकल्स की निगरानी करने तथा राज्य में अवैध प्रयोगशालाओं को नष्ट करने के लिये एक **एंटी-सिंथेटिक नारकोटिक्स टास्क फोर्स** का गठन किया है।

सिंथेटिक ड्रग्स क्या हैं?

- **परिचय:** सिंथेटिक ड्रग पूर्णत: प्रयोगशालाओं में **प्रीकर्सर केमिकल्स** (एक यौगिक जो रासायनिक अभिक्रिया में भाग लेता है जिससे एक अन्य यौगिक बनता है) का उपयोग करके बनाई जाती हैं और इसमें किसी भी **पादप-आधारित घटक** की आवश्यकता नहीं होती है।
- **ड्रग्स का वर्गीकरण:**

वर्ग	स्रोत	उदाहरण
नेचुरल ड्रग्स	सीधे पादपों से	अफीम पोस्ता (पैपावर सोमनीफेरम), कैनबिस, कोका
सेमी-सिंथेटिक ड्रग्स	नेचुरल ड्रग्स से रासायनिक रूप से संशोधित	मॉर्फिन, कोडीन, हेरोइन, कोकीन
सिंथेटिक ड्रग्स	पूर्णत: प्रयोगशाला में निर्मित	एम्फेटामाइन्स, एक्स्टसी, डायज़ेपाम, मेथाक्वालोन

सिंथेटिक ड्रग्स के संबंध में चिंताएँ क्या हैं?

- **तीव्र नवप्रवर्तन से खामियाँ:** सिंथेटिक ड्रग्स को प्राय: **नए साइकोएक्टिव पदार्थ (NPS)** बनाने के लिये संशोधित किया जाता है, जो **स्वापक औषधि और मन:प्रभावी पदार्थ अधिनियम (NDPS), 1985** के दायरे से बाहर होते हैं।
  - उदाहरण के लिये, **फेंटानिल** के अनुरूप पदार्थ भारतीय एजेंसियों द्वारा मादक द्रव्यों के रूप में वर्गीकृत करने से पहले ही तेज़ी से सामने आ गए हैं, जिससे प्रवर्तन प्रयासों में बाधा उत्पन्न हो रही है।
- **उत्पादन में आसानी:** पादप-आधारित मादक द्रव्यों के विपरीत, सिंथेटिक ड्रग्स का उत्पादन आसानी से उपलब्ध प्रीकर्सर केमिकल्स का उपयोग करके **छोटी, अवैध प्रयोगशालाओं** में किया जा सकता है।
  - यह **विकेंद्रीकृत मॉडल** पता लगाने और उसे नष्ट करने को अधिक कठिन बना देता है।
- **पहचान में कठिनता:** हेरोइन, कैनबिस और पोस्ता भूसी जैसी पारंपरिक ड्रग्स के लिये **व्यापक आपूर्ति शृंखला** की आवश्यकता होती है, जिसमें प्राय: **सीमा पार से तस्करी** शामिल होती है। हालाँकि, सिंथेटिक ड्रग्स को अक्सर **वैध औद्योगिक या फार्मास्युटिकल खेपों** के भीतर छिपा दिया जाता है।
  - **सीमा पर जाँच और स्निफर डॉग जैसे पारंपरिक तरीके कम प्रभावी** हैं।
  - तस्करी करने वाले नेटवर्क एन्क्रिप्टेड वित्तीय लेनदेन चैनलों के लिये **डार्क नेट, क्रिप्टोकरेंसी** और **ब्लॉकचेन तकनीक** पर तेज़ी से निर्भर हो रहे हैं। इससे वित्तीय लेनदेन और आपूर्ति शृंखलाओं पर नज़र रखना काफी जटिल हो जाता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **उच्च क्षमता और घातकता:** फेंटानिल जैसी सिंथेटिक ड्रग्स **अत्यंत शक्तिशाली** होती हैं, यहाँ तक कि इनकी छोटी खुराक भी घातक हो सकती है।
  - विशेषकर युवाओं में **सिंथेटिक ड्रग्स की कम कीमत और उच्च उपलब्धता** के कारण बड़े पैमाने पर ड्रग की लत का खतरा बढ़ जाता है। भारतीय राज्यों में सिंथेटिक ड्रग्स से प्रेरित मनोविकृति, अपराध और पढ़ाई छोड़ने वालों की संख्या में वृद्धि देखी जा रही है।
- **भारत पर वैश्विक सिंथेटिक ड्रग्स का प्रभाव:** सिंथेटिक ड्रग्स उत्पादन में वैश्विक बदलाव के कारण भारत को कम जोखिम वाले, उच्च पहुँच वाले क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।
  - भारत, चीन के साथ **सक्रिय दवा सामग्री (API)** के प्रमुख उत्पादकों में से एक है, तथा **गोल्डन क्रीसेंट** और **गोल्डन ट्राइंगल** के बीच स्थित होने के कारण, वैध रसायनों को अवैध ड्रग्स निर्माण में बदलने से रोकने के लिये संघर्ष करता है।
  - ऑनलाइन मंचों और ट्यूटोरियल्स के उदय ने गैर-विशेषज्ञों के लिये सिंथेटिक ड्रग्स का संश्लेषण करना आसान बनाकर कानून प्रवर्तन प्रयासों और सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रतिक्रियाओं को और अधिक जटिल बना दिया है।

भारत में औषधि के उपयोग संबंधी विधिक ढाँचा

- भारत में स्वापक औषधियों और मन:प्रभावी पदार्थों पर राष्ट्रीय नीति भारतीय संविधान के **अनुच्छेद 47** पर आधारित है, जो राज्य को औषधीय प्रयोजनों के अतिरिक्त मादक पदार्थों के सेवन पर प्रतिबंध लगाने का अधिकार देता है।
- भारत की औषधि नियंत्रण नीति तीन प्रमुख अधिनियमों- **औषधि और प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940, स्वापक औषधि और मन:प्रभावी पदार्थ (NDPS) अधिनियम, 1985,** तथा **स्वापक औषधि और मन:प्रभावी पदार्थ अवैध व्यापार निवारण अधिनियम, 1988**- द्वारा विनियमित है।
- औषधियों के दुरुपयोग पर नियंत्रण करने का कार्य एक **केंद्रीय कार्य** है। वित्त मंत्रालय, **राजस्व विभाग** के माध्यम से, NDPS अधिनियम, 1985 और NDPS अधिनियम, 1988 में अवैध तस्करी की रोकथाम के कार्यान्वयन की देखरेख करता है।
  - प्रवर्तन को सुदृढ़ बनाने हेतु, वर्ष 1986 में **स्वापक नियंत्रण ब्यूरो (NCB)** की स्थापना की गई, जो मादक द्रव्यों की तस्करी के खिलाफ कार्रवाई के समन्वय और औषधि के उपयोग संबंधी नियंत्रण उपायों को लागू करने के लिये ज़िम्मेदार **केंद्रीय प्राधिकरण** है।

भारत में सिंथेटिक ड्रग को विनियमित करने हेतु किन सुधारों की आवश्यकता है?

- **विधायी आधुनिकीकरण: उभरते रासायनिक रूपों पर पहले से नियंत्रण करने** के लिये दवाओं की **जेनेरिक अनुसूची** को शामिल करने के लिये NDPS अधिनियम में संशोधन करने की आवश्यकता है, जिससे तस्करों द्वारा विधायी विलंब के कारण इसका दुरुपयोग किये जाने की संभावना को कम किया जा सकेगा।
  - **उभरते NPS को वर्गीकृत करने के लिये गृह मंत्रालय** के अंतर्गत एक फास्ट-ट्रैक तंत्र स्थापित किया जाना चाहिये।
- **राष्ट्रीय प्रीकर्सर नियंत्रण नेटवर्क:** हरियाणा का सिंथेटिक नारकोटिक्स-रोधी टास्क फोर्स, अवैध डायवर्जन का पता लगाने और उसकी रोकथाम करने हेतु **राज्य खाद्य एवं औषधि प्रशासन (FDA) के सहयोग से वास्तविक समय में रासायनिक ट्रैकिंग प्रणाली का उपयोग करता है।**
  - इसका विस्तार करते हुए, एक **राष्ट्रीय अग्रदूत निगरानी प्रणाली** के अंतर्गत राज्य FDA और निर्माताओं को एकीकृत किया जाना चाहिये तथा यह सुनिश्चित करना चाहिये कि प्रत्येक लेनदेन को **लॉग किया जाए, उसका विश्लेषण किया जाए,** और अनियमितताओं को चिह्नित किया जाए और साथ ही संदिग्ध थोक लेनदेन के लिये AI-संचालित अलर्ट भी जारी किया जाए।
- **डिजिटल निगरानी: क्रिप्टोकरेंसी-चालित दवा भुगतानों** का पता लगाने के लिये ***चेनैलिसिस*** जैसे वैश्विक ब्लॉकचेन फोरेंसिक उपकरणों को एकीकृत करने तथा डिजिटल वित्तीय निगरानी में सुधार करने एवं सिंथेटिक दवा तस्करी से निपटने के प्रयासों को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।
- **अंतर्राष्ट्रीय समन्वय:** भारत को वैश्विक सिंथेटिक ड्रग कार्टेल से निपटने के लिये **नारकोटिक ड्रग्स पर एकल कन्वेंशन (1961), साइकोट्रोपिक पदार्थों पर कन्वेंशन (1971)**

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

और **अवैध तस्करी के विरुद्ध संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन (1988)** जैसे **संयुक्त राष्ट्र अभिसमयों** में अपनी भागीदारी का लाभ उठाना चाहिये।

- **पारराष्ट्रीय प्रयासों को सुदृढ़ करने** तथा मादक पदार्थ नियंत्रण उपायों में सुधार करने हेतु आसूचना साझा करने तथा सर्वोत्तम प्रथाओं के लिये **INTERPOL** के साथ सहयोग किया जाना चाहिये।

- **स्वास्थ्य और जागरूकता उपाय:** **मादक पदार्थों की मांग में कमी के लिये राष्ट्रीय कार्य योजना (NAPDDR)** के तहत नशामुक्ति के बुनियादी ढाँचे का विस्तार करने और विशेष रूप से युवाओं और नगरीय क्षेत्रों में **सिंथेटिक दवाओं के खतरों** पर **नशा मुक्त भारत अभियान (NMBA)** के तहत लक्षित अभियान शुरू करने की आवश्यकता है।

दृष्टि मेन्स प्रश्न:

प्रश्न. सिंथेटिक ड्रग्स परंपरागत नार्कोटिक ड्रग्स से किस प्रकार भिन्न हैं तथा उन्हें विनियमित करना अधिक कठिन क्यों है?

भारत में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों से संबंधित चुनौतियाँ

चर्चा में क्यों?

ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के साथ होने वाले भेदभाव और हिंसा के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिये **31 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय ट्रांसजेंडर विज़िबिलिटी दिवस** के रूप में मनाया जाता है।

- **उभयलिंगी व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019** के अधिनियमित होने के बावजूद, समुदाय को चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जो विधिक प्रावधानों और ज़मीनी वास्तविकताओं में व्यापक अंतराल को उजागर करता है।

ट्रांसजेंडर व्यक्ति से क्या अभिप्राय है?

- **उभयलिंगी व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019** के अनुसार, ट्रांसजेंडर अथवा उभयलिंगी व्यक्ति वह होता है जिसकी **लैंगिक पहचान जन्म के समय निर्धारित लिंग से सुमेलित नहीं होती है।**

- **जनसंख्या:** **वर्ष 2011 की जनगणना** के अनुसार, उनकी जनसंख्या लगभग **4.8 मिलियन** है। इसमें **इंटरसेक्स भिन्नता वाले ट्रांस-व्यक्ति, जेंडर-क्वीर और** सामाजिक-सांस्कृतिक अस्मिता वाले व्यक्ति जैसे **किन्नर, हिजड़ा, आरावानी और जोगता** शामिल हैं।

- **LGBTQIA+ का हिस्सा:** ट्रांसजेंडर व्यक्ति **LGBTQIA+** समुदाय का हिस्सा हैं, जिन्हें संक्षिप्त नाम में "T" द्वारा दर्शाया गया है।
  - **LGBTQIA+** एक संक्षिप्ति (शब्दों के प्रथम अक्षरों से बना शब्द) है जो **लेस्बियन, गे, बाइसेक्सुअल, ट्रांसजेंडर, क्वीर, इंटरसेक्स और एसेक्सुअल** का प्रतिनिधित्व करता है।
  - "+" उन अनेक अन्य अस्मिताओं को दर्शाता है जिनकी **पहचान प्रकिया और अवबोधन वर्तमान में जारी** है।
  - इस संक्षिप्ति में निरंतर परिवर्तन जारी है और इसमें **नॉन-बाइनरी और पैनसेक्सुअल** जैसे अन्य पद भी शामिल किये जा सकते हैं।

भारत में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के समक्ष कौन-सी चुनौतियाँ हैं?

- **कार्यान्वयन में अंतराल:** वर्ष 2019 अधिनियम में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिये समय पर सहायता अनिवार्य करने के बावजूद, दिसंबर 2023 तक केवल **65% आईडी कार्ड** आवेदनों का ही निपटान किया गया, और 3,200 से अधिक आवेदन 30-दिन की विधिक समय सीमा से परे विलंबित थे।
  - **प्रमाणन की जटिल प्रक्रिया** से **आत्म-पहचान** स्पष्ट करने में बाधा उत्पन्न होती है तथा **पुलिस उत्पीड़न और परिवार द्वारा अस्वीकृति** जैसे मुद्दों का समाधान करना कठिन हो जाता है।

- **सामाजिक भेदभाव:** भारत में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को व्यापक अस्वीकृति, उत्पीड़न और भेदभाव का सामना करना पड़ता है, जिसके कारण उनके **मानसिक स्वास्थ्य** पर प्रभाव पड़ता होता है जिसमें **31% आत्महत्या** कर लेते हैं और **50%** 20 वर्ष की आयु से पहले ऐसा करने का प्रयास करते हैं।
  - **NALSA** द्वारा आयोजित सर्वेक्षण के अनुसार **27%** व्यक्तियों को लिंग पहचान के कारण उपचार से वंचित रखा गया। **लिंग-पुष्टि उपचार** की लागत 2-5 लाख रूपए है, जो सामान्यत: **बीमा द्वारा कवर नहीं की जाती है।**

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- आयुष्मान भारत टीजी प्लस के तहत 5 लाख रूपए वार्षिक कवरेज की पेशकश के बावजूद, **जागरूकता और अभिगमता सीमित** है।

- **आर्थिक अपवर्जन:** व्यक्तियों को **नियुक्ति संबंधी पूर्वाग्रह, कार्यस्थल पर दुर्भावना** और लिंजेंडर-न्यूट्रल सुविधाओं के अभाव के कारण **रोज़गार और उद्यमिता के सीमित** अवसर प्राप्त होते हैं।
  - 48% बेरोज़गारी दर (ILO 2022) के साथ 92% **व्यक्ति** आर्थिक रूप से अपवर्जित हैं (NHRC 2018)। **संयुक्त बैंक खातों** पर **2024 के परिपत्र** के बावजूद, जागरूकता अभाव और संस्थागत अंतराल के कारण वित्तीय पहुँच सीमित बनी हुई है।
- **शिक्षा में बाधाएँ:** भारत में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों की **साक्षरता दर 56.1%** है, जो **राष्ट्रीय औसत (74%) (2011 की जनगणना)** से कम है। हालाँकि महाराष्ट्र और केरल जैसे राज्यों ने समावेशी नीतियों का कार्यान्वन किया है, लेकिन **राष्ट्रव्यापी जेंडर-सेंसिटिव पाठ्यक्रम का अभाव** है।

उभयलिंगी व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019 क्या है?

- **परिचय:** इस अधिनियम का उद्देश्य **ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के अधिकारों की रक्षा करना** और उनके सशक्तिकरण के लिये **कानूनी ढाँचा** प्रदान करना है।
- **प्रमुख प्रावधान:**
  - **भेदभाव न करना:** शिक्षा, रोज़गार, स्वास्थ्य सेवा और सार्वजनिक सेवाओं में भेदभाव को प्रतिबंधित करता है।
  - **स्व-पहचान:** यह स्व-अनुभूत लैंगिक पहचान का अधिकार प्रदान करता है, जिसका प्रमाण-पत्र ज़िला मजिस्ट्रेट द्वारा बिना मेडिकल परीक्षण के जारी किया जाता है।
  - **चिकित्सा देखभाल:** बीमा कवरेज के साथ लैंगिक-पुष्टि उपचार (Gender-Affirming Treatments) और HIV निगरानी तक पहुँच सुनिश्चित करता है।
  - **राष्ट्रीय परिषद:** इस अधिनियम के तहत **वर्ष 2020** में एक **वैधानिक निकाय** के रूप में **राष्ट्रीय ट्रांसजेंडर व्यक्ति परिषद (NCTP)** की स्थापना की गई।

ट्रांसजेंडर अधिकार सुधार में प्रमुख उपलब्धियाँ

- **निर्वाचन आयोग का निर्देश (वर्ष 2009):** पंजीकरण फॉर्म को अद्यतन कर उसमें **"अन्य" विकल्प** शामिल किया गया, जिससे ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को पुरुष या महिला पहचान से बचने में मदद मिली।
- **सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय (वर्ष 2014):** राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण बनाम भारत संघ मामले, 2014 में सर्वोच्च न्यायालय ने ट्रांसजेंडर लोगों को **"थर्ड जेंडर"** के रूप में मान्यता दी, तथा इसे मानवाधिकार मुद्दा माना।
- **विधायी प्रयास (वर्ष 2019): ट्रांसजेंडर व्यक्तियों** के अधिकारों की रक्षा के लिये उभयलिंगी व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019 लागू किया गया।

ट्रांसजेंडर कल्याण के लिये भारत का प्रयास क्या है?

- SMILE योजना
- गरिमा गृह
- आयुष्मान भारत TG प्लस
- ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिये राष्ट्रीय पोर्टल
- **ट्रांसजेंडर पेंशन योजना:** ट्रांसजेंडर व्यक्ति अब दिव्यांगता पेंशन योजना के लिये पात्र हैं, तथा दिव्यांगता फॉर्म में "ट्रांसजेंडर" विकल्प भी शामिल किया गया है।
- **भारतीय जेलों में मान्यता:** जनवरी 2022 में, गृह मंत्रालय ने थर्ड जेंडर के कैदियों की गोपनीयता, गरिमा सुनिश्चित करने के लिये राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के जेल प्रमुखों को एक सलाह भेजी थी।
- **राज्य स्तरीय प्रयास:** महाराष्ट्र ने **कॉलेजों में ट्रांसजेंडर प्रकोष्ठ** स्थापित किये हैं, जबकि केरल **ट्रांसजेंडर व्यक्तियों** के लिये **विश्वविद्यालय स्तर पर आरक्षण और छात्रावास सुविधाएँ** प्रदान करता है।

आगे की राह

- **विधिक ढाँचे को मज़बूत करना:** उभयलिंगी व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019 को **समय पर कल्याणकारी पहुँच सुनिश्चित करने** के लिये अक्षरशः लागू किया जाना चाहिये।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **आर्थिक सशक्तिकरण:** लैंगिक-समावेशी नीतियाँ, विविधतापूर्ण भर्ती और वित्तीय योजनाएँ महत्त्वपूर्ण हैं। **टाटा स्टील** जैसे स्केलिंग मॉडल भागीदारी को बढ़ावा दे सकते हैं।
  - **विश्व बैंक की 2021 की रिपोर्ट** में अनुमान लगाया गया है कि यदि ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को कार्यबल में शामिल किया जाए तो GDP में 1.7% की वृद्धि होगी।
- **स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच:** बीमा में लैंगिक-पुष्टि उपचार (Gender-Affirming Treatments) शामिल होना चाहिये, और प्रदाताओं को **संवेदनशीलता प्रशिक्षण** प्राप्त करना चाहिये। **समर्पित ट्रांसजेंडर क्लीनिक** और विस्तारित मानसिक स्वास्थ्य सेवाएँ आवश्यक हैं।
- **सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा देना: शैक्षिक संस्थानों और कार्यस्थलों** में **लैंगिक संवेदनशीलता को बढ़ावा देना,** विविध मीडिया प्रतिनिधित्व और **कूवगम महोत्सव जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों** को बढ़ावा देना।
  - "मैं भी मानव हूँ (I Am Also Human)" जैसे जागरूकता अभियान सामाजिक पूर्वाग्रहों को चुनौती देने के लिये आवश्यक हैं।
- **अंतर्राष्ट्रीय सर्वोत्तम प्रथाएँ:** भारत अर्जेंटीना, कनाडा और UK जैसे देशों से प्रेरणा लेकर लैंगिक पहचान की स्व-घोषणा, लैंगिक-तटस्थ नीतियों और भेदभाव-विरोधी कानूनों को अपनाकर ट्रांसजेंडर अधिकारों को बढ़ा सकता है।

दृष्टि मेन्स प्रश्न:

प्रश्न. कानूनी प्रगति के बावजूद भारत में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के सामने आने वाली चुनौतियों पर चर्चा कीजिये। उनके समावेशन के लिये किन उपायों की आवश्यकता है?

मातृ मृत्यु दर की प्रवृत्ति

चर्चा में क्यों?

संयुक्त राष्ट्र मातृ मर्त्यता प्राक्कलन अंतर-एजेंसी समूह (MMEIG) द्वारा *"ट्रेंड्स इन मैटरनल मोर्टेलिटी: 2000-2023"* विषयक एक रिपोर्ट जारी की गई जिसके अनुसार नाइजीरिया के बाद भारत में मातृ मृत्यु दर सर्वाधिक है।

नोट: MMEIG एक समूह है जिसमें **विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO), संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (UNICEF), संयुक्त राष्ट्र पॉपुलेशन फंड (UNFPA), विश्व बैंक समूह,** संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक कार्य विभाग, जनसंख्या प्रभाग शामिल हैं।

मातृ मृत्यु दर की क्या प्रवृत्ति है?

- **भारत:** वर्ष 2023 में, भारत में कुल 19,000 मातृ मृत्यु दर्ज की गईं, जो **वैश्विक मातृ मृत्यु दर का 7.2%** है, जिससे यह दूसरा ऐसा देश बना जहाँ मातृ मृत्यु सर्वाधिक है।
  - भारत के बाद कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य (7.2%) तथा पाकिस्तान (4.1%) का स्थान है।
  - इसके बावजूद, भारत में मातृ मृत्यु में कमी लाने में महत्त्वपूर्ण प्रगति की है जहाँ **मातृ मृत्यु अनुपात (MMR)** वर्ष 2000 के 384 से कम हो कर वर्ष 2020 में 103 हो गया, और वर्ष 2023 में यह और भी कम होकर 80 हो गया, जो वर्ष 1990 के बाद से 86% की गिरावट दर्शाता है, जो विश्व में मातृ मृत्यु के औसत गिरावट 48% से अधिक है।
- **वैश्विक MMR:** वर्ष 2000 में अनुमानित 443,000 मृत्यु से वर्ष 2023 में 260,000 तक, वैश्विक MMR 328 से घटकर 197 प्रति 100,000 जीवित जन्म हो गया, जो 40% की कमी दर्शाता है।
  - **मातृ मृत्यु** की लगभग 70% मामले उप-सहारा अफ्रीका में केंद्रित हैं, जहां **क्षेत्रीय MMR सर्वाधिक 454** है।
  - ओशिनिया और मध्य एवं दक्षिणी एशिया में भी मध्यम MMR क्रमश: 173 और 112 दर्ज की गई।
  - केवल **ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड** में **MMR अत्यंत अल्प (~3)** थी, जो एकदम भिन्न असमानता को दर्शाती है।
- **मंद प्रगति:** वैश्विक MMR का वार्षिक रिडक्शन रेट (ARR) **2.2% (2000-2023)** से घटकर केवल **1.6% (2016-2023)** हो गया।
  - **सतत् विकास लक्ष्य (SDG) लक्ष्य 3.1** (वर्ष 2030 तक वैश्विक MMR को प्रति लाख जीवित जन्मों पर 70 से नीचे लाना) को प्राप्त करने के लिये वर्ष 2024 से 2030 तक 14.8% की ARR की आवश्यकता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

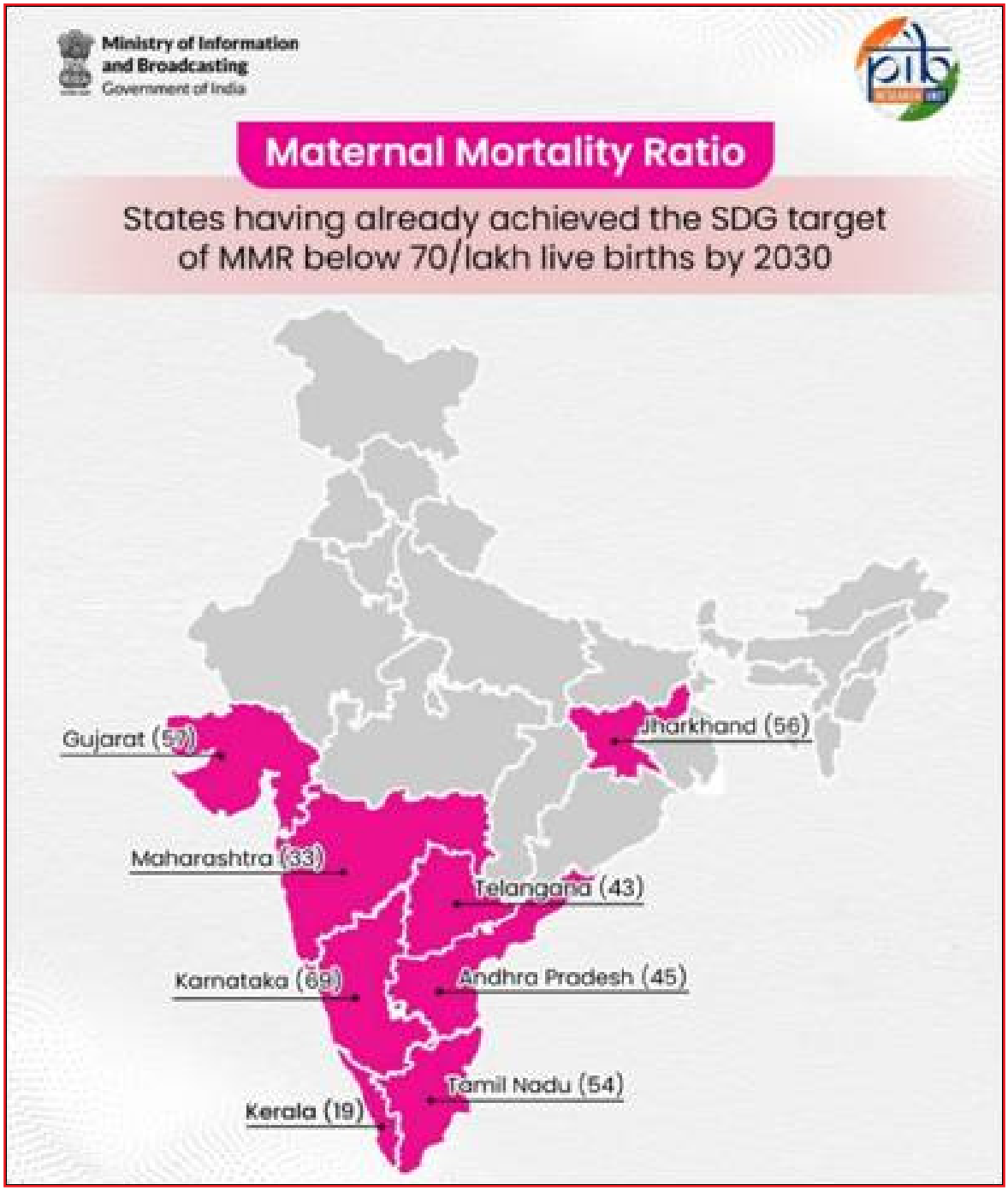

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

मातृ मृत्यु और MMR

- **मातृ मृत्यु:** इसका आशय गर्भावस्था के दौरान अथवा उसके समापन के 42 दिनों के भीतर गर्भावस्था से संबंधित कारणों (दुर्घटना/आकस्मिक कारणों के अतिरिक्त) से माता की मृत्यु से है।
- **MMR:** यह किसी निश्चित समयावधि में प्रति 100,000 जीवित जन्मों पर मातृ मृत्यु की संख्या है।
  - यह गर्भावस्था और प्रसव के दौरान मातृ स्वास्थ्य देखभाल की गुणवत्ता और चिकित्सा सेवाओं तक पहुँच का आकलन करने के लिये उपयोग किया जाने वाला एक प्रमुख संकेतक है।

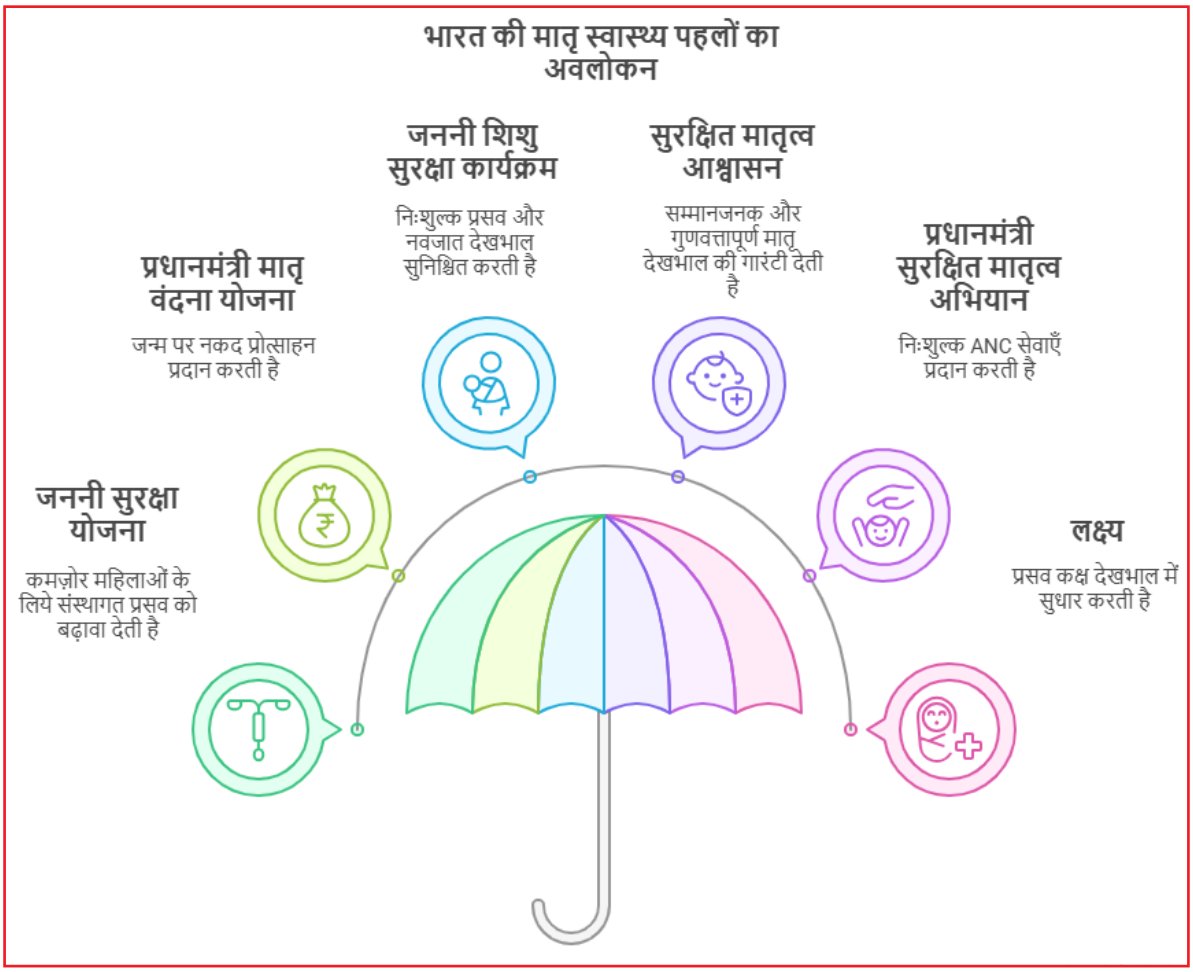

भारत की मातृ मृत्यु दर में सुधार से संबंधित चिंताएँ क्या हैं?

- **मातृ मृत्यु की उच्च निरपेक्ष संख्या:** मातृ मृत्यु दर (MMR) घटकर 80 प्रति 100,000 जीवित जन्म होने के बावजूद, विश्व में होने वाली कुल मातृ मृत्यु में से 7.2% भारत में केंद्रित हैं, जो **मातृ स्वास्थ्य देखभाल अभिगम और गुणवत्ता** के लंबे समय से बने अभाव को दर्शाता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **वैश्विक रिपोर्टों में अनुचित तुलना:** स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने मातृ मृत्यु के मामले में **भारत (145 करोड़)** की तुलना नाइजीरिया (23.26 करोड़) से करने पर चिंता व्यक्त की है, तथा यह स्पष्ट किया कि **जनसंख्या के आकार को समायोजित किये बिना निरपेक्ष संख्याओं का उपयोग** किये जाने से भारत की सापेक्षिक प्रगति का त्रुटिपूर्ण चित्रण हो सकता है।
- **प्रगति की धीमी गति:** भारत की MMR 6.36% (वर्ष 2000-वर्ष 2020) तक घट गई, जो वैश्विक AAR 2.07% से अधिक है, फिर भी यह **SDG 3.1 लक्ष्य** को पूरा करने के लिये पर्याप्त नहीं है।
  - जबकि केरल, महाराष्ट्र और तमिलनाडु जैसे राज्यों ने 70 से नीचे MMR हासिल किया है, अन्य राज्य जैसे **असम (195), मध्य प्रदेश (173), उत्तर प्रदेश (167) और बिहार (118)** राष्ट्रीय औसत से पीछे हैं, जो मातृ स्वास्थ्य देखभाल में क्षेत्रीय असमानताओं को दर्शाता है।
- **कुशल प्रसव देखभाल तक पहुँच में चुनौतियाँ:** **राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM)** और **जननी सुरक्षा योजना (JSY)** जैसी पहलों के बावजूद, कुशल प्रसव परिचारिकाओं और आपातकालीन प्रसूति देखभाल तक पहुँच की कमी के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में संस्थागत प्रसव में कमी चिंता का विषय बनी हुई है।
  - **प्रसवोत्तर रक्तस्राव, संक्रमण और उच्च रक्तचाप संबंधी विकार** जैसी जटिलताएँ, जिनके लिये समय पर चिकित्सा हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है, इन वंचित क्षेत्रों में मातृ मृत्यु के प्रमुख कारण बने हुए हैं।
- **गैर-संचारी रोग (NCD):** भारत में अप्रत्यक्ष मातृ मृत्यु की संख्या में भी वृद्धि देखी जा रही है, विशेष रूप से मधुमेह और उच्च रक्तचाप जैसी **NCD** के कारण।
  - इन बीमारियों का बढ़ता बोझ और **अपर्याप्त प्रसवपूर्व देखभाल** के कारण मातृ मृत्यु दर बढ़ रही है।

भारत द्वारा मातृ मृत्यु दर को कम करने की दिशा में प्रगति को किस प्रकार तीव्र किया जा सकता है?

- **प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल (PHC) केंद्रों को मज़बूत करना:** ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों में महिलाओं को गुणवत्तापूर्ण मातृ देखभाल सुविधा उपलब्ध कराने के लिये **स्वास्थ्य और कल्याण केंद्रों (HWC)** पर ध्यान केंद्रित करना चाहिये।
- **कमज़ोर क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना:** उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश जैसे उच्च जोखिम वाले राज्यों में मोबाइल स्वास्थ्य इकाइयों, टेलीमेडिसिन एवं मान्यता प्राप्त सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्त्ताओं का लाभ उठाकर स्वास्थ्य सेवा निवेश को बढ़ाने के साथ पहुँच संबंधी अंतराल को कम किया जा सकता है।
  - इसके अतिरिक्त किशोरियों, जनजातीय आबादी तथा निम्न आय वर्ग के लिये केंद्रित देखभाल प्रदान करने के क्रम में **प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान (PMSMA)** जैसे लक्षित कार्यक्रमों का विस्तार किया जाना चाहिये।
- **नीति एकीकरण:** मातृ स्वास्थ्य नीतियों को **SDG 5 (लैंगिक समानता)** और **SDG 10 (असमानताओं में कमी)** के अनुरूप बनाया जाना चाहिये ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि मातृ देखभाल सभी महिलाओं (विशेष रूप से हाशिये पर स्थित समूहों) के लिये सुलभ हो।
  - **समाज में सुधार लाने, समुदायों को शिक्षित करने तथा गरीबी और लिंग आधारित हिंसा** जैसे सामाजिक निर्धारकों के समाधान के क्रम में बहुक्षेत्रीय दृष्टिकोण आवश्यक है।
- **डेटा प्रणाली को उन्नत करना: मातृ मृत्यु की सटीक रिपोर्टिंग सुनिश्चित करने के क्रम में नागरिक पंजीकरण प्रणाली (CRS) पोर्टल** के तहत सटीक डेटा संग्रहण को बढ़ावा देना चाहिये, जो प्रभावी नीति निर्माण एवं संसाधन आवंटन के लिये आवश्यक है।
  - लक्षित हस्तक्षेपों को सक्षम करने के क्रम में मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य संकेतकों की रियल टाइम ट्रैकिंग हेतु **सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम** के अंतर्गत **U-WIN** जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्मों का लाभ उठाना चाहिये।

दृष्टि मेन्स प्रश्न:

प्रश्न. प्रगति के बावजूद, भारत वैश्विक मातृ मृत्यु दर में शीर्ष योगदानकर्त्ताओं में से एक बना हुआ है। इससे संबंधित कारणों का आलोचनात्मक विश्लेषण करते हुए वर्ष 2030 तक SDG 3.1 लक्ष्य को पूरा करने के उपाय बताइए।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

सामाजिक सुरक्षा स्थिति रिपोर्ट 2025

चर्चा में क्यों?

विश्व बैंक ने *सामाजिक सुरक्षा स्थिति रिपोर्ट 2025* जारी की जिसके अनुसार **निम्न और मध्यम आय वाले देशों (LIC और MIC)** में लगभग दो अरब व्यक्तियों के पास पर्याप्त सामाजिक सुरक्षा का अभाव है।

नोट: वित्तीय वर्ष 2025 के लिये, **विश्व बैंक प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय (GNI)** के आधार पर अर्थव्यवस्थाओं को वर्गीकृत करता है।

- **निम्न आय अर्थव्यवस्थाएँ (LIC):** प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय 1,145 अमेरिकी डॉलर या उससे कम।
- **निम्न-मध्यम आय अर्थव्यवस्थाएँ (LMIC):** प्रति व्यक्ति GNI 1,146 अमेरिकी डॉलर से 4,515 अमेरिकी डॉलर के बीच (वर्तमान में **भारत निम्न-मध्यम आय श्रेणी** में है)।
- **उच्च-मध्यम आय अर्थव्यवस्थाएँ (UMIC):** प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय 4,516 अमेरिकी डॉलर से 14,005 अमेरिकी डॉलर के बीच।
- **उच्च आय अर्थव्यवस्थाएं (HIC):** प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय 14,005 अमेरिकी डॉलर से अधिक।

सामाजिक सुरक्षा की स्थिति क्या है?

- **कवरेज में व्यापक अंतराल:** LIC और MIC में 1.6 बिलियन लोगों को कोई सामाजिक सुरक्षा नहीं प्राप्त है। वैश्विक स्तर पर, अत्यधिक निर्धनता में रहने वाले 88% लोगों के पास या तो पर्याप्त अथवा किसी भी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा का अभाव है।
  - LIC और उप-सहारा अफ्रीका में यह आँकड़ा **क्रमशः 98% और 97%** है। LMIC में, 30% से अधिक व्यक्तियों के पास पर्याप्त कवरेज का अभाव है।
  - इसका सर्वाधिक अभाव MIC में है, जहाँ **अपेक्षाकृत अधिक जनसंख्या** के कारण **1.2 बिलियन व्यक्ति असुरक्षित** हैं। यदि जनसंख्या मीट्रिक एक खेल होता, तो **उप-सहारा अफ्रीका** सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्र होता, जहाँ 70% व्यक्तियों के पास किसी भी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा नहीं होती।
- **अपर्याप्त प्रगति:** वर्ष 2010 से वर्ष 2022 की अवधि में LIC और MIC में सामाजिक सुरक्षा कवरेज 41% से बढ़कर 51% हो गया। इस प्रगति के बावजूद, अनेक वर्ग अभी भी इसके दायरे से बाहर हैं, जिससे वे आकस्मिक आर्थिक समस्याओं, जलवायु परिवर्तन और संघर्षों के प्रति सुभेद्य हैं।
- **SDG के साथ अनुरूपता में कमी: वर्तमान दर पर,** अत्यधिक गरीबी में रहने वाले लोगों तक सामाजिक सुरक्षा कवरेज को **पूर्ण रूप से विस्तारित करने में वर्ष 2043** तक का समय लगेगा, और इसका विस्तार **सर्वाधिक निर्धन 20% तक करने में वर्ष 2045 तक का समय लगेगा।**
  - **सतत् विकास लक्ष्य (SDG) संख्या 1.3** में सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी को बराबर का हक मिल सके।
- **वित्तपोषण संबंधी बाधाएँ:** उच्च आय वाले देश, LIC की तुलना में सकल घरेलू उत्पाद का 5.3 गुना अधिक तथा प्रति व्यक्ति 85.8 गुना अधिक खर्च करते हैं।
  - LIC सामाजिक सहायता पर **सकल घरेलू उत्पाद का केवल 0.8%** और **उच्च-MIC में 2%** खर्च करते हैं, जिससे गरीब देशों के समक्ष आने वाली वित्तीय चुनौतियों पर प्रकाश पड़ता है
  - इनका खर्च मुख्य रूप से **औपचारिक श्रमिकों के लिये सामाजिक बीमा** पर केंद्रित है तथा गरीब और अनौपचारिक क्षेत्रों की उपेक्षा की जाती है।
  - **सब्सिडी में असंतुलन** भी बना हुआ है। **वैश्विक सब्सिडी (जीवाश्म ईंधन, कृषि)** में लगभग 7 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर का लाभ अक्सर धनी वर्ग को मिलता है, कमज़ोर वर्ग को नहीं।
- **बाह्य आघात:** सामाजिक सुरक्षा प्रणालियाँ जलवायु आघातों, संघर्ष और महामारी के लिये तैयार नहीं हैं।
- **जलवायु परिवर्तन के कारण वर्ष 2030 तक 130 मिलियन** अतिरिक्त लोग अत्यधिक गरीबी की स्थिति में आ सकते हैं। अफ्रीका और एशिया के कमज़ोर एवं संघर्ष प्रभावित देशों में विश्व के 60% अत्यधिक गरीब लोग होंगे, जिससे सामाजिक सुरक्षा का अंतराल और भी बड़ जाएगा।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

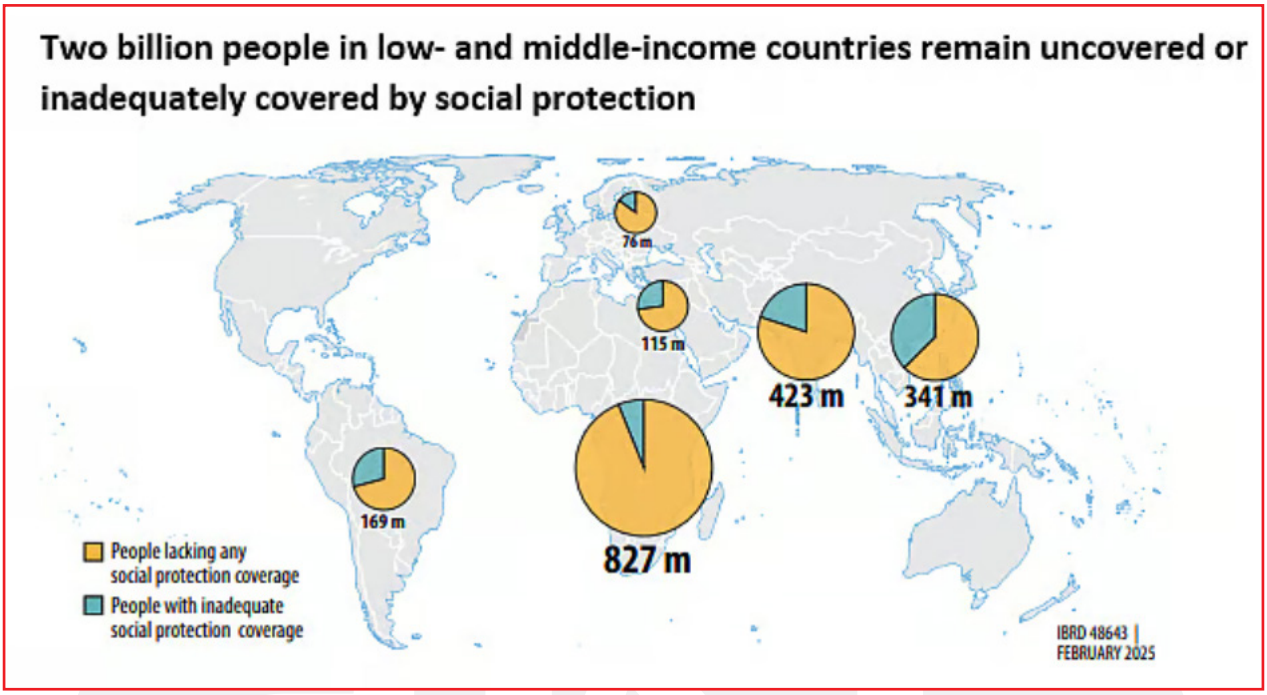

भारत में सामाजिक सुरक्षा की स्थिति क्या है?

- **कवरेज:** **अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO)** की विश्व सामाजिक सुरक्षा रिपोर्ट (WSPR) 2024-26 के अनुसार, भारत का सामाजिक सुरक्षा कवरेज **वर्ष 2021 के 24.4% से दोगुना होकर वर्ष 2024 में 48.8%** हो गया।
  - **भारत के श्रम एवं रोज़गार मंत्रालय** के अनुसार, **65% जनसंख्या (लगभग 920 मिलियन)** कम से कम एक सामाजिक सुरक्षा योजना के अंतर्गत आती है, चाहे वह नकद हो या वस्तु के रूप में।
- **सामाजिक सुरक्षा के माध्यम से गरीबी में कमी:** अनुमान है कि पिछले दशक (वर्ष 2013 और 2023) में 24.8 करोड़ भारतीय **बहुआयामी गरीबी** से बाहर निकले हैं।
- **परिवर्तन को गति देने वाली सरकारी पहल:**
  - **आयुष्मान भारत (AB-PMJAY):** इसके तहत 39.94 करोड़ से अधिक लाभार्थियों को प्रति परिवार 5 लाख तक के स्वास्थ्य कवरेज के तहत शामिल किया गया है।
  - **प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (PMGKAY):** यह विश्व स्तर पर सबसे बड़ी खाद्य सुरक्षा योजनाओं में से एक है। दिसंबर 2024 तक 80.67 करोड़ लोगों को मुफ्त खाद्यान्न प्राप्त हुआ।
  - **ई-श्रम पोर्टल:** यह असंगठित श्रमिकों का राष्ट्रीय डेटाबेस है। 30.68 करोड़ से अधिक पंजीकरण एवं 53.68% महिलाओं के साथ यह समावेशी कवरेज को बढ़ावा देने पर केंद्रित है।
  - **अटल पेंशन योजना (APY):** 7.25 करोड़ नामांकन के साथ यह अनौपचारिक क्षेत्र के श्रमिकों के लिये सेवानिवृत्ति सुरक्षा को मज़बूत करने पर केंद्रित है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

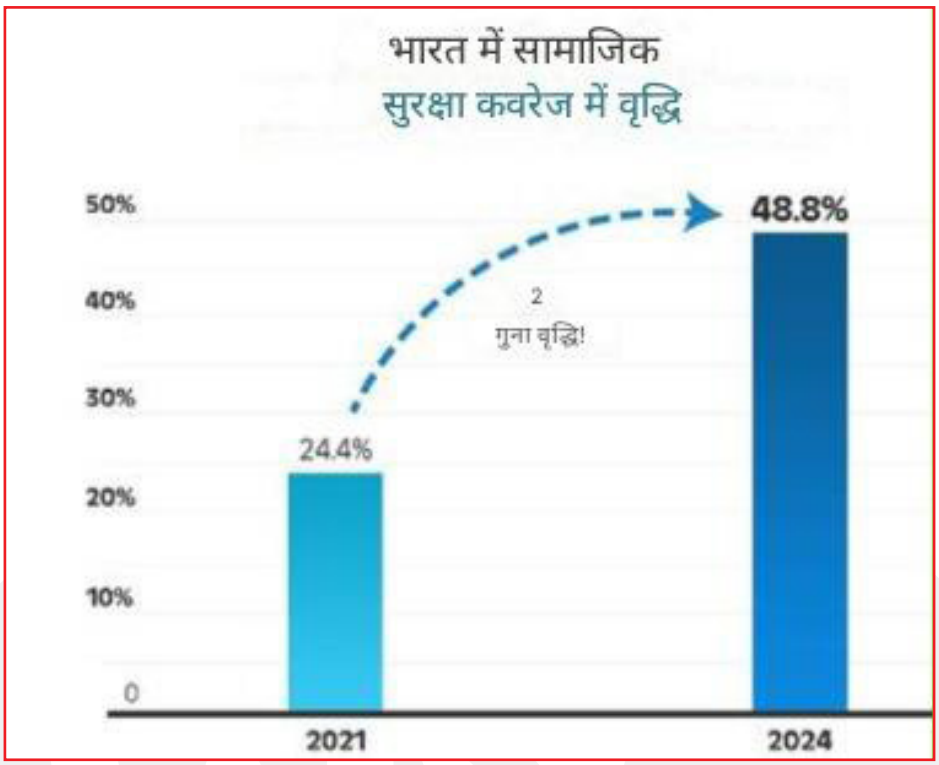

भारत की सामाजिक सुरक्षा प्रणाली के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ क्या हैं?

- **कल्याण बोर्ड:** श्रमिक कल्याण बोर्ड अप्रभावी रहे हैं। उदाहरण के लिये, **निर्माण श्रमिक कल्याण उपकर में 70,000 करोड़ रुपए** से अधिक अप्रयुक्त रह गए हैं (**भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक** की रिपोर्ट 2023)।
- **सीमित राजकोषीय क्षमता:** भारत में **सामाजिक सुरक्षा (स्वास्थ्य को छोड़कर) पर सकल घरेलू उत्पाद** का लगभग 5% खर्च किया जाता है जबकि वैश्विक औसत लगभग **13%** है (विश्व सामाजिक सुरक्षा रिपोर्ट 2024-26, ILO)।
- **तकनीकी एवं प्रशासनिक चुनौतियाँ: ई-श्रम** जैसे डिजिटल उपकरणों में काफी संभावनाएँ हैं लेकिन इसमें कम जागरूकता और सीमित इंटरनेट पहुँच जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। नतीजतन, लगभग 38 करोड़ से ज़्यादा अनौपचारिक श्रमिकों में से केवल **31 करोड़ श्रमिकों का ही पंजीकरण** हुआ है।
- **वैश्विक मानकों का विलंबित अनुसमर्थन:** भारत ने **सामाजिक सुरक्षा (न्यूनतम मानक) अभिसमय, 1952 (सं. 102)** जैसे प्रमुख ILO अभिसमयों का अनुसमर्थन नहीं किया है, जिससे सार्वभौमिक मानदंडों की दिशा में प्रयास सीमित हो गया है।
- **प्रशासनिक चुनौती:** अनेक केंद्रीय और राज्य योजनाओं में **समन्वय का अभाव है,** जिसके कारण **दोहराव, अकुशलता** तथा वास्तविक लाभार्थियों का बहिष्कार होता है।
  - **एकीकृत डेटाबेस का अभाव लक्षित वितरण में बाधा** डालता है, और वर्तमान प्रणालियाँ विकासशील कार्यबल चुनौतियों का सक्रिय रूप से समाधान करने के बजाय मुख्य रूप से **गिग और प्लेटफॉर्म अर्थव्यवस्था श्रमिकों जैसी उभरती श्रेणियों** पर ही ध्यान केंद्रित करती हैं।
  - **सामाजिक सुरक्षा संहिता, 2020** का उद्देश्य कल्याण को सार्वभौमिक बनाना है, लेकिन इसमें स्पष्ट कार्यान्वयन

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

दिशा-निर्देशों का अभाव है। **'गिग' और 'प्लेटफ़ॉर्म' श्रमिकों** की परिभाषाएँ अस्पष्ट हैं, जिससे नीतिगत अस्पष्टता उत्पन्न होती है।

- **जनसांख्यिकीय बदलाव:** भारत की वृद्ध होती जनसंख्या पेंशन और स्वास्थ्य सेवा पर दबाव डालेगी, क्योंकि **सहायता अनुपात (65 वर्ष या उससे अधिक आयु के प्रत्येक वरिष्ठ नागरिक के लिये कार्यशील आयु वर्ग के व्यक्ति)** वर्ष 1997 में 14:1 से घटकर वर्ष 2023 में 10:1 हो गया है, तथा अनुमान है कि वर्ष 2050 तक यह और घटकर 4.6:1 तथा वर्ष 2100 तक 1.9:1 हो जाएगा।
  - वरिष्ठ नागरिकों का उपभोग हिस्सा लगभग दोगुना हो जाएगा, और शीघ्र सुधारों के बिना, वर्तमान सामाजिक सुरक्षा प्रणालियाँ अपर्याप्त होंगी।

सामाजिक सुरक्षा कवरेज़ को प्रभावी ढंग से विस्तारित करने के लिये देश कौन सी रणनीति अपना सकते हैं?

- **भारत:** ILO **कन्वेंशन संख्या** 102 के अनुरूप आय सुरक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, मातृत्व, दिव्यांगता और पेंशन पर न्यूनतम गारंटी अपनाना।
  - **आधार,** ई-श्रम और राज्य कल्याण डेटाबेस से डेटा को सुसंगत बनाने के लिये एक एकीकृत **राष्ट्रीय सामाजिक रजिस्ट्री** विकसित करना।
  - **परिणाम-आधारित वित्तपोषण** को प्राथमिकता देकर सामाजिक सुरक्षा व्यय को धीरे-धीरे **सकल घरेलू उत्पाद के 8-10%** तक बढ़ाया जाना चाहिये।
  - सामाजिक सुरक्षा योजना के बारे में जागरूकता और नामांकन बढ़ाने के लिये **कॉमन सर्विस सेंटर (CSC)** का उपयोग करना और क्षेत्रीय भाषा समर्थन के लिये **भाषिनी** का लाभ उठाना।
- **वैश्विक:** LIC और LMIC में सार्वभौमिक बुनियादी आय, खाद्य सब्सिडी और नकद हस्तांतरण का विस्तार करना सुभेद्य आबादी की रक्षा करना और गरीबी को कम करना है।
  - समावेशी सामाजिक सुरक्षा जाल को निधि देने के लिये प्रतिगामी सब्सिडी में सुधार करना। **सामाजिक रजिस्ट्री** और **प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण** जैसे डिजिटल बुनियादी ढाँचे के साथ **जलवायु-लचीले, आघात-प्रतिक्रियाशील प्रणालियों** में निवेश करना।
  - मज़बूत बीमा और सहायता कार्यक्रमों के साथ **वृद्धावस्था, बेरोज़गारी और दिव्यांगता** जैसे जीवन-चक्र जोखिमों का समाधान करना।
  - सभी के लिये सामाजिक सुरक्षा पर सतत् विकास लक्ष्य 1.3 के साथ सुसंगतता सुनिश्चित करना।

दृष्टि मेन्स प्रश्न:

प्रश्न. सुदृढ़ सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों के महत्त्व पर चर्चा कीजिये। निम्न एवं मध्यम आय वाले देशों के सामने आने वाली प्रमुख चुनौतियों पर प्रकाश डालिये।

जलवायु संवेदनशीलता का महिलाओं पर प्रभाव

चर्चा में क्यों?

बीजिंग घोषणा और कार्यवाही मंच (1995) के तीन दशक पूरे होने के उपलक्ष्य में जारी बीजिंग **इंडिया रिपोर्ट 2024 (बीजिंग+30 पर भारत की रिपोर्ट), लैंगिक समानता पर भारत की प्रगति** की व्यापक समीक्षा प्रस्तुत करती है।

- हालाँकि, यह **लैंगिक असमानता और जलवायु परिवर्तन के बीच बढ़ते अंतरसंबंध पर सीमित ध्यान देता है,** जो एक ऐसा संबंध है जो विशेष रूप से ग्रामीण और जलवायु-संवेदनशील समुदायों की महिलाओं के लिये अधिक प्रासंगिक होता जा रहा है।

जलवायु परिवर्तन महिलाओं को किस प्रकार प्रतिकूल रूप से प्रभावित करता है?

- **जल संकट का लैंगिक बोझ:** वैश्विक स्तर पर, **80% घरों में जल संग्रहण** का दायित्व महिलाओं और लड़कियों पर है।
  - जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न जल की कमी के कारण उन्हें **अधिक दूरी तय करनी पड़ती है, जिससे उनका कार्यभार बढ़ जाता है तथा शिक्षा और आय सृजन गतिविधियों के लिये समय सीमित** हो जाता है।
  - विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार **2 अरब लोग दूषित जल का उपयोग करते हैं,** जिससे महिलाओं और लड़कियों के लिये स्वास्थ्य जोखिम बढ़ जाता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

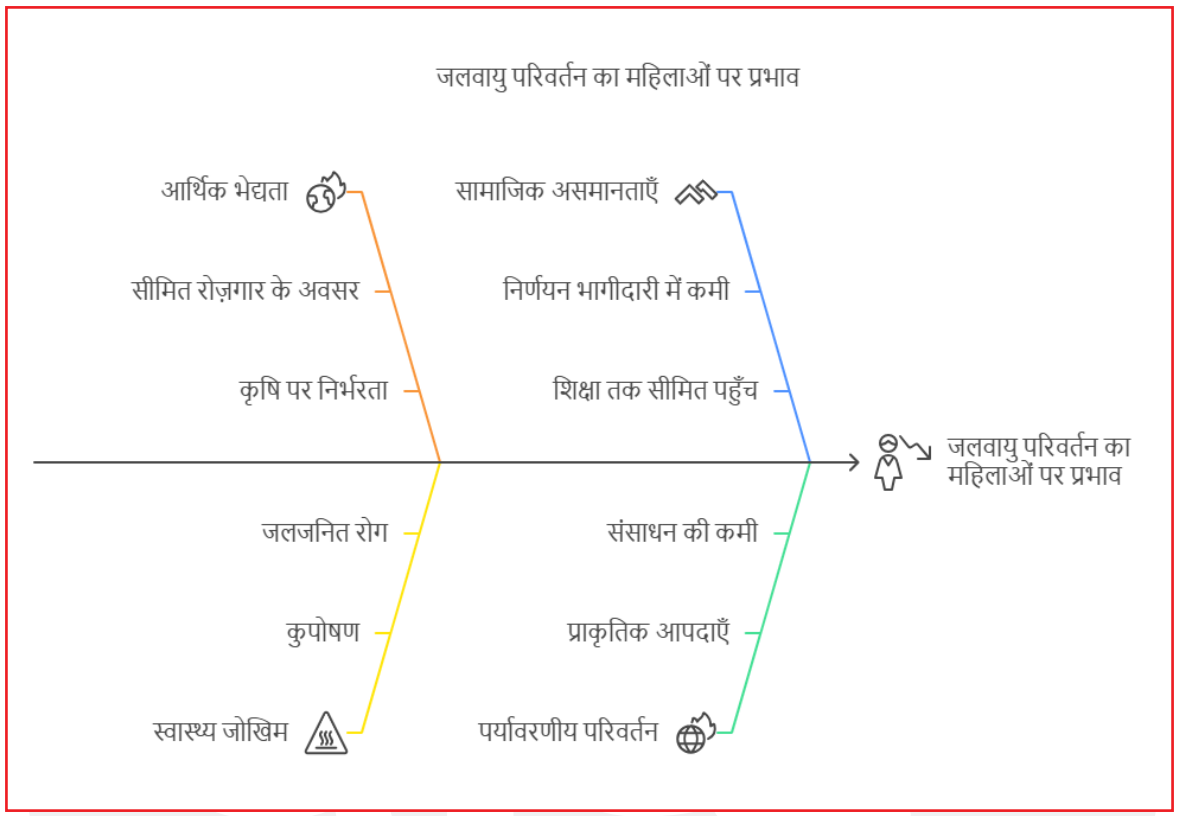

- **भारत** में महिलाएँ **प्रतिवर्ष लगभग 150 मिलियन कार्यदिवस जल संचयन करने में व्यतीत** करती हैं।

- **स्वास्थ्य और कल्याण पर प्रभाव: सूखा और खाद्य असुरक्षा** जैसी जलवायु-प्रेरित घटनाएँ **महिलाओं में कुपोषण** को बढ़ाती हैं, **खाद्य असुरक्षित महिलाओं में एनीमिया से पीड़ित होने की संभावना 1.6 गुना अधिक** होती है।
  - राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5) के अनुसार, 15-49 वर्ष की 52.2% गर्भवती **महिलाएँ एनीमिया** से प्रभावित हैं।
  - **अत्यधिक गर्मी के कारण मृत शिशुओं के जन्म की संख्या बढ़ जाती है** और मलेरिया, डेंगू और जीका जैसी बीमारियाँ फैलती हैं, जिससे **मातृ एवं नवजात स्वास्थ्य** बिगड़ जाता है।
  - बढ़ते तापमान के कारण भारत में **वर्ष 2090 तक घरेलू हिंसा के मामलों में 23.5% की वृद्धि** हो सकती है, जो नेपाल और पाकिस्तान से भी अधिक है। IPCC की छठी मूल्यांकन रिपोर्ट में **आपदाओं के दौरान और उसके बाद लैंगिक हिंसा, तस्करी और यौन हिंसा के अधिक जोखिम को उज़ागर** किया गया है।
- **आर्थिक प्रभाव:** हीट स्ट्रेस और अनियमित वर्षा जैसी चरम मौसम की घटनाएँ **कृषि उत्पादकता को कम** करती हैं, जिससे **विशेष रूप से कृषि में महिलाओं की आय में महत्त्वपूर्ण हानि** होती है।
  - **जलवायु-जनित संसाधनों के अभाव** (जैसे, जल, ईंधन) से **महिलाओं का अवैतनिक देखभाल कार्य और बढ़ता है,** जिसका **वर्ष 2050 तक 8 घंटे/दिन से बढ़कर 8.3 घंटे/दिन** होने का अनुमान है, जिससे वित्तीय स्वतंत्रता सीमित होगी और **लैंगिक असमानता में वृद्धि** होगी।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- पर्यावरण पर निर्भर क्षेत्रों (जैसे, कृषि, वानिकी) में **रोज़गार हानि** की आशंका है, जहाँ **महिलाओं का प्रतिनिधित्व अधिक** है।
  - **भारत के विनिर्माण क्षेत्र में महिलाओं का प्रतिनिधित्व काफी कम** है, तथा **कार्यबल में उनकी हिस्सेदारी केवल 15-20%** है।
- जलवायु परिवर्तन **वर्ष 2050 तक 158.3 मिलियन अधिक महिलाओं और लड़कियों को गरीबी की ओर उन्मुख** कर सकता है, जो पुरुषों की तुलना में 16 मिलियन अधिक है।

- **प्रवासन और विस्थापन: ग्रामीण महिलाएँ** बाढ़, सूखे और अत्यधिक गर्मी के कारण **जलवायु-प्रेरित संकटपूर्ण प्रवास के प्रति अत्यधिक संवेदनशील** होती हैं, जिसके परिणामस्वरूप **गर्भाशय-उच्छेदन (Hysterectomy), बाँझपन और मासिक धर्म संबंधी विकार जैसे प्रतिकूल स्वास्थ्य परिणाम** सामने आते हैं।
  - संयुक्त राष्ट्र का अनुमान है कि **जलवायु परिवर्तन के कारण विस्थापित होने वालों में 80% महिलाएँ हैं,** जिससे प्रवास गलियारों (Migration Corridors) और शिविरों में उनके **शोषण और लैंगिक हिंसा (GBV) का खतरा** अधिक होता है।
  - विस्थापन ने **स्वदेशी और वन-निवासी महिलाओं (Forest-Dwelling Women) के हाशिये पर जाने को भी बढ़ा दिया है,** जिनकी आजीविका भूमि और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर है, तथा वाणिज्यिक शोषण और जलवायु क्षरण के कारण उन पर खतरा लगातार बढ़ता जा रहा है।

जलवायु आघात-सहनीयता और अनुकूलन में महिलाओं की भूमिका क्या है?

- **पारंपरिक ज्ञान और खाद्य सुरक्षा:** महिलाओं के पास संधारणीय कृषि और स्थानीय संसाधन प्रबंधन का गहन ज्ञान है।
  - वे स्थानीय पारिस्थितिकी प्रणालियों के अनुकूल जलवायु-प्रतिरोधी बीज किस्मों को संरक्षित करती हैं, जिससे अनिश्चित मौसम के दौरान खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित होती है।
  - **उदाहरण:** जनजातीय क्षेत्रों में, महिलाएँ **फसल विविधता और पोषण की रक्षा** हेतु **देशी बीज बैंकों का संरक्षण** करती हैं।
- **महिलाओं के नेतृत्व वाली जलवायु पहल:** संधारणीय कृषि से लेकर आपदा प्रतिक्रिया तक, जलवायु अनुकूलन प्रयासों में महिलाओं की भूमिका अग्रणी हो रही हैं।
  - उदाहरण: **ओडिशा के चक्रवात-प्रवण गंजम ज़िले** में, महिलाएँ सामुदायिक आपदा तत्परता का नेतृत्व करती हैं, और प्रथम प्रतिक्रियाकर्त्ता के रूप में कार्य करती हैं। उनके समूह पारिस्थितिकी तंत्र संरक्षण और आजीविका बहाली पर भी कार्य करते हैं।
  - इसके अतिरिक्त, नगरीय क्षेत्रों की महिलाएँ अपशिष्ट प्रबंधन, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन से होने वाले स्वास्थ्य जोखिमों पर ध्यान केंद्रित करती हैं। ग्रामीण और स्वदेशी महिलाएँ **वन-आधारित आजीविका (जैसे, महुआ संग्रह) को संरक्षित करने,** संसाधन संघर्षों का समाधान करने और **जलवायु घटनाओं के कारण होने वाले संकटपूर्ण प्रवास को कम करने को प्राथमिकता देती हैं।**
- **समुदाय-आधारित प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन:** महिलाएँ ज़मीनी स्तर पर जल, वन और कृषि के प्रबंधन में केंद्रीय भूमिका निभाती हैं।
  - **उदाहरण:** राजस्थान में महिलाएँ **जल संरक्षण और अनावृष्टि से राहत** प्रदान करने में सहायता करने हेतु **जोहड़ (पारंपरिक बावड़ी) के निर्माण कार्य में भाग लेती हैं।**
- **कृषि की संधारणीय पद्धतियाँ: देखभालकर्त्ता और कृषक** के रूप में, **महिलाएँ फसल विविधीकरण** और जैविक कृषि जैसी **पर्यावरण-अनुकूल कृषि तकनीकों को बढ़ावा देने** के लिये अच्छी स्थिति में हैं।
  - **उदाहरण:** कर्नाटक में कंप्यूटर इंजीनियर की वृत्ति छोड़ कर चंदन की कृषि करने वाली कविता मिश्रा ने **संधारणीय और लाभकारी कृषि** का एक सफल मॉडल पेश किया है।
- **नवीकरणीय ऊर्जा और आजीविका:** महिलाएँ **पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने** और ग्रामीण आजीविका में सुधार **हेतु स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग** को बढ़ावा देती हैं।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **उदाहरण:** राजस्थान में, **दूनी सहकारी डेयरी** की महिलाएँ कार्यों को करने तथा स्वयं सहायता समूह चलाने के लिये **सौर ऊर्जा** का उपयोग करती हैं ।

महिलाओं पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को न्यूनतम करने हेतु भारत क्या उपाय कर सकता है?

- **जलवायु रूपरेखा में जेंडर संबंधी विषयों को महत्ता देना:** **राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना (NAPCC), राज्य जलवायु परिवर्तन कार्य योजना (SAPCC)** और स्थानीय जलवायु कार्य योजनाओं में जेंडर संबंधी विषयों को एकीकृत किया जाना चाहिये।
  - जलवायु परिवर्तन के जेंडर आधारित प्रभावों को समझने के लिये **जेंडर-रेस्पोंसिव संकेतक और डेटा प्रणालियाँ** विकसित करने, तथा नीतियों में महिलाओं की विशिष्ट चुनौतियों का समाधान सुनिश्चित किये जाने की आवश्यकता है।
- **जलवायु-उत्तरदायी बजट को प्राथमिकता:** वास्तविक प्रभाव पर नज़र रखने और महिला-केंद्रित जलवायु पहलों के लिये संसाधनों का समान वितरण सुनिश्चित करने हेतु जेंडर-ऑडिटेड जलवायु बजट तैयार **ग्रीनवाशिंग** का परिवर्जन करना चाहिये।
- स्थानीय सहायता प्रणालियों की स्थापना: आपदा प्रतिक्रिया, स्वास्थ्य सेवा, विधिक सहायता और प्रवास जागरूकता प्रदान करने के लिये स्थानीय जलवायु सहायता केंद्र स्थापित करने, निर्णय लेने में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने और विस्थापन को रोकने तथा अनुकूलन बढ़ाने के लिये विधिक रूप से उनकी भूमि और आवास अधिकारों की रक्षा किये जाने की आवश्यकता है।
- **कौशल, आजीविका और नेतृत्व:** जलवायु संवेदनशीलता को कम करने के उद्देश्य से **गैर-कृषि कौशल** को बढ़ावा देने और महिलाओं की आजीविका में विविधता लाना आवश्यक है।
  - ग्रामीण महिलाओं को **जलवायु-अनुकूल कृषि तकनीकें** (जैसे, जलाभावसह फसल की खेती, जल संरक्षण पद्धतियाँ) और **स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियाँ** (जैसे, सौर पैनल संस्थापना) सीखने में मदद करने के लिये **प्रशिक्षण केंद्र** स्थापित किये जाने चाहिये, जिससे वे अपनी आजीविका को अनुकूलित और विविधतापूर्ण बना सकें।
  - **महिलाओं के जलवायु सूचना के अभिगम में सुधार:** ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं को **यथासमय और कार्रवाई योग्य जलवायु पूर्वानुमान, प्रारंभिक चेतावनियाँ और तत्परता योजनाएँ** प्रदान करने के लिये **मोबाइल प्रौद्योगिकी और सामुदायिक रेडियो** का उपयोग करने और जलवायु अनुकूलन में देखभालकर्त्ता और संसाधन प्रबंधक के रूप में उनकी भूमिका को मान्यता देने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में लैंगिक असमानता को संबोधित करने के लिये **बहुआयामी दृष्टिकोण** की आवश्यकता है। **लैंगिक-संवेदनशील जलवायु नीतियों** पर ध्यान केंद्रित कर और ज़मीनी स्तर पर महिलाओं का सशक्तीकरण कर, भारत एक अधिक स्थिति स्थापक, संधारणीय और न्यायसंगत भविष्य का निर्माण कर सकता है, जिससे **SDG 5 (लैंगिक समानता), SDG 13 (जलवायु कार्रवाई), SDG 1 (गरीबी उन्मूलन) और SDG 10 (न्यूनीकृत असमानता)** जैसे प्रमुख सतत् विकास लक्ष्यों को अधिक सुगमता से प्राप्त किया जा सकेगा।

दृष्टि मेन्स प्रश्न:

प्रश्न. महिलाओं की आजीविका पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव और जलवायु परिवर्तन शमन एवं अनुकूलन में जेंडर-सेंसिटिव नीतियों की भूमिका पर चर्चा कीजिये।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

अमेरिका भारत में स्मॉल मॉड्यूलर रिएक्टर बनाएगा

चर्चा में क्यों?

अमेरिका ने अपने विनियमन 10CFR810 के तहत **होलटेक इंटरनेशनल** को तीन भारतीय निजी संस्थाओं को **अवर्गीकृत स्मॉल मॉड्यूलर रिएक्टर (SMR) प्रौद्योगिकी** हस्तांतरित करने की मंजूरी दे दी है।

भारत-अमेरिका SMR प्रौद्योगिकी परमाणु समझौते की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

- **वैधता:**
  - यह प्राधिकरण **10 वर्षों के लिये वैध** है तथा **प्रत्येक 5 वर्ष पर इसकी समीक्षा** की जाती है। इससे होलटेक को भारत में परमाणु रिएक्टरों का डिजाइन और निर्माण करने की अनुमति मिल गई है।
- **विनियामक सुरक्षा उपाय:**
  - अनुमोदन के तहत, SMR प्रौद्योगिकी का उपयोग **केवल शांतिपूर्ण नागरिक उद्देश्यों के लिये किया जा सकता है,** इसे **अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA)** के सुरक्षा उपायों का पालन करना होगा, तथा इसका **उपयोग सैन्य गतिविधियों के लिये नहीं किया जा सकता है,** जिससे वैश्विक अप्रसार मानदंडों का अनुपालन सुनिश्चित हो सके।
- **महत्त्व:**
  - **123 समझौते को क्रियान्वित करना:** कानूनी और वाणिज्यिक बाधाओं को दूर करके **वर्ष 2008 के भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु समझौते या 123 समझौते** को क्रियान्वित करना।
  - **निजी क्षेत्र को प्रोत्साहित करना:** यह **भारतीय निजी फर्मों को पहली बार प्रत्यक्ष अमेरिकी प्रौद्योगिकी हस्तांतरण** है, जो **केवल राज्य नियंत्रण से सार्वजनिक-निजी (PPP) मॉडल** की ओर स्थानांतरित हो रहा है।
  - **स्वदेशी क्षमता को बढ़ावा देना:** SMR के स्थानीय विनिर्माण को सुगम बनाना और **भारत को परमाणु नवाचार** और निर्यात, विशेष रूप से ग्लोबल साउथ के लिये, **भविष्य के केंद्र** के रूप में स्थापित करना।
- **कानूनी एवं नीतिगत चुनौतियाँ:**
  - **परमाणु क्षति के लिये नागरिक दायित्व अधिनियम, 2010: परमाणु क्षति के लिये नागरिक दायित्व अधिनियम, 2010, परमाणु दुर्घटनाओं के लिये आपूर्तिकर्त्ताओं को उत्तरदायी** ठहराता है, जिससे विदेशी निवेश और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण हतोत्साहित होता है।
  - **परमाणु ऊर्जा अधिनियम, 1962: परमाणु ऊर्जा अधिनियम, 1962** परमाणु ऊर्जा उत्पादन को सरकारी संस्थाओं तक सीमित करता है, तथा **निजी फर्मों को संयंत्रों के स्वामित्व या संचालन से रोकता** है।
    - सरकार ने **परमाणु ऊर्जा अधिनियम, 1962** और **परमाणु क्षति के लिये नागरिक दायित्व अधिनियम, 2010** में संशोधन करने के लिये **अंतर-मंत्रालयी समितियों** का गठन किया है, जिसका उद्देश्य परमाणु ऊर्जा में **निजी क्षेत्र की भागीदारी** को सक्षम बनाना है।

स्मॉल मॉड्यूलर रिएक्टर (SMR) क्या हैं?

- **परिचय:**
  - SMR उन्नत परमाणु रिएक्टर हैं जिनकी **क्षमता 300 मेगावाट** तक है, जो **पारंपरिक रिएक्टरों का लगभग एक तिहाई** है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

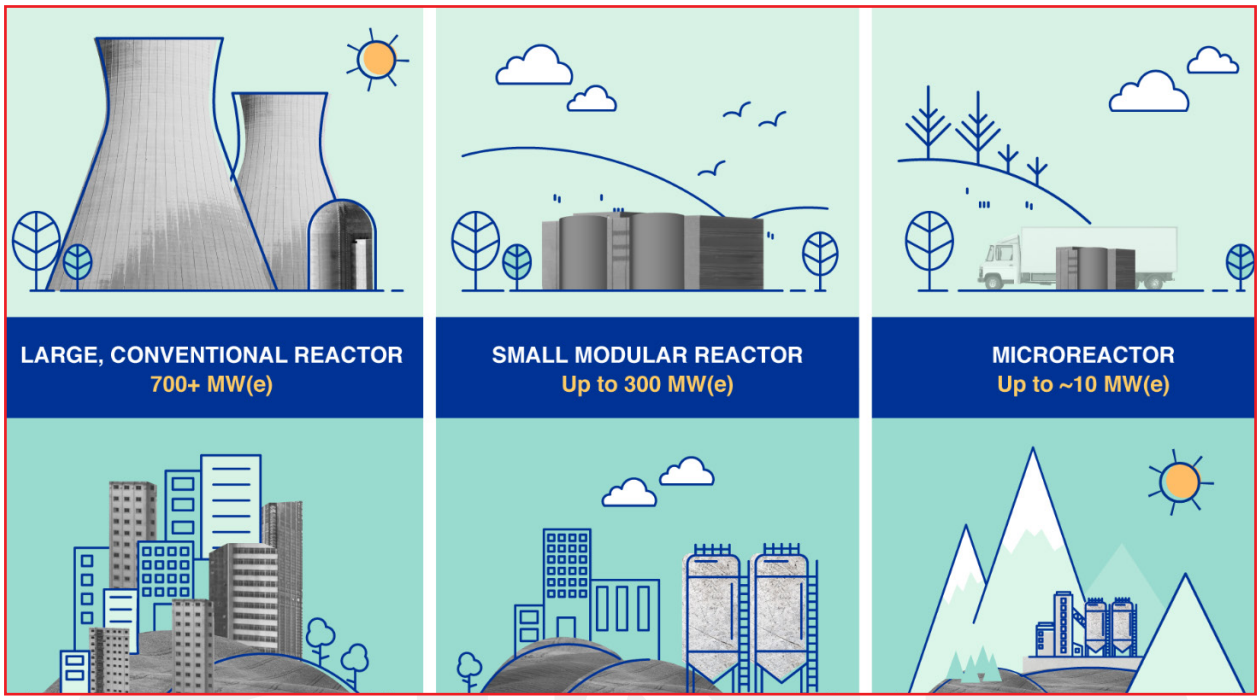

- ये **कॉम्पैक्ट** होते हैं, **कारखाने में असेम्बल** किये जा सकते हैं, तथा **संस्थापना हेतु परिवहन योग्य** हैं, जिससे **दूरदराज़ अथवा सीमित स्थान वाले क्षेत्रों के लिये ये उपयुक्त** हो जाते हैं।
  - **उदाहरण: NuScale (USA), CAREM (अर्जेंटीना)**

प्रमुख विशेषताएँ:

- SMR कॉम्पैक्ट परमाणु रिएक्टर हैं जो अल्प कार्बन विद्युत् उत्पन्न करते हैं। ये हैं:
  - **स्मॉल:** परंपरागत परमाणु रिएक्टरों की तुलना में आकार में बहुत छोटा।
  - **मॉड्यूलर:** फैक्ट्री-निर्मित घटकों को ले जाया जा सकता है और यथा स्थान असेम्बल किया जा सकता है।
  - **रिएक्टर:** ऊष्मा उत्पन्न करने के लिये नाभिकीय विखंडन होता है, जो ऊर्जा में परिवर्तित होती है।

प्रमुख लाभ:

- **ईंधन दक्षता:** इसकी पुन: ईंधनन अवधि **3 से 7 वर्ष** होती है **(परंपरागत संयंत्रों** में यह 1-2 **वर्ष** में किया जाता है)।
- **विस्तार क्षमता और लचीलापन:** इसे विभिन्न विद्युत प्रणालियों में सरलता से एकीकृत किया जा सकता है और इसे दूरदराज़ के क्षेत्रों अथवा शहरी ग्रिडों में इसका विस्तार किया जा सकता है।
  - **दुर्लभ रिएक्टर-ग्रेड ईंधन** अथवा उन्नत संवर्द्धन प्रक्रियाओं पर निर्भरता में कमी आना।
- **निष्क्रिय सुरक्षा:** दुर्घटना के प्रति बेहतर लचीलेपन के लिये इसमें **अंतर्निहित सुरक्षा प्रणालियों** को शामिल किया गया है।
- **निम्न-कार्बन और विश्वसनीय:** यह **24/7 स्वच्छ ऊर्जा** की सुविधा, नवीकरणीय ऊर्जा का पूरक और ग्रिड स्थिरता में सहायता प्रदान करता है जिससे ऊर्जा की बढ़ती मांग को पूरा करने और वर्ष 2070 तक नेट-ज़ीरोलक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता मिलेगी।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

SMALL MODULAR REACTORS

Small modular reactors (SMRs) are one of the latest innovations in producing nuclear energy. With a simplified, compact design and relative low-cost production methods, innovators hope to deploy them more readily.

SMALL:

SMRs are designed to be in the range of 1 to 300 megawatts, roughly one third of the gigawatt scale of traditional nuclear reactors

MODULAR:

SMRs can be manufactured in a factory and transported to the site, making them easier to deploy and potentially reducing construction costs

REACTOR:

Like all nuclear reactors today, SMRs harness nuclear fission to generate heat to produce energy

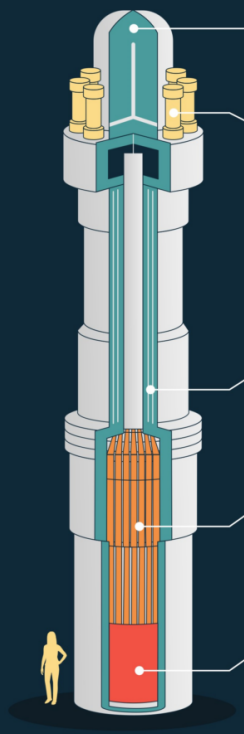

PRESSURIZER

Maintains a stable pressure within the primary coolant loop to prevent boiling and ensures that the coolant remains in a liquid state to improve efficiency and safety

REACTOR COOLANT PUMPS

Circulates the coolant through the reactor core, transferring heat from the fuel rods to the generator to generate electricity and also helping with temperature control

STEAM GENERATOR

Uses heat from the reactor coolant to produce high-pressure steam, which is used to drive a turbine-generator to make electricity

CONTROL RODS

Inserted into the reactor core to absorb neutrons and regulate the reactor's power output, ensuring safe and controlled nuclear reactions

CORE

Contains the nuclear fuel rods where fission reactions occur, producing heat which is used to generate steam and ultimately produce electricity through a power conversion system

Source: U.S. Department of Energy

The Main SMR Types

Light Water Reactors

High Temperature Gas Cooled Reactors

Molten Salt Reactors

Fast Neutron Reactors

By using smaller, mass manufactured designs, SMRs can provide additional benefits in terms of **safety, cost,** and **flexibility** in nuclear power generation.

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- **SMR और भारत:**
  - **बजटीय आवंटन:** केंद्रीय बजट 2025-26 में **स्मॉल मॉड्यूलर रिएक्टरों (SMR)** के **अनुसंधान और विकास** पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक **परमाणु ऊर्जा मिशन** शुरू करने की घोषणा की गई है और **वर्ष 2033** तक **कम-से-कम 5 देशज रूप से डिज़ाइन किये गए और संचालन योग्य SMR विकसित** किये जाने की योजना बनाई गई है।
  - **भारत स्मॉल रिएक्टर (BSR): BSR 220 मेगावाट दाबयुक्त भारी जल रिएक्टर (PHWR)** हैं, जिनका सुरक्षा रिकॉर्ड सुदृढ़ है, जिन्हें इस्पात, एल्यूमीनियम और धातु जैसे उद्योगों के समीप स्थापित किया जाएगा, जो डीकार्बोनाइज़ेशन में सहायता के लिये कैप्टिव पावर प्लांट के रूप में कार्य करेंगे।
    - निजी संस्थाएँ भूमि, शीतलन जल और पूंजी उपलब्ध कराएंगी, जबकि डिज़ाइन, गुणवत्ता आश्वासन और परिचालन संबंधी कार्यों का उत्तरदायित्व NPCIL का होगा।
  - यह पहल वर्ष 2030 तक **500 गीगावाट गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा** और **50% नवीकरणीय ऊर्जा** प्राप्त करने के **भारत के COP26 संकल्प के अनुरूप है।**
  - **स्मॉल मॉड्यूलर रिएक्टर (SMR): भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (BARC) निष्क्रिय हो रहे कोयला आधारित बिजली संयंत्रों को पुनः उपयोगी बनाने** तथा **दूरदराज़ के क्षेत्रों की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने** के लिये SMR पर कार्य कर रहा है।
    - **परमाणु ऊर्जा विभाग (DAE)** भी भारत के विशाल **थोरियम संसाधनों का उपयोग करने के लिये हाइड्रोजन उत्पादन** के लिये **उच्च तापमान गैस-शीतित रिएक्टरों** और **मॉल्टन साल्ट रिएक्टरों** जैसे रिएक्टरों के विकास पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

स्थानीय डेटा केंद्रों की आवश्यकता

चर्चा में क्यों?

भारत विश्व के डिजिटल डेटा में लगभग **20%** का योगदान देता है, लेकिन भारत में वैश्विक **डेटा केंद्र क्षमता का 2% से भी कम हिस्सा है,** जो उपलब्ध डेटा का पूर्ण उपयोग करने के लिये एक **प्रमुख बुनियादी ढाँचे की कमी** को उजागर करता है।

- उपलब्ध डेटा का कम उपयोग करना इस विचार के विपरीत है कि **"डेटा इज द न्यू ऑयल"**, जो आज की अर्थव्यवस्था में इसके **बढ़ते महत्त्व** को उजागर करता है।

डेटा सेंटर क्या हैं?

- **परिचय:** डेटा सेंटर एक **भौतिक सुविधा** है जिसका उपयोग संगठन अपने **महत्त्वपूर्ण अनुप्रयोगों और डेटा को स्टोर करने** के लिये करते हैं।
  - इसके प्रमुख घटकों में **राउटर, स्विच, फायरवॉल, स्टोरेज सिस्टम, सर्वर और एप्लिकेशन-डिलीवरी कंट्रोलर** शामिल हैं।
- **प्रकार:**
  - **उद्यम (ऑन-प्रिमाइसेस): पूर्ण नियंत्रण के लिये एक ही कंपनी** द्वारा स्वामित्व और प्रबंधन (उदाहरण के लिये, अनुपालन के लिये बैंक, स्वास्थ्य सेवा)।
  - **पब्लिक क्लाउड (हाइपरस्केल):** साझा, स्केलेबल संसाधनों के लिये **क्लाउड सेवा प्रदाताओं (CSP) (जैसे, एज़्योर, IBM क्लाउड)** द्वारा संचालित।
  - **सह-स्थान (Colocation) सुविधाएँ:** कंपनियाँ **स्थान किराये पर लेती हैं** लेकिन हार्डवेयर का स्वामित्व उनका होता है; प्रदाता विद्युत्/शीतलन का प्रबंधन करते हैं।
  - **एज डेटा सेंटर:** विलंबता को कम करने के लिये उपयोगकर्त्ताओं के करीब छोटी, **विकेंद्रीकृत सुविधाएँ** (AI, IoT के लिये महत्त्वपूर्ण)।
- **मुख्य घटक:**
  - **नेटवर्क अवसंरचना:** यह **सर्वर** (भौतिक और वर्चुअलाइज्ड), डेटा सेंटर सेवाओं, भंडारण और बाह्य कनेक्टिविटी को अंतिम उपयोगकर्त्ता स्थानों से **एकीकृत** करता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **भंडारण अवसंरचना:** भंडारण प्रणालियों का उपयोग **डेटा को संग्रहीत करने** के लिये किया जाता है जो **डेटा केंद्र के ईंधन** के रूप में कार्य करता है।

- **कंप्यूटिंग संसाधन:** यह अनुप्रयोगों को संचालित करने वाली **प्रोसेसिंग, मेमोरी, लोकल स्टोरेज और नेटवर्क कनेक्टिविटी** प्रदान करता है।
- **मुख्य लाभ:**

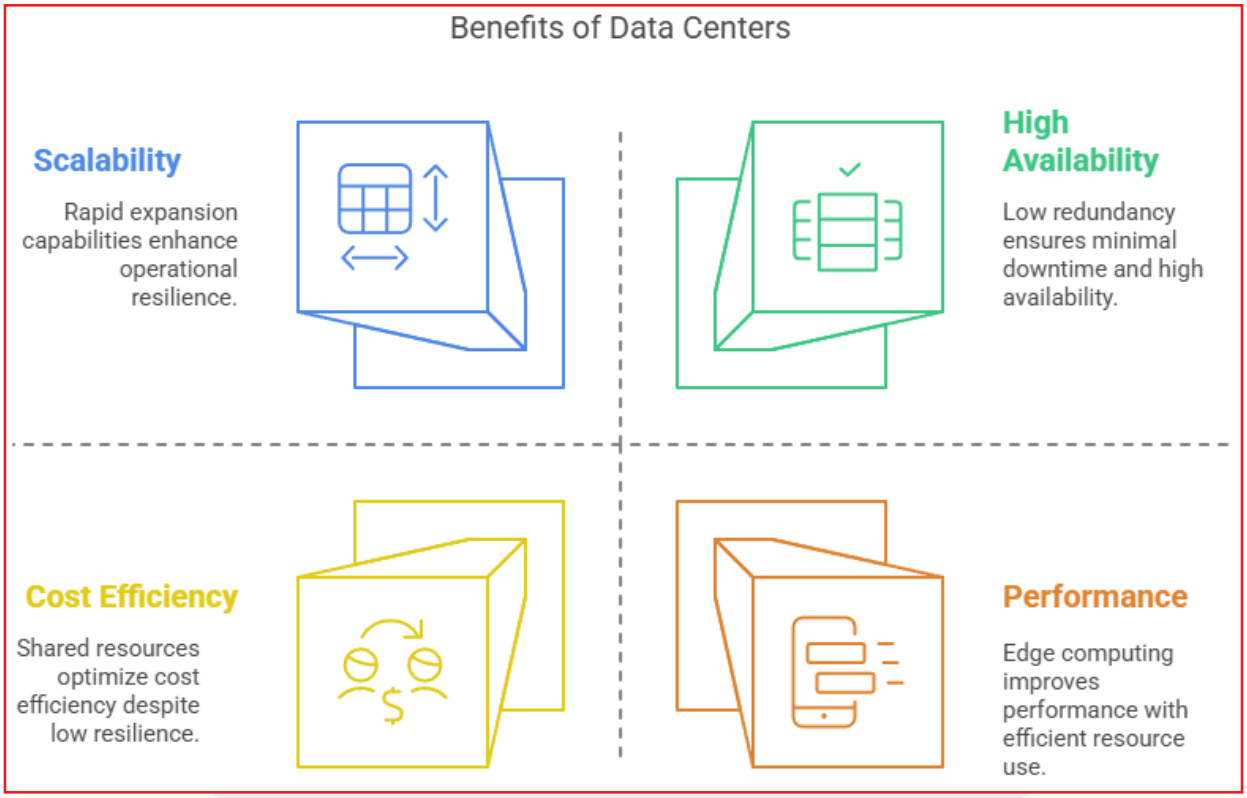

डेटा को न्यू ऑइल क्यों कहा जाता है?

- **आधुनिक अर्थव्यवस्था का ईंधन:** जैसे 20वीं सदी में ऑइल ने उद्योगों को चलाया, **वैसे ही वर्तमान आधुनिक अर्थव्यवस्था डेटा पर निर्भर है।** गूगल, अमेज़न और फोरस्क्वेयर जैसी कंपनियाँ उपयोगकर्त्ताओं के डेटा पर आधारित हैं।
  - **मूल्य निर्माण में सहायक:** जैसे ऑइल को परिष्कृत करके मूल्यवान उत्पाद बनाए जाते हैं, वैसे ही कंपनियाँ डेटा का विश्लेषण करके रुझानों की भविष्यवाणी करती हैं, संचालन को बेहतर बनाती हैं और सेवाओं को व्यक्तिगत बनाकर उससे मूल्य उत्पन्न करती हैं।
- **रणनीतिक संसाधन के रूप में डेटा:** आज देश डेटा को एक भू-राजनीतिक संसाधन मानते हैं, और उसके प्रवाह को विनियमित करते हैं— जैसे यूरोप का GDPR और भारत का डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन एक्ट, 2023।
- **डिजिटल अर्थव्यवस्था की नींव:** डेटा **ई-कॉमर्स , फिनटेक, क्लाउड कंप्यूटिंग और IoT** (जैसे स्मार्ट डिवाइस और कनेक्टेड कार्स) को शक्ति प्रदान करता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

भारत के लिये स्थानीय डेटा सेंटर क्यों महत्त्वपूर्ण हैं?

- **भारत की डिजिटल उपस्थिति (India's Digital Footprint):** भारत दुनिया में सबसे अधिक डिजिटल डेटा उत्पन्न करने वाला देश है, और फेसबुक (450 मिलियन), व्हाट्सएप (540 मिलियन), यूट्यूब (490 मिलियन), और इंस्टाग्राम (360 मिलियन) पर सबसे ज्यादा उपयोगकर्त्ता भारत में हैं। इससे यह ज़रूरी हो जाता है कि इनका डेटा देश के भीतर ही संग्रहित और प्रबंधित किया जाए।
- **आर्थिक विकास: भारत 2030 तक 40 गीगावॉट** डेटा क्षमता का लक्ष्य रखता है, और इस दिशा में डेटा सेंटरों के विस्तार से **भारत में 400 अरब अमेरिकी डॉलर** तक के निवेश आकर्षित किये जा सकते हैं।
  - यह **ई-कॉमर्स, फिनटेक, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और क्लाउड कंप्यूटिंग जैसे क्षेत्रों को बढ़ावा देगा,** जो भारत के 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था लक्ष्य को हासिल करने के लिये महत्त्वपूर्ण हैं।
- **रोज़गार सृजन:** डेटा सेंटरों के विकास से 1–2 मिलियन प्रत्यक्ष नौकरियाँ और इनके अलावा निर्माण, लॉजिस्टिक्स और तकनीकी सेवाओं में इससे तीन गुना अधिक अप्रत्यक्ष रोज़गार उत्पन्न हो सकते हैं।
- **डेटा संप्रभुता:** स्थानीय डेटा सेंटर यह सुनिश्चित करते हैं कि **संवेदनशील डेटा (जैसे वित्तीय, स्वास्थ्य और नागरिक रिकॉर्ड) देश के भीतर ही रहें**, और यह **डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन एक्ट, 2023** का पालन सुनिश्चित करता है।
  - इससे भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा को भी मज़बूती मिलती है क्योंकि यह महत्त्वपूर्ण डेटा प्रवाह पर बाहरी नियंत्रण को रोकता है।
- **AI और डिजिटल नेतृत्व:** जनरेटिव AI से वैश्विक अर्थव्यवस्था में प्रति वर्ष 2.6 से 4.4 ट्रिलियन डॉलर का योगदान हो सकता है।
  - **AWS, गूगल** और **माइक्रोसॉफ्ट** जैसी कंपनियाँ भारत में अपने डेटा सेंटरों का विस्तार कर रही हैं और देश को **भविष्य के AI हब** के रूप में स्थापित कर रही हैं।
- **प्रतिस्पर्द्धात्मक लाभ: जबकि चीन (दुर्लभ खनिज), ऑस्ट्रेलिया (लौह अयस्क) और चिली (तांबा)** जैसे देश अपनी प्राकृतिक शक्तियों का लाभ उठाते हैं, भारत की वैश्विक डेटा में **20% हिस्सेदारी** है फिर भी विश्व की डेटा केंद्र क्षमता का **2% से भी कम हिस्सा** इसके पास है।
  - स्थानीय डेटा केंद्र भारत की आईटी सेवाओं की सफलता के समान **वैश्विक डेटा प्रसंस्करण और क्लाउड सेवाएँ** प्रदान कर सकते हैं।
- **बुनियादी ढाँचे को बढ़ावा:** भारत में डेटा सेंटर के विकास से **800 मिलियन वर्ग फुट निर्माण की मांग विकसित** होगी जिससे रियल एस्टेट, नवीकरणीय ऊर्जा और दूरसंचार बुनियादी ढाँचे को बढ़ावा मिलेगा।

भारत में स्थानीय डेटा सेंटरों से संबंधित प्रमुख चिंताएँ क्या हैं?

- **उच्च पूंजी निवेश: वर्ष 2030 तक 40 गीगावाट** डेटा सेंटर क्षमता के निर्माण के लिये **400 बिलियन अमेरिकी डॉलर की** आवश्यकता होगी लेकिन **10-15 वर्षों** की लंबी भुगतान अवधि निजी निवेश को बाधित कर सकती है।
- **व्यापार एवं आर्थिक जोखिम:**
  - **पारस्परिक व्यापार बाधाएँ:** यदि भारत विदेशी फर्मों को स्थानीय स्तर पर डेटा संग्रहीत करने के लिये मजबूर करता है तो **अन्य देश** भारतीय आईटी फर्मों (जैसे, टीसीएस, इन्फोसिस) पर **समान प्रतिबंध** लगा सकते हैं।
  - **उपभोक्ताओं के लिये उच्च लागत:** अनुपालन लागत के कारण **क्लाउड सेवाओं,** स्ट्रीमिंग और डिजिटल उत्पादों की कीमतें बढ़ सकती हैं।
  - **प्रतिस्पर्द्धा में कमी:** अनुपालन बोझ के कारण **छोटी प्रौद्योगिकी कंपनियाँ भारत से बाहर** जा सकती हैं जिससे केवल **दिग्गज कंपनियों (गूगल, एडब्ल्यूएस)** के पास ही अनुकूलन के लिये संसाधन बचेंगे।
  - **विश्व व्यापार संगठन एवं कानूनी विवाद: इसे संरक्षणवादी नीति** के रूप में देखा जा सकता है जिससे **व्यापार संबंधी शिकायतें** आ सकती हैं।
- **परिचालन चुनौतियाँ:**
  - **अविश्वसनीय विद्युत आपूर्ति:** बार-बार विद्युत कटौती के लिये **महंगी बैकअप प्रणालियों (डीजल जनरेटर, बैटरी)** की आवश्यकता होती है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **शीतलन आवश्यकताएँ:** भारत की **गर्म जलवायु** के कारण शीतलन के लिये ऊर्जा की आवश्यकता बढ़ जाती है, जिससे लागत बढ़ जाती है।
- **सीमित समुद्री केबल:** अधिकांश अंतर्राष्ट्रीय डेटा **विदेशी स्वामित्व वाली केबलों (जैसे, अमेरिका/चीन द्वारा नियंत्रित)** के माध्यम से प्रवाहित होता है जिससे निर्भरता पैदा होती है।
- **स्थिरता संबंधी चिंताएँ:**
  - **ऊर्जा-गहन:** डेटा केंद्रों ने **वर्ष 2024** में वैश्विक बिजली का **1.5% उपयोग** किया और वर्ष **2030 तक यह 3% तक पहुँच** सकता है। भारत की कोयला निर्भरता से **कार्बन फुटप्रिंट की चिंता** बढ़ सकती है।
  - **शीतलन हेतु जल का उपयोग:** यह सूखाग्रस्त क्षेत्रों में **कृषि और पेयजल की आवश्यकताओं के साथ टकराव** उत्पन्न कर सकता है।
- **साइबर जोखिम:** बड़े डेटा केंद्र साइबर हमलों या भौतिक क्षति के लिये **उच्च-मूल्य वाले लक्ष्य** बन जाते हैं।

भारत डेटा सेंटर विकास को किस प्रकार बढ़ावा दे सकता है?

- **नीतिगत समर्थन:** डेटा केंद्रों के लिये समर्थन उपायों में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं:

- **डेटा स्थानीयकरण में समुत्थानशीलन: प्रोत्साहन के माध्यम से स्थानीयकरण को अनिवार्य न बनाकर प्रोत्साहित किया जाना चाहिये** (उदाहरण के लिये, भारत में डेटा संग्रहीत करने वाली फर्मों के लिये कर में छूट)।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- **बुनियादी अवसंरचना का विकास: रियायती बिजली दरें** (चीन की अत्यंत कम दरों की तरह) प्रदान करना तथा **डिस्कॉम** या सौर एवं पवन जैसे **नवीकरणीय स्रोतों से सीधे बिजली खरीद की अनुमति** दी जानी चाहिये।
  - **तरल शीतलन और ऊर्जा-कुशल डिज़ाइन** के लिये प्रोत्साहन के साथ **हरित डेटा केंद्रों** को अनिवार्य बनाया जाना चाहिये।
- **कनेक्टिविटी और फाइबर नेटवर्क: समुद्र के नीचे केबल स्टेशनों का** विस्तार, **राष्ट्रीय फाइबर कॉरिडोर का निर्माण** और एज डेटा केंद्रों के लिये **5G-रेडी बुनियादी अवसंरचना का विकास** किया जाना चाहिये।
- **भूमि एवं रियल एस्टेट: शीतलन लागत को कम करने के लिये** ठंडे शहरों **(शिमला, देहरादून, चंडीगढ़) में समर्पित डेटा सेंटर ज़ोन** स्थापित किये जाने चाहिये और **औद्योगिक केंद्रों के पास भूमि आवंटन** के लिये PPP मॉडल का उपयोग किया जाना चाहिये।
- **कौशल विकास और अनुसंधान एवं विकास:** स्वदेशी सर्वर और शीतलन प्रौद्योगिकियों के लिये अनुसंधान एवं विकास अनुदान के साथ-साथ **AI, क्लाउड और साइबर सुरक्षा में प्रशिक्षण** के लिये **राष्ट्रीय डेटा सेंटर अकादमी** के माध्यम से **कौशल विकास और नवाचार को बढ़ावा** दिया जाना चाहिये।

निष्कर्ष

वैश्विक डिजिटल डेटा में 20% योगदान देने के बावजूद, भारत में पर्याप्त डेटा सेंटर क्षमता का अभाव है जो इसकी डिजिटल क्षमता को सीमित करता है। **आर्थिक विकास, रोज़गार सृजन, डेटा संप्रभुता और वैश्विक AI नेतृत्व के लिये इस अंतर को कम** करना आवश्यक है। भारत की डिजिटल आकांक्षाओं को साकार करने के लिये रणनीतिक निवेश, नीति समर्थन और धारणीय बुनियादी ढाँचा महत्त्वपूर्ण है।

दृष्टि मेन्स प्रश्न:

प्रश्न. चर्चा कीजिये कि भारत में डेटा सेंटर विकास 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था के लक्ष्य को प्राप्त करने में कैसे योगदान दे सकता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी

भारत में लाइट फिशिंग का बढ़ता खतरा

चर्चा में क्यों?

भारत की 7,500 किलोमीटर लंबी तटरेखा, जो समृद्ध **समुद्री जैवविविधता** और लाखों मत्स्य पालकों का आश्रय स्थल है, **अवैध रूप से लाइट फिशिंग** के बढ़ते खतरे का सामना कर रही है।

- वर्ष 2017 से **अनन्य आर्थिक क्षेत्र (EEZ)** के भीतर राष्ट्रीय प्रतिबंध के बावजूद, कमज़ोर प्रवर्तन ने इस प्रथा को जारी रहने दिया है, जिससे पारिस्थितिक और सामाजिक क्षति को रोकने के लिये तत्काल कार्यवाही की मांग की जा रही है।

लाइट फिशिंग क्या है?

- **परिचय:** लाइट फिशिंग में मछलियों और स्क्विड को सतह पर आकर्षित करने के लिये **उच्च-तीव्रता वाली कृत्रिम रोशनी** का उपयोग किया जाता है, जिससे उन्हें पकड़ना आसान हो जाता है।
  - **राष्ट्रीय समुद्री मत्स्य पालन नीति (NPMF), 2017** के तहत लाइट फिशिंग प्रतिबंधित है, जिसका उद्देश्य लाइट फिशिंग जैसी विनाशकारी प्रथाओं पर प्रतिबंध लगाकर समुद्री संसाधनों की रक्षा करना और स्थिरता को बढ़ावा देना है।
- **प्रभाव:** लाइट फिशिंग के कारण मछलियों का अनियंत्रित शिकार किया जाता है, जिससे उनका **स्टॉक कम** हो जाता है और भविष्य की आबादी के लिये खतरा उत्पन्न हो जाता है।
  - इससे समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र भी प्रभावित होता है तथा **प्रवाल भित्तियों** का भी क्षरण होता है। समुद्री खाद्य जाल के लिये महत्त्वपूर्ण **स्क्विड (नरम शरीर वाले मोलस्क)** विशेष रूप से असुरक्षित हैं, जिससे बड़े शिकारी प्रजातियों पर व्यापक प्रभाव पड़ता है और खाद्य श्रृंखला बाधित होती है।
  - लाइट फिशिंग से विशेषकर आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र और केरल जैसे राज्यों में पारंपरिक मत्स्य पालकों को नुकसान पहुँचता है।
  - शक्तिशाली रोशनी का उपयोग करने वाले मशीनीकृत ट्रॉलर अनुचित प्रतिस्पर्द्धा पैदा करते हैं, जिससे **औद्योगिक संचालकों और स्थानीय समुदायों** के बीच तनाव बढ़ता है।

भारत में लाइट फिशिंग विनियमों का प्रवर्तन कमज़ोर क्यों है?

- **कमजोर नीतिगत ढाँचा:** जबकि EEZ प्रतिबंध लागू है, प्रादेशिक जल (12 समुद्री मील तक) के भीतर प्रवर्तन राज्यों पर छोड़ दिया गया है (**संविधान की सातवीं अनुसूची में राज्य सूची की 'प्रविष्टि 21'**), जिसके कारण असंगतता पैदा होती है।
  - तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में केवल आंशिक प्रतिबंध है तथा महाराष्ट्र में लाइट फिशिंग के बजाय ट्रॉलिंग पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।
- **संस्थागत क्षमता अंतराल:** तटीय पुलिस केवल 5 समुद्री मील तक ही गश्त कर सकती है तथा लाइट फिशिंग का कार्य सामान्यत: इस सीमा से परे होता है।
- **अपर्याप्त दंड:** इस संदर्भ में अधिरोपित जुर्माना (जैसे, कर्नाटक में 16,000 रुपए) लाइट फिशिंग से होने वाले लाभ (प्रति यात्रा 1 लाख रुपए तक) से कम है, जिससे यह निवारक के रूप में विफल रह जाता है।
- **तकनीकी प्रसार:** संवहनीय प्रकाश उत्सर्जक डायोड (एल.ई.डी.) और प्रोटेबल जनरेटर प्रौद्योगिकियों से लाइट फिशिंग सुलभ और व्यापक हो गया है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

लाइट फिशिंग के असंगत प्रवर्तन के समाधान हेतु क्या किये जाने की आवश्यकता है?

- **राष्ट्रव्यापी एकसमान प्रतिबंध:** वर्ष 2017 के EEZ प्रतिबंधों के अनुरूप, लाइट फिशिंग पालन पर एक व्यापक, प्रवर्तनीय प्रतिबंध को SDG 14 (जलीय जीवन) का समर्थन करने वाले सभी क्षेत्रीय जल क्षेत्रों में लागू किया जाना चाहिये।
- **एकीकृत प्रवर्तन तंत्र: बहु-एजेंसी समन्वय** (तटीय पुलिस, मत्स्य विभाग, तट रक्षक) और साझा गश्ती के साथ-साथ उपग्रह ट्रैकिंग (जैसे भू प्रेक्षण उपग्रह- 06) के साथ एक एकीकृत प्रवर्तन तंत्र की सहायता से अनुवीक्षण में सुधार किया जा सकता है।
  - भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र के साथ सहयोग करने से प्रवर्तन प्रयास और अधि सुदृढ़ होंगे।
- **आर्थिक परिवर्तन समर्थन:** प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत **पर्यावरण अनुकूल उपकरणों** और **संधारणीय प्रथाओं में प्रशिक्षण** के लिये सब्सिडी प्रदान की जाती है, साथ ही लाइट फिशिंग का कार्य छोड़ने वालों को **जलीय कृषि और पर्यटन** जैसी वैकल्पिक आजीविका भी प्रदान की जाती है।
- **वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाएँ: जापान और इटली** जैसे देशों ने लाइट फिशिंग पर ऋतु आधारित और गहराई-आधारित प्रतिबंध लागू किये हैं।
  - भारत जैवविविधता संरक्षण और आर्थिक संधारणीयता के बीच संतुलन स्थापित करने के उद्देश्य से ऐसी अनुकूली नीतियों का अंगीकरण कर सकता है।

खाद्य एवं कृषि हेतु पादप आनुवंशिक संसाधनों पर FAO की रिपोर्ट

चर्चा में क्यों?

खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) ने रोम, इटली में आयोजित खाद्य एवं कृषि के लिये **आनुवंशिक संसाधन आयोग (CGRFA-20) के 20वें सत्र** के उपरांत **खाद्य एवं कृषि हेतु विश्व के पादप आनुवंशिक संसाधनों की स्थिति (SoW3)** पर **तीसरी रिपोर्ट** जारी की है।

- रिपोर्ट के अनुसार यद्यपि विश्व स्तर पर **लगभग पौधों की 6,000 प्रजातियों** की कृषि की जाती है, तथापि विश्व का 60% फसल उत्पादन केवल 9 फसलों पर केंद्रित है।

नोट: खाद्य और कृषि के लिये विश्व के पादप आनुवंशिक संसाधनों की स्थिति (SoW-PGRFA) रिपोर्ट, CGRFA के तहत **FAO** द्वारा प्रकाशित, **पादप आनुवंशिक संसाधनों** का एक आवधिक वैश्विक मूल्यांकन है, जो उनके **संरक्षण, सतत् उपयोग और खाद्य सुरक्षा में भूमिका** पर केंद्रित है।

FAO की रिपोर्ट से संबंधित मुख्य तथ्य क्या हैं?

- **वैश्विक फसल निर्भरता:** वैश्विक फसल उत्पादन का 60% केवल **9 फसलों पर निर्भर** है- **गन्ना, मक्का, चावल, गेहूँ, आलू, सोयाबीन, तेल ताड़ फल, चीनी चुकंदर,** और **कसावा**।
  - **पौधों की 6,000 प्रजातियों** की कृषि के बावजूद, **फसल की विविधता कम हो रही है,** जिससे वैश्विक खाद्य सुरक्षा के लिये खतरा उत्पन्न हो रहा है।
- **FV/LR के समक्ष खतरा:** भारत में, पाँच कृषि पारिस्थितिक क्षेत्रों में **50% से अधिक किसान किस्में और भूमि प्रजातियाँ (FV/LR)** खतरे में हैं। वर्ष 2016 **सीड हब पहल** के अंतर्गत अधिउत्पादक किस्मों (HYV) को बढ़ावा देकर दाल उत्पादन को बढ़ावा दिया गया है।
  - **FV/LR** वे पारंपरिक फसलें हैं जो स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल होती हैं, जिससे **जैवविविधता, खाद्य सुरक्षा और जलवायु** लचीलापन बढ़ता है। वे वाणिज्यिक संकरों की तुलना में **कीटों, रोगों और अनावृष्टि** के प्रति अधिक प्रतिरोधी होती हैं, जैसे **काला नमक चावल, चपाती गेहूँ और रजनीगंधा कपास**।
  - वैश्विक स्तर पर, **FV/LR विविधता** का 6% जोखिम की स्थिति में है जहाँ कुछ क्षेत्रों में नुकसान 18% से अधिक है। **दक्षिणी अफ्रीका, कैरिबियन और पश्चिमी एशिया** सर्वाधिक प्रभावित हैं।
- **संरक्षण परिदृश्य: 42% पादप वर्ग** को इन-सीटू संरक्षण के दौरान खतरों का सामना करना पड़ता है, जबकि एक्स-सीटू

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

प्रयासों को कौशल की कमी के साथ-साथ **वित्तीय, राजनीतिक और बुनियादी ढाँचे संबंधी बाधाओं** का सामना करना पड़ता है।

- **फसल विविधता और जलवायु परिवर्तन:**
  - **चरम मौसमीय घटनाएँ आनुवंशिक विविधता के नुकसान को बढ़ाती हैं,** जबकि कई देशों में **आपदा प्रभाव आकलन तंत्र का अभाव** है।
  - **आपदा के बाद जर्मप्लाज्म वितरण,** अर्थात् **कृषि और संरक्षण के लिये पादपों की आनुवंशिक सामग्री की आपूर्ति, स्थानीय मृदा के लिये बीजों की खराब अनुकूलता** के कारण चुनौतियों का सामना करती है।

खाद्य और कृषि के लिये आनुवंशिक संसाधनों पर आयोग (CGRFA)

- **स्थापना:** खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) द्वारा **वर्ष 1983** में **खाद्य एवं कृषि के लिये आनुवंशिक संसाधनों (GRFA)** से संबंधित **मुद्दों के समाधान** हेतु स्थापित किया गया।
- **उद्देश्य: कृषि में जैविक विविधता के संरक्षण और सतत् उपयोग** के लिये समर्पित **एकमात्र स्थायी अंतर-सरकारी निकाय** के रूप में कार्य करना।
- **सदस्यता:** 179 देश (जनवरी 2023 तक), जिसमें **भारत** और यूरोपीय संघ भी शामिल हैं।
- **CGRFA की प्रमुख उपलब्धियाँ:**
  - **खाद्य एवं कृषि के लिये पादप आनुवंशिक संसाधनों पर अंतर्राष्ट्रीय संधि (ITPGRFA) (2001):** फसल विविधता में किसानों के योगदान को मान्यता प्रदान करना तथा प्रजनकों, किसानों और शोधकर्त्ताओं के लिये पौधों की आनुवंशिक सामग्री का आकलन करने हेतु एक वैश्विक ढाँचा स्थापित करना, इसके अपनाने में सहायता करना।
  - **पशु आनुवंशिक संसाधन (AnGR) और वैश्विक कार्य योजना (GPA):** वर्ष 1997 में AnGR पर कार्य शुरू किया गया, जिसके परिणामस्वरूप ***स्टेट ऑफ द वर्ल्ड एनिमल जेनेटिक रिसोर्स*** पर पहली रिपोर्ट तैयार हुई और **वर्ष 2007 में GPA** को अपनाया गया।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

भारतीय इतिहास

टैगोर की चीन यात्रा की शताब्दी

चर्चा में क्यों?

1 अप्रैल 2025 को, **शांतिनिकेतन** में **विश्वभारती विश्वविद्यालय** ने **रबींद्रनाथ टैगोर की चीन यात्रा (1924) की 100वीं वर्षगाँठ** और **भारत और चीन के बीच राजनयिक संबंधों** की 75वीं वर्षगाँठ के अवसर पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी की मेज़बानी की।

- यह कार्यक्रम दक्षिण एशिया के प्राचीनतम चीनी अध्ययन विभाग, **विश्वभारती विश्वविद्यालय के चीन भवन** में आयोजित किया गया था।

रबींद्रनाथ टैगोर कौन थे और राष्ट्र निर्माण में उनका योगदान क्या था?

परिचय:

- रबींद्रनाथ टैगोर का जन्म **7 मई 1861** को **कलकत्ता** में हुआ था। वे एक बंगाली कवि, उपन्यासकार, नाटककार, संगीतकार, चित्रकार, दार्शनिक और शिक्षाविद् थे।
- वे ***गुरुदेव, कविगुरु*** **और** ***विश्वकवि*** के नाम से लोकप्रिय थे।
- टैगोर **महात्मा गांधी** के अच्छे मित्र थे और मान्यताओं के अनुसार उन्होंने ही उन्हें **महात्मा** की उपाधि दी थी।
  - महात्मा गांधी पहले ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने टैगोर को "गुरुदेव" कहा और उन्हें "विश्व कवि" की संज्ञा दी।
- वह अपनी कृति ***गीतांजलि*** के लिये **साहित्य में नोबेल पुरस्कार (1913)** प्राप्त करने वाले पहले गैर-यूरोपीय थे।

राष्ट्र निर्माण में टैगोर का योगदान

- **राष्ट्रवाद पर विचार:** **राष्ट्रवाद** के बारे में उनका विचार समावेशी और साथ ही आध्यात्मिक था। उनके अनुसार **राष्ट्रवाद मानवीय मूल्यों के उत्थान पर आधारित** होना चाहिये, न कि घृणा अथवा अति देशभक्ति पर।
  - टैगोर की देशभक्ति नीतिपरक और न्यायसंगत थी, जो सार्वभौमिक मानवतावाद, संस्कृतियों के प्रति सम्मान और अंतर-सभ्यतागत संवाद पर आधारित थी।
  - उन्होंने इस तथ्य पर बल दिया कि **भारत का प्राबल्य** इसकी **एकरूपता** या धार्मिक बहुसंख्यकवाद में नहीं अपितु इसकी **विविधता और एकता** में निहित है।
  - टैगोर का राष्ट्रवाद **विश्वव्यापी था, पृथकतावादी नहीं,** जो वर्तमान में निरंतर बढ़ते जातीय राष्ट्रवाद के समय में भी प्रासंगिक है।
  - अपनी पुस्तक **नेशनलिज्म (1917)** में उन्होंने पश्चिमी शैली के आक्रामक राष्ट्रवाद के खिलाफ चेतावनी दी और इसे **शांति और वैश्विक सद्भाव** के लिये खतरा बताया।
- **भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान:** हालाँकि टैगोर एक सक्रिय राजनीतिक आंदोलनकारी नहीं थे, लेकिन उन्होंने **भारत के स्वतंत्रता संग्राम** में एक नैतिक और बौद्धिक भूमिका निभाई। **बंगाल विभाजन (1905)** के दौरान, उन्होंने **स्वदेशी आंदोलन** का समर्थन किया, एकता और आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित करने के लिये गीतों (***आमार सोनार बांग्ला***) की रचना की।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **जलियाँवाला बाग हत्याकांड (1919)** के बाद एक महत्त्वपूर्ण मोड़ आया जब उन्होंने **अंग्रेज़ों द्वारा दी गई नाइटहुड की उपाधि को त्याग दिया।**
- **भारत का राष्ट्रगान** *'जन गण मन'* मूलत: रबींद्रनाथ टैगोर द्वारा **बंगाली में लिखित और संगीतबद्ध** किया गया था।

- **संगीत, नृत्य और कला में योगदान:** टैगोर एक सांस्कृतिक पुनरुत्थानवादी थे जिन्होंने भारत को वैश्विक सौंदर्यशास्त्र में एक विशिष्ट पहचान दिलाई।
  - उन्होंने **2,000 से अधिक गीतों की रचना की,** जिन्हें सामूहिक रूप से **रवींद्र संगीत** के नाम से जाना जाता है, जो अपनी गीतात्मक गहराई और भावनात्मक समृद्धि के लिये जाने जाते हैं।
  - उनके संगीत में शास्त्रीय रागों, लोक परंपराओं और आध्यात्मिक विषयों का मिश्रण था, जिसमें ***'एकला चलो रे'*** जैसे गीत राष्ट्रवादी प्रतीकवाद का हिस्सा बन गए।
  - उन्होंने रंगमंच, संगीत और शास्त्रीय भारतीय नृत्य को मिलाकर ***चित्रांगदा, श्यामा*** और ***चंडालिका*** जैसी नृत्य नाटिकाएँ रचीं।
  - एक चित्रकार के रूप में उन्होंने **अमूर्त और प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति** की शुरुआत की, **औपनिवेशिक कलात्मक मानदंडों को चुनौती दी और भारतीय दृश्य पहचान पर बल** दिया।
- **साहित्य में योगदान:** उन्होंने स्वतंत्रता, पहचान, आध्यात्मिकता और आधुनिकता के विषयों पर काम करते हुए बंगाली गद्य और कविता का आधुनिकीकरण किया। **उनकी प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं:**
  - **कविता:** गीतांजलि, बलाका, सोनार तोरी, मानसी
  - **उपन्यास:** घरे-बैरे, गोरा, चोखेर बाली
  - **नाटक:** चित्रा, द पोस्ट ऑफिस
  - **निबंध:** साधना: द रियलाइजेशन ऑफ लाइफ, द रिलीजन ऑफ मैन, नेशनलिज्म।
- **शिक्षा में योगदान:** टैगोर ने शिक्षा की कल्पना **मन को नियंत्रित करने के लिये नहीं, बल्कि उसे मुक्त करने के साधन** के रूप में की थी। वर्ष 1921 में उन्होंने शांतिनिकेतन में **विश्वभारती विश्वविद्यालय की स्थापना** की, जो **'प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित कर सीखने'** के दर्शन पर आधारित था।
  - विश्वभारती शिक्षा का एक वैश्विक केंद्र था, जिसका आदर्श वाक्य था **" *यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्* "** (जहाँ विश्व एक घोंसले में मिलता है)।
  - वर्ष 1937 में उन्होंने **भारत-चीन सभ्यतागत संबंधों** और वैश्विक सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा देने के लिये चीन भवन की स्थापना की।

निष्कर्ष

रबींद्रनाथ टैगोर केवल एक कवि नहीं थे, बल्कि एक दूरदर्शी, सुधारक और वैश्विक विचारक थे जिन्होंने भारत की सांस्कृतिक पहचान और बौद्धिक भविष्य को नए सिरे से परिभाषित किया। स्वतंत्रता आंदोलन, कला, शिक्षा और अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति में उनके योगदान ने आधुनिक भारत की सॉफ्ट पावर और नैतिक नेतृत्व की नींव रखी।

दृष्टि मेन्स प्रश्न:

प्रश्न. "रबींद्रनाथ टैगोर के राष्ट्र-निर्माण के प्रयास राजनीतिक सक्रियता से कहीं आगे बढ़ गए और उन्होंने संस्कृति, शिक्षा और नैतिक राष्ट्रवाद को अपनाया।" चर्चा कीजिये।

अंबेडकर और गांधी: वैचारिक समानताएँ और मतभेद

चर्चा में क्यों?

भारत द्वारा डॉ. बी.आर. अंबेडकर की **135वीं जयंती** पर उनकी विरासत का पुर्नलोकन करने के साथ जाति, लोकतंत्र और समाज सुधार पर उनके विचारों पर पुनर्विचार करने से समावेशी और न्यायपूर्ण समाज के निर्माण के लिये बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है।

- दलितों के उत्थान की आवश्यकता के संबंध में उनका दृष्टिकोण सामान्यत: **महात्मा गांधी** के दृष्टिकोण से मेल खाता था, फिर भी उनके उपागम में स्पष्ट भिन्नता थी।

अंबेडकर और महात्मा गांधी के बीच वैचारिक समाभिरूपता के प्रमुख क्षेत्र क्या हैं?

- **हिंसक क्रांति और साम्यवाद की अस्वीकृति:**
  - अंबेडकर और गांधी दोनों ने **वर्ग संघर्ष और हिंसा पर साम्यवाद** के केंद्र का विरोध किया।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **गांधीजी** ने अहिंसा और नैतिक अनुनय पर ज़ोर देते हुए **"बोल्शेविज़्म"** की हिंसक पद्धतियों की आलोचना की।
- इसी प्रकार, अंबेडकर ने **प्रगति के लिये "सरल मार्ग" तलाशने** के लिये **साम्यवाद की निंदा** की तथा न्याय और समानता के लिये निरंतर, अहिंसक संघर्ष की आवश्यकता पर बल दिया।

- अंबेडकर ने ***बुद्ध अथवा कार्ल मार्क्स*** (1956) में मार्क्सवाद के बल प्रयोग के बजाय बुद्ध के **करुणा और नैतिक प्रगति** के संदेश को प्राथमिकता दी, जबकि **गांधी ने अहिंसा को सर्वोच्च सिद्धांत सिद्ध करते हुए स्पष्ट किया, "शांति का कोई दूसरा रास्ता नहीं है, इसका एकमात्र रास्ता शांति ही है।"**
- **गांधीजी ने इस विचार पर बल दिया कि साधन को साध्य के अनुरूप होना चाहिये**, तथा उन्होंने इस विचार को अस्वीकार किया कि **"साध्य साधन को उचित ठहराता है।"**

मानव गरिमा और सामाजिक न्याय का समर्थन:

- गांधी और अंबेडकर दोनों का लक्ष्य **सम्मान और करुणा पर आधारित न्यायपूर्ण समाज का निर्माण करना था**, यद्यपि **इसकी प्राप्ति के उपागम अलग-अलग थे।**
  - गांधीजी ने ***सर्वोदय*** (**सभी का उत्थान**) पर ध्यान केंद्रित किया, जबकि अंबेडकर ने ***बहुजन हिताय*** (बहुसंख्यकों का कल्याण) पर ज़ोर दिया।

सार्वजनिक जीवन में नैतिकता की भूमिका:

- **गांधी और अंबेडकर दोनों ने सार्वजनिक जीवन में नैतिकता** के महत्त्व पर बल दिया। गांधी की राजनीति **नैतिक आदर्शवाद** पर आधारित थी, जबकि अंबेडकर, एक **तर्कणावादी होने के बावजूद शासन में नैतिकता की भूमिका को** स्वीकार करते थे।
  - दोनों के अनुसार **चरित्र और नैतिकता सामुदायिक सेवा और नेतृत्व** के लिये आवश्यक हैं।

नैतिक राजनीति:

- शुरुआत में अंबेडकर ने **गांधी की नैतिक राजनीति की आलोचना** की तथा उन्हें **"खोखला" और "बेईमान"** कहा। **हालाँकि, बाद में अंबेडकर ने व्यक्तिगत नैतिकता** के महत्त्व को पहचानने के साथ आत्म-उन्नयन एवं अहिंसा के क्रम में बुद्ध को उद्धृत किया, जो गांधी के स्वराज के दृष्टिकोण के अनुरूप था।

गांधी और अंबेडकर के बीच वैचारिक मतभेद क्या थे?

जाति और वर्ण व्यवस्था:

- **अंबेडकर ने जाति के पूर्ण उन्मूलन** का आह्वान किया एवं जाति उत्पीड़न को वैध बनाने के लिये ***मनुस्मृति जैसे हिंदू ग्रंथों की कड़ी आलोचना*** *की।* ***"जाति का संहार"*** ***(1936)*** में उन्होंने हिंदू सामाजिक व्यवस्था को "भयावहता का वास्तविक कक्ष" बताया।
  - गांधी ने जाति व्यवस्था के कारण होने वाली सामाजिक क्षति को स्वीकार किया, लेकिन **मनुस्मृति को पूरी तरह से अस्वीकार नहीं** किया क्योंकि वे जाति व्यवस्था को वास्तविक हिंदू धर्म का विरूपण मानते थे तथा **मनुस्मृति को मूल्यवान एवं त्रुटिपूर्ण** दोनों पहलुओं वाला ग्रंथ मानते थे।
- गांधी ने **अस्पृश्यता का विरोध** किया और **शुरूआत में वर्ण व्यवस्था का समर्थन** किया लेकिन बाद में ***हरिजन*** **(वर्ष 1936) में जाति उन्मूलन** की वकालत करते हुए कहा कि **"जाति को खत्म करना होगा।"**
  - उन्होंने दलितों के लिये *हरिजन* शब्द दिया, जिसे अंबेडकर ने संरक्षणवादी कहकर अस्वीकार कर दिया।

दलितों के लिये पृथक निर्वाचक मंडल:

- **अंबेडकर ने दलित वर्गों** के राजनीतिक प्रतिनिधित्व तथा अधिकारों को सुरक्षित करने के लिये पृथक निर्वाचक मंडल का समर्थन किया।
- **गांधी** ने इसका विरोध किया, क्योंकि उन्हें डर था कि इससे हिंदू समाज विभाजित हो जाएगा। उनके **आमरण अनशन के कारण *पूना पैक्ट*** **(वर्ष 1932)** हुआ, जिसके तहत पृथक निर्वाचक मंडल की जगह **संयुक्त निर्वाचक मंडल में दलितों के लिये आरक्षित सीटें** तय की गईं।
  - *"कॉन्ग्रेस और गांधी ने अछूतों के लिये क्या किया"* में डॉ. अंबेडकर ने दलितों के समक्ष विद्यमान संरचनात्मक असमानताओं को दूर करने में विफल रहने के लिये **गांधी और कॉन्ग्रेस की आलोचना** की।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- उन्होंने तर्क दिया कि नैतिक सुधारों पर गांधी के बल से दलितों की मुक्ति सुनिश्चित करने के क्रम में **विधिक तथा राजनीतिक उपायों** की आवश्यकता को नजरअंदाज किया गया।

- **धर्म और सामाजिक सुधार:**
  - **अंबेडकर ने हिंदू धर्म को स्वाभाविक रूप से भेदभावपूर्ण** माना और स्वतंत्रता, समानता तथा बंधुत्व की वकालत करते हुए **वर्ष 1956 में बौद्ध धर्म** अपनाया।
  - **गांधी** ने धर्म को एक **नैतिक मार्गदर्शक** के रूप में माना तथा ***सर्वधर्म समभाव*** **(सभी धर्मों के लिये समान सम्मान)** का समर्थन किया, लेकिन **कुछ हिंदू परंपराओं (जैसे वर्ण व्यवस्था, दलितों के लिये हरिजन** शब्द और **मनुस्मृति**) के प्रति उनके समर्थन की अंबेडकर जैसे सुधारकों ने आलोचना की।
    - जहाँ गांधी, अरबिंदो और टैगोर ने हिंदू धर्म से प्रेरणा ली, वहीं अंबेडकर के विचार बौद्ध धर्म में निहित थे।
  - **नवयान बौद्ध धर्म** की स्थापना **वर्ष 1956 में अंबेडकर** द्वारा भारत में एक **दलित बौद्ध आंदोलन** के रूप में की गई थी।
- **सामाजिक परिवर्तन के साधन:**
  - **अंबेडकर ने विधिक और संवैधानिक तरीकों से सामाजिक सुधारों** की वकालत की तथा इस बात पर बल दिया कि **वास्तविक राजनीतिक स्वतंत्रता केवल सामाजिक समानता एवं न्याय स्थापित करने के बाद** ही प्राप्त की जा सकती है।
  - **गांधी** ने सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में ***व्यक्तिगत नैतिकता, अहिंसा एवं आध्यात्मिक जागृति*** पर बल दिया।
- **राज्य और संविधान की भूमिका:**
  - अंबेडकर ने **ऐतिहासिक अन्याय को दूर** करने के लिये **राज्य के नेतृत्व वाली सकारात्मक कार्रवाई का समर्थन** किया तथा इस बात पर बल दिया कि **"लोकतंत्र सरकार का एक रूप नहीं है, बल्कि सामाजिक संगठन का एक रूप है।"**
  - **गांधीजी ने ग्राम स्वराज** और **न्यूनतम राज्य हस्तक्षेप** की वकालत की तथा नौकरशाही शासन की तुलना में **सामुदायिक आत्मनिर्भरता और नैतिक विकास पर** बल दिया।
- **आर्थिक मॉडल:**
  - अंबेडकर ने **राज्य समाजवाद, नियोजित विकास** और भूमि सुधार तथा समान मज़दूरी जैसे **आर्थिक अधिकारों** की वकालत की। उन्होंने **स्टेट्स एंड माइनॉरिटीज मेमोरेंडम (वर्ष 1947)** में प्रमुख उद्योगों पर राज्य के स्वामित्व का प्रस्ताव रखा।
  - **गांधी: ट्रस्टीशिप सिद्धांत** का प्रतिपादन किया, जिसके अनुसार **धनी लोग सार्वजनिक संपत्ति के संरक्षक** के रूप में कार्य करते हैं। **पश्चिमी उद्योगवाद की तुलना में लघु उद्योगों** और ***स्वदेशी*** को प्राथमिकता दी।

डॉ. बी.आर. अंबेडकर को सरकार की श्रद्धांजलि

- **भारत रत्न (वर्ष 1990):** राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान के लिये मरणोपरांत **भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार** से सम्मानित किया गया।
- **अंबेडकर सर्किट (पंचतीर्थ):** उनके जीवन से जुड़े पाँच प्रमुख स्थलों का विकास- महू (जन्मस्थान), लंदन (शिक्षा भूमि), नागपुर (दीक्षा भूमि), मुंबई (चैत्य भूमि), और दिल्ली (महापरिनिर्वाण भूमि)।
- **भीम ऐप:** डिजिटल भुगतान और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने के लिये उनके नाम पर लॉन्च किया गया।
- **डॉ. अंबेडकर उत्कृष्टता केंद्र (DACE):** अनुसूचित जाति के छात्रों को निशुल्क UPSC कोचिंग प्रदान करने के लिये 31 केंद्रीय विश्वविद्यालयों में स्थापित किये गए।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर

(14 अप्रैल, 1891-06 दिसंबर, 1956)

बाबासाहेब अंबेडकर

भारतीय संविधान के जनक

संक्षिप्त परिचय

- एक समाज सुधारक, न्यायविद, अर्थशास्त्री, लेखक और तुलनात्मक धर्मों के विचारक
- **वायसराय की कार्यकारी परिषद (1942)** में श्रम मामलों के जानकार सदस्य
- नए संविधान के लिये **मसौदा समिति के अध्यक्ष**
- भारत के **प्रथम विधि मंत्री**
- मरणोपरांत **भारत रत्न से सम्मानित (1990)**

योगदान

- हिंदुओं के खिलाफ **वर्ष 1927 में महाड़ सत्याग्रह** का नेतृत्व
- **तीनों गोलमेज सम्मेलनों में** भाग लिया
- दलित वर्गों के लिये पृथक् निर्वाचक मंडल के विचार को त्यागने के लिये महात्मा गांधी के साथ **वर्ष 1932 के पूना पैक्ट पर हस्ताक्षर किये**

  प्रांतीय विधायिकाओं में वंचित वर्गों के लिये आरक्षित सीटों को **71** से बढ़ाकर **147** और केंद्रीय विधानमंडल में 18% कर दिया गया था।
- **जम्मू-कश्मीर के विशेष दर्जे का विरोध** (अनुच्छेद **370**)
- **समान नागरिक संहिता** का समर्थन
- अनुच्छेद **32** को **"संविधान की आत्मा और इसके हृदय"** के रूप में संदर्भित किया

त्याग-पत्र और बौद्ध धर्म

- **हिंदू कोड बिल** पर मतभेद के कारण वर्ष **1951** में उन्हें कैबिनेट से त्याग-पत्र देना पड़ा
- बौद्ध धर्म को अपनाया; उनकी मृत्यु को **महापरिनिर्वाण दिवस** के रूप में मनाया जाता है

महत्त्वपूर्ण पत्रिकाएँ

- मूकनायक **(1920)**
- बहिष्कृत भारत **(1927)**
- समता **(1929)**
- जनता **(1930)**

संगठन

- **'बहिष्कृत हितकारिणी सभा'** की स्थापना **(1923)**
- **स्वतंत्र लेबर पार्टी** की स्थापना **(1936)**
- **शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन** की स्थापना **(1942)**

पुस्तकें

- जाति का विनाश **(Annihilation of Caste)**
- बुद्ध या कार्ल मार्क्स **(Buddha or Karl Marx)**
- अछूत: वे कौन थे और अछूत कैसे बने **(The Untouchable: Who are They and Why They Have Become Untouchables)**
- हिंदू महिलाओं का उदय और पतन **(The Rise and Fall of Hindu Women)**

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

मोहनदास करमचंद गांधी

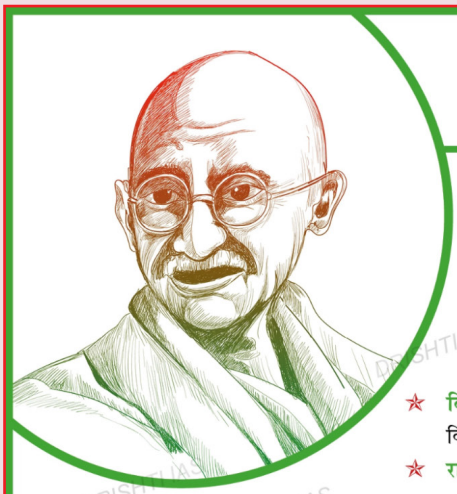

संक्षिप्त परिचय

- जन्म: **2** अक्तूबर, **1869**; पोरबंदर (गुजरात)।
  - **2** अक्तूबर को **अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस** के रूप में मनाया जाता है।
- प्रोफाइल: वकील, राजनीतिज्ञ, सामाजिक कार्यकर्त्ता, लेखक तथा राष्ट्रवादी आंदोलनों के नेतृत्वकर्त्ता।
  - राष्ट्रपिता (सबसे पहले नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने इस नाम से संबोधित किया)।
- विचारधारा: अहिंसा, सत्य, ईमानदारी, प्रकृति की देखभाल, करुणा, दलितों के कल्याण आदि के विचारों में विश्वास करते थे।
- राजनीतिक गुरु: गोपाल कृष्ण गोखले
- मृत्यु: नाथूराम गोडसे द्वारा गोली मारकर हत्या (**30 जनवरी, 1948**)।
  - **30** जनवरी को शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- नोबेल शांति पुरस्कार के लिये पाँच बार नामित किया गया।

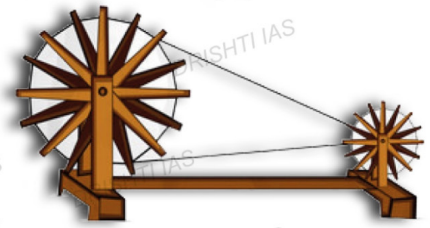

दक्षिण अफ्रीका में गांधी (1893–1915)

- नस्लवादी शासन (मूल अफ्रीकी और भारतीयों के साथ भेदभाव) के खिलाफ सत्याग्रह।
  - दक्षिण अफ्रीका से उनकी वापसी के उपलक्ष्य में प्रत्येक वर्ष **9** जनवरी को **प्रवासी भारतीय दिवस (PBD)** मनाया जाता है।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में योगदान

- छोटे पैमाने के विभिन्न आंदोलन जैसे- चंपारण सत्याग्रह **(1917)**, प्रथम सविनय अवज्ञा, अहमदाबाद मिल हड़ताल (1918)- पहली भूख हड़ताल और खेड़ा सत्याग्रह **(1918)**- पहला असहयोग।
- राष्ट्रव्यापी जन आंदोलन: रॉलेट एक्ट के खिलाफ **(1919)**, असहयोग आंदोलन **(1920-22)**, सविनय अवज्ञा आंदोलन **(1930&34)**, भारत छोड़ो आंदोलन **(1942)**।
- गांधी-इरविन समझौता (1931): गांधी और लॉर्ड इरविन के बीच जिसने सविनय अवज्ञा की अवधि के अंत को चिह्नित किया।
- पूना पैक्ट (1932): गांधी और **बी.आर. अंबेडकर** के बीच; इसने वंचित वर्गों के लिये अलग निर्वाचक मंडल के विचार को छोड़ दिया (सांप्रदायिक पंचाट)।

पुस्तकें

हिंद स्वराज, माय एक्सपेरिमेंट विथ ट्रुथ (आत्मकथा)

साप्ताहिक पत्रिकाएँ

हरिजन, नवजीवन, यंग इंडिया, इंडियन ओपिनियन

गांधी शांति पुरस्कार

भारत द्वारा गांधीवादी तरीकों के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन के लिये दिया जाता है।

उद्धरण

- **"खुशी तब मिलेगी जब आप जो सोचते हैं, जो कहते हैं और जो करते हैं, सामंजस्य में हों।"**
- **"कमजोर व्यक्ति कभी क्षमा नहीं कर सकता, क्षमा करना शक्तिशाली व्यक्ति का गुण है।"**
- **"आपको मानवता में विश्वास नहीं खोना चाहिये। मानवता सागर के समान है; यदि सागर की कुछ बूँदें गंदी हैं, तो पूरा सागर गंदा नहीं हो जाता।"**

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- **ASIIM योजना:** अंबेडकर सामाजिक नवाचार और इनक्यूबेशन मिशन (ASIIM) स्टार्टअप फंडिंग के माध्यम से SC युवा उद्यमियों को समर्थन देता है।
- **राष्ट्रीय स्मारक: संकल्प भूमि (वडोदरा)** और सतारा में उनके स्कूल जैसे स्थलों को राष्ट्रीय स्मारक का दर्जा देने का प्रस्ताव किया गया।
- **संविधान दिवस (26 नवंबर):** भारतीय संविधान के मुख्य वास्तुकार के रूप में उनकी विरासत को सम्मानित करने के लिये वर्ष 2015 से मनाया जाता है।
- **अंबेडकर जयंती:** उनकी जयंती, 14 अप्रैल को अंबेडकर जयंती के रूप में मनाया जाता है, जो सामाजिक न्याय, दलित अधिकारों और भारतीय संविधान में उनके योगदान का सम्मान करने के लिये एक राष्ट्रीय अवकाश है।

निष्कर्ष

गांधी और अंबेडकर, नियमों में भिन्नता के बावजूद, एक **न्यायपूर्ण और समावेशी भारत** के निर्माण का लक्ष्य रखते थे। साधनों में मौलिक मतभेद बने रहे: **गांधीजी नैतिक अपील के माध्यम से सुधार चाहते थे, जबकि अंबेडकर राज्य-नेतृत्व वाली सोशल इंजीनियरिंग की वकालत करते थे।** साथ में, उनकी विरासत आज **जाति, असमानता और लोकतांत्रिक मूल्यों को संबोधित करने के लिये एक संतुलित दृष्टिकोण** प्रदान करती है।

■■■

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

कृषि

भारत में कपास उत्पादन में गिरावट

चर्चा में क्यों?

भारत, जो कभी विश्व का सबसे बड़ा **कपास उत्पादक और निर्यातक था, कपास उत्पादन में तीव्र गिरावट का सामना कर रहा है, जिसका मुख्य कारण तकनीकी प्रगति का अभाव और नीतिगत निष्क्रियता है।**

भारत में कपास उत्पादन में गिरावट के क्या कारण हैं?

- **प्रारंभिक वृद्धि:** 1970 के दशक में सी.टी. पटेल और बी.एच. कटारकी जैसे भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा विकसित संकर कपास किस्मों ने पैदावार में उल्लेखनीय सुधार किया है।
  - **बीटी (बैसिलस थुरिंजिएंसिस) कपास,** जिसे वर्ष 2002-03 में प्रवर्तित किया गया था, में अमेरिकन बॉलवर्म जैसे कीटों से सुरक्षा के लिये बैसिलस थुरिंजिएंसिस जीवाणु के जीन का उपयोग किया गया था।
    - वर्ष 2013-14 तक इसने भारत के 95% से अधिक कपास क्षेत्र को कवर कर लिया, जिससे उपज दोगुनी होकर 566 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गई। इससे भारत को वर्ष 2015-16 तक विश्व का शीर्ष कपास उत्पादक और प्रमुख निर्यातक बनने में मदद मिली।
- **सफलता के बाद स्थिरता:** बीटी और **बोल्गार्ड-II** प्रौद्योगिकियों की सफलता के बावजूद, भारत ने वर्ष 2006 के बाद से किसी भी नई **आनुवंशिक रूप से संशोधित (GM) फसल** कपास की किस्मों को मंजूरी नहीं दी है।
  - भारतीय संस्थानों द्वारा विकसित **व्हाइटफ्लाई** और **पिंक बॉलवार्म** प्रतिरोधी कपास जैसे स्वदेशी नवाचार अभी भी नियामक अनिश्चितता में फंसे हुए हैं।
  - **आनुवंशिक इंजीनियरिंग मूल्यांकन समिति (GEAC)** की मंजूरी के बावजूद **बीटी बैंगन** पर वर्ष 2010 में लगाई गई रोक ने अन्य GM फसलों के क्षेत्र परीक्षणों को रोकने के लिये एक उदाहरण प्रस्तुत किया, जिससे कपास उत्पादन में सुधार के लिये नई प्रौद्योगिकियों के प्रयोग में बाधा उत्पन्न हुई।
- **संक्रमण:** भारत में कपास उत्पादन में गिरावट मुख्य रूप से पिंक बॉलवर्म (PBW) के बढ़ते संक्रमण के कारण है। प्रारंभ में, बीटी कपास ने कीट नियंत्रण में प्रभावी भूमिका निभाई, लेकिन समय के साथ, **PBW** ने बीटी प्रोटीन के प्रति प्रतिरोध विकसित कर लिया।
  - यह कीट अब बुवाई के **40-45** दिन बाद ही फसलों को संक्रमित कर देता है तथा बीजकोषों और पुष्पों को नुकसान पहुँचाता है।
  - बीटी कपास की विशेष कृषि ने इस प्रतिरोध को बढ़ावा दिया है, जिसके कारण कपास लिंट की गुणवत्ता और मात्रा दोनों में महत्त्वपूर्ण कमी आई है।
- **उत्पादन पर प्रभाव:** भारत का कपास उत्पादन, जो वर्ष 2013-14 में 39.8 मिलियन गाँठ तक पहुँच गया था, वर्ष 2024-25 तक घटकर 29.5 मिलियन गाँठ हो गई है, और पैदावार 450 किलोग्राम/हेक्टेयर से नीचे गिर गई, जो चीन जैसे वैश्विक राष्ट्रों (1993 किलोग्राम/हेक्टेयर) की तुलना में काफी कम है।

कपास उत्पादन में गिरावट के संबंध में चिंताएँ क्या हैं?

- **आयात पर बढ़ती निर्भरता:** कपास का आयात वर्ष 2023-24 में 518.4 मिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर वर्ष 2024-25 में 1.04 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया, जबकि निर्यात 729.4 मिलियन अमेरिकी डॉलर से घटकर 660.5 मिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया।
  - उत्पादन में गिरावट के कारण भारत की व्यापारिक स्थिति परिवर्तित हो गई, आयात निर्यात से अधिक हो गया, जिससे वैश्विक कपास बाज़ार में इसकी पिछली प्रतिस्पर्द्धात्मक बढ़त समाप्त हो गई।
- **विरोधाभासी व्यापार और तकनीकी नीतियाँ:** राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान जैसे प्रमुख संस्थानों से स्वदेशी GM नवाचारों में देरी हुई है अथवा उनकी उपेक्षा की गई है।
  - यद्यपि GM फसलों के क्षेत्र परीक्षण अवरुद्ध हैं, तथापि भारत ने वर्ष 2021 में **GM** सोयामील के आयात की अनुमति दे दी है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

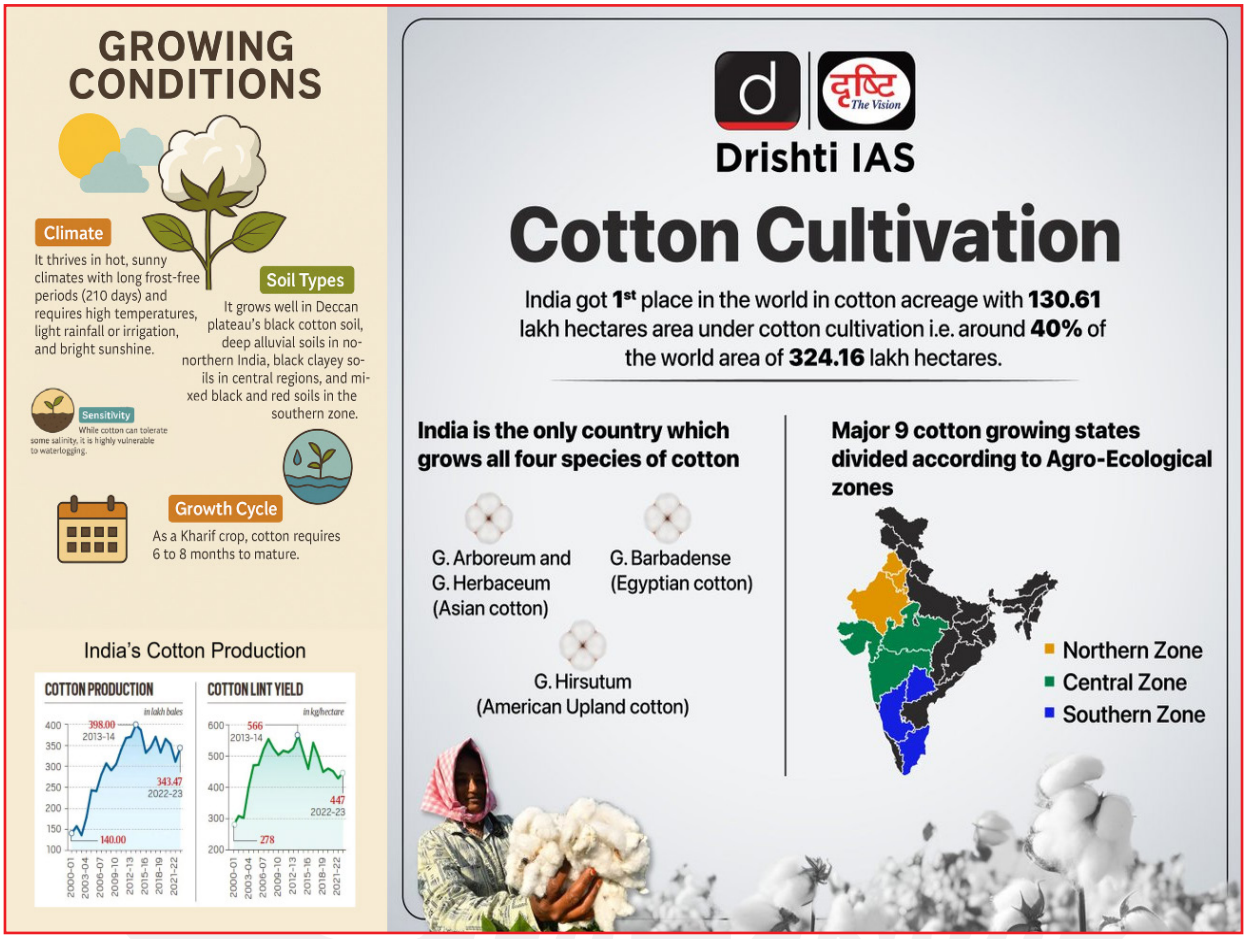

- GM फसलों पर रोक और विनियामक स्पष्टता के अभाव से कपास क्षेत्र में नवाचार बाधित हुआ है। विनियामक निर्णय वैज्ञानिक जोखिम मूल्यांकन पर आधारित न होकर जन भावना और विधिक हस्तक्षेप पर केंद्रित हो गए हैं।

- **वैश्विक बाज़ारों में छूटे अवसर:** अमेरिका और ब्राज़ील जैसे देश, व्यापक स्तर पर जैवप्रौद्योगिकी को अपनाकर, निर्यात के उस क्षेत्र पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर रहे हैं, जिस पर पूर्व में भारत का प्रभुत्व था।
  - घरेलू वस्त्र उद्योग वर्तमान में विदेशों से कपास की खरीद कर रहे हैं, जिससे इनपुट लागत बढ़ रही है और प्रतिस्पर्द्धा कम हो रही है।
- **कपास के तेल में गिरावट:** कपास के बीज खाद्य तेल उत्पादन में योगदान देते हैं, जिससे यह सरसों और सोयाबीन के बाद भारत में तीसरा सबसे बड़ा वनस्पति तेल स्रोत बन गया है।
  - कपास उत्पादन में कमी से तेल उत्पादन प्रभावित होता है, जिससे भारत की खाद्य तेल आयात पर निर्भरता बढ़ जाती है।

नोट: राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (NFSM) के अंतर्गत कपास विकास कार्यक्रम का उद्देश्य प्रमुख कपास उत्पादक राज्यों में कपास उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ावा देना है और इसे वर्ष 2014-15 से कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

भारत में कपास उत्पादन बढ़ाने के लिये क्या किया जा सकता है?

- **तकनीकी हस्तक्षेप:** कीट प्रतिरोधी और उच्च उपज देने वाली GM कपास संकर किस्मों (जैसे, श्वेत मक्षी-रोधी और पिंक बॉलवर्म-रोधी किस्में) को शीघ्रता से विनियामक स्वीकृति प्रदान किये जाने की आवश्यकता है।
- **उच्च घनत्व रोपण प्रणाली (HDPS) को बढ़ावा देना:** प्रति इकाई क्षेत्र में पौधों की संख्या बढ़ाने और उपज में सुधार करने के लिये कपास उत्पादक राज्यों में HDPS को अपनाने को बढ़ावा देना चाहिये।
- **किसान-केंद्रित विस्तार सेवाएँ:** MSP, मौसम, कीट अलर्ट और खरीद लॉजिस्टिक्स पर वास्तविक समय में अपडेट प्रदान करने हेतु **कॉट-एली** जैसे प्लेटफॉर्मों का विस्तार किये जाने की आवश्यकता है।
  - सर्वोत्तम कृषि पद्धतियों के प्रसार के लिये **कृषि विज्ञान केंद्रों** और **भारतीय कपास निगम** के माध्यम से कृषि विस्तार को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।
- **पश्च फसल और बाज़ार सुधार:** वैश्विक बाज़ारों में गुणवत्ता आश्वासन सुनिश्चित करने के लिये क्यूआर-कोड ट्रेसेबिलिटी के साथ **"कस्तूरी कॉटन" ब्रांडिंग** का विस्तार करने की आवश्यकता है।
  - **कपास उत्पादकता** के लिये पाँच वर्षीय मिशन (बजट 2025-26 में घोषित) को क्रियान्वित करने की आवश्यकता है, जिससे उपज में वृद्धि हो, संधारणीयता सुनिश्चित हो, तथा अतिरिक्त-लंबे स्टेपल कपास की खेती (जो अपनी बेहतर गुणवत्ता, कोमलता और स्थायित्व के लिये जाना जाता है) को बढ़ावा मिले, जिससे आयात पर निर्भरता कम हो।
  - समग्र क्षेत्रीय विकास सुनिश्चित करने के लिये कपास क्लस्टरों से जुड़े कताई, बुनाई और परिधान क्षेत्रों में निवेश को प्रोत्साहित किये जाने की आवश्यकता है।

दृष्टि मेन्स प्रश्न:

प्रश्न. भारत के कपास उत्पादन पर बीटी कपास के प्रभाव की विवेचना कीजिये और इसकी सफलता में अवरोध के कारणों का विश्लेषण कीजिये।

कृषि क्षेत्र का मशीनीकरण

चर्चा में क्यों?

भारत में कृषि क्षेत्र के मशीनीकरण में, जो एक समय में मुख्यत: ट्रैक्टरों के उपयोग पर आधारित था, वर्तमान में आमूलचूल परिवर्तन हो रहे हैं। आधुनिक कृषि मांगों को पूरा करने के लिये स्मार्ट मशीनरी, स्वचालन और सटीक उपकरणों पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है।

कृषि क्षेत्र का मशीनीकरण क्या है?

- कृषि क्षेत्र के मशीनीकरण के अंतर्गत उत्पादकता में सुधार, दक्षता में वृद्धि, तथा कृषि कार्यों में शारीरिक श्रम पर निर्भरता कम करने के लिये हार्वेस्टर और आधुनिक उपकरणों जैसी मशीनों का उपयोग करना शामिल है।
- **कृषि क्षेत्र के मशीनीकरण में उभरती प्रौद्योगिकियाँ:**
  - **परिशुद्ध कृषि:** **परिशुद्ध कृषि** में मृदा और जलवायु स्थितियों के आधार पर संसाधन उपयोग (जल, उर्वरक, पीड़कनाशी) को अनुकूलित करने के लिये GPS, IoT, **कृत्रिम बुद्धिमत्ता**, ड्रोन और डेटा एनालिटिक्स का उपयोग किया जाता है।
  - **कृषि में ड्रोन:** ड्रोन का उपयोग फसल निगरानी, पीड़कनाशी के छिड़काव और उपज अनुमान के लिये किया जाता है। वैश्विक ड्रोन आयात में भारत की हिस्सेदारी 22% है।
    - **ड्रोन दीदी योजना** का उद्देश्य महिला स्वयं सहायता समूहों को किराये की सेवाएँ प्रदान करने, मशीनीकरण और ग्रामीण रोज़गार को बढ़ावा देने के लिये 15,000 ड्रोन उपलब्ध कराना है।
  - **स्वायत्त मशीनरी:** चालक रहित ट्रैक्टर और रोबोट हार्वेस्टर मानव की न्यूनतम आवश्यकता के साथ बीजारोपण, छिड़काव और कटाई जैसे कार्य करते हैं।
  - **कृषि रोबोटिक्स और कृत्रिम बुद्धिमत्ता:** कृषि क्षेत्र में रोबोटों के उपयोग से बुवाई, सिंचाई, निराई और कटाई में स्वंयचालित क्रिया सक्षम हुई है, जिससे लागत कम हुई है और दक्षता में वृद्धि हुई है।
- **कृषि क्षेत्र के मशीनीकरण का स्तर:** भारत में कृषि क्षेत्र के मशीनीकरण का कुल स्तर लगभग 47% है। पंजाब और हरियाणा में 40-45% मशीनीकरण है, जबकि पूर्वोत्तर राज्यों में मशीनीकरण नगण्य है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- गेहूँ और चावल जैसी अनाज फसलों में लगभग 50-60% योगदान मशीनीकरण का है, जबकि बागवानी में मशीनों का उपयोग कम है।
- वैश्विक स्तर: वैश्विक स्तर पर, विकसित देशों में मशीनीकरण का स्तर 90% से अधिक है, जबकि अविकसित क्षेत्र, विशेष रूप से अफ्रीका और दक्षिण एशिया, वर्तमान में भी शारीरिक श्रम पर निर्भर हैं। विकासशील देशों में चीन (60%) और ब्राज़ील (75%) अग्रणी हैं।

कृषि क्षेत्र के मशीनीकरण का मुख्य महत्त्व क्या है?

- **इनपुट बचत:** ICAR की एक रिपोर्ट के अनुसार, कृषि क्षेत्र में मशीनों का उपयोग करने से बीज और उर्वरकों पर 15-20% की बचत होती है, जिससे इनपुट लागत कम हो जाती है, जबकि फसल की गहनता 5-20% बढ़ जाती है।
- **उच्च दक्षता:** इससे श्रम दक्षता में भी सुधार होता है और कृषि कार्य समय में 15-20% की कटौती होती है, जिससे कृषि में उत्पादकता और संधारणीयता बढ़ती है।

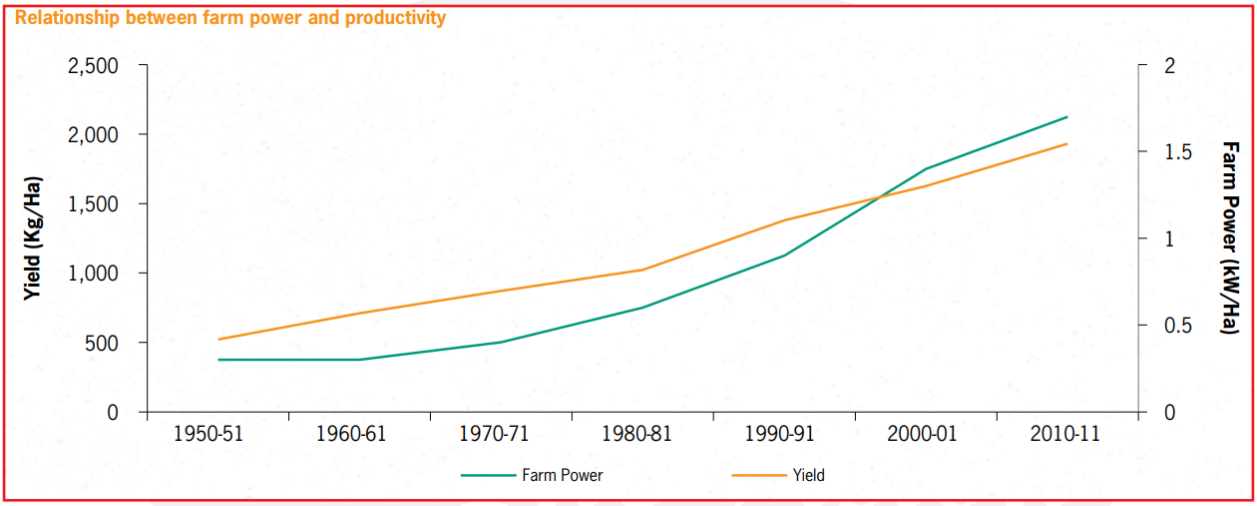

- **भूमि का कुशल उपयोग:** रोटावेटर और सबसॉइलर जैसे उन्नत जुताई उपकरण सघन मृदा को भुरभुरा बना कर कठोर भूमि को कृषि योग्य बनाते हैं, इसी प्रकार यंत्रीकृत सिंचाई से जल का कुशल उपयोग सुनिश्चित होता है, तथा शुष्क या असमान भूभाग भी उत्पादक कृषि भूमि में परिवर्तित हो जाती है।

भारत में कृषि क्षेत्र के मशीनीकरण की क्या आवश्यकता है?

- **खाद्य की बढ़ती मांग:** भारत की जनसंख्या वर्ष 2048 तक 1.6 बिलियन होने और वर्ष 2050 तक वैश्विक खाद्य मांग में 60% की वृद्धि (FAO) होने की उम्मीद के साथ, सीमित भूमि, जल अभाव, मानसून पर निर्भरता और अल्प मशीनीकरण संधारणीय कृषि विकास के समक्ष चुनौतियाँ हैं।
- **अल्प कुशल कृषि:** भारत की 46.1% आबादी कृषि में संलग्न है, लेकिन सकल घरेलू उत्पाद (आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25) में इसका योगदान केवल 16% है, जो अक्षमताओं को उजागर करता है। मशीनीकरण की सहायता से उत्पादकता बढ़ाकर, कटाई के बाद होने वाले नुकसान को कम करके और संधारणीयता सुनिश्चित करके इस अंतराल को कम किया जा सकता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- **श्रम अभाव और नगरीकरण:** संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, वर्ष 2050 तक भारत की 50% से अधिक आबादी नगरों में निवास करेगी, जिससे कृषि श्रम की उपलब्धता कम हो जाएगी। अन्य क्षेत्रों में उभरते अवसर और मनरेगा जैसी योजनाओं से कार्यबल का प्रवास और अधिक तीव्र हो गया है। कृषि उत्पादकता को बनाए रखने के लिये मशीनीकरण आवश्यक है।
- **सिंचाई संबंधी चुनौतियाँ:** भारत की केवल 53% कृषि योग्य भूमि ही सिंचाई के अंतर्गत है, अत: वर्षा आधारित कृषि जलवायु परिवर्तन के प्रति संवेदनशील बनी हुई है। मशीनीकरण से समय पर बुवाई और कटाई सुनिश्चित होती है, जिससे कार्यकुशलता बढ़ती है और जल-संकटग्रस्त क्षेत्रों में फसल की क्षति कम होती है।

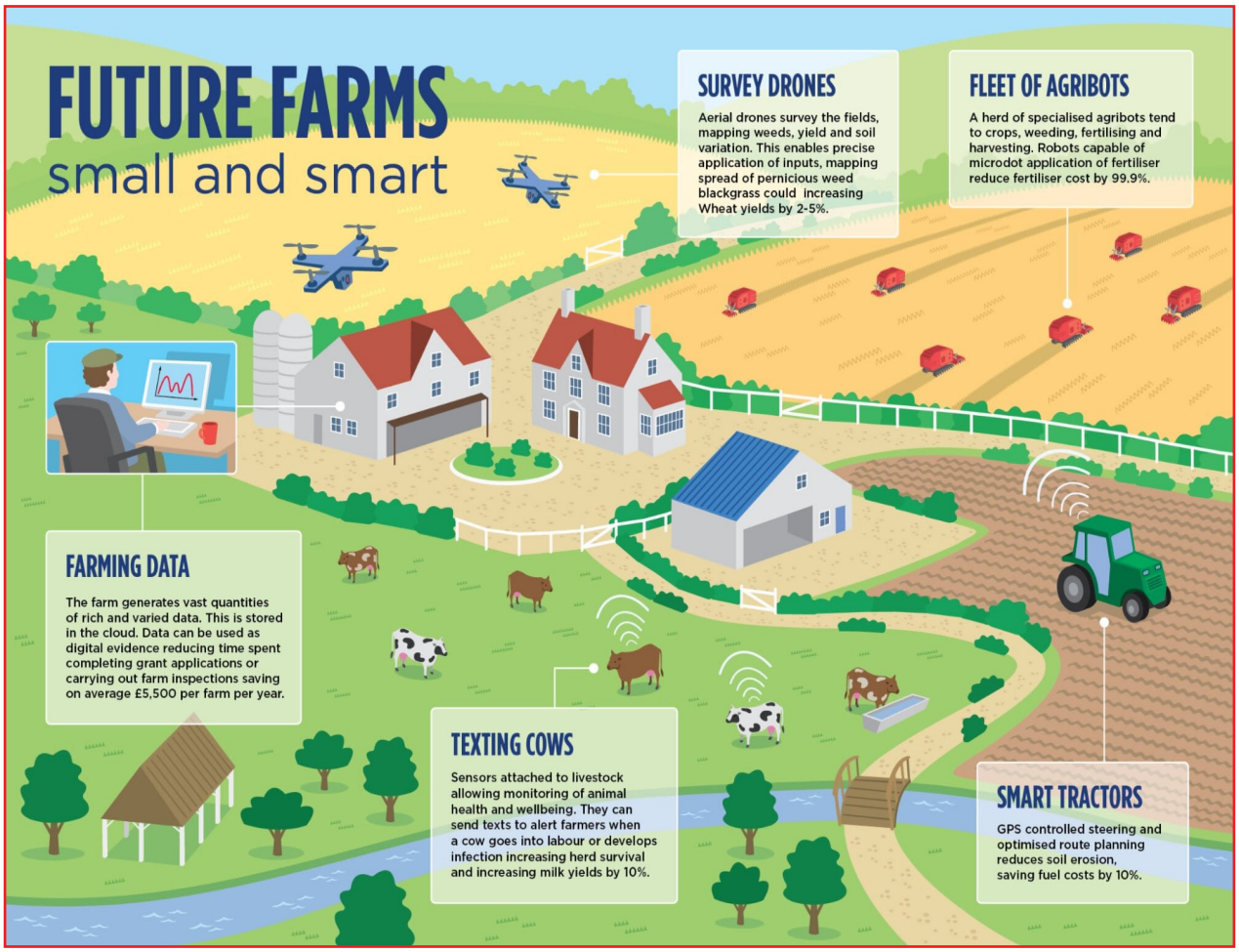

कृषि मशीनीकरण में वैश्विक रुझान

- **कनाडा और अमेरिका:** यहाँ इनमें 95% मशीनीकरण है, तथा ट्रैक्टर, हार्वेस्टर और जुताई उपकरणों में भारी पूंजी निवेश किया गया है। संयुक्त राज्य अमेरिका में अब एक किसान 144 लोगों को भोजन उपलब्ध कराता है, जबकि वर्ष 1960 में यह संख्या 26 थी। सरकारी सहायता में कम ब्याज वाले ऋण, प्रत्यक्ष सब्सिडी और मूल्य समर्थन शामिल हैं।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- **फ्राँस:** यहाँ मशीनीकरण 99% है, यहाँ 680,000 उच्च मशीनीकृत जोत हैं और कृषि उपकरण बाज़ार का मूल्य 6.3 बिलियन यूरो है। किसानों को यूरोपीय संघ से 50% आय के बराबर सब्सिडी मिलती है, जो निर्यात और मशीनरी आयात को सहायता प्रदान करती है।
- **जापान:** यहाँ मशीनीकरण उच्च है, प्रति हेक्टेयर 7 HP ट्रैक्टर की शक्ति है, जो अमेरिका और फ्राँस के समतुल्य है। यह घरेलू कृषि की सुरक्षा के लिये सब्सिडी और उच्च आयात शुल्क प्रदान करता है।

भारत में कृषि मशीनीकरण में क्या चुनौतियाँ हैं?

- **लघु एवं खंडित भूमि जोत:** भारत में औसत कृषि आकार 1.16 हेक्टेयर है (यूरोपीय संघ में 14 हेक्टेयर और अमेरिका में 170 हेक्टेयर की तुलना में), छोटे किसानों के लिये मशीनीकरण आर्थिक रूप से अव्यवहारिक बना हुआ है।
  - लघु, खंडित जोतों के लिये मशीनरी की कमी मशीनीकरण को सीमित करती है।
  - लघु जोतों (<2 हेक्टेयर) में पावर टिलर का उपयोग किया जाता है; मध्यम जोतों (2-10 हेक्टेयर) में 30-50 HP ट्रैक्टर और रोटावेटर का उपयोग किया जाता है; वृहद् जोतों (>10 हेक्टेयर) में कंबाइन हार्वेस्टर और लेजर लैंड लेवलर जैसे उन्नत उपकरण अपनाए जाते हैं।
- **वित्तीय बाधाएँ:** कृषि मशीनरी महँगी हैं, और सीमित वित्तीय पहुँच के कारण छोटे किसान इसे वहन करने में संघर्ष करते हैं। यद्यपि 90% ट्रैक्टरों को वित्तपोषित किया जाता है, लेकिन सख्त ऋण मानदंड और उच्च लागत के कारण मशीनीकरण कठिन हो जाता है।
- **उपकरण की निम्न गुणवत्ता:** भारतीय किसानों के पास उन्नत मशीनरी तक सीमित पहुँच है, और उपलब्ध अधिकांश उपकरण निम्न गुणवत्ता के हैं, जिससे उच्च परिचालन लागत और अक्षमता होती है।
- **क्षेत्रीय असमानताएँ:** पर्वतीय कृषि (कृषि योग्य भूमि का 20%) और सुदूरवर्ती क्षेत्रों में भौगोलिक चुनौतियों, उपयुक्त उपकरणों की कमी और कमज़ोर नीतिगत समर्थन के कारण मशीनीकरण कम है।

कृषि मशीनीकरण को बढ़ावा देने के लिये सरकारी पहल

- कृषि मशीनीकरण पर उप मिशन (SMAM)
- कृषि अवसंरचना कोष (AIF)
- कस्टम हायरिंग सेंटर (CHC)
- जलवायु अनुकूल कृषि में राष्ट्रीय नवाचार (NICRA)
- मेक इन इंडिया एवं कृषि मशीनरी में FDI

आगे की राह

- **भूमि चकबंदी और कस्टम हायरिंग:** कुशल मशीनीकरण के लिये भूमि चकबंदी को प्रोत्साहित करना और छोटे किसानों को कम्बाइन हार्वेस्टर और चावल ट्रांसप्लांटर जैसी महँगी मशीनरी उपलब्ध कराने के लिये कस्टम हायरिंग केंद्रों (CHC) को मज़बूत करना।
- **प्रौद्योगिकी और वित्तीय पहुँच:** कम मशीनीकरण वाले क्षेत्रों में कृषि मशीनरी बैंकों की स्थापना करते हुए कृषि मशीनरी अपनाने के लिये सब्सिडी, कम ब्याज दर पर ऋण और कर प्रोत्साहन सुनिश्चित करना।
- **अनुसंधान एवं विकास, मानकीकरण एवं प्रशिक्षण:** किसान-उद्योग सहयोग को बढ़ावा देना, गुणवत्ता मानकों एवं परीक्षण को लागू करना, तथा कुशल मशीनरी उपयोग एवं रखरखाव के लिये प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना।
- **समावेशी मशीनीकरण:** सभी क्षेत्रों में मशीनीकरण के लाभ को बढ़ाने के लिये पर्वतीय, वर्षा आधारित और बागवानी कृषि के लिये विशिष्ट मशीनरी का विकास करना।

दृष्टि मेन्स प्रश्न:

प्रश्न. भारत में कृषि मशीनीकरण की चुनौतियों पर चर्चा कीजिये और इसे बढ़ावा देने के लिये उठाए गए सरकारी पहलों का मूल्यांकन कीजिये।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

प्रिलिम्स फैक्ट्स

म्याँमार भूकंप

म्याँमार के मध्य भाग में 7.7 तीव्रता के साथ एक भीषण **भूकंप** की घटना हुई, जिससे मुख्य रूप से मंडाले शहर में व्यापक विनाश। यह भूकंपीय घटना हाल के वर्षों में जनित सर्वाधिक भीषण भूकंपों में से एक है।

म्याँमार भूकंप का कारण क्या था?

- **स्ट्राइक-स्लिप फॉल्टिंग:** म्याँमार में भूकंप की घटना सागाइंग फॉल्ट के साथ एक प्रकार के फॉल्टिंग के कारण हुई थी, जिसे **"स्ट्राइक-स्लिप फॉल्टिंग"** कहते हैं।
  - म्याँमार में 1,500 किलोमीटर में विस्तृत **सागाइंग फॉल्ट** पश्चिम में भारतीय प्लेट और पूर्व में यूरेशियन प्लेट के बीच टेक्टोनिक प्लेट सीमा को चिह्नित करता है। यह **विश्व के सर्वाधिक दीर्घ सर्वाधिक सक्रिय नतिलंब सर्पण भ्रंश (Strike-Slip Faults)** में से एक है।
- **प्लेटों में पारस्परिक क्रिया:** यह भूकंप **भारतीय और यूरेशियन टेक्टोनिक प्लेटों** के बीच हुए संचलन के कारण हुआ, जिसमें भारतीय प्लेट यूरेशियन प्लेट के सापेक्ष उत्तर की ओर बढ़ रही थी।
  - इस पारस्परिक क्रिया के कारण **भ्रंश रेखा (Fault Line)**, विशेष रूप से सागाइंग फॉल्ट के अनुदिश प्रतिबल एकत्रित होता है। जब एकत्रित प्रतिबल अचानक से विमुक्त होता है, तो भूकंप की घटना होती है।

नोट: संबद्ध क्षेत्र में **'प्रथम प्रतिक्रियाकर्ता'** के रूप में अपनी भूमिका की पुष्टि करते हुए म्याँमार में हुई भूकंप की घटना में सहायता करने हेतु भारत ने मानवीय सहायता और आपदा राहत (HADR) प्रदान करने के लिये **ऑपरेशन ब्रह्मा** शुरू किया।

- भारतीय नौसेना के जहाज़ों **सतपुड़ा**, **सावित्री**, करमुक (स्वदेश निर्मित मिसाइल कार्वेट) और लैंडिंग क्राफ्ट यूटिलिटी (LCU) 52 (यह दूसरा **LCU Mk-IV वर्ग** है) को आवश्यक राहत सामग्री के साथ यांगून, म्याँमार के लिये भेजा गया।

भ्रंश क्या है?

- **परिभाषा:** भ्रंश भू पर्पटी में शैलों के दो खंडों के बीच एक **विभंजन अथवा विभंग क्षेत्र** होता है, जिसके कारण खंडों में एक दूसरे की सापेक्ष गति में संचलन होता है।
  - भूवैज्ञानिक **फॉल्ट को उसके ढाल** (सतह के संबंध में फॉल्ट का कोण) और फॉल्ट के साथ **गति (स्लिप) की दिशा** के आधार पर वर्गीकृत करते हैं।
  - यह संचलन **विवर्तनिक तनाव (Tectonic Stress)** के कारण होती है, जो अकस्मात् हो सकती है, जिसके परिणामस्वरूप **भूकंप** आ सकता है।
  - विवर्तनिक तनाव (Tectonic Stress) भ्रंश रेखाओं के साथ बनता है और जब मुक्त होता है, तो ब्लॉकों को स्थानांतरित करता है, जिससे भूकंपीय गतिविधि उत्पन्न होती है।

फॉल्ट के प्रकार:

- **नॉर्मल फॉल्ट:** नॉर्मल फॉल्ट एक डिप-स्लिप फॉल्ट है, जहाँ फॉल्ट के ऊपर का ब्लॉक नीचे के ब्लॉक के सापेक्ष नीचे की ओर गति करता है।

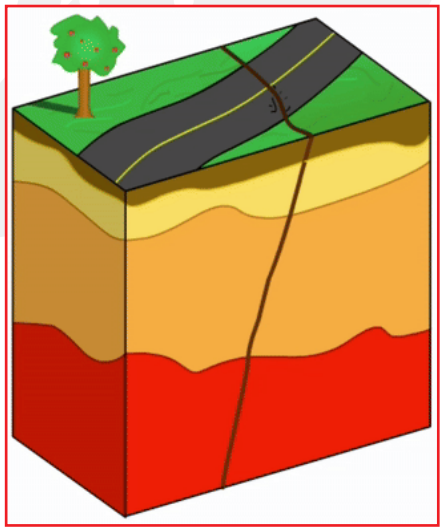

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **रिवर्स फॉल्ट:** रिवर्स (थ्रस्ट) फॉल्ट एक डिप-स्लिप फॉल्ट है, जहाँ ऊपरी ब्लॉक ऊपर की ओर गति करता है और निचले ब्लॉक के ऊपर अभिसरित होता है। इस प्रकार की भ्रंशन संपीड़न क्षेत्रों में होती है, जैसे कि जहाँ एक विवर्तनिक प्लेट दूसरी के नीचे क्षेपित हो जाती है, जैसा कि जापान में होता है।

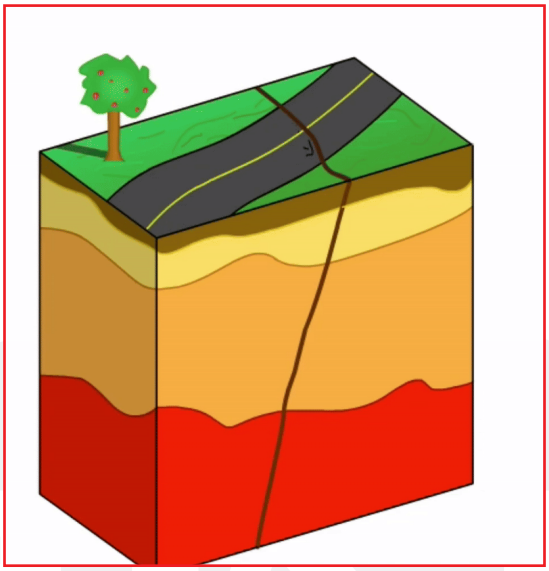

- **स्ट्राइक-स्लिप फॉल्ट:** यह तब होता है जब ब्लॉक एक दूसरे के ऊपर क्षैतिज रूप से अधिक्षिप्त होते हैं।
  - राइट लेटरल स्ट्राइक-स्लिप फॉल्ट का अर्थ है दोनों तरफ से देखने पर दूर स्थित ब्लॉक का विस्थापन दाईं ओर होता है (उदाहरण के लिये, सैन एंड्रियास फॉल्ट)।
  - लेफ्ट-लेटरल स्ट्राइक-स्लिप फॉल्ट का अर्थ है दोनों तरफ से देखने पर दूर के ब्लॉक का विस्थापन बाईं ओर है।

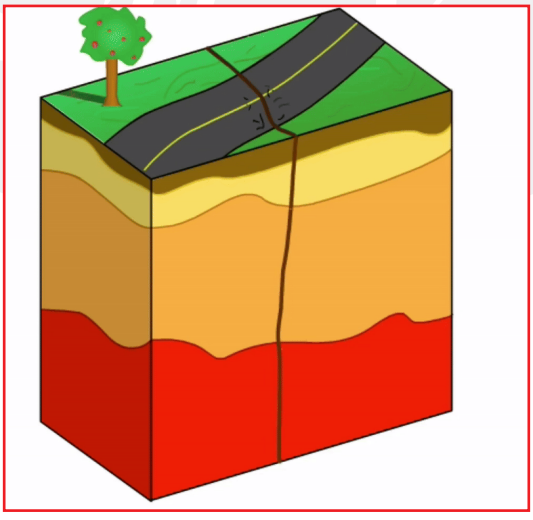

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

भूकंप

के बारे में

- पृथ्वी का कंपन; ऊर्जा के निकलने के कारण तरंगे उत्पन्न होती हैं, जो सभी दिशाओं में फैलकर भूकंप लाती हैं

अवकेंद्र (Hypocenter)

- वह स्थान जहाँ भूकंप का उद्गम होता है (पृथ्वी की सतह के नीचे)

अधिकेंद्र (Epicenter)

- अवकेंद्र के समीपस्थ स्थान (पृथ्वी की सतह पर)

भूकंपीय तरंगें

- भूगर्भिक तरंगें: पृथ्वी के अंदरूनी भाग से होकर सभी दिशाओं में आगे बढ़ती हैं।
  - P तरंगें: तीव्र गति से चलती हैं, ध्वनि तरंगों जैसी होती हैं, गैस, तरल व ठोस तीनों प्रकार के पदार्थों से गुज़र सकती हैं।
  - S तरंगें: धरातल पर कुछ समय अंतराल के बाद पहुँचती हैं, केवल ठोस पदार्थों के ही माध्यम से चलती हैं।
- धरातलीय तरंगें: भूकंपलेखी (सिस्मोग्राफ) पर अंत में अभिलेखित होती हैं, अधिक विनाशकारी, शैलों/चट्टानों के विस्थापन का कारण बनती हैं
  - लव तरंगें: लंबवत् विस्थापन के बिना S-तरंगों के समान गति (क्षैतिज), क्षैतिज गति प्रसार की दिशा के लंबवत्, रेले तरंगों की तुलना में तीव्र गति
  - रेले तरंगें: भूमि पर दीर्घवृत्ताकार पथ में दोलन उत्पन्न करती हैं, सभी भूकंपीय तरंगों में से अधिकांश के प्रसार का कारण बनती हैं, एक ऊर्ध्वाधर ताल में लंबवत् व क्षैतिज रूप से गति करती हैं

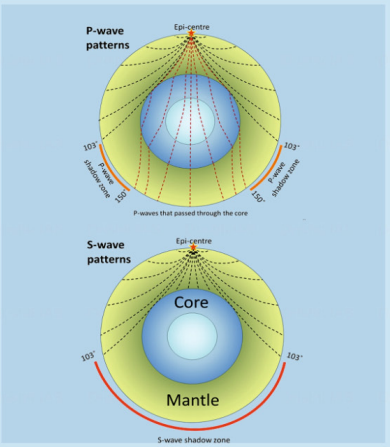

भूकंप के कारण

- किसी भ्रंश/भ्रंश ज़ोन के किनारे-किनारे ऊर्जा का निर्मुक्त होना (भूपर्पटी की शिलों में दरारें)
- टेक्टोनिक प्लेटों का संचलन (सबसे सामान्य कारण)
- ज्वालामुखी विस्फोट (शैल के तनाव में परिवर्तन - मैग्मा का अन्तःक्षेपण/निकासी)
- मानवीय गतिविधियाँ (खनन, रसायनों/परमाणु उपकरणों का विस्फोटन आदि)

भूकंप का मापन

- भूकंपमापी (Seismometer)- भूकंपीय तरंगों को मापता है
- रिक्टर पैमाना (Richter Scale)- परिमाण को मापता है (निर्मुक्त ऊर्जा; सीमा: 0-10)
- मरकैली (Mercalli)- तीव्रता को मापता है (दृश्यमान क्षति; सीमा: 1-12)

वितरण

- परि-प्रशांत मेखला (Circum-Pacific Belt)- सभी भूकंपों का 81%
- अल्पाइड भूकंप मेखला (Alpide Earthquake Belt)- सबसे बड़े भूकंपों का 17%
- मध्य अटलांटिक कटक (Mid-Atlantic Ridge)- अधिकांशतः जल के नीचे डूबा हुआ

भारत में भूकंप

- तकनीकी रूप से सक्रिय पर्वतों- हिमालय की उपस्थिति के कारण भारत भूकंप से अत्यंत प्रभावित देशों में से एक है।
- भारत को 4 भूकंपीय क्षेत्रों (II, III, IV, और V) में विभाजित किया गया है।

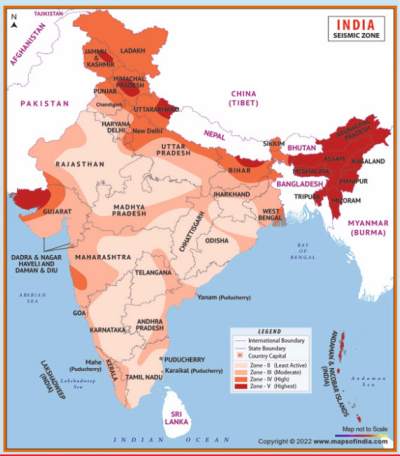

Drishti IAS

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 — SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस — SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स — SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप — SCAN ME

नोट :

टोमैटो चिली और कन्नडिप्पया को GI टैग

चर्चा में क्यों?

तेलंगाना के **वारंगल चपाता मिर्च (टोमैटो चिली)** और केरल के **आदिवासी हस्तशिल्प कन्नडिप्पया को भौगोलिक संकेत (GI) टैग** प्रदान किया गया है, **जिससे भारत की GI रजिस्ट्री और समृद्ध** हुई है, जिसमें अब **600 से अधिक उत्पाद सूचीबद्ध** हैं।

भौगोलिक संकेत (GI) टैग

- **परिचय:** GI टैग एक **नाम या चिह्न होता है जिसका उपयोग कुछ उत्पादों** पर किया जाता है जो किसी विशिष्ट भौगोलिक स्थान या उत्पत्ति से संबंधित होते हैं।
  - GI टैग यह सुनिश्चित करता है कि केवल अधिकृत उपयोगकर्त्ता या भौगोलिक क्षेत्र में रहने वाले लोगों को ही **लोकप्रिय उत्पाद नाम का उपयोग** करने की अनुमति है।
    - यह उत्पाद को दूसरों द्वारा नकल किये जाने से भी बचाता है।
  - पंजीकृत GI **10 वर्षों के लिये वैध** होता है और इसे **नवीनीकृत** किया जा सकता है।
  - GI पंजीकरण की देखरेख वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अंतर्गत **उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्द्धन विभाग** द्वारा की जाती है।
- **कानूनी ढाँचा:**
  - माल का भौगोलिक उपदर्शन रजिस्ट्रीकरण - और संरक्षण अधिनियम, 1999
    - बौद्धिक संपदा अधिकारों के व्यापार-संबंधी पहलुओं पर विश्व व्यापार संगठन समझौता (TRIPS)।

वारंगल चपाता मिर्च के बारे में मुख्य तथ्य क्या हैं?

- **परिचय:** यह **तेलंगाना का 18वाँ GI-टैग** वाला उत्पाद है और बंगनापल्ली आम और तंदूर लाल ग्राम के बाद **तीसरा कृषि GI टैग** वाला उत्पाद है।

- **विशेषताएँ:** यह अपने **चमकीले लाल रंग और गोल टमाटर जैसी आकृति** के लिये जाना जाता है।
  - यह मिर्च **कम तीखी** होती है, लेकिन अपने कैप्सिकम ***ओलियोरेसिन (oleoresin)*** **गुणों** (एंटी-ओबेसोजेनिक, एंटीऑक्सीडेंट, एंटी-इंफ्लेमेटरी और न्यूरोप्रोटेक्टिव गुण) के कारण इसका **रंग चमकीला लाल** होता है और इसका **स्वाद भी भरपूर** होता है।
  - **प्रकार:** यह **तीन प्रकार** के फलों में पाया जाता है: सिंगल पैटी, डबल पैटी और ओडालू।
- **खेती:** वारंगल चपाता की खेती जम्मीकुंटा मंडल के नगरम गाँवों में 80 वर्षों से अधिक समय से की जा रही है, **जबकि नादिकुडा गाँव और मंडल इसका सबसे पुराना स्रोत** हो सकता है।
  - इसकी विशिष्ट **विशेषताओं का श्रेय इस क्षेत्र की लाल और काली मृदा** को दिया जा सकता है।
  - इस क्षेत्र की विशिष्ट मृदा, जल और मौसम के कारण इस **फसल को अन्यत्र उगाना कठिन है।**

कन्नडिप्पया से संबंधित मुख्य तथ्य क्या हैं?

- **परिचय:** इस मान्यता के साथ **कन्नडिप्पया GI टैग प्रदत्त** केरल का **पहला जनजातीय हस्तशिल्प उत्पाद** बन गया है।
- **उत्पत्ति:** यह शिल्प **मुख्य रूप से ओराली, मन्नान, मुथुवा, मलायन और कादर जनजातीय समुदायों** और इडुक्की, त्रिशूर, एर्नाकुलम और पलक्कड़ ज़िलों में उल्लादान, मलयारायन और हिल पुलाया शिल्पकारों द्वारा संरक्षित है।
  - अतीत में, **जनजातीय समुदायों** द्वारा **कन्नडिप्पया** को सम्मान के प्रतीक के रूप में राजाओं को भेंट किया जाता था।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

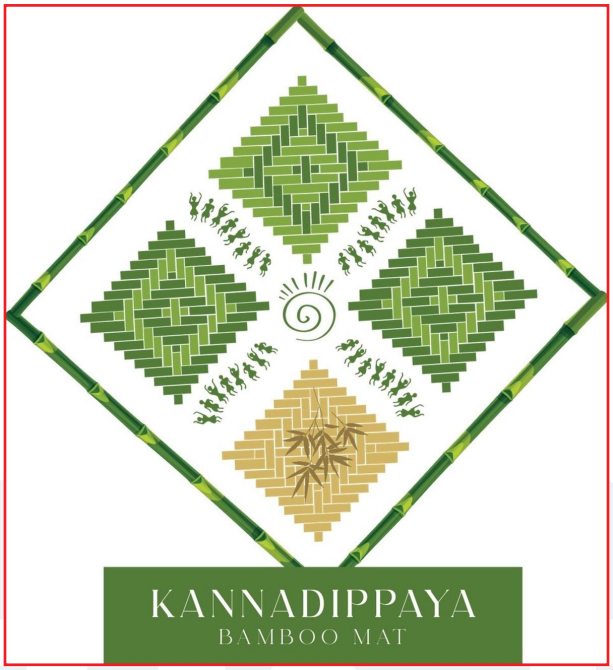

- **मुख्य विशेषताएँ:** इस उत्पाद का नाम, जिसका **शाब्दिक अर्थ मिरर मैट है, इसके अद्वितीय परावर्तक पैटर्न** से लिया गया है।
  - यह मैट **रीड बाँस** (*Teinostachyum wightii*) **की नरम परतों से बनाई गई है,** यह मैट **अपने अनूठे गुणों** के लिये जानी जाती है, जैसे सर्दियों के दौरान गर्मी प्रदान करना और गर्मियों में शीतलता प्रदान करना।

हाल ही में GI टैग प्राप्त अन्य उत्पाद कौन-से हैं?

उत्पाद	राज्य	वर्ष	तथ्य
बनारस ठंडाई	उत्तर प्रदेश	वर्ष 2024	वाराणसी से संबंधित पारंपरिक मसालेदार पेय।
असम बिहू ढोल	असम	वर्ष 2024	पारंपरिक ढोल जो बिहू उत्सव का अभिन्न अंग है।
कस्ती धनिया	महाराष्ट्र	वर्ष 2023	विशिष्ट सुगंध और स्वाद के लिये लोकप्रिय
कोरापुट काला जीरा चावल	ओडिशा	वर्ष 2023	सुगंधित काले धान चावल, जिसे प्राय: **'प्रिंस ऑफ राइस'** कहा जाता है।
उत्तराखंड लाल चावल	उत्तराखंड	वर्ष 2023	हाई एल्टीट्यूड वाला चावल अपने पोषण संबंधी लाभों और विशिष्ट सुगंध के लिये जाना जाता है।

बर्ड फ्लू

आंध्र प्रदेश में बर्ड फ्लू वायरस से एक व्यक्ति की मृत्यु हुई, जो **वर्ष 2021 के बाद से भारत में H5N1 के कारण हुई दूसरी मानव मृत्यु है।**

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

बर्ड फ्लू क्या है?

- **बर्ड फ्लू अथवा एवियन इन्फ्लूएंज़ा** एक अत्यधिक संक्रामक वायरल रोग है जो वन्य और साथ ही घरेलू प्रकार के पक्षियों को प्रभावित करता है।
  - यह **एवियन इन्फ्लूएंज़ा A वायरस** के कारण होता है, जिसके उपप्रकार जैसे **H5N1** और **H5N8** विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हैं।
- **मानव पर इसके प्रभाव के मामले:** मानव पर इसका पहला संक्रमण **वर्ष 1997 (हांगकांग)** में दर्ज किया गया था। इसके अधिकांश मामले एशिया में दर्ज किये गए और इसका कारण संक्रमित पक्षियों के साथ निकट संपर्क था।
  - वर्ष 2003 से फरवरी 2025 के बीच, **विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)** ने H5N1 इन्फ्लूएंज़ा के **972 पुष्ट मामले** दर्ज किये हैं।
- **संचरण:** H5N1 मुख्य रूप से **संक्रमित जीवित अथवा मृत पक्षियों** अथवा **दूषित वातावरण** (जैसे, जीवित पक्षियों का बाज़ार) के साथ प्रत्यक्ष संपर्क होने के माध्यम से संचरित होता है।
  - इसलिये, H5N1 को **विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसंधान एवं विकास ब्लूप्रिंट के तहत प्राथमिकता वाली बीमारी के रूप में** सूचीबद्ध किया गया है।
- **संक्रमित स्तनधारियों से मनुष्यों में संक्रमण दुर्लभ रूप से** पाया गया है। हालाँकि मनुष्यों में संक्रमण दुर्लभ है किंतु **H5N1 की मृत्यु दर (~ 60%) बहुत अधिक है**, जो कोविड-19 की अधिकतम मृत्यु दर (~ 3%) से भी बहुत अधिक है। साथ ही, **मनुष्यों में वायु के माध्यम से संक्रमण की पुष्टि नहीं हुई है।**
  - मानव-से-मानव में संक्रमण **अत्यंत दुर्लभ** है। वायरस अभी भी विकसित हो रहा है, और **यदि यह मानव-से-मानव में निरंतर संचरण के लिये उत्परिवर्तित** होता है, तो यह एक **वैश्विक महामारी को जन्म** दे सकता है।
- **लक्षण:** सामान्य लक्षणों में **तीव्र बुखार, खाँसी, गले में खराश और मांसपेशियों में दर्द** शामिल हैं।
  - गंभीर मामलों में **श्वसन विफलता** या **तंत्रिका संबंधी जटिलताएँ** हो सकती हैं। कुछ व्यक्ति संक्रमण के बावजूद लक्षणविहीन रह सकते हैं।
- **उपचार: ओसेल्टामिविर** जैसी एंटीवायरल दवाएँ प्रभावी होती हैं, खासकर जब गंभीर या उच्च जोखिम वाली स्थितियों की शुरुआत में ही इनका उपयोग किया जाता है।
- **टीकाकरण:** वर्तमान मौसमी फ्लू के टीके H5N1 से **बचाव नहीं** करते हैं।
  - कुछ देशों ने आपातकालीन उपयोग के लिये **H5N1-विशिष्ट टीके** विकसित किये हैं।
- **एवियन इन्फ्लूएंज़ा वायरस के प्रकार:**

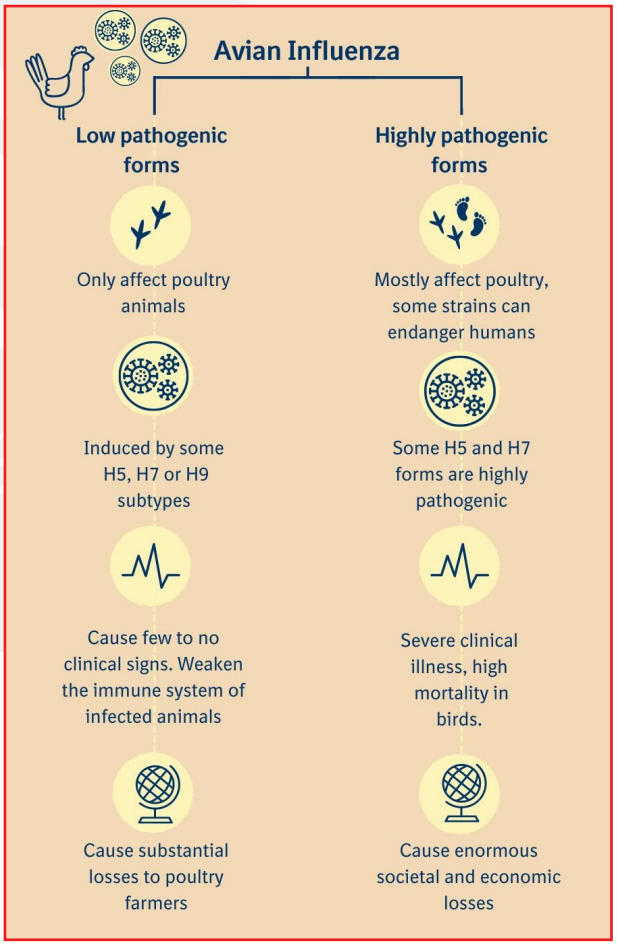

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

इन्फ्लूएंज़ा वायरस के प्रकार क्या हैं?

- ये मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं- DNA वायरस व RNA वायरस।
- वायरस के वर्गीकरण में '**इन्फ्लूएंज़ा वायरस**' RNA प्रकार के वायरस होते हैं तथा ये 'ऑर्थोमिक्सोविरिदे' (Orthomyxoviridae) वर्ग से संबंधित होते हैं। इन्फ्लूएंज़ा वायरस के तीन वर्ग निम्नलिखित हैं:-
  - **इन्फ्लूएंज़ा वायरस A:** यह एक संक्रामक वायरस है। 'जंगली जलीय पशु-पक्षी' इसके प्राकृतिक वाहक होते हैं। मनुष्यों में संचारित होने पर यह काफी घातक सिद्ध हो सकता है।
  - **इन्फ्लूएंज़ा वायरस B:** यह विशेष रूप से मनुष्यों को प्रभावित करता है तथा इन्फ्लूएंज़ा-A से कम सामान्य तथा कम घातक होता है।
  - **इन्फ्लूएंज़ा वायरस C:** यह सामान्यत: मनुष्यों, कुत्तों एवं सूअरों को प्रभावित करता है। यह इन्फ्लूएंज़ा के अन्य प्रकारों से कम घातक होता है तथा आमतौर पर केवल बच्चों में सामान्य रोग का कारण बनता है।

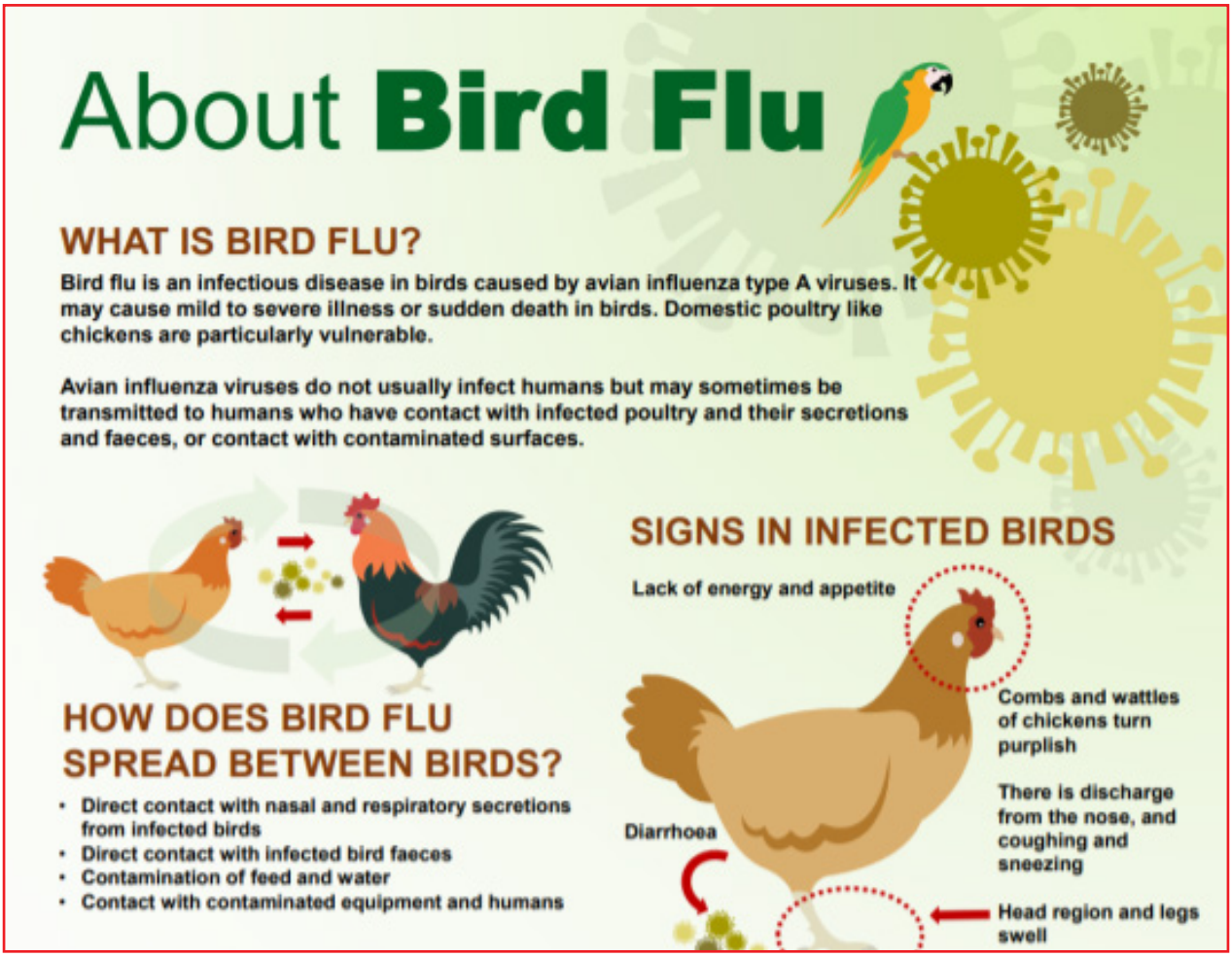

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

FBR के विकल्प के रूप में HALEU ईंधन चक्र

चर्चा में क्यों?

भारत के त्रि-स्तरीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम में **फास्ट ब्रीडर रिएक्टरों (FBR)** की स्थापना में विलंब हो रहा है। इन चुनौतियों के बीच, **भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (BARC)** के पूर्व प्रमुख ने मौजूदा **PHWR** का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिये **HALEU और थोरियम** को ईंधन के रूप में उपयोग करने का सुझाव दिया है।

थोरियम-HALEU ईंधन को भारत के परमाणु कार्यक्रम में कैसे शामिल किया जा सकता है?

- **HALEU के साथ PHWR का उपयोग:** भारत मौजूदा 700 **मेगावाट दबावयुक्त भारी जल रिएक्टरों (PHWR)** में **उच्च परख निम्न संवर्द्धित यूरेनियम (HALEU)** और **थोरियम के मिश्रण** का उपयोग करके अपने परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम को बढ़ा सकता है।
  - **HALEU 5% से 20% U-235** के बीच संवर्द्धित यूरेनियम है। यह दृष्टिकोण भारत को **थोरियम का उपयोग जल्द शुरू करने में सक्षम** बनाता है, जिससे उसका **परमाणु ऊर्जा उत्पादन अधिक धारणीय** हो जाता है।
- **प्रयुक्त ईंधन का पुनर्चक्रण: HALEU-थोरियम का उपयोग करके PHWR से प्रयुक्त ईंधन को पुन:प्रसंस्कृत करके मूल्यवान विखंडनीय पदार्थ** (ऐसा पदार्थ जिसका नाभिक न्यूट्रॉन द्वारा टकराने पर विखंडित हो सकता है) निष्कर्षित किया जा सकता है।
  - इस पुनर्प्रसंस्कृत सामग्री का **उपयोग उन्नत रिएक्टरों** जैसे कि **मोल्टेन साल्ट रिएक्टर (MSR)** में किया जा सकता है, जो **भारत के परमाणु कार्यक्रम के त्रि-स्तरीय चरण** का हिस्सा हैं।
  - यह **परमाणु ईंधन का इष्टतम उपयोग** सुनिश्चित करता है, तथा **अपशिष्ट को न्यूनतम करके तथा ईंधन दक्षता को अधिकतम करके** भारत के परमाणु ऊर्जा क्षेत्र की दीर्घकालिक स्थिरता में योगदान देता है।

भारत का त्रिचरणीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम क्या है?

- **डॉ. होमी भाभा** द्वारा तैयार भारत के तीन-चरणीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम का **उद्देश्य** भारत के **सीमित यूरेनियम और प्रचुर थोरियम भंडार का कुशलतापूर्वक उपयोग** करके **दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा प्राप्त करना** है।
  - यह **परमाणु ऊर्जा** को **संधारणीय और आत्मनिर्भर** तरीके से विकसित करने की एक **चरणबद्ध योजना** है।
- **3 चरण:**

चरण	उद्देश्य	ईंधन/शीतलक/मंदक	नाभिकीय रिएक्टर	वर्तमान स्थिति
प्रथम चरण	इसका उद्देश्य विद्युत् उत्पन्न करना है तथा उपोत्पाद के रूप में **प्लूटोनियम-239 (Pu-239)** का उत्पादन करना है। प्लूटोनियम कार्यक्रम के अगले चरण के लिये महत्त्वपूर्ण है।	ईंधन: यूरेनियम (U-238) मंदक: **भारी जल (ड्यूटेरियम ऑक्साइड)**	दाबित भारी जल रिएक्टर (PHWR)	भारत ने पहले ही अपने परमाणु ऊर्जा बुनियादी ढाँचे की नींव के रूप में **18 PHWR का निर्माण** कर लिया है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

द्वितीय चरण	यह **फास्ट ब्रीडर रिएक्टरों (FBR)** पर केंद्रित है, जो पहले चरण से ही Pu-239 का उपयोग करते हैं और अपनी खपत से अधिक विखंडनीय सामग्री उत्पन्न करते हैं। ये रिएक्टर **समृद्ध यूरेनियम-238** को Pu-239 में परिवर्तित करते हैं, जिससे परमाणु ईंधन चक्र की दक्षता बढ़ती है और एक सतत् ईंधन स्रोत उपलब्ध होता है।	**प्लूटोनियम-239 और यूरेनियम-238** का मिश्रित ऑक्साइड	फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (FBR)	**तमिलनाडु के कलपक्कम** में प्रोटोटाइप FBR इस चरण में एक महत्त्वपूर्ण विकास है।
तृतीय चरण	यह **थोरियम आधारित रिएक्टर** पर केंद्रित है, जो विखंडनीय पदार्थ यूरेनियम-233 का उत्पादन करने के लिये थोरियम-232 का उपयोग करते हैं।	**थोरियम-232** (यूरेनियम-233 में परिवर्तित)	थोरियम आधारित रिएक्टर (थोरियम चक्र)	थोरियम आधारित रिएक्टरों पर अनुसंधान जारी है, तथा इस चरण के एक भाग के रूप में **उन्नत 'हैवी वाटर रिएक्टर' (AHWR)** और **मॉल्टन साल्ट रिएक्टर** का विकास किया जा रहा है।

भारत का परमाणु हथियार कार्यक्रम

- **स्माइलिंग बुद्धा (1974):** राजस्थान के **पोखरण** में भारत का **पहला सफल परमाणु परीक्षण** किया गया, जिससे यह परमाणु क्षमता रखने वाला **छठा देश** (अमेरिका, सोवियत संघ, यूनाइटेड किंगडम, फ्राँस और चीन के बाद) बना।
- **ऑपरेशन शक्ति (1998):** ऑपरेशन शक्ति (पोखरण- II) ऑपरेशन शक्ति के तहत **पाँच परमाणु परीक्षणों** की एक शृंखला थी, जिसमें एक थर्मोन्यूक्लियर बम भी शामिल था।

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना की 10वीं वर्षगाँठ

चर्चा में क्यों?

8 अप्रैल 2025 को, **प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (PMMY)** ने **वर्ष 2015** में लॉन्च होने के बाद से **10 वर्ष** पूर्ण कर लिये। इसकी संपूर्ण भारत में **सूक्ष्म और लघु उद्यमों (MSE)** को **संपार्श्विक-मुक्त वित्तीय सहायता** प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 — SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस — SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स — SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप — SCAN ME

नोट :

PMMY की प्रमुख उपलब्धियाँ क्या हैं?

- **क्रेडिट आउटरीच:** वर्ष 2015 से अब तक **52 करोड़ ऋणों** के माध्यम से **32.61 लाख करोड़ रुपए** से अधिक का **वितरण** किया जा चुका है, जिनमें **100 मिलियन से अधिक पहली बार ऋण लेने वाले** लोग शामिल हैं।
  - **MSME ऋण 8.5 लाख करोड़ रुपए (वित्त वर्ष 2014)** से बढ़कर **27.25 लाख करोड़ रुपए (वित्त वर्ष 2024)** हो गया, **बैंक ऋण** में इसकी हिस्सेदारी **15.8% से बढ़कर लगभग 20%** हो गई।
  - **समावेशी वित्तीय पहुँच:** PMMY लाभार्थियों में **68%** महिलाएँ हैं। वित्त वर्ष 2016 से वित्त वर्ष 2025 तक प्रति महिला ऋण वितरण में 13% की **CAGR** और जमा में 14% की दर से वृद्धि हुई।
  - SBI के अनुसार, PMMY खातों में से **आधे खाते SC, ST और OBC** उद्यमियों के पास हैं, तथा 11% अल्पसंख्यकों के पास हैं।
- **महामारी सहायता:** **आत्मनिर्भर भारत** के तहत **शिशु ऋण** पर **2 % ब्याज-अनुदान** ने **कोविड-19** के दौरान **चूक को रोकने** और आजीविका की रक्षा करने में मदद मिली।
- **ऋण मांग:** अधिक उधारकर्ता **अल्प शिशु ऋण (92% से घटकर 63% रह गया)** से उच्च किशोर (5.9% से बढ़कर 44.7% हो गया) और तरुण श्रेणियों की ओर अग्रसर हो रहे हैं।
- **क्षेत्रीय पहुँच:** तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और कर्नाटक कुल PMMY वितरण में अग्रणी हैं, जबकि त्रिपुरा, ओडिशा और तमिलनाडु प्रति व्यक्ति ऋण में शीर्ष पर हैं।
  - **जम्मू-कश्मीर** ऋण वितरण में केंद्र शासित प्रदेशों में शीर्ष पर है, जबकि **बिहार और पश्चिम बंगाल** में अप्रयुक्त क्षमता परिलक्षित होती है।

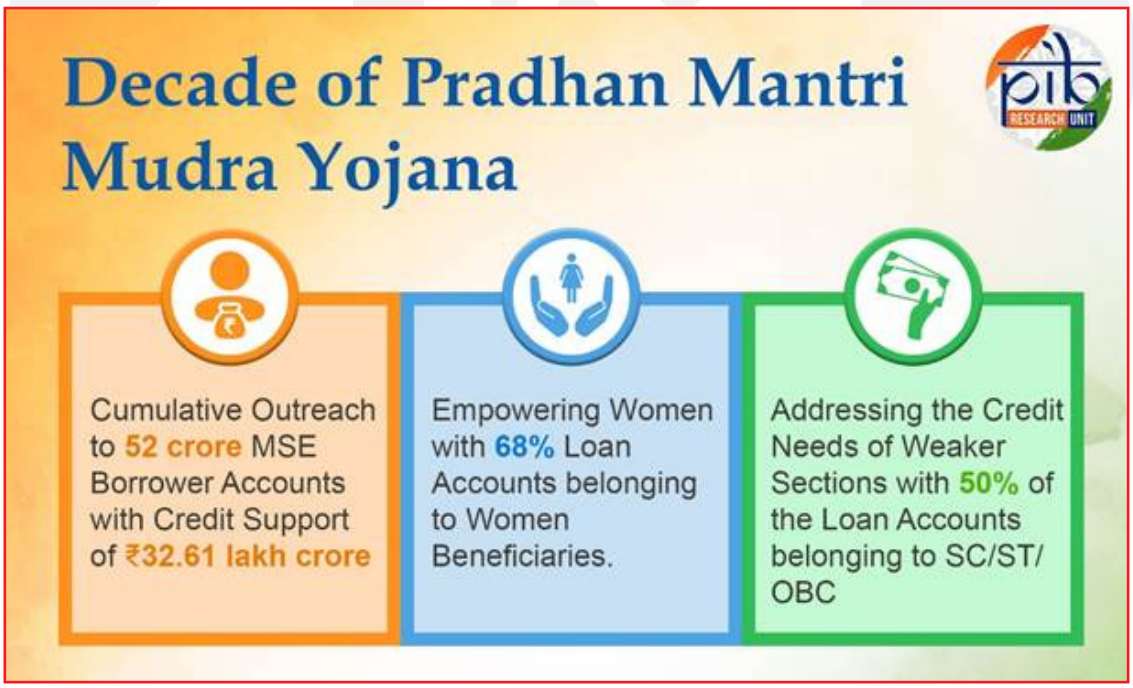

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (PMMY) क्या है?

- **परिचय: माइक्रो यूनिट्स डेवलपमेंट एंड रिफाइनेंस एजेंसी (MUDRA)** भारत सरकार की एक **प्रमुख योजना** है, जिसे **सदस्य ऋण संस्थानों (MLI)** के माध्यम से **संवहनीय, संपार्श्विक-मुक्त संस्थागत ऋण** प्रदान करने के लिये **वर्ष 2015** में लॉन्च किया गया था।
- **प्रमुख विशेषताएँ:**
  - **प्रकार:** केंद्रीय क्षेत्रक योजना
  - **वित्तपोषण प्रावधान:** इसके अंतर्गत **सदस्य ऋण संस्थाओं (एमएलआई)** जैसे **अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक**, RRB, NBFC और MFI के माध्यम से ऋण प्रदान किये जाते हैं।
  - **पुनर्वित्त:** यह **MUDRA लिमिटेड** (माइक्रो यूनिट्स डेवलपमेंट एंड रिफाइनेंस एजेंसी) द्वारा प्रबंधित है, जो MLI को पुनर्वित्त प्रदान करता है, लेकिन उधारकर्त्ताओं को **प्रत्यक्ष ऋण** नहीं देता है।
  - **ऋण गारंटी: वर्ष 2015** में स्थापित **माइक्रो यूनिट्स के लिये ऋण गारंटी फंड (CGFMU)** के माध्यम से प्रदान की जाती है।
- **अन्य लाभ:**
  - कोई प्रसंस्करण शुल्क नहीं, **कोई संपार्श्विक नहीं**, ऋण का सुलभ अभिगम और **लचीली पुनर्भुगतान** शर्तें।
  - **MUDRA कार्ड, कार्यशील पूंजी** की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये ऋण खाते पर जारी किया गया **डेबिट कार्ड** है।
- **ऋण श्रेणियाँ:**

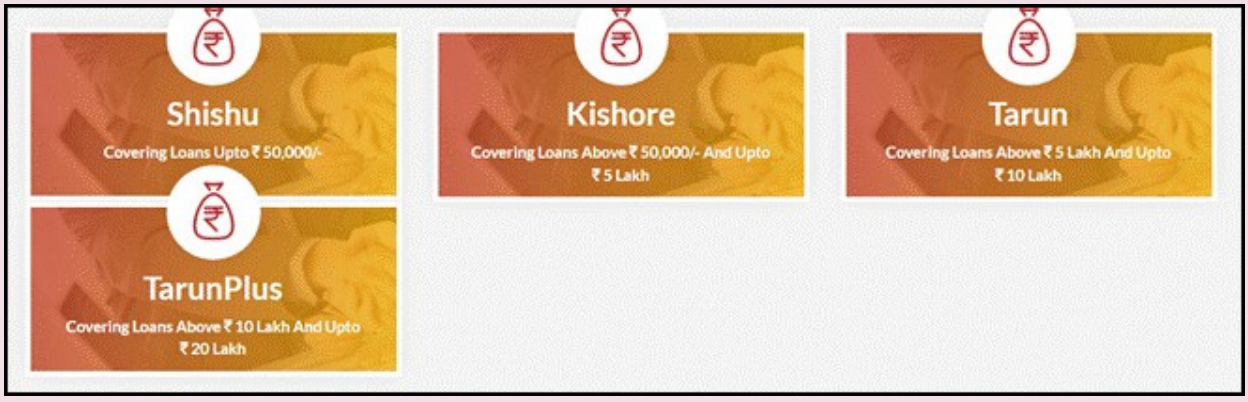

जीनोमइंडिया

चर्चा में क्यों?

नेचर जेनेटिक्स *द्वारा* जीनोमइंडिया परियोजना के निष्कर्षों को प्रकाशित किया गया जिसमें भारत भर के प्रमुख जातीय समूहों को कवर करते हुए 85 अलग-अलग जनसंख्या समूहों (32 आदिवासी और 53 गैर-आदिवासी) के लगभग 10,000 लोगों के **संपूर्ण जीनोम** को अनुक्रमित किया गया।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- इस अध्ययन में 180 मिलियन आनुवंशिक वेरिएंट की पहचान की गई है, जिनमें से 130 मिलियन **ऑटोसोम्स (गैर-लैंगिक गुणसूत्र)** तथा 50 मिलियन **लैंगिक गुणसूत्र (X and Y)** से संबंधित थे।
  - कुछ विभिन्न रोगों से संबंधित हैं, कुछ दुर्लभ हैं तथा कुछ भारत या विशिष्ट समुदायों तक ही सीमित हैं।

जीनोमइंडिया परियोजना क्या है?

- **जीनोम इंडिया परियोजना:** **जैव प्रौद्योगिकी विभाग (DBT)** द्वारा वर्ष 2020 में शुरू की गई जीनोम इंडिया परियोजना का उद्देश्य भारतीय आबादी की आनुवंशिक विविधता का मानचित्रण करना है।
  - **भारतीय विज्ञान संस्थान के मस्तिष्क अनुसंधान केंद्र, कोशिकीय एवं आणविक जीव विज्ञान केंद्र तथा राष्ट्रीय जैव चिकित्सा जीनोमिक्स संस्थान** सहित 20 से अधिक अग्रणी संस्थानों ने परियोजना के प्रथम चरण में 10,000 जीनोमों को अनुक्रमित करने के लिये सहयोग किया है।
  - इसका **मुख्य उद्देश्य एक व्यापक भारतीय संदर्भ वाले जीनोम** का निर्माण करना है।
- **IBDC:** जीनोम डेटा **भारतीय जैविक डेटा केंद्र (IBDC) में संग्रहीत** किया जाना शामिल है जो **भारत का पहला राष्ट्रीय जीवन विज्ञान डेटा भंडार** है, जिसे जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्रीय केंद्र (RCB), फरीदाबाद में DBT के समर्थन तथा **राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (NIC)** के सहयोग से स्थापित किया गया है।
- **महत्व:** यह पहल **वैश्विक डेटाबेस में भारतीय जीनोम के कम प्रतिनिधित्व की समस्या को दूर करती है,** जिससे अंतर्राष्ट्रीय जीनोमिक्स अनुसंधान में भारत की स्थिति में सुधार होगा।

जीनोम अनुक्रमण से संबंधित अन्य प्रमुख पहलें क्या हैं?

- **IndiGen कार्यक्रम:** इसे **वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR)** द्वारा वर्ष 2019 में शुरू किया गया, जिसके तहत 1029 भारतीयों के संपूर्ण जीनोम को सफलतापूर्वक अनुक्रमित किया गया तथा **55.9 मिलियन एकल न्यूक्लियोटाइड वेरिएंट** की पहचान की गई, जिनमें से 18 मिलियन (₹ 32%) भारतीय जीनोम के लिये अद्वितीय थे।
  - **वन डे वन जीनोम पहल:** DBT द्वारा वर्ष 2024 में शुरू की गई इस पहल का उद्देश्य भारत की सूक्ष्मजीव विविधता को प्रदर्शित करने के लिये प्रतिदिन एक जीवाणु जीनोम को अनुक्रमित करना तथा सार्वजनिक रूप से जारी करना है।
- **जीनोमिक्स एवं स्वास्थ्य के लिये वैश्विक गठबंधन (GA4GH): वर्ष 2013** में स्थापित GA4GH एक गैर-लाभकारी अंतर्राष्ट्रीय गठबंधन है जो मानवाधिकार ढाँचे के तहत जीनोमिक डेटा के उपयोग को बढ़ावा देने हेतु मानक निर्धारित करता है।
- **मानव जीनोम परियोजना:** इसका समन्वयन अमेरिका द्वारा किया गया तथा यह वर्ष 1990 से 2003 तक संचालित रही, जिसके तहत शोधकर्त्ताओं को मानव जीव की आनुवंशिक संरचना के बारे में मौलिक जानकारी उपलब्ध कराई गई।

जीनोम अनुक्रमण क्या है?

- **जीनोम:** यह किसी जीव में उपस्थित आनुवंशिक सामग्री (अधिकांश जीवों में डीऑक्सीराइबोन्यूक्लिक एसिड (DNA); कुछ वायरस में राइबोन्यूक्लिक एसिड) के संपूर्ण समूह को संदर्भित करता है।
  - इसमें जीव के विकास, कार्यप्रणाली और अस्तित्व के लिये आवश्यक सभी जैविक निर्देश सम्मिलित होते हैं।
- **जीनोम अनुक्रमण:** यह किसी जीव के जीनोम में **न्यूक्लियोटाइड बेस (एडेनिन (A), साइटोसिन (C), गुआनिन (G), थाइमिन (T) और यूरैसिल (U)** के पूर्ण अनुक्रम को निर्धारित करने की प्रक्रिया है।
  - इसमें संपूर्ण जीनोम, आंशिक जीनोम या लक्षित जीन अनुक्रमण शामिल हो सकता है
- **संपूर्ण जीनोम अनुक्रमण (WGS):** इसका उपयोग एक ही समय में किसी जीव के जीनोम के संपूर्ण DNA अनुक्रम को निर्धारित करने के लिये किया जाता है जिससे संपूर्ण जीनोम में सभी न्यूक्लियोटाइड बेसों के सटीक क्रम की पहचान होती है।
  - यह किसी जीव का सबसे व्यापक आनुवंशिक आधार उपलब्ध कराता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

ओटावा लैंडमाइन कन्वेंशन

NATO सदस्य: पोलैंड, फिनलैंड और तीन **बाल्टिक राष्ट्र (एस्टोनिया, लातविया, लिथुआनिया)** वर्तमान में जारी **रूस-यूक्रेन युद्ध** के बीच **रूस से बढ़ते सुरक्षा खतरों** का हवाला देते हुए **वर्ष 1997** के **ओटावा कन्वेंशन** से अलग हो रहे हैं।

- उनके अनुसार **युद्ध विराम** से **रूस** के **पुन: हथियारबंद** होने की संभावना है जिससे **उनकी सुरक्षा को खतरा होगा।**

ओटावा कन्वेंशन 1997 क्या है?

- **परिचय:**
  - यह एक अंतर्राष्ट्रीय समझौता है जिसके अंतर्गत **नररोधी (एंटी-पर्सनल) लैंड माइन** के **उपयोग, उत्पादन, भंडारण और हस्तांतरण** को **प्रतिबंधित किया गया है।**

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

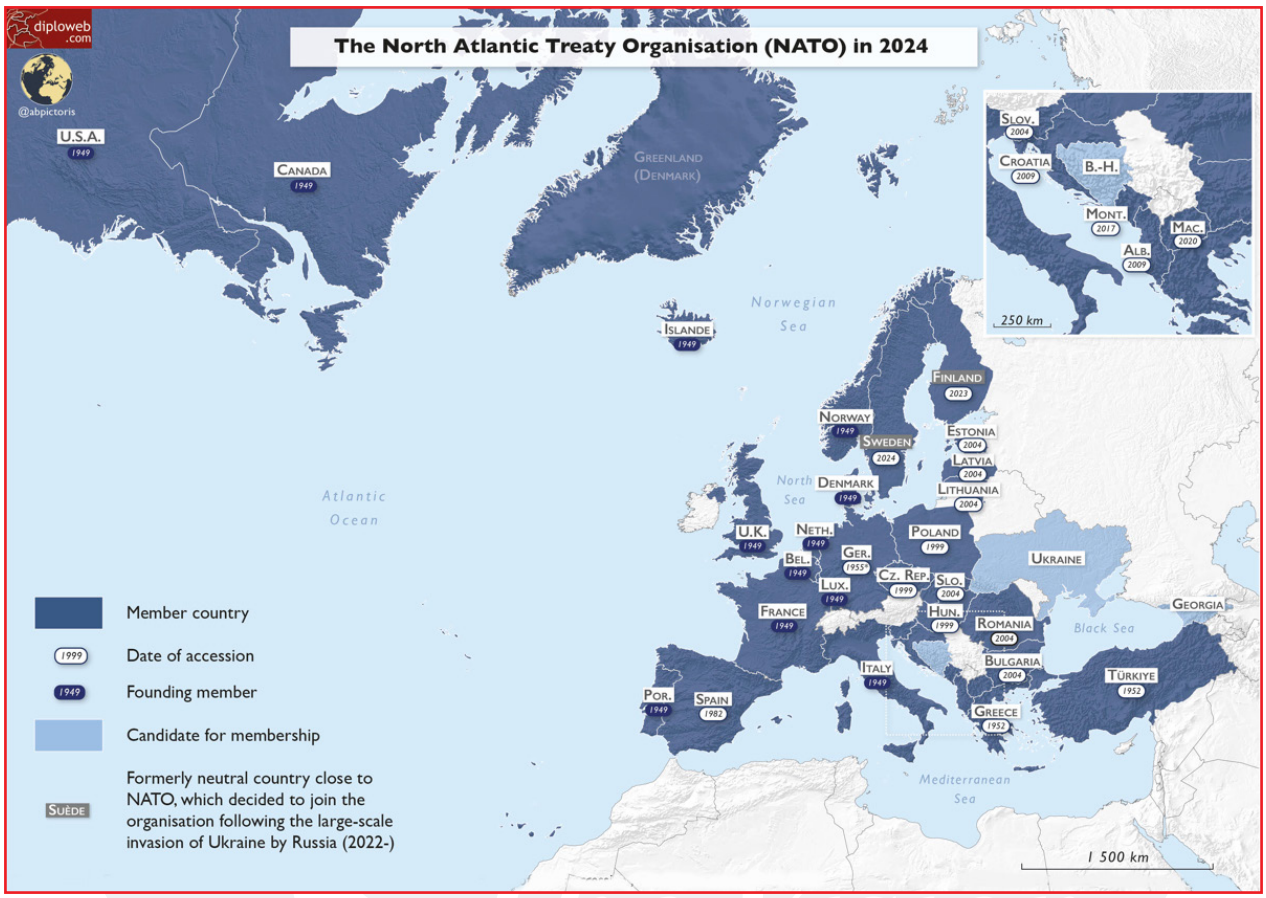

- लैंड माइन छुपे हुए विस्फोटक यंत्र होते हैं जो मानव की निकटता अथवा दाब से सक्रिय हो जाते हैं।
- **एंटी-पर्सनल माइंस** को विशेष रूप से सैनिकों सहित व्यक्तियों को क्षति अथवा चोट पहुँचाने के लिये डिज़ाइन किया गया है।

यह हस्ताक्षरकर्त्ताओं को **4 वर्षों के भीतर इस प्रकार के भंडारों को नष्ट करने, लैंड माइन वाले क्षेत्रों को साफ करने** और **पीड़ितों की सहायता** करने के लिये बाध्य करता है।

- **उद्देश्य:** इसका उद्देश्य **लैंडमाइंस** से होने वाले **नागरिक नुकसान** को कम करना है, जो संघर्ष समाप्त होने के बाद भी लंबे समय तक घातक बनी रहती हैं।
- **अंगीकरण:** 18 सितंबर 1997 को **ओस्लो में राजनयिक सम्मेलन** में इसे अंतिम रूप दिया गया तथा **1 मार्च 1999** को यह लागू हुआ।
- **क्षेत्र:** एंटी-पर्सनल लैंडमाइंस पर प्रतिबंध लगाता है, लेकिन **एंटी-व्हीकल माइंस** (वाहनों को नुकसान पहुँचाने या नष्ट करने के लिये बनाई गई) पर लागू नहीं होता है।
- **सदस्यता:** 164 राज्य देश।

अमेरिका, रूस और भारत जैसी प्रमुख शक्तियाँ इसके **पक्षकार नहीं** हैं।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

क्लस्टर युद्ध सामग्री पर 2008 अभिसमय

- यह अभिसमय क्लस्टर युद्ध सामग्री के सभी उपयोग, उत्पादन, हस्तांतरण और भंडारण पर प्रतिबंध लगाता है।
  - **क्लस्टर हथियार** ऐसे हथियार हैं जो **एक बड़े क्षेत्र में कई छोटे विस्फोटक (Bomblets) छोड़ते हैं,** इससे प्राय: **नागरिकों को नुकसान** पहुँचता है तथा **स्थायी मानवीय जोखिम** उत्पन्न होता है।
- इसमें 112 पक्षकार और 12 हस्ताक्षरकर्त्ता हैं। हाल ही में, लिथुआनिया ने **क्लस्टर युद्ध सामग्री पर वर्ष 2008 के अभिसमय** से खुद को अलग कर लिया है, जो **ऐसे हथियारों पर प्रतिबंध लगाता है जो छोटे बमों का प्रयोग विस्तृत क्षेत्रों** में करते हैं।
  - इस अभिसमय पर **भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, यूक्रेन, पाकिस्तान और इज़रायल** सहित कई देशों ने हस्ताक्षर नहीं किये हैं।

थार रेगिस्तान

एक नए अध्ययन के अनुसार, **भारत में थार रेगिस्तान** में पिछले दो दशकों में महत्त्वपूर्ण **मानसूनी वर्षा** और कृषि विस्तार के कारण **हरियाली (Greening) में 38% की वार्षिक वृद्धि** हुई है।

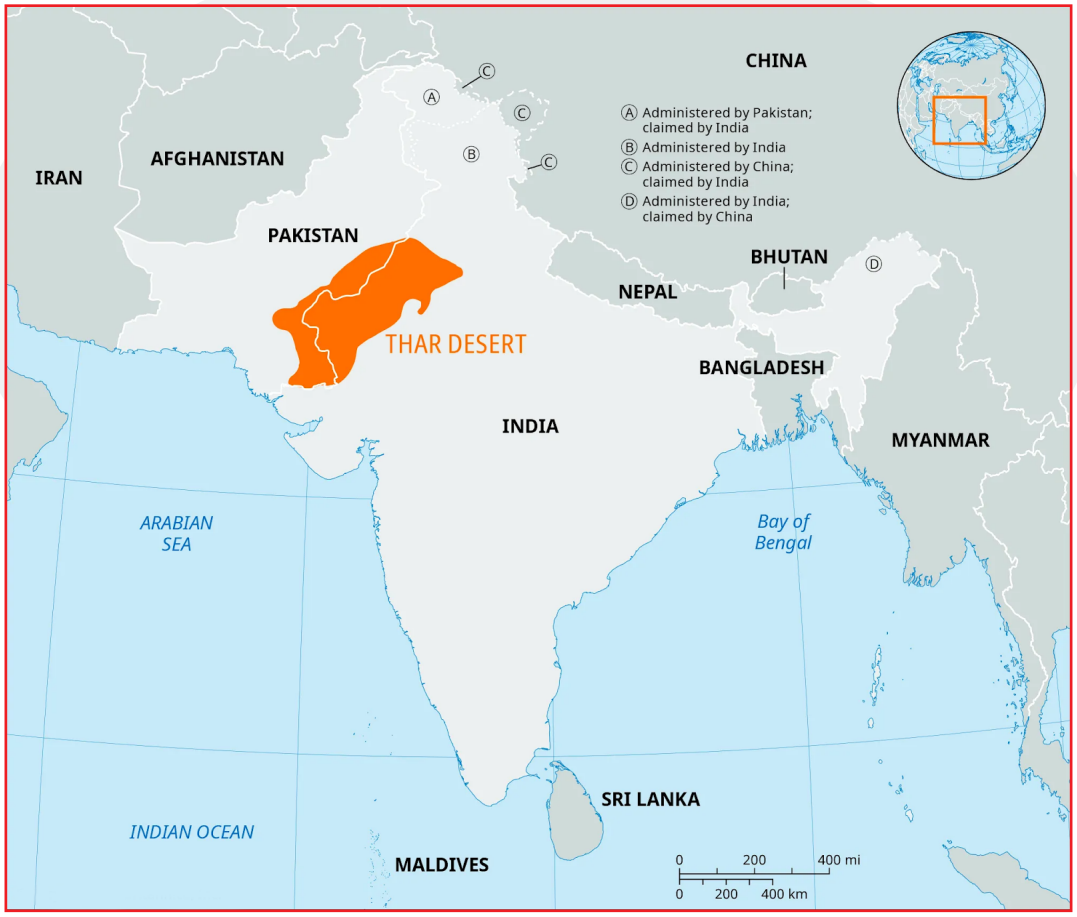

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- **थार रेगिस्तान (द ग्रेट इंडियन डेजर्ट) की अवस्थिति:** यह भारतीय उपमहाद्वीप पर रेत की पहाड़ियों (Sand Hills) का एक शुष्क क्षेत्र है। यह **उत्तर-पश्चिमी भारत** (राजस्थान, गुजरात, पंजाब और हरियाणा) और **दक्षिण-पूर्वी पाकिस्तान** (सिंध और पंजाब प्रांत) में 200,000 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है।
- **भूगोल और जलवायु:** इसकी सीमा पश्चिम में **सिंधु नदी** के मैदान, उत्तर और उत्तर-पूर्व में पंजाब के मैदान, दक्षिण-पूर्व में **अरावली पर्वतमाला** और दक्षिण में **कच्छ के रण** से लगती है।
  - इस रेगिस्तान में **उपोष्णकटिबंधीय रेगिस्तानी जलवायु** पाई जाती है, जिसमें लगातार उच्च दबाव और अवतलन की स्थिति बनी रहती है।
- **मृदा संरचना:** रेगिस्तान की मृदा में रेगिस्तानी, लाल रेगिस्तानी, सिरोज़ेम, **लाल और पीली**, लवणीय, लिथोसोल और रेगोसोल शामिल हैं।
  - ये मृदा **मोटे बनावट वाली, अच्छी जल निकासी वाली, तथा कैल्शियम युक्त** होती है, जो विशिष्ट वनस्पति और कृषि के लिये सहायक होती है।
- **जैवविविधता:** यह अपेक्षाकृत समृद्ध जैवविविधता को बढ़ावा देता है, जिसमें **ब्लू बुल (नीलगाय), ब्लैकबक, ग्रेट इंडियन बस्टर्ड (GIB)** और **इंडियन गज़ेला (चिंकारा)** शामिल हैं।
- **भारत के सबसे बड़े राष्ट्रीय उद्यानों** में से एक, **डेजर्ट नेशनल पार्क (राजस्थान)** यहीं स्थित है।
- **खनिज संसाधन:** यह रेगिस्तान में **विश्व के सबसे बड़े लिग्नाइट कोयला भंडारों** में से एक है।
- यह **जिप्सम** और नमक (लवणीय झीलों- **सांभर** और **कुचामन** के साथ) से समृद्ध है।

जापान ने बनाया 3D प्रिंटेड ट्रेन स्टेशन

जापान ने विश्व का पहला **3D प्रिंटेड रेलवे स्टेशन (हात्सुशिमा स्टेशन)** का निर्माण किया है, जिसे **एडिटिव मैन्यूफैक्चरिंग (3D प्रिंटिंग)** तकनीक का उपयोग कर मात्र **6 घंटों** में पूरा किया गया।

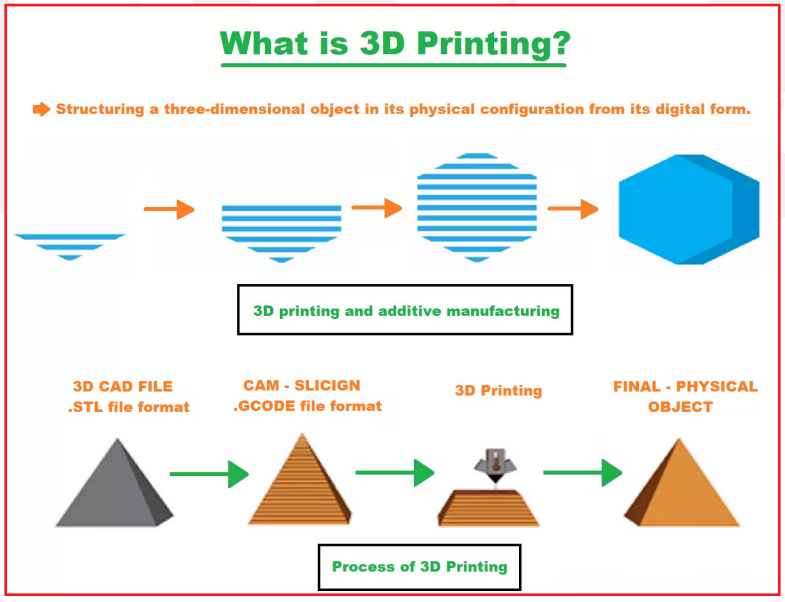

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- स्टेशन के **3D प्रिंटेड हिस्से, जो कंक्रीट से निर्मित विशेष मोर्टार** से बनाए गए थे, को **अलग-अलग ट्रकों द्वारा निर्माण स्थल पर लाया गया,** जिससे श्रम की आवश्यकता और साइट पर निर्माण करने में लगने वाले समय की बचत हुई, जिसे फिर कम समय में असेंबल किया गया।

3D प्रिंटिंग तकनीक क्या है?

- **परिचय: 3D प्रिंटिंग या एडिटिव मैन्यूफैक्चरिंग (AM),** एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें डिजिटल डिज़ाइन के आधार पर **सामग्री को परत दर परत जोड़कर** 3-आयामी वस्तुओं का निर्माण किया जाता है।
  - यह **पारंपरिक (व्यवकलक) विनिर्माण** के विपरीत है, जिसमें कर्तन अथवा ड्रिलिंग के माध्यम से ठोस ब्लॉक से सामग्री अलग करना शामिल है।
- **कार्य प्रणाली:**
  - **डिज़ाइन और रूपांतरण: कंप्यूटर एडेड डिज़ाइन (CAD) सॉफ्टवेयर** या **3D स्कैनिंग का उपयोग करके** एक **डिजिटल 3D मॉडल** विकसित किया जाता है। फिर इस मॉडल को **तनु परतों में स्लाइस किया जाता है** और यंत्र-पठनीय (Machine-Readable) G-कोड निर्देशों में परिवर्तित किया जाता है।
  - **प्रिंटिंग और पोस्ट-प्रोसेसिंग:** 3D प्रिंटर द्वारा डिज़ाइन के अनुसार ऑब्जेक्ट बनाने के लिये सामग्री (प्लास्टिक, धातु, आदि) को **परत दर परत जमा किया जाता है**। प्रिंटिंग के बाद, **ऑब्जेक्ट को साफ किया जाता है, संसाधित किया जाता है, असेंबल किया जाता है और सटीकता** और निष्पादन के लिये परीक्षण किया जाता है।
- **प्रयुक्त सामग्री :** इसमें **थर्मोप्लास्टिक, धातु और मिश्र धातु, सिरेमिक** और चिकित्सा अनुप्रयोगों के लिये बायोइंक जैसी **जैव सामग्रियों** सहित विभिन्न प्रकार की सामग्रियों का उपयोग किया जाता है।
- **3D प्रिंटिंग की सामान्य विधियाँ:** सामान्य 3D मुद्रण विधियों में **मैटेरियल जेटिंग, डायरेक्टेड एनर्जी डिपोजिशन (DED)** और **शीट लेमिनेशन** शामिल हैं, जो जटिल वस्तुओं को सटीकता के साथ परत-दर-परत निर्मित करते हैं।
- **प्रमुख अनुप्रयोग:**

क्षेत्र	अनुप्रयोग
एयरोस्पेस एवं रक्षा	लैंडिंग गियर, थ्रस्ट रिवर्सर डोर, निगरानी ड्रोन
ऑटोमोटिव	इंजन के पुर्ज़े, गियरबॉक्स, एयर इनलेट्स
इलेक्ट्रॉनिक्स	RFID उपकरण, वेयरेबल तकनीक, सॉफ्ट रोबोटिक्स
स्वास्थ्य देखभाल	शल्य चिकित्सा मॉडल, प्रत्यारोपण, अनुकूलित उपकरण
उपभोक्ता वस्तुएँ	आभूषण, खिलौने, फर्नीचर, परिधान, यहाँ तक कि खाद्य उत्पाद भी

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

4D प्रिंटिंग तकनीक क्या है?

- **परिचय:** 4D प्रिंटिंग **3D प्रिंटिंग का एक परिष्कृत रूप** है जहाँ **स्मार्ट/इंटेलीजेंट मटेरियल (जैसे हाइड्रोजेल, एक्टिव पॉलिमर)** का उपयोग करके बनाई गई वस्तुएँ गर्मी, प्रकाश, नमी या दबाव जैसी बाह्य उद्दीपनों के जवाब में **समय के साथ आकार, संरचना या गुण परिवर्तित** कर सकती हैं।
  - स्थिर 3D प्रिंट के विपरीत, **4D-मुद्रित वस्तुएँ स्वचालित रूप लचीली होती हैं, स्वयं संयोजित हो सकती हैं,** मरम्मत कर सकती हैं या रूपांतरित हो सकती हैं, जिससे इलेक्ट्रॉनिक्स या मानवीय हस्तक्षेप की आवश्यकता के बिना **गतिशील और प्रतिक्रियाशील संरचनाएँ** संभव हो जाती हैं।
- **प्रमुख अनुप्रयोग:**
  - **चिकित्सा:** अनुकूली प्रत्यारोपण जैसे **घुलनशील स्टेंट (Dissolvable Stents) और स्मार्ट डिवाइस** जो **शरीर के विकास या तापमान** के अनुकूल हो जाते हैं, जिनका उपयोग **जीवन रक्षक सर्जरी** और **लक्षित दवा वितरण** में किया जाता है।
  - **वस्त्र एवं जूते:** यह पर्यावरण की स्थितियों के अनुरूप **पहनने योग्य वस्तुओं** को सक्षम बनाता है, **सैन्य वर्दी और स्पोर्ट्सवियर वेंटिलेशन**, रंग को समायोजित कर सकते हैं या गतिशील रूप से उपयुक्त हो सकते हैं।
  - **एयरोस्पेस और ऑटोमोटिव:** अंतरिक्ष यात्री सूट के लिये नासा के 4D-प्रिंटेड स्मार्ट वस्त्र और प्रभाव-प्रतिरोधी एयरबैग (Impact-Resistant Airbags) और विमान इंजन को शीतल करने के लिये इंटेलीजेंट मटेरियल।

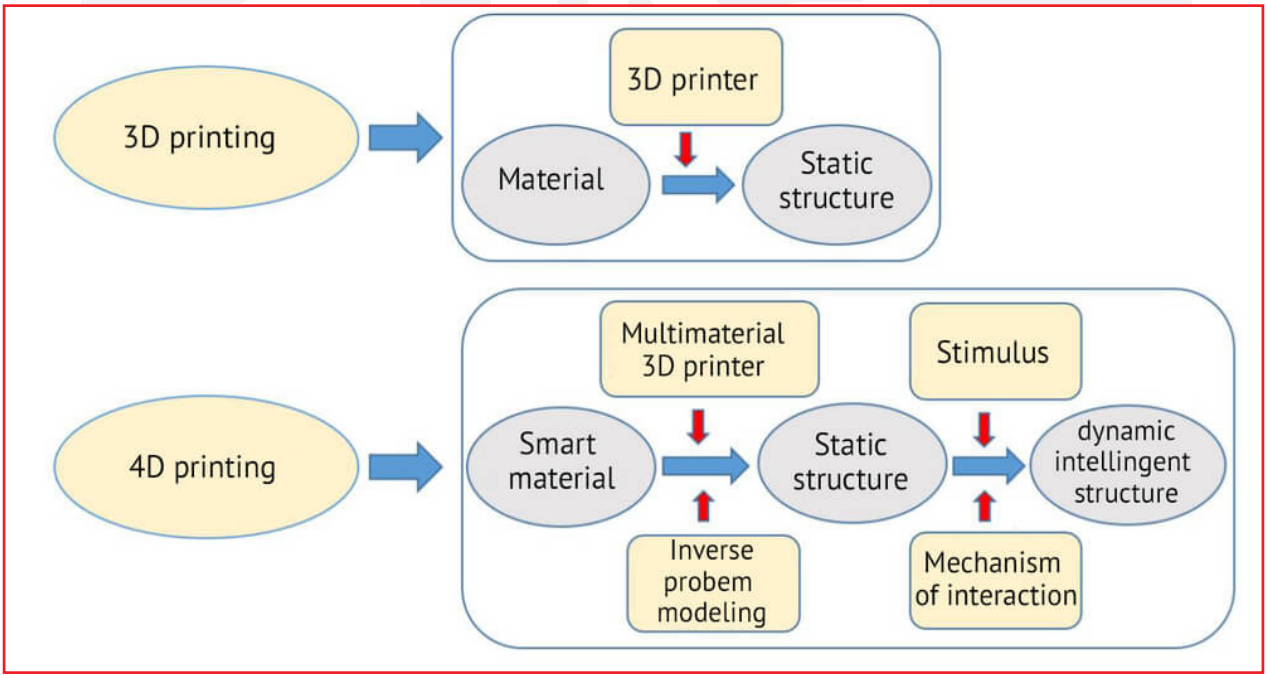

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

ऋण मैट्रिक्स

चर्चा में क्यों?

भारत का घरेलू ऋण जून-2021 से जून 2024 के बीच सकल घरेलू उत्पाद के **36.6% से बढ़कर 42.9%** हो गया, जो एक व्यापक आर्थिक बदलाव का संकेतक है और इससे ऋण-से-जीडीपी अनुपात, लोक बनाम निजी ऋण तथा आंतरिक बनाम बाहरी ऋण जैसे प्रमुख ऋण मैट्रिक्स के परीक्षण की आवश्यकता पर प्रकाश पड़ा है।

प्रमुख ऋण मीट्रिक्स क्या हैं?

- **ऋण से जीडीपी अनुपात:**
  - यह **किसी देश के कुल ऋण** और उसके **सकल घरेलू उत्पाद (GDP)** का अनुपात है ।
  - यह **देश की ऋण चुकाने की क्षमता** को दर्शाता है। इसका **उच्च अनुपात,** राजकोषीय स्थिरता के लिये संभावित जोखिम का संकेतक है जबकि मध्यम अनुपात प्रबंधनीय है यदि आर्थिक विकास की स्थिति मज़बूत है।
  - **भारत का संदर्भ:** केंद्र सरकार का ऋण-जीडीपी अनुपात **वर्ष 2024-25 में 57.1%** और वर्ष **2025-26 में 56.1%** होने का अनुमान है।
    - **सरकार का लक्ष्य वर्ष 2030-31** तक इसे 50 ± 1% तक लाना है।
    - **कुल लोक ऋण में राज्य सरकारों** की हिस्सेदारी लगभग एक-तिहाई है और **वर्ष 2014-15 और 2019-20** के बीच **समग्र लोक ऋण में वृद्धि में उनका योगदान 50%** से अधिक था।
- **लोक ऋण:**
  - **परिचय: लोक ऋण** से तात्पर्य **सरकार द्वारा** अपनी विकासात्मक तथा राजकोषीय आवश्यकताओं के वित्तपोषण हेतु लिये जाने वाले ऋण से है।
  - इसका भुगतान **भारत की संचित निधि** से किया जाता है और इसमें **आंतरिक तथा बाह्य दोनों प्रकार के ऋण** शामिल होते हैं।
  - **संवैधानिक आधार: संविधान के अनुच्छेद 292** के अनुसार, संघ सरकार लोक ऋण को **भारत की संचित निधि से देय अनुबंधित देनदारियों** के रूप में परिभाषित करती है, जिसे संसद द्वारा विधि बनाकर निर्धारित किया जा सकता है
  - **वर्गीकरण:**
    - **भारत की संचित निधि के अंतर्गत ऋण** (इसमें सरकारी प्रतिभूतियाँ और ट्रेज़री-बिल जैसे बाज़ार ऋण शामिल हैं)।
    - **लोक खाता देयताएँ** (जैसे भविष्य निधि, लघु बचत, आदि)।
- **आंतरिक बनाम बाह्य ऋण:**
- **आंतरिक ऋण से तात्पर्य देश** के अंदर से लिये गए लोक ऋणों (मुख्य रूप से घरेलू स्रोतों जैसे व्यक्तियों, बैंकों और वित्तीय संस्थानों) से है। इसे भारतीय रुपए में दर्शाया जाता है।
  - यह **केंद्र के सार्वजनिक ऋण** का **93% से अधिक हिस्सा** है और इसे **विपणन योग्य** (सरकारी प्रतिभूतियाँ,ट्रेज़री-बिल) और **गैर-विपणन योग्य** (विशेष प्रतिभूतियाँ, आदि) में विभाजित किया गया है।.
- **बाह्य ऋण से तात्पर्य अन्य देशों की सरकारों, अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं** या **विदेशी निवेशकों** के प्रति देश के ऋण दायित्वों से है, जो आमतौर पर विदेशी मुद्राओं में अंकित होते हैं।
  - इसमें विदेशी स्रोतों तथा बहुपक्षीय संस्थाओं से प्राप्त ऋण भी शामिल हैं।
  - सितंबर 2024 के अनुसार सकल घरेलू उत्पाद के मुकाबले **बाह्य ऋण का अनुपात 19.4%** था।

भारत में ऋण प्रबंधन से संबंधित प्रमुख प्रावधान:

- **अनुच्छेद 292 और 293:**
  - **अनुच्छेद 292:** केंद्र सरकार को संसद द्वारा निर्धारित सीमा के अंदर **भारत की संचित निधि** की प्रतिभूति पर **धन उधार लेने** की अनुमति है।
  - **अनुच्छेद 293:** राज्य सरकारों को केंद्र की पूर्व स्वीकृति से राज्य की संचित निधि की प्रतिभूति पर **घरेलू स्तर पर धन उधार लेने** का अधिकार है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- **RBI अधिनियम, 1934:** **आरबीआई अधिनियम, 1934** के तहत **भारतीय रिज़र्व बैंक** को केंद्र सरकार की ओर से **लोक ऋण का प्रबंधन करने** के लिये अधिकृत किया गया है।
- **FRBM अधिनियम, 2003:** **FRBM अधिनियम, 2003** का उद्देश्य राजकोषीय अनुशासन को संस्थागत बनाना, राजकोषीय घाटे को कम करना तथा घाटे के लिये लक्ष्य निर्धारित करके, पारदर्शिता बढ़ाकर एवं समय पर राजकोषीय रिपोर्टिंग सुनिश्चित करके **दीर्घकालिक समष्टि आर्थिक स्थिरता** सुनिश्चित करना है।

कारक	लोक ऋण पर प्रभाव	व्याख्या
राजकोषीय घाटे में वृद्धि	**वृद्धि**	उच्च राजकोषीय घाटे के कारण राजस्व एवं व्यय के बीच के अंतर को पूरा करने के लिये उधार लेने की आवश्यकता होती है।
राजस्व में वृद्धि (कर)	**कमी**	उच्च राजस्व से उधार लेने के साथ लोक ऋण की आवश्यकता कम हो जाती है।
व्यय में वृद्धि (जैसे, कल्याणकारी योजनाएँ)	**वृद्धि**	सरकारी व्यय में वृद्धि से घाटे के वित्तपोषण के लिये अधिक उधार लेना पड़ता है।
ब्याज दर में वृद्धि	**वृद्धि**	उच्च ब्याज दरों के कारण ऋण चुकाने की लागत में वृद्धि हो जाती है, जिसके परिणामस्वरूप अधिक उधार लेने से इसकी मात्रा में वृद्धि होती है।
निजीकरण/परिसंपत्ति बिक्री	**कमी**	परिसंपत्तियों की बिक्री से प्राप्त आय से राजकोषीय घाटा कम हो सकता है और इस प्रकार उधार लेने की आवश्यकता कम हो सकती है।
विदेशी उधार	**वृद्धि**	विदेशी स्रोतों से उधार लेने से बाह्य ऋण में वृद्धि होती है।
मुद्रा अवमूल्यन	**वृद्धि**	अवमूल्यन से विदेशी ऋण के भुगतान की लागत में वृद्धि होने से कुल ऋण में वृद्धि हो जाती है।

भारत द्वारा बांग्लादेश के लिये पारगमन सुविधा का समापन

चर्चा में क्यों?

भारत ने **वर्ष 2020 की पारगमन सुविधा** को समाप्त कर दिया, जिसके तहत **बांग्लादेशी निर्यात** को अपने बंदरगाहों तथा हवाई अड्डों से गुजरने की अनुमति दी गई। यह निर्णय **चीन में बांग्लादेश की टिप्पणियों** के बाद आया, जिसमें **उसने पूर्वोत्तर भारत को 'भूमि से घिरा हुआ'** बताया और **खुद को इस क्षेत्र के लिये 'महासागर का संरक्षक'** बताया, साथ ही **पूर्वोत्तर भारत** में चीन के प्रभाव के क्रम में स्वयं को एक रणनीतिक प्रवेश द्वार बताया।

नोट: भारत द्वारा वर्ष 2020 में बांग्लादेश के लिये शुरू की गई पारगमन सुविधा द्वारा बांग्लादेशी निर्यातकों को **भूटान, नेपाल और म्यांमार** जैसे देशों में वस्तु परिवहन के क्रम में भारतीय **भूमि सीमा शुल्क स्टेशनों (LCS)** का उपयोग करने की अनुमति दी गई।

- इस व्यवस्था का उद्देश्य व्यापार प्रवाह को सुव्यवस्थित करना, रसद लागत को कम करना तथा पारगमन लागत एवं समय में कटौती करके **बांग्लादेश के रेडीमेड परिधान (RMG) क्षेत्र** को लाभ पहुँचाना था।

भारत द्वारा बांग्लादेश की पारगमन सुविधा को समाप्त क्यों किया गया?

- **उद्योग जगत का विरोध:** **परिधान निर्यात संवर्द्धन परिषद (AEPC)** ने इसे समाप्त करने का समर्थन किया।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- भारत और बांग्लादेश वैश्विक वस्त्र बाज़ारों में प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्द्धी हैं, विशेष रूप से RMG क्षेत्र में (वैश्विक परिधान निर्यात में चीन प्रथम स्थान पर, बांग्लादेश दूसरे स्थान पर तथा भारत छठे स्थान पर है)।
- भारतीय निर्यातकों ने तर्क दिया कि यह **सुविधा बांग्लादेश** के पक्ष में है, जिससे भारत की बाज़ार हिस्सेदारी और लॉजिस्टिक्स अवसंरचना को नुकसान होता है।

- **हवाई मार्ग से वस्तु ढुलाई की लागत में वृद्धि:** अमेरिका और यूरोप जैसे **गंतव्यों के लिये वस्तु ढुलाई दरों** में तीव्र वृद्धि से भारत पर बाहरी कार्गो बोझ को कम करने की मांग को बढ़ावा मिला है।
- **चीनी कारक:** भारत का यह कदम **सिलीगुड़ी कॉरिडोर (चिकन नेक कॉरिडोर)** के पास चीन की बढ़ती उपस्थिति पर उसकी रणनीतिक चिंता को दर्शाता है, जहाँ बांग्लादेश ने भारत की **पूर्वोत्तर सीमा** के करीब **लालमोनिरहाट एयरबेस (Lalmonirhat Airbase)** में चीनी निवेश को आमंत्रित किया है।
- पूर्वोत्तर क्षेत्र, जिसे **"सेवेन सिस्टर्स"** के नाम से जाना जाता है, संकीर्ण सिलीगुड़ी कॉरिडोर के माध्यम से भारत की मुख्य भूमि से जुड़ा हुआ है। इसकी अंतर्राष्ट्रीय सीमाएँ **बांग्लादेश, भूटान, म्याँमार, चीन और नेपाल** के साथ लगती हैं, जो इसे भू-राजनीतिक रूप से अत्यधिक संवेदनशील बनाती हैं।

- **निहितार्थ:**
  - **बांग्लादेश:** वर्ष 2024 में, RMG के नेतृत्व में बांग्लादेश के 50 बिलियन अमेरिकी डॉलर के निर्यात क्षेत्र को भारत के कदम के बाद उच्च लागत और विलंब का सामना करना पड़ा, जिससे वस्त्र क्षेत्र में इसकी वैश्विक प्रतिस्पर्द्धात्मकता प्रभावित हुई।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- **भारत:** यह निर्णय **भारत-बांग्लादेश संबंधों** में बढ़ते तनाव को दर्शाता है, विशेष रूप से इसलिये क्योंकि बांग्लादेश चीन के करीब जा रहा है।
  - विशेषज्ञों ने यह भी चेतावनी दी है कि यह कदम **विश्व व्यापार संगठन (WTO)** के **प्रशुल्क एवं व्यापार पर सामान्य समझौते (GATT)** के अनुच्छेद V और **व्यापार सुविधा समझौते (TFA)** के **अनुच्छेद 11** के साथ टकराव उत्पन्न कर सकता है, जो **स्थल-रुद्ध देशों** के लिये पारगमन की स्वतंत्रता सुनिश्चित करते हैं।

तमिलनाडु में हाथियों का अवैध शिकार

चर्चा में क्यों?

तमिलनाडु में हाल ही में हुई हाथियों के अवैध शिकार की घटना ने **वन्यजीव अपराध** के पुन: उभरने की चिंता को फिर से जन्म दे दिया है, जो **जंगली हाथियों के अस्तित्व के लिये एक खतरा** बन गया है।

- **पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC)** के अनुसार, **हाथियों की आबादी 4,000 (वर्ष 2012) से घटकर <2,800 (वर्ष 2017) हो गई,** लेकिन बाद में यह बढ़कर 3,000+ (वर्ष 2024) हो गई।

हाथियों के बारे में मुख्य तथ्य क्या हैं?

- **परिचय:**
  - हाथी भारत का एक **राष्ट्रीय धरोहर पशु** है।
  - वे **मातृसत्तात्मक** हैं, तथा मादाओं के नेतृत्व में समूहों में रहते हैं।
  - वन पारिस्थितिकी तंत्र के संतुलन और स्वास्थ्य को बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने के कारण इन्हें **"कीस्टोन प्रजाति"** माना जाता है।
    - **पारिस्थितिकी तंत्र इंजीनियर** के रूप में, हाथी बीज प्रकीर्णन (Seed Dispersa) को सुगम बनाते हैं और अन्य प्रजातियों के लिये **जल स्रोतों तक पहुँच बनाते** हैं।
- **प्रजातियाँ:**
  - **एशियाई हाथी** (*Elephas Maximus*)
  - **अफ्रीकी हाथी:**
    - **अफ्रीकी सवाना हाथी** (***Loxodonta Africana***)
    - **अफ्रीकी वन हाथी** (***Loxodonta Cyclotis***)
- **भारत में जनसंख्या:**
  - भारतीय हाथी **एशियाई हाथियों की एक उप-प्रजाति** है जो भारतीय उपमहाद्वीप के मूल निवासी हैं और सभी एशियाई हाथियों का लगभग 60% प्रतिनिधित्व करते हैं।
  - **वर्ष 2017 में की गई हाथी जनगणना** के अनुसार, भारत में लगभग 29,964 हाथी हैं।
  - **कर्नाटक में हाथियों की संख्या सर्वाधिक थी,** उसके बाद **असम और केरल** का स्थान था।
    - संरक्षित क्षेत्रों की दृष्टि से **सत्यमंगलम वन प्रभाग** में हाथियों की संख्या सबसे अधिक है।
- **खतरा:**
  - **हाथीदाँत व्यापार, मानव-पशु संघर्ष,** अंतर-राज्यीय और अंतर्राष्ट्रीय वन्यजीव तस्करी आदि।
- **संरक्षण की स्थिति:**
  - **प्रवासी प्रजातियों पर अभिसमय (CMS):** परिशिष्ट I
  - **वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972:** अनुसूची I
- **संबंधित पहल:**
  - **भारत:**
    - **प्रोजेक्ट एलीफेंट:** भारत द्वारा हाथियों और उनके प्राकृतिक पर्यावासों की सुरक्षा के उद्देश्य से वर्ष 1992 में इसका शुभारंभ किया गया।
    - **हाथी रिज़र्व एवं गलियारे:** वर्तमान में देश में 33 **हाथी रिज़र्व** और 150 हाथी गलियारे हैं।
    - **प्रोजेक्ट RE-HAB:** इसका उद्देश्य हाथी और मानव के बीच होने वाले संघर्ष और साथ ही प्रतिकारात्मक घात की संभावनों को कम करने के उद्देश्य से मधुमक्खी का बाड़ संस्थापित कर **हाथी-मानव संघर्ष की रोकथाम करना** है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

हाथी अभयारण्य

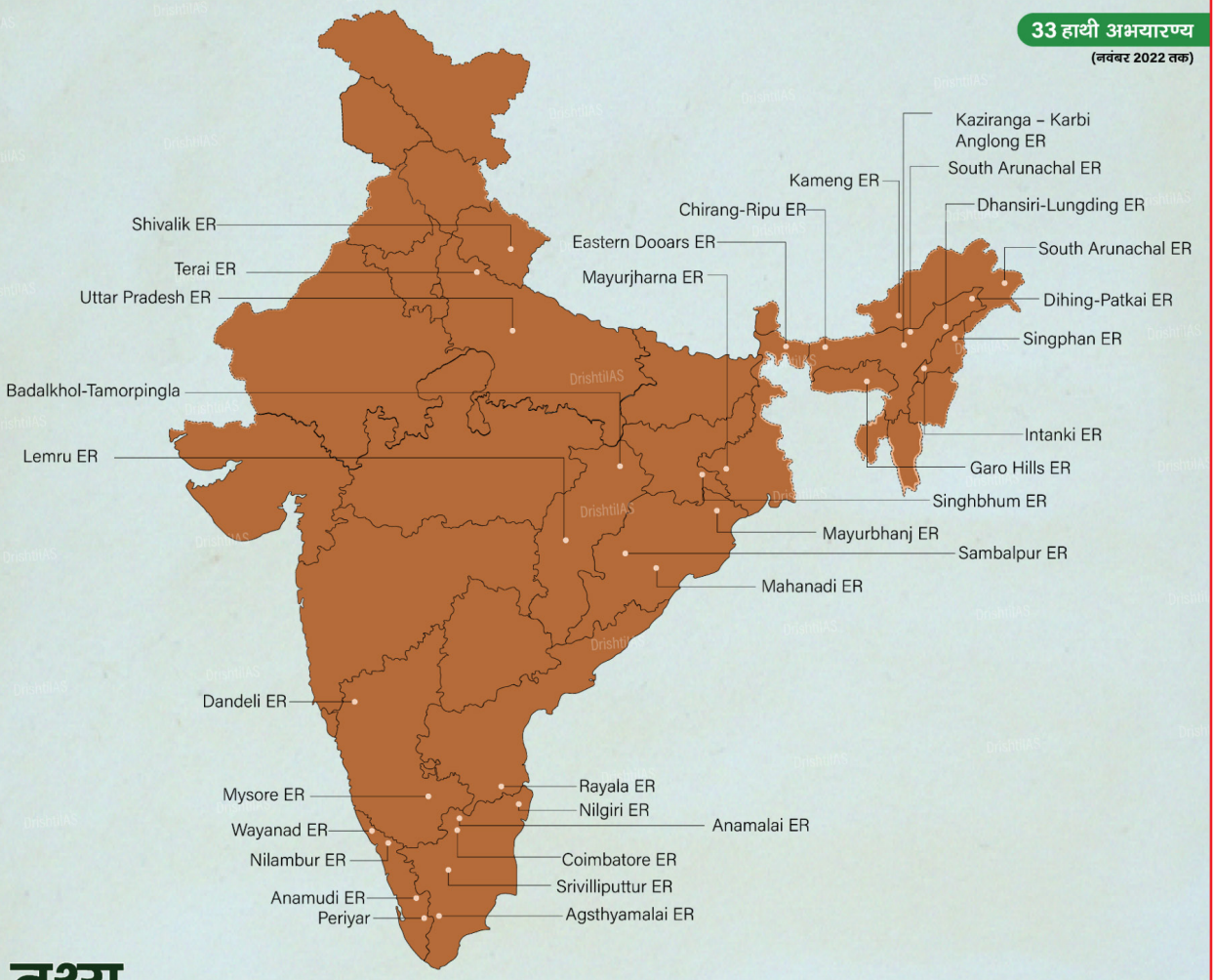

तथ्य

- भारत में तमिलनाडु और असम में हाथी अभयारण्य/एलीफेंट रिज़र्व की संख्या सबसे अधिक (5) है।
- भारतीय हाथी *(Elephas maximus)* को भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की अनुसूची I और CITES के परिशिष्ट I में शामिल किया गया है।
- भारतीय हाथी को प्रवासी प्रजातियों पर अभिसमय के परिशिष्ट I और IUCN रेड लिस्ट में 'लुप्तप्राय/संकटग्रस्त' (Endangered) के रूप में भी सूचीबद्ध किया गया है।
- वर्ष 2010 में हाथी को भारत का राष्ट्रीय विरासत पशु घोषित किया गया था।
- MoEFCC हाथी परियोजना/प्रोजेक्ट एलीफेंट के माध्यम से देश के प्रमुख हाथी रेंज राज्यों को वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करता है। हाथी परियोजना को भारत सरकार द्वारा वर्ष 1992 में केंद्र प्रायोजित योजना के रूप में शुरू किया गया था।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 — SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस — SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स — SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप — SCAN ME

नोट :

- **वैश्विक:**
  - **विश्व हाथी दिवस:** हाथियों की सुरक्षा और संरक्षण की तत्काल आवश्यकता के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिये यह दिवस प्रतिवर्ष **12 अगस्त** को मनाया जाता है।
  - **हाथियों की अवैध हत्या की निगरानी (MIKE) कार्यक्रम:** यह एक अंतर्राष्ट्रीय पहल है जिसके अंतर्गत **एशिया और अफ्रीका में संरक्षण प्रयासों का समर्थन** करने के लिये हाथियों की मृत्यु दर की प्रवृत्तियों को ट्रैक किया जाता है।

एशियाई और अफ्रीकी हाथियों में अंतर:

विशेषता	एशियाई हाथी	अफ्रीकी हाथी
भौगोलिक सीमा	दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया के 13 देश (भारत, श्रीलंका, म्याँमार आदि सहित)	उप-सहारा अफ्रीका (सवाना और वर्षावन)
आकार	आकार में छोटा तथा आनुपातिक रूप से अधिक छोटे कर्ण	आकार में अपेक्षाकृत बड़ा **(पृथ्वी पर सबसे बड़ा स्थलीय प्राणी)**
दाँत	अधिकांश नरों के दंत होते हैं; मादा हाथी प्राय: या तो दंतरहित होती हैं या उनके अपेक्षाकृत छोटे दंत होते हैं	नर और मादा दोनों के बड़े आकार के दंत होते हैं
सूँड़/टूंक	उनकी सूँड़ के सिरे पर केवल एक उँगली के समान प्रवर्द्ध होता है	उनकी सूँड़ के सिरे पर दो उँगलियों के समान प्रवर्द्ध होता है
त्वचा की बनावट	चिकनी, अल्प गुलाबी वर्ण की चित्ती (डिपिगमेंटेशन) हो सकती हैं	झुर्रीदार त्वचा जो नमी को धारित रखती है (शुष्क जलवायु के प्रति अनुकूलन)
संरक्षण स्थिति (IUCN)	संकटापन्न	**अफ्रीकी वन हाथी:** गंभीर रूप से संकटापन्न **अफ्रीकी सवाना हाथी:** संकटापन्न

नोट: हाथी रिज़र्वों के लिये **विधिक संरक्षण का अभाव** है, जब तक कि वे मौजूदा रिज़र्व वनों या संरक्षित क्षेत्रों के अंतर्गत न आते हों।

ज्योतिबा फुले

चर्चा में क्यों?

महान **समाज सुधारक, दार्शनिक और लेखक ज्योतिबा फुले** की जयंती **11 अप्रैल** को मनाई गई।

ज्योतिबा फुले से संबंधित मुख्य तथ्य क्या हैं?

- **परिचय:** उनका जन्म **11 अप्रैल , 1827** को हुआ था और वह एक अग्रणी समाज सुधारक थे जिन्होंने **ब्राह्मणवादी रूढ़िवादिता** का विरोध किया, **दलितों और महिलाओं के अधिकारों** की मांग की और भारत में अनेक **सामाजिक न्याय आंदोलनों** की शुरुआत की।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

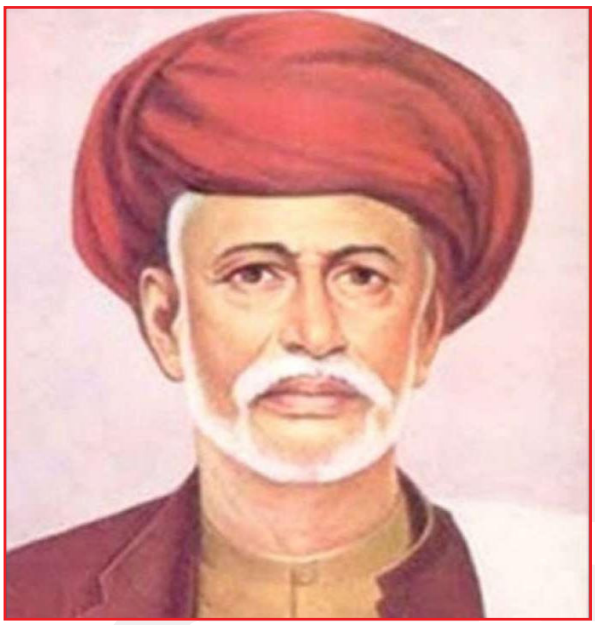

- **प्रमुख योगदान:**
  - **शैक्षिक सुधार:** फुले और उनकी पत्नी **सावित्रीबाई** ने **वर्ष 1848** में **भारत का पहला कन्या विद्यालय** शुरू किया और बाद में पुणे में **श्रमिकों, किसानों और महिलाओं** के लिये **साँध्य विद्यालय (1855)** शुरू किये।
  - **समाज सुधार:**
    - **रूढ़िवादिता का विरोध:** फुले ने **जाति उत्पीड़न का विरोध किया, चिपलूणकर और तिलक** जैसे ब्राह्मणवादी नेताओं की **आलोचना** की और शोषितों तथा महिलाओं के उत्थान के लिये **अंग्रेज़ों का समर्थन किया**।
    - **जाति-विरोधी आंदोलन:** फुले ने जाति पदानुक्रम का उन्मूलन करने के लिये **सत्यशोधक समाज (1873)** की स्थापना की और **गुलामगिरी** में जाति उत्पीड़न की तुलना **अमेरिकी गुलामी** से की।
  - **वर्ष 1877** में **कृष्णराव पांडुरंग भालेकर** द्वारा शुरू किया गया मराठी साप्ताहिक समाचार पत्र, **दीनबंधु, सत्यशोधक समाज** के लिये एक अभिव्यक्ति मार्ग के रूप में कार्य करता था।
  - **1857 विद्रोह की आलोचना:** इसे ब्राह्मण शासन को पुन: स्थापित करने के लिये **उच्च जाति के प्रयास** के रूप में देखा गया।
  - **आर्थिक सुधार: जातिगत पदानुक्रम को समाप्त करने** के लिये निम्न जातियों के लिये **अनिवार्य शिक्षा** और आर्थिक उत्थान की वकालत की।
  - **धार्मिक स्वतंत्रता:** अपने **सत्सार (सत्य का सार)** में, फुले ने **पंडिता रमाबाई** के ईसाई धर्म में परिवर्तित होने के अधिकार का बचाव किया ।
  - **कृषि सुधार: शेतकऱ्याचा असूड (Farmer's Whip)** में, ज्योतिराव फुले ने **ब्रिटिश और ब्राह्मण नौकरशाही गठबंधन** द्वारा **शूद्र किसानों** के शोषण की आलोचना की।
  - **तर्कवाद: सार्वजनिक सत्य धर्म पुस्तक** में उन्होंने एक **न्यायपूर्ण और समतामूलक समाज** की **वकालत की,** जहाँ **ईश्वर** को एक **प्रेमपूर्ण और तर्कसंगत निर्माता** के रूप में देखा जाता है। इसने **पारंपरिक पदानुक्रम** को समाप्त कर दिया।
  - **प्रमुख प्रकाशन: तृतीया रत्न (वर्ष 1855), पोवाडा: छत्रपती शिवाजी राजे भोसले यांचा (वर्ष 1869), गुलामगिरी (वर्ष 1873), शेतकऱ्याचा असूड (वर्ष 1881)।**
- **प्रेरणा स्रोत:** वे **थॉमस पेन की पुस्तक *द राइट्स ऑफ मैन*** से प्रभावित थे और महिलाओं तथा निम्न जातियों की **शिक्षा** को **सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने की कुंजी** मानते थे।
- **मान्यता: उन्हें 11 मई, 1888** को महाराष्ट्रीयन सामाजिक कार्यकर्त्ता **विट्ठलराव कृष्णजी वांडेकर** द्वारा **महात्मा** की उपाधि प्रदान की गई थी।

आंतरिक वायु गुणवत्ता

भारत में **इनडोर अथवा आंतरिक वायु प्रदूषण** विशेष रूप से नगरीय क्षेत्रों में एक बढ़ती हुई चिंता का विषय है, जहाँ लोग 70-90% समय घर में व्यतीत करते हैं। इसके बावजूद **इनडोर वायु गुणवत्ता (IAQ)** के बारे सीमित चर्चा की जाती है और अधिकांश नीतियों में अभी भी बाह्य प्रदूषण पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

वायु प्रदूषक

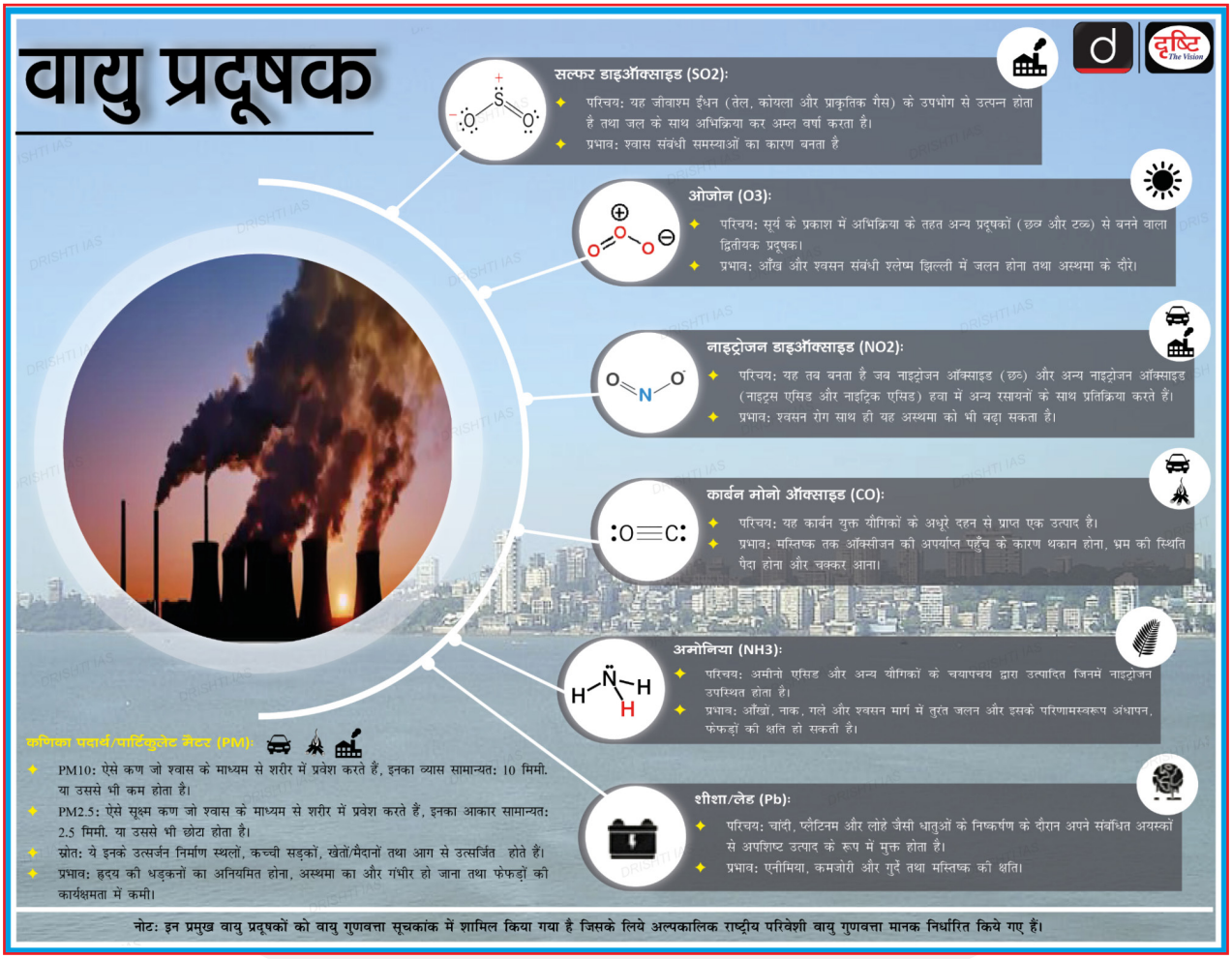

आंतरिक वायु गुणवत्ता क्या है?

- **परिभाषा: IAQ का तात्पर्य भवनों के भीतर और उसके चारों और विद्यमान वायु की गुणवत्ता** से है, जो निवासियों के स्वास्थ्य और आराम को प्रभावित करती है।
- **सामान्य आंतरिक वायु प्रदूषक:**
  - **कार्बन मोनोऑक्साइड (CO):** अपूर्ण दहन से उत्पन्न एक विषाक्त **गंधहीन गैस**।
  - **फॉर्मेल्डिहाइड:** यह काष्ठ के उत्पादों, गोंद, पेंट और साज-सज्जा में पाया जाता है और एक ज्ञात **कैंसरकारी पदार्थ** है।
  - **एस्बेस्टस:** यह भवन के **अग्निरोधी अथवा अदाह्य घटकों के निर्माण** में प्रयुक्त पुरानी निर्माण सामग्रियों में पाया जाता है; इसके संपर्क में आने से फेफड़ों से संबंधित गंभीर रोग हो सकते हैं।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **रेडॉन:** एक रेडियोधर्मी गैस है जिसका **धरातल से धीरे-धीरे स्राव होकर भवनों में प्रवेश होता है।**
- **सीसा:** पुराने पेंट, पाइपलाइन और चीनी मिट्टी की वस्तुओं में पाया जाता है।
- **फफूँद:** यह **कवक का एक प्रकार और सूक्ष्मजीव** है जो नम स्थानों और आर्द्र वातावरण में पनपता है।
- **कीटनाशक: कीट नियंत्रण के उद्देश्य से घरों में** इसका **उपयोग किया जाता है**, जिससे रासायनिक प्रभाव बढ़ता है।
- **धुआँ:** सिगरेट या रसोई चूल्हे से निकलने वाला, हानिकारक विषाक्त पदार्थ।
- **एलर्जन:** धूल के कण, पालतू जानवरों की रूसी, तथा कालीनों और फर्नीचर में संचित पराग कण।

- **IAQ के निरंतर खराब होने के कारण:** बाह्य प्रदूषक जैसे **पार्टिकुलेट मैटर (PM2.5)**, खराब तरीके से सीलबंद अथवा संवातित भवनों में अनुपयुक्त ऊष्मारोधी ढाँचों के माध्यम से प्रवेश करते हैं।
  - घर के अंदर की गतिविधियाँ जैसे पाकक्रिया, धूम्रपान, अगरबत्ती का उपयोग, तथा रासायन आधारित सफाई।
  - भारतीय नगरों में अति संकुलित आवासन के कारण प्रकीर्णन के लिये सीमित स्थान शेष होता है जिसके कारण प्रदूषण का स्तर बढ़ जाता है।
  - IAQ मानकों के बारे में सार्वजनिक जागरूकता और नियामक निगरानी के अभाव के कारण हानिकारक प्रथाएँ जारी रहती हैं और हानिकारक सामग्रियाँ वातावरण में विद्यमान रहती हैं।
- **प्रभाव:** डायसन के वैश्विक अध्ययन के अनुसार भारत में सर्वाधिक औसत वार्षिक इनडोर PM2.5 स्तर (55.18 $\mu g/m^3$) रहा, जिसके बाद चीन, तुर्की, संयुक्त अरब अमीरात और दक्षिण कोरिया का स्थान है।
  - विश्व स्तर पर, घरेलू वायु प्रदूषण के कारण प्रतिवर्ष 3.2 मिलियन लोगों की असामयिक मृत्यु होती है (WHO), क्योंकि ठोस ईंधन और केरोसिन से उत्सर्जित प्रदूषक फेफड़ों को नुकसान पहुँचाते हैं, प्रतिरक्षा को कमज़ोर करते हैं, और रक्त में ऑक्सीजन के स्तर को कम करते हैं।
  - खराब वेंटिलेशन के कारण कार्बन डाइऑक्साइड का निर्माण हो सकता है, जिसके परिणामस्वरूप "सिक बिल्डिंग सिंड्रोम" हो सकता है।
  - घर के अंदर वायु प्रदूषण से स्ट्रोक, हृदय रोग, क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज़ (COPD) और फेफड़ों के कैंसर जैसे **गैर-संचारी रोग** हो सकते हैं। महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य पर इसका सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है।

इनडोर वायु प्रदूषण के समाधान क्या हैं?

- **वायु शोधक:** PM2.5 और अन्य हानिकारक प्रदूषकों जैसे कण पदार्थों को रोकने के लिये उच्च दक्षता वाले कण एयर फिल्टर से सुसज्जित वायु शोधक (Air Purifiers) का उपयोग करना।
- **इनडोर पादपों का उपयोग:** ***स्पाइडर प्लांट और पीस लिली*** जैसे कुछ इनडोर पादप **फॉर्मेल्डिहाइड और बेंजीन जैसे प्रदूषकों को अवशोषित** करके वायु को शुद्ध करने में मदद कर सकते हैं।
- स्वच्छ ईंधन और प्रौद्योगिकियों का उपयोग: खाना पकाने और हीटिंग के लिये सौर, विद्युत, बायोगैस, तरलीकृत पेट्रोलियम गैस (LPG), प्राकृतिक गैस, या अल्कोहल ईंधन जैसे स्वच्छ विकल्पों का उपयोग करें।
- **निम्न-VOC सामग्री:** पेंट, वार्निश और फर्निशिंग जैसी निर्माण सामग्री में **वाष्पशील कार्बनिक यौगिकों (VOC)** के उपयोग को कम करने से इनडोर वायु गुणवत्ता में काफी सुधार हो सकता है।
- **स्वास्थ्य-केंद्रित भवन निर्माण प्रथाएँ:** स्वस्थ जीवन के लिये उपयुक्तता सुनिश्चित करने के लिये **इको-निवास संहिता (ENS)** के साथ तालमेल करते हुए **भारतीय हरित भवन परिषद (IGBC)** के सहयोग से स्वास्थ्य-केंद्रित भवन निर्माण दिशानिर्देश स्थापित करना।

वायुमंडलीय नदी

चर्चा में क्यों?

अप्रैल 2025 में अमेरिका में वायुमंडलीय नदी से संबंधित घटना के कारण अधिक वर्षा, तीव्र पवन एवं तूफान की स्थिति उत्पन्न हुई।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- यद्यपि **यह घटना नई नहीं है लेकिन जलवायु परिवर्तन** और **चरम मौसमी घटनाओं** के कारण इस ओर ध्यान आकर्षित हो रहा है।

वायुमंडलीय नदी क्या है?

- **परिभाषा:** वायुमंडलीय नदी को अक्सर ***"आसमान में नदी"*** के रूप में वर्णित किया जाता है। इसका आशय वायुमंडल में एक अपेक्षाकृत लंबी और संकीर्ण पट्टी है जो उष्णकटिबंधीय महासागरों से महाद्वीपीय क्षेत्रों में अधिक मात्रा में **जलवाष्प के आवागमन** में भूमिका निभाती है। पृथ्वी पर नदियों के विपरीत, ये अदृश्य होती हैं।
  - **"पाइनएप्पल एक्सप्रेस"** वायुमंडलीय नदी संबंधी तूफानों का एक प्रसिद्ध उदाहरण है जिससे अमेरिका के पश्चिमी तट (विशेष रूप से कैलिफोर्निया) पर भारी वर्षा होती है।
- **विशेषताएँ:**
  - **आकार और आकृति: राष्ट्रीय महासागरीय और वायुमंडलीय प्रशासन (NOAA)** के अनुसार, वायुमंडलीय नदी 1,600 किमी तक लंबी और 400-600 किमी तक चौड़ी हो सकती हैं।
  - आर्द्रता की मात्रा: इसके द्वारा मिसिसिपी नदी के मुहाने पर जल के औसत प्रवाह के बराबर जलवाष्प ले जाई जाती है। सबसे मज़बूत स्थिति में यह सामान्य से 15 गुना अधिक तीव्र हो सकती हैं।
- **श्रेणियाँ:**
  - **श्रेणी 1 (कमज़ोर):** यह लाभकारी होने के साथ मृदा की नमी को बनाए रखने में सहायक है।
  - **श्रेणी 2 (मध्यम):** सूखे के बाद जलाशयों को भरने के लिये अधिकतर लाभदायक, लेकिन लंबे समय तक वर्षा होने से स्थानीय बाढ़ और भूस्खलन हो सकता है।
  - **श्रेणी 3 (मज़बूत):** श्रेणी 3 की वायुमंडलीय नदी लाभकारी एवं खतरनाक प्रभावों के संतुलन के साथ अधिक शक्तिशाली और दीर्घकालिक होती है। इससे सूखा प्रभावित जलाशयों को भरने में मदद मिलती है, लेकिन अत्यधिक वर्षा से नदियों का जलस्तर बढ़ जाता है, जिससे पहले से ही जलमग्न क्षेत्रों में बाढ़ का खतरा उत्पन्न हो जाता है।
  - **श्रेणी 4 (चरम):** श्रेणी 4 वायुमंडलीय नदी अधिकतर खतरनाक होती है हालाँकि इसके कुछ लाभकारी पहलू भी होते हैं। इस श्रेणी का तूफान कई दिनों तक भारी वर्षा करने में सक्षम है जिससे कई नदियाँ बाढ़ की स्थिति में आ सकती हैं।
  - **श्रेणी 5 (असाधारण):** मुख्य रूप से खतरनाक, क्योंकि लंबे समय तक अत्यधिक वर्षा के कारण विनाशकारी बाढ़, भूस्खलन और व्यापक विनाश होता है, जिसके परिणामस्वरूप प्राय: अरबों डॉलर की आर्थिक क्षति होती है।
- **गठन:** AR का निर्माण तब होता है जब सामान्यत: उष्णकटिबंधीय (जैसे कि मध्य प्रशांत और हिंद महासागर का अधिकांश भाग) या उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों (दक्षिणी कैलिफोर्निया) में **उष्ण महासागरीय जल** के कारण **वाष्पीकरण का स्तर उच्च** हो जाता है, जिससे वायुमंडल में नमी बढ़ जाती है।
  - निम्न-स्तरीय जेट धाराएँ (निचले वायुमंडल में तीव्र गति से चलने वाली पवनें) आर्द्र वायु को **उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों से मध्य अक्षांशों की ओर** ले जाती हैं।
  - जब नम वायु **पर्वत शृंखलाओं या वाताग्रीय सीमाओं (Frontal Boundaries)** द्वारा ऊपर की ओर बढ़ती है, तो वह **वर्षा या हिम** में संघनित हो जाती है।
- **महत्त्व:** AR पर्वतीय क्षेत्रों में हिम की मात्रा बढ़ाकर जलापूर्ति को पुन: प्राप्त करने में सहायता करते हैं।
  - AR मध्य अक्षांशों में **ध्रुव की ओर 90% से अधिक जल वाष्प परिवहन** के लिये ज़िम्मेदार हैं तथा भू-स्थल पर पहुँचने पर अत्यधिक वर्षा उत्पन्न कर सकते हैं।
- **भारत में वायुमंडलीय नदी (AR):** एक अध्ययन के अनुसार वर्ष 1951 से वर्ष 2020 की अवधि में भारत में वायुमंडलीय नदी (AR) की 596 प्रमुख घटनाएँ हुईं, जिनमें से 95% से अधिक ग्रीष्मकालीन मानसून ऋतु (जून से सितंबर) के दौरान हुईं।
  - उल्लेखनीय रूप से, वर्ष 1985 से वर्ष 2020 की अवधि में हुई बाढ़ की प्रमुख घटनाओं में से 70% वायुमंडलीय नदी के कारण घटित हुईं, जिनमें **वर्ष 2013** की विनाशकारी **उत्तराखंड बाढ़, वर्ष 2018** की **केरल बाढ़** और **वर्ष 2007** की **दक्षिण एशियाई बाढ़** शामिल हैं।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- हाल के दशकों में वायुमंडलीय नदी की घटनाओं की आवृत्ति और उग्रता बढ़ गई है, विशेष रूप से **सिंधु-गंगा के मैदानों** और प्रायद्वीपीय भारत में, जिसके कारण व्यापक विनाश और जान-माल की हानि हुई।

- **जलवायु परिवर्तन का AR पर प्रभाव:** वैश्विक तापमान बढ़ने के साथ AR का प्रभाव तीव्र हो रहा है। कोष्ण वायु **प्रत्येक 1°C वृद्धि पर लगभग 7% अधिक आर्द्रता धारण कर सकती है,** जिससे ARजनित तूफान अधिक प्रबल हो जाते हैं।
  - आगामी समय में वायुमंडलीय नदियाँ अधिक लंबी, चौड़ी और अधिक तीव्र होंगी, जिससे वायुमंडलीय नदी की चरम घटनाएँ दोगुनी हो जाएंगी तथा सुभेद्य क्षेत्रों में बाढ़ का खतरा बढ़ जाएगा।

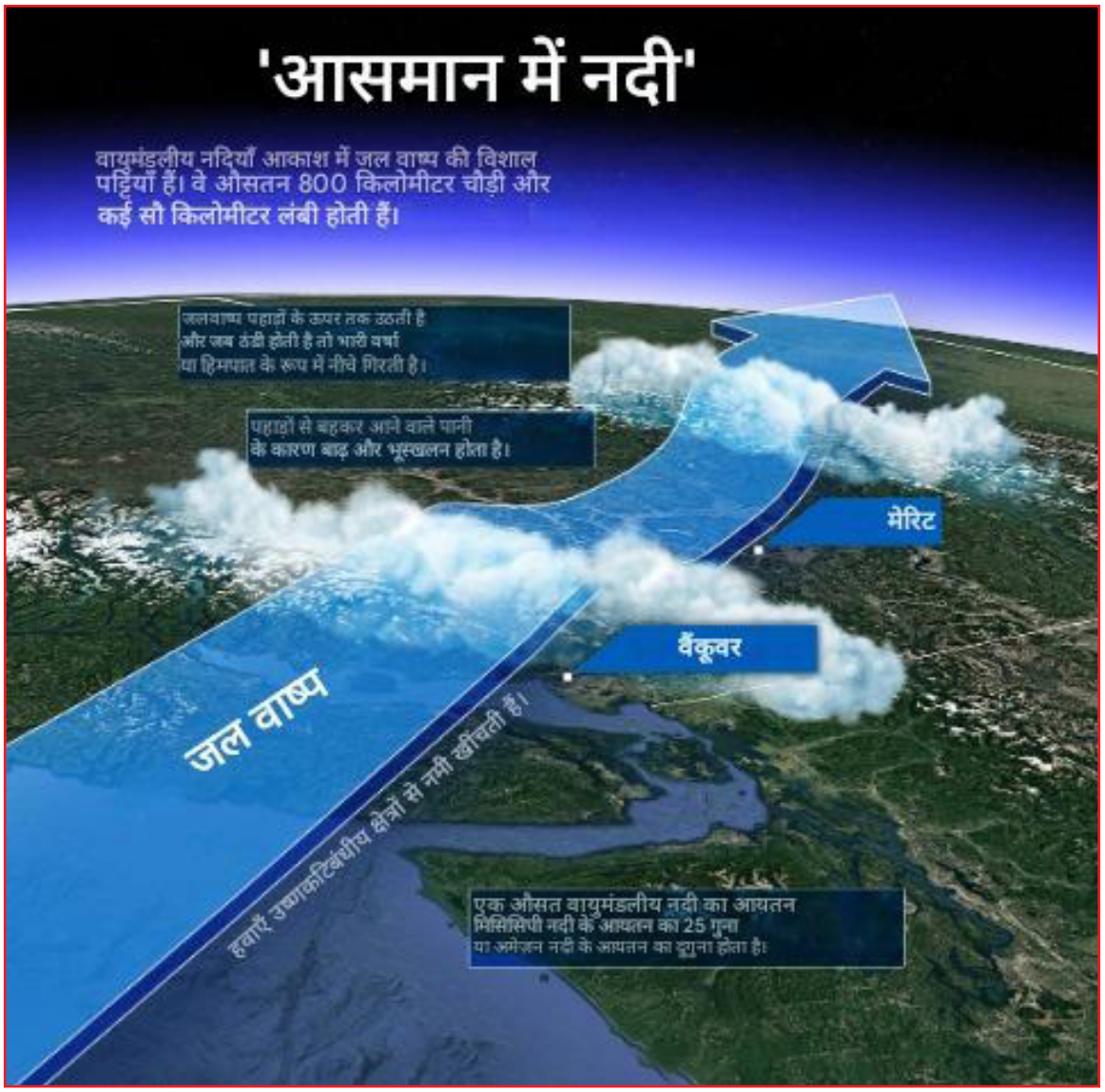

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

रोंगाली बिहू

चर्चा में क्यों?

रोंगाली बिहू (जिसे बोहाग बिहू के नाम से भी जाना जाता है) असम में 14 से 20 अप्रैल 2025 तक मनाया जा रहा है जो **असमिया नववर्ष** और कटाई के मौसम की शुरुआत का प्रतीक है।

रोंगाली बिहू की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

- **परिचय: रोंगाली बिहू असम में प्रतिवर्ष मनाए जाने वाले तीन बिहू ओं** में से सबसे प्रमुख है अन्य दो **कटि बिहू (अक्टूबर) और माघ बिहू (जनवरी)** हैं।
- रोंगाली बिहू हिंदू सौर कैलेंडर की शुरुआत का प्रतीक है और इसलिये इसे **असमिया नववर्ष के रूप में मनाया** जाता है।
- यह मुख्य रूप से एक फसल उत्सव है जो वसंत ऋतु के आगमन का प्रतीक है तथा इसमें समृद्ध कृषि मौसम के लिये प्रार्थना की जाती है।
- **व्युत्पत्ति:** असमिया में "रोंग" का अर्थ आनंद होता है, जो त्योहार की उल्लासमय भावना को दर्शाता है।
- **समारोह:** बिहू **नृत्य** (असम का जीवंत, तेज गति वाला लोक नृत्य) लोक गीतों और पारंपरिक वाद्ययंत्रों जैसे ढोल, पेपा, गोगोना, टोका, ताल और हुतुली की लय के साथ किया जाता है।

अन्य बिहू:

त्योहार	समय	महत्त्व
रोंगाली बिहू	अप्रैल (बोहाग)	बुवाई का मौसम शुरू, असमिया नववर्ष
काटी बिहू	अक्तूबर (काटी)	फसल का मध्य मौसम, अच्छी फसल के लिये प्रार्थना
माघ बिहू	जनवरी (माघ)	फसल कटाई का अंत, सामुदायिक उत्सव

भारतीय राज्यों में नववर्ष का जश्न

- **बैसाखी: यह त्योहार पंजाब** और **उत्तरी भारत** में वसंत ऋतु की फसल की शुरुआत का प्रतीक है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- **पुथांडु:** यह तमिलनाडु और विश्व भर के तमिल समुदायों द्वारा मनाया जाने वाला त्योहार है। यह तमिल कैलेंडर के चिथिरई माह के पहले दिन पड़ता है।
- **पोहेला बैशाख:** पश्चिम बंगाल में मनाया जाने वाला यह त्योहार बंगाली कैलेंडर वर्ष के प्रारंभ का प्रतीक है।
- **जुड़ शीतल:** यह बिहार, झारखंड और नेपाल में मैथिली समुदायों द्वारा मनाया जाता है।
  - **पना संक्रांति:** इसे ओडिशा में ओडिया नववर्ष के रूप में मनाया जाता है। यह बेल फल (वुड एप्पल) से बने पारंपरिक पेय **बेला पना** के लिये जाना जाता है।
  - **विशु:** केरल और तमिलनाडु के कुछ हिस्सों में मनाया जाने वाला यह त्योहार सूर्य के मेष राशि में प्रवेश का प्रतीक है।
- **उगादी:** इसे आँध्र प्रदेश, तेलंगाना और कर्नाटक में हिंदू नववर्ष के प्रारंभ के रूप में मनाया जाता है।
- उगाद शब्द संस्कृत से लिया गया है, युग (आयु) और आदि (आरंभ) जिसका अर्थ है "एक नए युग की शुरुआत।"
- **गुड़ी पड़वा:** इसे महाराष्ट्र और गोवा में संवत्सर पड़वो के रूप में मनाया जाता है। यह मराठी नववर्ष की शुरुआत और चैत्र महीने के पहले दिन का प्रतीक है।
- **नवरेह:** यह कश्मीरी पंडितों द्वारा अपने पारंपरिक नववर्ष के उपलक्ष्य में मनाया जाने वाला त्योहार है। नवरेह शब्द संस्कृत के "नववर्ष" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "नया साल"।
- **साजिबू चेइराओबा:** इसे मणिपुर में मैतेई समुदाय द्वारा मनाया जाता है। यह मणिपुरी चंद्र कैलेंडर वर्ष की शुरुआत का प्रतीक है।
- **बेस्टु वरस:** इसे गुजरात में नववर्ष के रूप में मनाया जाता है और पाँच दिवसीय उत्सव समारोह के भाग के रूप में दिवाली के एक दिन बाद मनाया जाता है।

भारत में झींगा पालन

चर्चा में क्यों?

भारत की जलीय कृषि देश के पोषण और अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिससे यह **विश्व का तीसरा सबसे बड़ा जलीय कृषि उत्पादक** और **झींगा उत्पादन में दूसरा सबसे बड़ा देश** बन गया है।

- भारत के झींगा उत्पादन में **17% की वार्षिक वृद्धि** देखी गई है जिससे घरेलू खपत और निर्यात दोनों में योगदान मिला है।

जलीय कृषि क्या है?

- **जलीय कृषि की परिभाषा:**
  - **जलीय कृषि से तात्पर्य वाणिज्यिक, मनोरंजक और वैज्ञानिक उद्देश्यों** के लिये **पौधों, जानवरों और सूक्ष्मजीवों** सहित जलीय जीवों के पालन और प्रबंधन से है।
  - इसे कृषि का जलीय प्रतिरूप माना जाता है, जिसमें **समुद्री और मीठे जल की प्रजातियों के पालन** पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।
- **वैश्विक विकास:**
  - जलीय कृषि विश्व भर में सबसे तेजी से बढ़ते खाद्य उत्पादन क्षेत्रों में से एक है।
  - वर्तमान में इससे विश्व भर में उपभोग किये जाने वाले समुद्री भोजन के **50% से अधिक की आपूर्ति** होती है।
- **अग्रणी उत्पादक:**
  - **चीन वैश्विक जलीय कृषि में अग्रणी** है और **कुल उत्पादन** में लगभग **60% हिस्सा चीन** का है। अन्य प्रमुख उत्पादकों में **इंडोनेशिया, भारत और वियतनाम** शामिल हैं।

भारत में झींगा पालन की स्थिति क्या है?

- **झींगा: उच्च प्रोटीन और कम वसा के कारण,** घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसकी मांग बढ़ती जा रही है।
- एक प्रीमियम किस्म, **ब्लैक टाइगर प्रॉन (पेनियस मोनोडोन)**, अपने आकार और गुणवत्ता के लिये अत्यधिक मूल्यवान है।
  - इन झींगों को **10-25 ग्राम/लीटर लवणता की आवश्यकता** होती है जबकि समुद्री जल की लवणता 35 ग्राम/लीटर होती है।
  - भारत में झींगा उत्पादन में **आँध्र प्रदेश का सबसे अधिक योगदान** है, इसके बाद **पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, ओडिशा और गुजरात** का स्थान है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

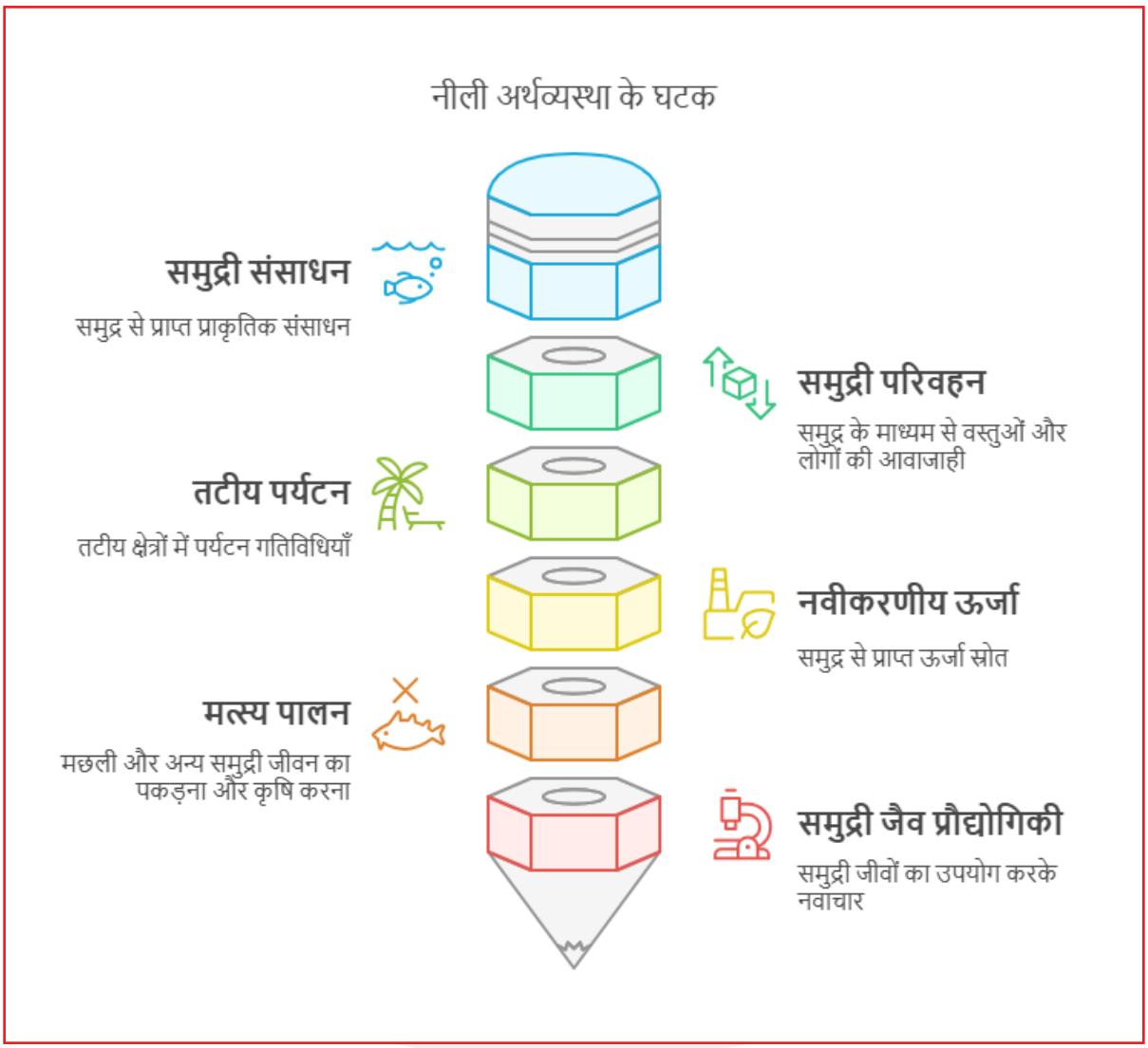

- **तटीय आँध्र प्रदेश** में खारे भू-जल को नदियों और नहरों के ताजे जल के साथ मिश्रित किया जाता है।

- **किसानों की नवीन पद्धतियाँ: आँध्र प्रदेश के शिव राम रुद्रराजू ने उपज बढ़ाने** और रोगाणुओं के जोखिम को कम करने के लिये छोटे तालाबों का उपयोग किया।
  - **छोटे तालाब** बीमारी के प्रकोप के दौरान **आर्थिक नुकसान** को रोकने में मदद करते हैं।
  - प्रत्येक चक्र 4-6 महीने तक चलता है जिसके बाद तालाबों को सुखाया और साफ किया जाता है।
- **झींगा पालन में रोग नियंत्रण: विब्रियो हार्वेई** जैसे जीवाणु संक्रमण और व्हाइट स्पॉट **सिंड्रोम** जैसे **विषाणु प्रकोप** से उत्पादन में 25% तक वार्षिक हानि हो सकती है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- **नियंत्रण के उपाय:**
  - कौओं द्वारा होने वाले प्रदूषण की रोकथाम करने हेतु किसान **तालाबों पर प्लास्टिक के जालों का आवरण** कर देते हैं।
  - झींगों को क्षति पहुँचाए बिना हानिकारक रोगाणुओं से निपटने के लिये **बैसिलस बैक्टीरिया** जैसे **प्रोबायोटिक्स** मिलाए जाते हैं।
  - चेन्नई स्थित **ICAR-CIBA** ने 'विशिष्ट रोगाणु मुक्त' ब्रूडस्टॉक विकसित किया है, जिसका पालन जैवसुरक्षित वातावरण में किया गया है तथा रोग मुक्त होने का प्रमाण पत्र दिया गया है।
  - **फेज थेरेपी** में बैक्टीरियोफेज़ वायरस का उपयोग किया जाता है जो अन्य जीवों को नुकसान पहुँचाए बिना विशेष रूप से **विब्रियो बैक्टीरिया** को लक्षित करता है।

समुद्री खाद्य उत्पादन से संबंधित सरकारी पहलें

- **प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना**
- **मत्स्य पालन और जलीय कृषि अवसंरचना विकास निधि (FIDF)**
- **समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण**

■■■

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

रैपिड फायर

IOS सागर और AIKEYME

भारतीय नौसेना ने **हिंद महासागर पोत (IOS) सागर** और **अफ्रीका इंडिया की मैरीटाइम एंगेजमेंट (AIKEYME)** की अपनी पहली पहल की घोषणा की है, जिसका उद्देश्य **हिंद महासागर क्षेत्र (IOR)** में **'प्राथमिकता प्राप्त सुरक्षा साझेदार'** और **'प्रथम उत्तरदाता'** के रूप में भारतीय नौसेना की स्थिति का सुदृढ़ीकरण करना और **क्षेत्रों में सुरक्षा के लिये पारस्परिक और समग्र उन्नति (MAHASAGAR)** के दृष्टिकोण में विस्तार करना है।

- **IOS सागर: INS सुनयना** को भारत और **नौ मित्र विदेशी देशों** (कोमोरोस, केन्या, मेडागास्कर, मालदीव, मॉरीशस, मोज़ाम्बिक, सेशेल्स, श्रीलंका, दक्षिण अफ्रीका) के संयुक्त चालक दल के साथ दक्षिण-पश्चिम IOR में तैनात किया जा रहा है।
  - **INS सुनयना संयुक्त अनन्य आर्थिक क्षेत्र** अनुवीक्षण के लिये दार-एस-सलाम (तंज़ानिया), नकाला (मोज़ाम्बिक), पोर्ट लुइस (मॉरीशस), पोर्ट विक्टोरिया (सेशेल्स) और माले (मालदीव) का दौरा करेगी।
  - IOS सागर के प्रतिभागियों को तंज़ानिया के दार-एस-सलाम में अभ्यास AIKEYME के पत्तन चरण की गतिविधियों को देखने की भी योजना बनाई गई है।
- **AIKEYME:** इसकी सह-मेज़बानी भारत और तंज़ानिया द्वारा की जाएगी, इसका पहला संस्करण अप्रैल वर्ष 2025 में **तंज़ानिया के दार-एस-सलाम** में आयोजित होगा।
  - इस अभ्यास में **11 देश** शामिल हैं, जिनमें कोमोरोस, जिबूती, इरिट्रिया, केन्या, मेडागास्कर, मॉरीशस, मोज़ाम्बिक, सेशेल्स, दक्षिण अफ्रीका, भारत और तंज़ानिया शामिल हैं।
  - इसमें समुद्री डकैती रोधी अभियान, खोज एवं बचाव (SAR), नाविक कला कौशल, विज़िट बोर्ड खोज एवं जब्ती (VBSS), तथा हेलीकॉप्टर संचालन का प्रशिक्षण शामिल है।
- **INS सुनयना:** यह एक अपतटीय गश्ती पोत है, जो दक्षिणी नौसेना कमान (कोच्चि) में तैनात है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 — SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस — SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स — SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप — SCAN ME

नोट :

राष्ट्रीय तकनीकी वस्त्र मिशन के 5 वर्ष

वस्त्र मंत्रालय द्वारा **वर्ष 2020** में शुरू किये गए **राष्ट्रीय तकनीकी वस्त्र मिशन (NTTM)** ने 5 वर्ष पूर्ण कर लिये हैं, जिसका उद्देश्य **वर्ष 2025-26** तक भारत को **तकनीकी वस्त्रों में वैश्विक अभिकर्त्ता** के रूप में स्थापित करना है।

- **तकनीकी वस्त्र: तकनीकी वस्त्र प्राकृतिक और सिंथेटिक फाइबर** से बने **कार्यात्मक वस्त्र** हैं, जिनका उपयोग **रक्षा, स्वास्थ्य सेवा, बुनियादी ढाँचे, ऑटोमोटिव, चिकित्सा** आदि जैसे उद्योगों में किया जाता है।
  - **उदाहरण:** मच्छरदानी, सीट बेल्ट, हेलमेट, अग्निरोधक जैकेट और सैनिटरी नैपकिन।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **NTTM: वर्ष 2020-21 से वर्ष 2025-26** की अवधि के लिये शुरू किया गया यह **मिशन कृषि, स्वास्थ्य सेवा और तकनीकी वस्त्रों में बुनियादी ढाँचे** जैसे प्रमुख क्षेत्रों में **अनुसंधान, बाज़ार विकास, निर्यात और कौशल विकास** को बढ़ावा देने पर केंद्रित है।
  - **प्रमुख घटक:** नई सामग्रियों के लिये अनुसंधान एवं विकास को समर्थन देना, बाज़ार को अपनाने को बढ़ावा देना, निर्यात को मज़बूत करना और कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से 50,000 व्यक्तियों को प्रशिक्षण देना।
- **वस्त्र क्षेत्र से संबंधित योजनाएँ: PM मित्र पार्क योजना, संशोधित प्रौद्योगिकी उन्नयन निधि योजना (ATUFS), एकीकृत वस्त्र पार्क योजना (SITP), समर्थ योजना, पावर-टेक्स इंडिया।**
  - **PM मेगा एकीकृत वस्त्र क्षेत्र और परिधान (PM मित्र) पार्क योजना: SPV** के माध्यम से **PPP मोड** के तहत प्रसंस्करण इकाइयों और डिजाइन केंद्रों जैसी सुविधाओं के साथ **एकीकृत वस्त्र पार्क** बनाने के लिये शुरू किया गया।
    - **5F विजन (*फार्म टू फाइबर टू फैक्ट्री टू फैशन टू फॉरेन*)** से प्रेरित होकर, इसका उद्देश्य प्रतिस्पर्द्धा को बढ़ावा देना, लॉजिस्टिक्स लागत कम करना और वस्त्र क्षेत्र में रोज़गार का सृजन करना है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय विधेयक 2025

लोकसभा ने **त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय विधेयक, 2025** पारित किया, जिसके तहत **सहकारी क्षेत्र** में शिक्षा और प्रशिक्षण को आगे बढ़ाने के लिये **भारत का पहला राष्ट्रीय सहकारी विश्वविद्यालय** किया जाएगा।

- **अमूल के संस्थापक त्रिभुवन काशीभाई पटेल** के नाम पर यह विश्वविद्यालय गुजरात में स्थापित किया जाएगा, जिसमें सहकारी प्रशिक्षण संस्थानों के लिये राष्ट्रव्यापी अधिकार क्षेत्र होगा, जो प्रतिवर्ष 8 लाख लोगों को प्रमाणित करने के लिये डिग्री, डिप्लोमा और PhD पाठ्यक्रम प्रदान करेगा।
  - विश्वविद्यालय को **सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1860** के तहत पंजीकृत किया जाएगा।
- सहकारी विश्वविद्यालय की आवश्यकता क्षेत्र के विशाल आकार के बावजूद, **राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (NCDC)** और **भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ (NCUI)** जैसे संस्थानों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सीमित पहुँच से प्रेरित है।
- **सहकारी क्षेत्र:** इसमें सदस्य-स्वामित्व वाले संगठन शामिल होते हैं जिनका उद्देश्य पारस्परिक सहायता और समान संसाधन वितरण के माध्यम से साझा आवश्यकताओं को पूरा करना, ग्रामीण विकास और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देना है।
  - **संविधान (97 वाँ संशोधन) अधिनियम, 2011** ने संविधान के अनुच्छेद 19(1)(c) में "सहकारी समितियाँ" शब्द को शामिल करके सहकारी समितियाँ बनाने के अधिकार को **मौलिक अधिकार** बना दिया।
  - भारत में सहकारी क्षेत्र को **सहकारी समिति अधिनियम, 1912, बहु-राज्य सहकारी समिति अधिनियम, 2002** द्वारा विनियमित किया जाता है।
    - MSCS (संशोधन) अधिनियम, 2023 बहु-राज्य सहकारी समितियों में शासन और पारदर्शिता को बढ़ाता है।

ट्रांसजेनिक अनुसंधान

पारजीनी अथवा ट्रांसजेनिक अनुसंधान ने महत्त्वपूर्ण रूप से चर्चा का विषय बन गया है, विशेष रूप से वैज्ञानिक अध्ययनों में **ट्रांसजेनिक चूहों** के उपयोग के संबंध में, जिसमें वैज्ञानिक अनुसंधान में प्रगति करने में उनके उपयोग और महत्त्व पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

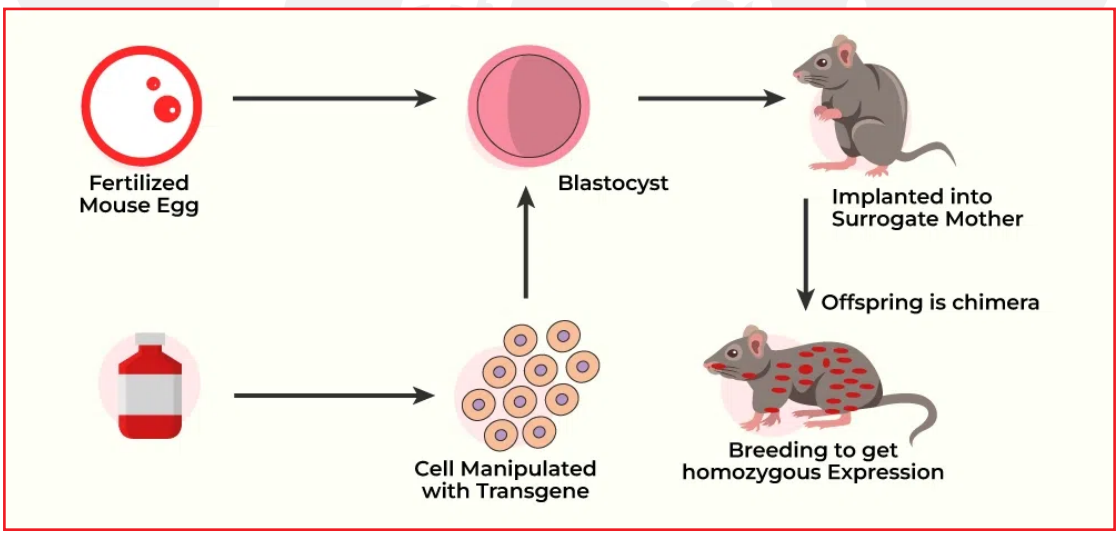

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **ट्रांसजेनिक अनुसंधान:** इसमें प्राय: प्रयोगशाला में एक विशिष्ट जीव में **किसी अन्य प्रजाति** के **बाह्य** डीऑक्सीराइबोन्यूक्लिक एसिड (DNA) अनुक्रमों को शामिल कर जीव के जीनोम में परिवर्तन करना शामिल है।
  - "ट्रांसजेनिक" शब्द इसके मूल शब्द "ट्रांस" से प्राप्त हुआ है जिसका अर्थ है "पार" या "एक से दूसरे तक", और "जेनिक", जो जीन को संदर्भित करता है।
  - इस अनुसंधान क्षेत्र में आनुवंशिक अध्ययन, रोग मॉडलिंग और जैव प्रौद्योगिकी प्रगति के लिये ट्रांसजेनिक जंतुओं, पौधों और सूक्ष्मजीवों का निर्माण शामिल है।
  - **ट्रांसजेनिक चूहों** का उपयोग सामान्यत: आनुवंशिक अध्ययनों में जीन के कार्यों, रोग तंत्रों और **कैंसर अनुसंधान,** आनुवंशिक विकारों और प्रजनन स्वास्थ्य में उनकी भूमिका का पता लगाने के लिये किया जाता है, जिसका जैव प्रौद्योगिकी और कृषि की प्रगति में योगदान है।
- **भारत में ट्रांसजेनिक अनुसंधान:** कपास एकमात्र ट्रांसजेनिक फसल है जिसकी भारत में व्यावसायिक रूप से कृषि की जा रही है।
  - **आनुवंशिक इंजीनियरिंग मूल्यांकन समिति (GEAC) पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय** के अंतर्गत सर्वोच्च निकाय है, जो परिसंकटमय सूक्ष्मजीवों और पुन: संयोजकों के अनुसंधान तथा औद्योगिक उपयोग के पर्यावरणीय प्रभाव का मूल्यांकन करता है।

ऑस्ट्रेलियाई प्रवाल भित्तियों में प्रवाल विरंजन

जलवायु परिवर्तन के कारण **लंबे समय से जारी मरीन हीटवेव** के कारण ऑस्ट्रेलिया के **निंगलू रीफ** और ग्रेट बैरियर रीफ **सामूहिक प्रवाल विरंजन** का सामना कर रहे हैं।

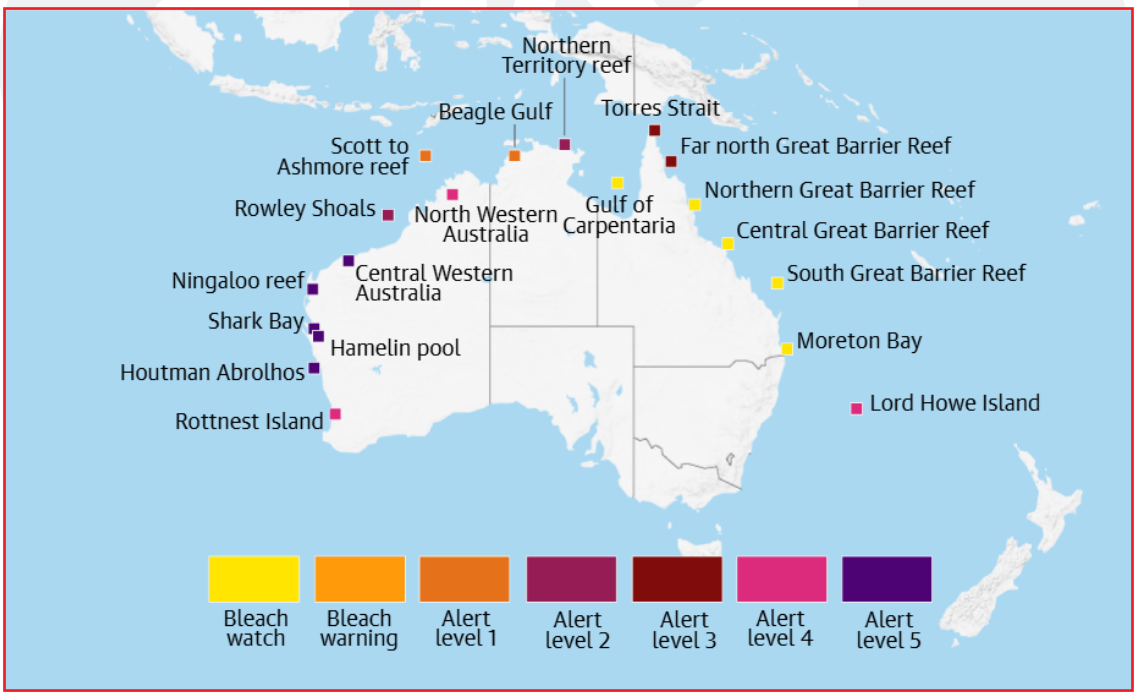

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

Drishti IAS

प्रवाल भित्ति
Coral Reef
(समुद्री वर्षावन)

1 प्रवाल

- जल के नीचे पाई जाने वाली वृहद् संरचनाएँ- समुद्री अकशेरूकीय 'प्रवाल' के कंकालों से निर्मित - व्यक्तिगत रूप से पॉलीप कहलाती हैं
- शैवाल ज़ूजैन्थेले के साथ सहजीवी संबंध (मूंगों के सुंदर रंगों के लिये ज़िम्मेदार)
- समुद्री जैव विविधता का 25% से अधिक

2 हार्ड कोरल बनाम 'सॉफ्ट' कोरल

- हार्ड कोरल/प्रवाल: कठोर एक्सोस्केलेटन जो कि कैल्शियम कार्बोनेट से बनता है- भित्ति के निर्माण के लिये ज़िम्मेदार
- 'सॉफ्ट' कोरल/प्रवाल: भित्ति का निर्माण नहीं करता है

ग्रेट बैरियर रीफ (ऑस्ट्रेलिया)

- दुनिया में सबसे बड़ा कोरल रीफ
- विश्व धरोहर स्थल (1981)
- व्यापक प्रवाल विरंजन

3 भारत में प्रवाल

- कच्छ की खाड़ी, मन्नार की खाड़ी, अंडमान और निकोबार, लक्षद्वीप द्वीप समूह और मालवन के क्षेत्रों में मौजूद

4 महत्त्व

- प्रवाल भित्तियाँ तूफान/क्षरण से तटरेखाओं की रक्षा करती हैं, रोज़गार प्रदान करती हैं, मनोरंजन के लिये भी उपयोगी हैं
- भोजन/दवाओं का स्रोत

5 खतरे

- प्राकृतिक: तापमान, तलछट जमाव, लवणता, pH आदि।
- मानवजनित: खनन, तल पर मत्स्य पालन, पर्यटन, प्रदूषण आदि।

प्रवाल विरंजन/ कोरल ब्लीचिंग

- प्रवालों पर तनाव बढ़ता है-अपने ऊतकों में निवास करने वाले सहजीवी शैवाल ज़ूजैन्थेले को निष्कासित कर देते हैं - प्रवाल सफेद रंग में परिवर्तित हो जाते हैं (विरंजन)
- विरंजित प्रवाल - मृत नहीं –लेकिन, भुखमरी/बीमारी

6 प्रवालों की रक्षा हेतु विभिन्न पहलें

तकनीक:

- क्रायोमेश: -196°C (-320.8°F) पर कोरल लार्वा का संग्रह - प्राकृतिक रूप से इनका पुनर्स्थापन
- बायोरॉक: कृत्रिम भित्तियों का निर्माण जिन पर कोरल तेज़ी से वृद्धि करता है

भारत में पहल:

- राष्ट्रीय तटीय मिशन कार्यक्रम

अन्य:

- अंतर्राष्ट्रीय कोरल रीफ पहल
- वैश्विक कोरल रीफ अनुसंधान एवं विकास त्वरक मंच

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

प्रवाल विरंजन

- यह पर्यावरणीय तनाव, मुख्य रूप से **सागरीय तापमान में वृद्धि** के कारण **प्रवाल के रंग का नष्ट होना (श्वेत हो जाना)** है, जिसके कारण प्रवाल पोषक तत्त्व और रंग प्रदान करने वाले **सहजीवी शैवाल (ज़ूक्सैन्थेला)** को बाहर निकाल देते हैं।
- **वर्ष 2023 के बाद से प्रवाल विरंजन में 83.6% की वृद्धि** हुई है, तथा **81 देशों** में प्रवाल विरंजन की घटना रिपोर्ट की गई है।

ग्रेट बैरियर रीफ:

- **यह विश्व की सबसे बड़ी प्रवाल भित्ति** है, जो **ऑस्ट्रेलिया के क्वींसलैंड से 2,300 किमी** तक फैली हुई है।
  - **वर्ष 1981 से यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल** के रूप में शामिल यह स्थल **डुगोंग और ग्रीन टर्टल** जैसी लुप्तप्राय प्रजातियों का आश्रय स्थल है।

निंगलू रीफ:

- **निंगलू रीफ** (वर्ष 2011 से **यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल**) **ऑस्ट्रेलिया के पश्चिमी तट** पर **300 किलोमीटर लंबी** एक तटीय रीफ है।
  - **फ्रिंजिंग रीफ** वे प्रवाल भित्तियाँ हैं जो **समुद्रतटों** या द्वीपों के किनारे बनती हैं, तथा तट से इनकी दूरी बहुत कम या न के बराबर होती है।
- **निंगलू तट** में **समृद्ध जैवविविधता, गहन सागरीय पर्यावास, कार्स्ट गुफाएँ और केप रेंज परिदृश्य** मौजूद हैं।
  - यहाँ **प्रतिवर्ष 300-500 व्हेल शार्क** और **एक्समाउथ स्पाइनी-टेल्ड गेको, वेस्टर्न नेटेड ड्रैगन** और **वेस्ट कोस्ट बैंडेड स्नेक** जैसी अद्वितीय **स्थानिक प्रजातियाँ** पाई जाती हैं।

राणा सांगा

लोकसभा में 16वीं सदी के **राजपूत राजा राणा सांगा** के बारे में चर्चा हुई।

- **महाराणा संग्राम सिंह (1484-1527),** जिन्हें राणा सांगा के नाम से जाना जाता है, **मेवाड़ के राजपूत शासक और सिसोदिया वंश** के उत्तराधिकारी थे।
- वर्ष 1508 से वर्ष 1528 की अवधि में शासन करते हुए उन्होंने राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात और उत्तर प्रदेश एवं हरियाणा के कुछ क्षेत्रों में अपने साम्राज्य का विस्तार किया।
- राणा सांगा ने **खातोली के युद्ध (1517)** और **धौलपुर के युद्ध (1518)** में **इब्राहिम लोदी** को तथा **गागरोन के युद्ध (1519)** में **सुल्तान महमूद खिलजी द्वितीय को पराजित कर** उत्तर भारत में राजपूत प्रभुत्व स्थापित किया।
- हालाँकि, **बाबर के विरुद्ध खानवा के युद्ध (1527)** में उनकी महत्त्वाकांक्षाओं को बड़ा झटका लगा , जहाँ मुगलों द्वारा तोप का प्रयोग करने और स्वजनों से विश्वासघात के कारण उनकी हार हुई। उनकी विरासत राजपूत वीरता के प्रतीक के रूप में अभी भी अक्षुण्ण बनी हुई है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

KV और JNV में ऐस्बेस्टॉस पर प्रतिबंध

शिक्षा मंत्रालय ने स्वास्थ्य पर **ऐस्बेस्टॉस** के गंभीर खतरों के कारण **केंद्रीय विद्यालयों (KV) और जवाहर नवोदय विद्यालयों (JNV)** के निर्माण और नवीनीकरण में इसके **उपयोग पर प्रतिबंध** लगा दिया है।

- ऐस्बेस्टॉस के परिसंकटमय प्रभावों के कारण 65 से अधिक देशों ने इस पर प्रतिबंध लगा दिया है। इस उपाय का उद्देश्य **बच्चों के लिये कैंसर** मुक्त और हानि रहित अधिगम परिवेश का निर्माण करना है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- **ऐस्बेस्टॉस:** यह प्राकृतिक रूप से पाया जाने वाला **खनिज फाइबर** है जो ऊष्णता और संक्षारण प्रतिरोध के लिये जाना जाता है। इसके छह मुख्य रूपों में से, **क्राइसोटाइल (सफेद ऐस्बेस्टॉस)** निर्माण और ऑटोमोबाइल उद्योग में सर्वाधिक उपयोग में लाया जाता है।
- **स्वास्थ्य प्रभाव:** ऐस्बेस्टॉस **समूह 1 कार्सिनोजेन** है, जो फेफड़ों के कैंसर, मेसोथेलियोमा (फुफ्फुस और पेरिटोनियल अस्तर को प्रभावित करने वाला कैंसर) और दीर्घकालिक श्वसन रोगों का कारण बनता है।
  - ऐस्बेस्टॉस के संपर्क में आने से प्रतिवर्ष 200,000 से अधिक व्यक्तियों की मृत्यु होती है।
- **भारत में ऐस्बेस्टॉस: कारखाना अधिनियम, 1948** के तहत, ऐस्बेस्टॉस का विनिर्माण, संचालन और प्रसंस्करण परिसंकटमय के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
- भारत ने ऐस्बेस्टॉस खनन पर प्रतिबंध लगा दिया है, लेकिन **ऐस्बेस्टॉस-सीमेंट रूफिंग** के लिये **क्राइसोटाइल का आयात और प्रसंस्करण जारी रखा है।**

माता कर्मा बाई पर डाक टिकट

डाक विभाग ने **माता कर्मा की 1009 वीं जयंती** पर एक **स्मारक डाक टिकट** जारी किया।

माता कर्मा

- **कर्मा बाई 11 वीं शताब्दी की संत** और **कृष्ण भक्त** थीं, जिनका जन्म **1017 ई. में झाँसी, उत्तर प्रदेश** में हुआ था।
- वह अपनी **अटूट भक्ति** के लिये पूजनीय हैं और **भगवान कृष्ण को खिचड़ी** चढ़ाने के लिये जानी जाती हैं, यह परंपरा आज भी **पुरी के जगन्नाथ मंदिर** में निभाई जाती है।

जगन्नाथ मंदिर, पुरी

- यह मंदिर **भगवान जगन्नाथ (विष्णु)** को समर्पित है और इसका निर्माण **12 वीं शताब्दी** में **पूर्वी गंग राजवंश** के **अनंतवर्मन चोडगंग देव** द्वारा किया गया था तथा इसका निर्माण **1230 ई. में अनंगभीम देव तृतीय** के शासनकाल में पूरा हुआ था।
- यह **चार धामों** में से एक है और इसे **'यमनिका तीर्थ'** के नाम से जाना जाता है।
- मंदिर में **कलिंग वास्तुकला** का उपयोग किया गया है और प्रवेश द्वार पर **अरुण स्तंभ** स्थापित है, जो मूल रूप से **कोणार्क सूर्य मंदिर** से लिया गया है।
- मंदिर में **रथयात्रा** उत्सव का आयोजन किया जाता है।

पूर्वोत्तर राज्यों में AFSPA का विस्तार

केंद्र सरकार ने **मणिपुर** में **सशस्त्र बल (विशेष शक्तियाँ) अधिनियम (AFSPA), 1958** के तहत **'विक्षुब्ध क्षेत्र' की प्रस्थिति** को अन्य छह माह के लिये बढ़ा दिया है। इसमें पांच ज़िलों के 13 पुलिस थानों के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र शामिल नहीं हैं।

- केंद्र ने **नगालैंड और अरुणाचल प्रदेश** के कुछ हिस्सों में **AFSPA को 30 सितंबर 2025** तक बढ़ा दिया है।
- **AFSPA:** इसे सितंबर 1958 में संसद द्वारा पारित किया गया था और उन **पूर्वोत्तर राज्यों** में बढ़ती हिंसा की रोकथाम करने हेतु इसका कार्यान्वन किया गया था, जिस पर राज्य सरकारें नियंत्रण करने में असमर्थ थीं।
  - इस अधिनियम में **"विक्षुब्ध क्षेत्रों"** में **सशस्त्र बलों के कर्मियों को विशेष शक्तियाँ प्रदान किये जाने का प्रावधान** किया गया है।
  - राज्य और केंद्र सरकार दोनों ही कुछ क्षेत्रों को "विक्षुब्ध" घोषित करने के लिये **अधिसूचना जारी कर सकती हैं,** जिससे सशस्त्र बलों को AFSPA के तहत प्राधिकार मिल जाता है।
  - **विक्षुब्ध क्षेत्रों** में, सशस्त्र बलों के कर्मियों को बल प्रयोग (प्राणहर प्रयास भी) करने, बिना वारंट के गिरफ्तारी करने तथा लोक व्यवस्था बनाए रखने और खतरों से निपटने के लिये बिना वारंट के तलाशी करने का **प्राधिकार** है।
  - AFSPA के अंतर्गत सशस्त्र बलों के कार्मिकों को अधिनियम के तहत की गई कार्रवाई के लिये **विधिक कार्यवाही से संरक्षण प्राप्त है, जब तक कि केंद्र सरकार से पूर्व अनुमति प्राप्त न कर ली जाए।**

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

श्यामजी कृष्ण वर्मा की पुण्यतिथि

प्रधानमंत्री ने **महान स्वतंत्रता सेनानी श्यामजी कृष्ण वर्मा** को उनकी पुण्यतिथि (30 मार्च) पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

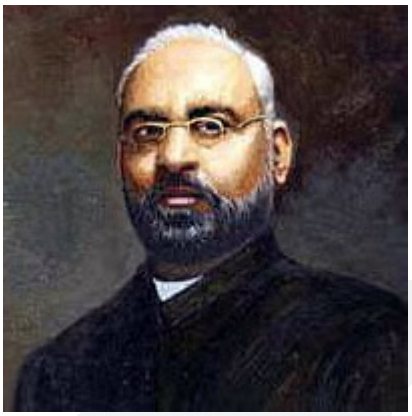

- **श्यामजी कृष्ण वर्मा:** वह एक **भारतीय क्रांतिकारी, देशभक्त, वकील और पत्रकार** थे, जिनका **जन्म 4 अक्तूबर 1857** को **मांडवी, गुजरात** में हुआ था।
  - लंदन में उन्होंने **वर्ष 1905 में इंडियन होमरूल सोसाइटी** की स्थापना की जिसका उद्देश्य युवा भारतीयों को ब्रिटिश शासन के खिलाफ क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल होने के लिये प्रेरित करना था।
  - उन्होंने **इंडिया हाउस** और **द इंडियन सोशियोलॉजिस्ट** *(पत्रिका)* की भी स्थापना की, जो ब्रिटेन में भारतीय छात्रों के बीच **उग्र राष्ट्रवादियों** के लिये एक संगठित बैठक बिंदु के रूप में विकसित हुआ और **भारत के बाहर क्रांतिकारी भारतीय राष्ट्रवाद के सबसे प्रमुख केंद्रों** में से एक बन गया।
  - वह **बॉम्बे आर्य समाज के पहले अध्यक्ष** थे और **वीर सावरकर** से प्रभावित थे।
  - ब्रिटिश आलोचना के जवाब में वर्मा इंग्लैंड से पेरिस चले गए और तत्पश्चात **प्रथम विश्व युद्ध** के दौरान जिनेवा में बस गए, जहाँ वे **30 मार्च 1930 को अपनी मृत्यु** तक रहे।
  - मांडवी के निकट उन्हें समर्पित **क्रांति तीर्थ नामक एक स्मारक** का निर्माण किया गया और वर्ष 2010 में इसका उद्घाटन किया गया।

न्यायाधीशों की संपत्ति का सार्वजनिक प्रकटीकरण

सर्वोच्च न्यायालय (SC) ने संकल्प लिया कि उसके **सभी न्यायाधीश अपनी संपत्ति का विवरण मुख्य न्यायाधीश के समक्ष सार्वजनिक रूप से घोषित करेंगे,** ताकि उसे न्यायालय की वेबसाइट पर प्रकाशित किया जा सके। यह निर्णय दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के आवास पर बड़ी मात्रा में नकदी पाए जाने के बाद लिया गया, जिससे संपत्ति के सार्वजनिक प्रकटीकरण पर विमर्श फिर से शुरू हो गया है।

न्यायाधीशों की संपत्ति के प्रकटीकरण पर सर्वोच्च न्यायालय:

- **कानूनी स्थिति:** न्यायाधीश **कानूनी रूप** से अपनी संपत्ति का सार्वजनिक रूप से प्रकटीकरण करने के लिये **बाध्य नहीं** हैं।
- **वर्ष 1997 का सर्वोच्च न्यायालय का संकल्प:** न्यायाधीशों को अपनी संपत्ति की घोषणा **मुख्य न्यायाधीश** के समक्ष करनी चाहिये, लेकिन **सार्वजनिक रूप से नहीं।**
- **वर्ष 2009 सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय:** सर्वोच्च न्यायालय की वेबसाइट पर **स्वैच्छिक संपत्ति प्रकटीकरण की अनुमति है, लेकिन अनिवार्य नहीं।**
- **सर्वोच्च न्यायालय का वर्ष 2019 का निर्णय:** इसमें अभिनिर्धारित किया गया कि **न्यायाधीशों की संपत्ति व्यक्तिगत जानकारी नहीं है** और उन्हें इसे **आरटीआई अधिनियम** के अंतर्गत लाया गया।
- **उच्च न्यायालय परिदृश्य:** मार्च 2025 तक, **770 में से केवल 97 (13%) उच्च न्यायालय न्यायाधीशों ने** सार्वजनिक रूप से संपत्ति घोषित की है।
  - कई उच्च न्यायालयों (इलाहाबाद, राजस्थान, बॉम्बे, गुजरात, आंध्र प्रदेश, उत्तराखंड) ने **सार्वजनिक प्रकटीकरण का कड़ा विरोध किया** और न्यायाधीशों की संपत्ति के बारे में **आरटीआई अनुरोधों को अस्वीकार कर दिया।**
- **अन्य लोक सेवकों के साथ तुलना: अखिल भारतीय सेवा (आचरण) नियम, 1968** के **नियम 16(1)** के अनुसार लोक सेवकों को अपनी संपत्ति की वार्षिक घोषणा करनी होगी।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **निर्वाचन के दौरान राजनीतिक उम्मीदवारों** के लिये संपत्ति का खुलासा अनिवार्य कर दिया गया (*ADR v. UoI, 2002*)।
- **सांसदों/विधायकों** को अपने **घोषणापत्र अध्यक्ष (लोकसभा) या सभापति** (राज्यसभा) को प्रस्तुत करने होंगे, ताकि जनता तक उनकी पहुँच सुनिश्चित हो सके।
- **केंद्रीय मंत्रियों** को अपनी संपत्ति की घोषणा **प्रधानमंत्री कार्यालय** में करनी होती है, जिसकी जानकारी अक्सर ऑनलाइन प्रकाशित की जाती है।

टाइगर ट्रायम्फ 2025

1 अप्रैल 2025 को, **भारतीय नौसेना** ने **द्विपक्षीय संयुक्त मानवीय सहायता और आपदा राहत (HADR)** जल-थल अभ्यास, **टाइगर ट्रायम्फ 2025** के **चतुर्थ संस्करण** का उद्घाटन किया।

- **दो चरणों में आयोजित होने वाले इस अभ्यास का उद्देश्य** अमेरिका-भारत सामरिक समुद्री सहयोग को मज़बूत करना और उनकी रक्षा साझेदारी को सुदृढ़ करना है।
- **बंदरगाह चरण:** विशाखापत्तनम में आयोजित इस चरण में समुद्र आधारित प्रशिक्षण अभ्यास की योजना बनाने पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा तथा इसमें विशेष ऑपरेशनों तथा **वायु, समुद्री, साइबर और अंतरिक्ष** में मल्टी-डोमेन ऑपरेशनों पर सत्र शामिल होंगे।
- **समुद्री चरण:** द्विपक्षीय सेनाएँ संयुक्त कमान और नियंत्रण केंद्र के माध्यम से **समुद्री, जलस्थलीय और HADR ऑपरेशन** संचालित करेंगी।
  - यह चरण काकीनाडा (आंध्र प्रदेश) में जलस्थलीय लैंडिंग के बाद एक **मानवीय राहत और चिकित्सा प्रतिक्रिया शिविर** (एयर-पोर्टेबल **भीष्म** चिकित्सा उपकरण के साथ) की स्थापना के साथ संपन्न हुआ।
- साइबर और अंतरिक्ष विशेषज्ञों के साथ-साथ तीनों सेनाओं के **विशेष अभियान बल** इस अभ्यास में भाग लेंगे और **एयर-पोर्टेबल भीष्म चिकित्सा उपकरण** का प्रदर्शन करेंगे।
- भारत और अमेरिका के बीच **अन्य संयुक्त अभ्यासों में युद्ध अभ्यास** (सैन्य), **कोप इंडिया** (वायु) और **वज्र प्रहार** शामिल हैं ।

भारत-अमेरिका संबंध:

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 — SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस — SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स — SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप — SCAN ME

नोट :

भारत-चीन संबंधों के 75 वर्ष

1 अप्रैल 2025 के दिन **भारत और चीन** के बीच 1 अप्रैल 1950 को स्थापित **राजनयिक संबंधों के 75 वर्ष** पूर्ण हुए।

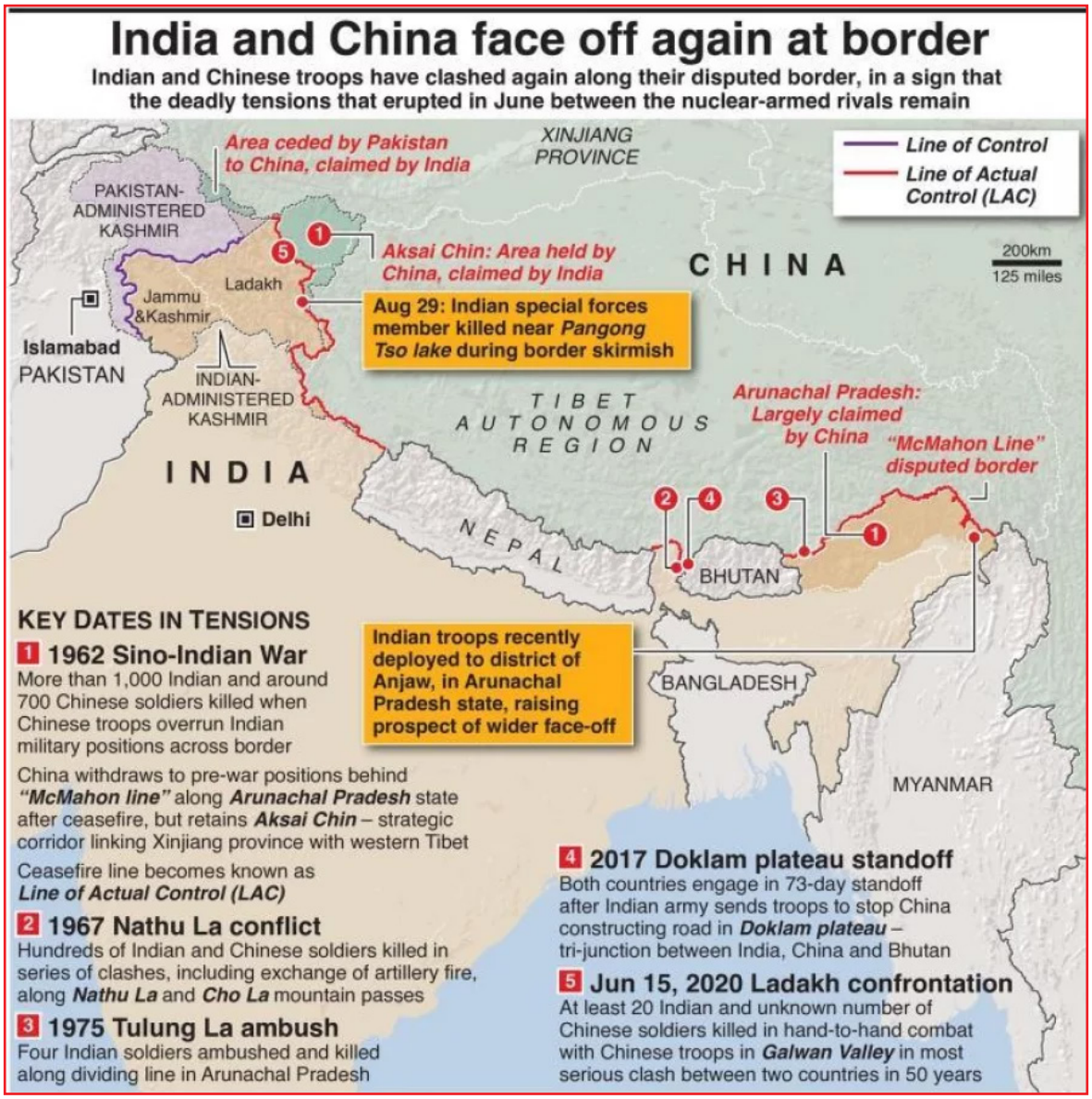

- चीनी राष्ट्रपति के अनुसार भारत-चीन संबंध **"ड्रैगन-एलीफैंट टैंगो"** की भाँति है, जो प्रतिद्वंद्विता के बजाय **सह-अस्तित्व** और **साझा विकास** का प्रतीक है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

भारत-चीन कूटनीति के 75 वर्ष

- भारत-चीन **संबंधों** में **प्राचीन सांस्कृतिक और व्यापारिक विनिमय** की शुरुआत से, जिसमें **सिल्क रोड** के माध्यम से **बौद्ध धर्म** का प्रसार भी शामिल है, **स्वातंत्र्योत्तर (1950 का दशक)** काल के साथ विकास हुआ जो **"हिंदी-चीनी भाई-भाई" भावना** का प्रतीक था।
- **चीन-भारत युद्ध (1962)** के कारण कूटनीतिक गतिरोध उत्पन्न हुआ, लेकिन **1980-2000** के दशक में **1993 के शांति और सौहार्द समझौते, वर्ष 1996 के सैन्य विश्वास निर्माण उपायों (CBM) समझौते** और बढ़ते व्यापार के माध्यम से संबंध सामान्य हो गए।
- भारत और चीन के बीच सुदृढ़ **आर्थिक संबंध** हैं जहाँ वर्ष 2023-24 में द्विपक्षीय व्यापार **118.4 बिलियन अमरीकी डॉलर** रहा और **भारतीय यूनिकॉर्न** में **3.5 बिलियन अमरीकी डॉलर** से अधिक का **निवेश** हुआ।
- **अकादमिक आदान-प्रदान** तथा वर्ष 2025 में आयोजित **टैगोर की शताब्दी संगोष्ठी** जैसे आयोजनों के माध्यम से दोनों देशों के **सांस्कृतिक संबंधों का सुदृढ़ीकरण** होता है।
- बहुपक्षीय रूप से, वे **BRICS, SCO, G-20** में सहयोग करते हैं और **अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA)** जैसी पहलों का समर्थन करते हैं।
- दोनों देशों के प्रमुख मुद्दों में **अनिर्धारित 3,488 किलोमीटर LAC** शामिल है, जिसके कारण **डोकलाम (2017)** और **गलवान (2020)** जैसे संघर्ष निरंतर होते रहे हैं और **PoK** के माध्यम से **चीन के BRI** और **CPEC** संबंधी **रणनीतिक चिंताएँ** हैं।

Fram2 मिशन और ध्रुवीय कक्षा

SpaceX ने **Fram2 मिशन** लॉन्च किया है, जो फ्लोरिडा स्थित NASA के कैनेडी स्पेस सेंटर से **SpaceX क्रू ड्रैगन कैप्सूल** के माध्यम से प्रमोचित किया गया।

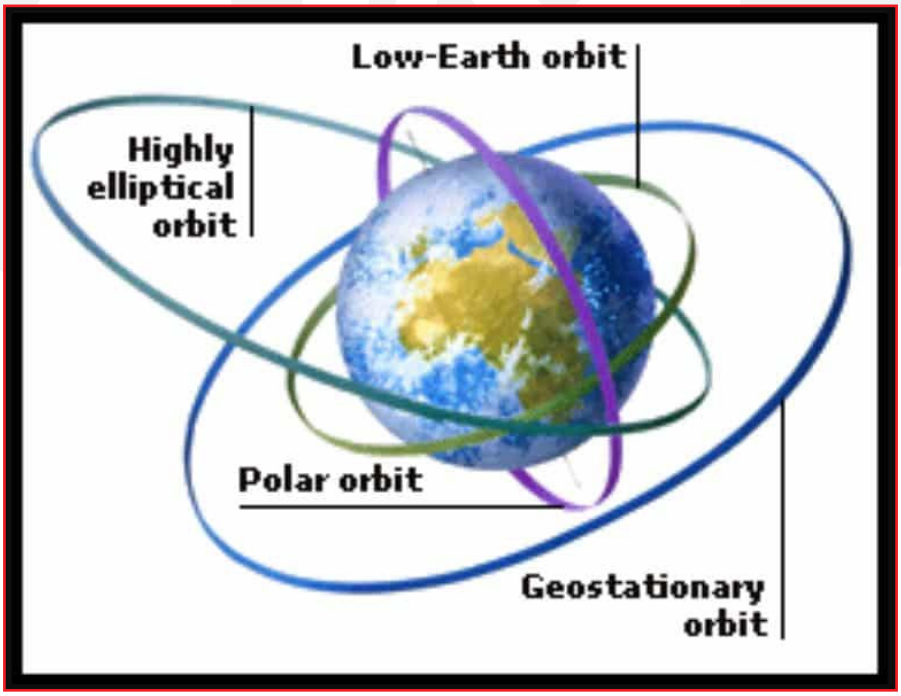

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- यह निजी अंतरिक्ष उड़ान **ध्रुवीय कक्षा** (ऐसा पथ जिस पर मानव द्वारा पहले कभी यात्रा नहीं की गई) **का अनुसरण करने वाला पहला मानव मिशन** है और इसका उद्देश्य **मुक्त उड़ान मिशन के दौरान मानव शरीर पर अंतरिक्ष उड़ान के प्रभाव पर अनुसंधान** करना है।
- **ध्रुवीय कक्षा:** यह एक प्रकार की **निम्न भू कक्षा (200-1000 किमी. ऊँचाई)** है, जहाँ उपग्रह पृथ्वी के चारों ओर पश्चिम से पूर्व की ओर नहीं, बल्कि प्रमुख रूप से **एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव की ओर** (सटीक ध्रुवीय कक्षा से 10 डिग्री तक विचलन हो सकता है) गमन करते हैं।
  - ये **कक्षाएँ वैश्विक भूप्रेक्षण की दृष्टि से आदर्श हैं** क्योंकि वे संपूर्ण धरातल कवरेज प्रदान करती हैं।

ध्रुवीय बनाम विषुवतीय कक्षा से गमन:

पहलू	ध्रुवीय कक्षा	विषुवतीय कक्षा
विकिरण जोखिम	ध्रुवों पर क्षीण चुंबकीय क्षेत्र के कारण **उच्चतर**	पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र द्वारा संरक्षण के कारण निम्न जोखिम
ईंधन की आवश्यकताएँ	**उच्चतर, कोई घूर्णनात्मक वर्धन नहीं, अधिक ऊर्जा-गहन**	**पृथ्वी के पूर्वाभिमुख घूर्णन के** कारण अपेक्षाकृत निम्न आवश्यकता
बचाव और सुरक्षित वापसी	**अधिक जटिल, दूरस्थ ध्रुवीय क्षेत्र**, विलंबित सहायता	**अटलांटिक/प्रशांत** जैसे सरल, प्रमाणित क्षेत्र जहाँ से वापसी संभव है
संचार	ध्रुवों पर चुनौतीपूर्ण, **सीमित ग्राउंड स्टेशन, हाल ही में निराकरण किया गया**	अपेक्षाकृत सरल, **मध्य-अक्षांशीय भू-स्टेशन** अच्छी तरह से समर्थित
पूर्व में उपयोग	**चालक दल के लिये सीमित, उपग्रहों के लिये सामान्य**, पिछली परियोजनाएँ रद्द कर दी गईं	**सामान्य, जैसे, ISS, शटल मिशन**, सुस्थापित

देवराय प्रथम और विजयनगर साम्राज्य

देवराय प्रथम के राज्याभिषेक से संबंधित **15वीं शताब्दी की दुर्लभ ताम्रपत्रों** का बंगलूरू में अनावरण किया गया, जिसमें **संगम राजवंश** और **विजयनगर साम्राज्य** के बारे में महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक विवरण उपलब्ध हैं।

ताम्रपत्र की मुख्य विशेषताएँ:

- **शक 1328 (1406 ई.)** की तिथि वाले, **देवराय प्रथम (1406-1422)** के शासनकाल के ये ताम्रपत्र **संस्कृत, कन्नड़ और नागरी लिपियों** में अंकित हैं, तथा इनमें विजयनगर साम्राज्य के पारंपरिक **वराह प्रतीक** के स्थान पर **वामन मुद्रा** अंकित है।
  - ताम्रपत्र में चंद्र, यदु, संगम और **हरिहर और बुक्का सहित** उनके पाँच पुत्रों से **संगम राजवंश की वंशावली** का भी पता लगाया गया है।
- **राजा देवराय प्रथम (हरिहर के पुत्र) के राज्याभिषेक** के दौरान जारी किये गए ताम्रपत्र भी **उनके राज्याभिषेक की पहले से असत्यापित तिथि** की पुष्टि करते हैं।
  - इसमें ***देवरायपुर-अग्रहार*** नामक **भूमि अनुदान** का भी उल्लेख है।
- **संगम राजवंश:** इस राजवंश ने **विजयनगर साम्राज्य की स्थापना** की और **हम्पी को अपनी राजधानी** बनाकर 1336 से 1485 ई. तक शासन किया।
  - **देवराय प्रथम** राजवंश के एक प्रमुख शासक थे, उनके अलावा **हरिहर प्रथम, हरिहर द्वितीय** और **देवराय द्वितीय** थे।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **इतालवी यात्री निकोलो कोंटी ने देवराय प्रथम के दरबार में आया था।**

- **विजयनगर साम्राज्य: हरिहर प्रथम और बुक्का राय प्रथम** द्वारा स्थापित साम्राज्य (1336-1646) **पर 4 राजवंशों - संगम, सलुव,** तुलुव और **अराविडु** का शासन था ।
  - **तालीकोटा के युद्ध (1565)** में **दक्कन सल्तनत** द्वारा **विजयनगर साम्राज्य की निर्णायक हार** हुई, जिसके परिणामस्वरूप उसका पतन हो गया।

चंद्रयान-3 चैस्ट

भारत के चंद्रयान-3 मिशन का चैस्ट (चंद्रा सरफेस थर्मोफिजिकल एक्सपेरीमेंट) चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के निकट उपसतह तापमान को सफलतापूर्वक मापने वाला पहला उपकरण बन गया।

- **अगस्त 2023** में चंद्रयान-3 की सफल चंद्र लैंडिंग के बाद **विक्रम लैंडर** द्वारा चैस्ट को तैनात किया गया था।
  - चैस्ट **जाँच में 10 तापमान सेंसर लगे हैं जो** इसकी सुई के साथ 1 सेमी की दूरी पर स्थित हैं तथा इसमें हथौड़ा चलाने की बजाय **घूर्णन आधारित तैनाती तंत्र है।**
  - यान सफलतापूर्वक चंद्र सतह में **10 सेमी तक उतरा और सितंबर 2023 तक तापीय डाटा एकत्र किया।**
  - आंकड़ों से पता चला कि दक्षिणी ध्रुव के पास पहले से अनुमानित मात्रा से **अधिक जल बर्फ की उपस्थिति है, जो भविष्य के चंद्र मिशनों के लिये एक महत्त्वपूर्ण खोज है।**

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- **चेस्ट की सफलता का श्रेय इसके घूर्णनशील जाँच तंत्र को दिया गया,** जो पहले के मिशनों में प्रयुक्त हैमरिंग तकनीक की तुलना में अधिक प्रभावी साबित हुआ।

- **पिछले मिशन: ESA का फिले लैंडर (2014)** धूमकेतु 67P पर असुविधाजनक लैंडिंग के कारण MUPUS (सतह और उपसतह विज्ञान के लिये बहुउद्देशीय सेंसर) थर्मल जाँच को तैनात नहीं कर सका।
  - **मंगल ग्रह पर नासा का इनसाइट (2018)** भी हीट फ्लो और फिज़िकल प्रॉपर्टीज पैकेज (HP3) उपकरण के साथ यांत्रिक समस्याओं के कारण उपसतह डाटा एकत्र करने में विफल रहा।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

यूफेआ वायनाडेन्सी

केरल के **पश्चिमी घाट के वायनाड क्षेत्र** में एक नई डैमसेल्फ्लाई (कीट) प्रजाति (***Euphaea wayanadensis***) की खोज की गई है, जो **भारत के जैवविविधता रिकॉर्ड** में एक महत्त्वपूर्ण प्रगति है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 — SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस — SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स — SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप — SCAN ME

नोट :

- **वैज्ञानिक महत्त्व:** यह प्रजाति **केरल की 191वीं *ओडोनेट*** प्रजाति और पश्चिमी घाट में **223वीं दर्ज प्रजाति** है।
- **विशिष्ट विशेषताएँ:** पश्च-पंखों पर लंबा काला धब्बा (विशेष रूप से नर में), इसे दृष्टिगत रूप से विशिष्ट बनाता है।
  - नर डैमसेल्फ्लाई के थोरेक्स भाग में चौड़ी और एकसमान ह्यूमरल एवं एंटीह्यूमरल धारियाँ इसकी पहचान है।
- **आवास संबंधी प्राथमिकताएँ:** यह प्रजाति **सदाबहार और अर्द्ध-सदाबहार वनों** से घिरे क्षेत्रों में **जलीय वनस्पति** के साथ **तेज बहने वाली शैल धाराओं** को पसंद करती है।
  - **शुष्क मौसम (मार्च-अप्रैल)** को छोड़कर वर्ष भर पाया जाने वाला यह पक्षी **अत्यधिक सीमित वितरण** वाला है, जिसके कारण **संरक्षण उपायों की आवश्यकता** है।

डेनमार्क द्वारा ग्रीनलैंड की संप्रभुता की पुष्टि

हाल ही में **डेनमार्क के प्रधानमंत्री** ने ग्रीनलैंड पर कब्ज़े के संबंध में अमेरिका द्वारा प्रस्तावित सुझावों को अस्वीकार कर दिया और यह स्पष्ट किया कि ऐसी **कार्रवाई**, भले ही इसे राष्ट्रीय सुरक्षा के दृष्टिकोण से उचित माना जाए, फिर भी **अस्वीकार्य** है।

- ग्रीनलैंड अमेरिका के लिये सामरिक महत्त्व रखता है, क्योंकि यहाँ **पिटफिक अंतरिक्ष बेस** है, जो **मिसाइल रक्षा के लिये महत्त्वपूर्ण** है तथा **उत्तरी अमेरिका और यूरोप के बीच सबसे छोटे मार्ग पर स्थित** है।
- **ग्रीनलैंड के समृद्ध खनिज संसाधन,** जिनमें **दुर्लभ मृदा खनिज भी शामिल हैं,** अमेरिका की रुचि को आकर्षित करते हैं।
- **ग्रीनलैंड:** यह **विश्व का सबसे बड़ा द्वीप है, जो उत्तरी अमेरिका** और **यूरोप** के बीच **उत्तरी अटलांटिक महासागर** में स्थित है।
  - **इसमें वॉटकिंस रेंज और स्टॉनिंग आल्प्स** जैसी प्रमुख पर्वत श्रृंखलाएँ और **बोर्ग्लम और मेजरक** जैसी नदियाँ हैं।
  - इसकी **जलवायु आर्कटिक है,** जिसमें **80% से अधिक बर्फ (4 किमी. मोटी) है,** कठोर **शीत ऋतु (-50 डिग्री सेल्सियस), लघु ग्रीष्म ऋतु (10-15 डिग्री सेल्सियस)** और **2 महीने तक लगातार दिन का प्रकाश रहता है।**
  - यह **डेनमार्क साम्राज्य** के तहत एक **स्वायत्त क्षेत्र** के रूप में कार्य करता है, जिसमें **स्वशासन और अपनी संसद (*इनत्सिसर्तुत*) है।**

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

श्री हरिचंद ठाकुर की जयंती

प्रधानमंत्री ने **श्री हरिचंद ठाकुर (1812-1878)** को उनकी **214वीं जयंती (27 मार्च 2025)** पर श्रद्धांजलि अर्पित की और **मतुआ धर्म महा मेला 2025** के लिये शुभकामनाएँ दीं।

- **हरिचंद ठाकुर:** हरिचंद **बंगाल** के समाज सुधारक थे, जिन्होंने **नामशूद्र (मतुआ) संप्रदाय की स्थापना** की, जो जाति उत्पीड़न का विरोध करने वाला एक **सुधारवादी वैष्णव आंदोलन** था, जिसने **नामशूद्र, माली और तेली** जैसे **उपांतिकृत समुदायों** को आकर्षित किया।
  - इनका जन्म **बांग्लादेश** के **ओरकांडी** में एक **अनुसूचित जाति (SC)** किसान परिवार में हुआ था। वह **विष्णु/कृष्ण के अवतार के रूप में लोगों के लिये श्रद्धेय** थे।
  - उनके पुत्र **गुरुचंद ठाकुर** ने बाद में मिशनरी **सेसिल सिलास मीड** के साथ मिलकर **चांडालों (निम्न जाति)** को **नामशूद्र** के रूप में पुनर्वर्गीकृत करने का कार्य किया।
- **मतुआ:** यह एक **सामाजिक-धार्मिक समूह** है जो मूल रूप से **पूर्वी पाकिस्तान (वर्तमान बांग्लादेश)** से है, जिनमें से अनेक व्यक्तियों ने **वर्ष 1971 के बांग्लादेश मुक्ति युद्ध** के बाद धार्मिक उत्पीड़न के कारण भारत में शरण ली।
  - **पश्चिम बंगाल की कुल अनुसूचित जाति आबादी** में 17.4% मतुआ समुदाय से है, जो **राजबंशियों** के बाद दूसरा सबसे बड़ा समूह है।
  - **मतुआ धर्म महा मेला** उनकी विरासत का प्रतीक है। इस समुदाय ने **CAA अधिनियम** के कार्यान्वयन को स्वीकार कर लिया है।

ऑडिबल एन्क्लेव और PAL प्रौद्योगिकी

ध्वनि तरंगें **अनुदैर्घ्य** होती हैं, जो **संपीडन और विरलन** के माध्यम से प्रसारित होती हैं, लेकिन वे **विवर्तन** के कारण भी संचरित होती हैं, जिससे **प्रसार** होता है (जो **आवृत्ति के साथ बढ़ता है**), जिससे **शोर भरे वातावरण में किसी विशिष्ट व्यक्ति तक सटीक ध्वनि वितरण कठिन** हो जाता है।

- हालाँकि, **ऑडिबल एन्क्लेव** और **पैरामीट्रिक ऐरे लाउडस्पीकर (PAL)** ध्वनि को **संकीर्ण किरणों** में केंद्रित करके इस समस्या का समाधान करते हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि **केवल लक्षित श्रोता ही इसे सुन सके।**
- **ऑडिबल एन्क्लेव (AE):** ये **दो उच्च आवृत्ति तरंगों** का उपयोग करके निर्मित **ध्वनि के केंद्रित क्षेत्र** हैं, जो अलग-अलग रूप से अश्रव्य होते हैं, लेकिन अरैखिक अंत:क्रियाओं के माध्यम से **विशिष्ट स्थानों पर श्रव्य ध्वनि** उत्पन्न करते हैं।
  - इससे बाहरी व्यवधान के बिना **सटीक ध्वनि वितरण** सुनिश्चित होता है, **गोपनीयता और अनुकूलन** में वृद्धि होती है।
- **PAL:** PAL एक **उच्च दिशात्मक ध्वनि किरण** बनाने के लिये **ऑडियो सिग्नल के साथ संयोजित उच्च आवृत्ति वाली अल्ट्रासोनिक तरंगों** का उपयोग करता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि केवल लक्षित श्रोता ही ऑडियो सुन सकें।
  - वायु में **सेल्फ डिमॉड्यूलेट** होकर वे अवांछित प्रसार को रोकते हुए केंद्रित ध्वनि उत्पन्न करते हैं।
- **PAL और AE के अनुप्रयोग:** PAL और AE का उपयोग **संग्रहालयों, खुदरा व्यापार, सार्वजनिक घोषणाओं, मनोरंजन, सहायक प्रौद्योगिकी और सुरक्षा** में किया जाता है, तथा ये आसपास के क्षेत्रों को प्रभावित किए बिना **सटीक ऑडियो** प्रदान करते हैं।

NITI NCAER राज्य आर्थिक मंच पोर्टल

केंद्रीय वित्त मंत्री ने **राष्ट्रीय अनुप्रयुक्त आर्थिक अनुसंधान परिषद (NCAER)** के सहयोग से **नीति आयोग** द्वारा विकसित **"नीति NCAER राज्य आर्थिक मंच" पोर्टल** लॉन्च किया है।

- **NITI NCAER राज्य आर्थिक मंच पोर्टल:** यह पोर्टल **भारतीय राज्यों के संदर्भ में 30 वर्षों (वर्ष 1990-91 से 2022-23) के आँकड़ों** का एक व्यापक भंडार है जिसमें जनसांख्यिकी, अर्थव्यवस्था, राजकोषीय संकेतक, स्वास्थ्य, शिक्षा और राज्य वित्त पर विशेषज्ञ अनुसंधान शामिल हैं।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

पोर्टल के 4 मुख्य घटक:

- **राज्य रिपोर्ट:** इससे **28 राज्यों के वृहद और राजकोषीय परिदृश्य का सारांश** मिलता है तथा जनसांख्यिकी, आर्थिक संरचना, सामाजिक-आर्थिक और राजकोषीय क्षेत्रों के संकेतकों पर प्रकाश पड़ता है।
- **डाटा रिपोजिटरी:** इसके तहत **पाँच प्रमुख क्षेत्रों** - जनसांख्यिकी, आर्थिक संरचना, राजकोषीय संकेतक, स्वास्थ्य और शिक्षा - के **अंतर्गत वर्गीकृत व्यापक डाटाबेस तक पहुँच** मिलती है।
- **राजकोष और आर्थिक डैशबोर्ड:** इसके तहत प्रमुख आर्थिक चरों के **ग्राफिकल निरूपण और आँकड़ों के साथ सारांश तालिकाओं** तक त्वरित पहुँच मिलती है।
- **अनुसंधान और टिप्पणी :** इसके तहत **राज्य वित्त** तथा राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर **राजकोषीय नीति और वित्तीय प्रबंधन के महत्त्वपूर्ण पहलुओं** पर व्यापक अनुसंधान प्रदान करना शामिल है।

पोर्टल का महत्त्व:

- **उपयोगकर्त्ता अनुकूल एवं तुलनात्मक उपकरण:** यह **राज्यों** की एक दूसरे के साथ एवं राष्ट्रीय औसत के साथ तुलना करने में सक्षम बनाता है।
- **नीति निर्माण हेतु सहायता: ऐतिहासिक रुझानों** और **वास्तविक समय विश्लेषण** के माध्यम से साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण का समर्थन करता है।
- **वन-स्टॉप रिसर्च हब:** यह विद्वानों, नीति निर्माताओं और हितधारकों के लिये समेकित तरीके से दीर्घकालिक डाटा तक पहुँच के क्रम में एक **केंद्रीकृत मंच** के रूप में कार्य करता है।

पिपलापंका बाँध से रुशिकुल्या नदी को खतरा

पिपलापंका में बाँध बनाने की ओडिशा सरकार की पुनर्संचलित योजना का विरोध शुरू हो गया है, क्योंकि स्थानीय लोगों और पर्यावरणविदों ने उद्योगों को लाभ पहुँचाने के लिये **रुशिकुल्या नदी** को खतरे में डालने का आरोप लगाया है।

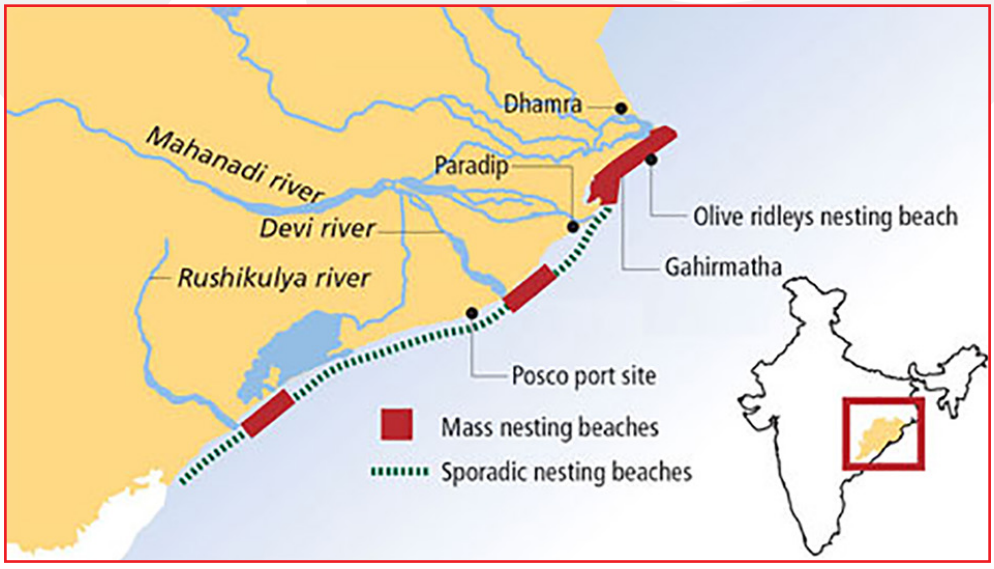

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

रुशिकुल्या नदी:

- रुशिकुल्या नदी **ओडिशा की एक प्रमुख नदी** है, जो मुख्य रूप से **कंधमाल, गंजम और बौध ज़िलों** से होकर बहती है।
- रुशिमाला पहाड़ियाँ **पूर्वी घाट** श्रृंखला की दारिंगबाड़ी पहाड़ियों का हिस्सा हैं।
  - दारिंगबाड़ी, जहाँ नदी का उद्गम होता है, को 'ओडिशा का कश्मीर' कहा जाता है।
  - रुशिकुल्या नदी **अपने मुहाने पर डेल्टा नहीं बनाती** है।
- **जराऊ, बदनदी, बघुआ, धनेई और घोडाहाड़ा** जैसी **सहायक नदियाँ** कभी बारहमासी प्रवाह सुनिश्चित करती थीं, लेकिन अब बाँधों के कारण वे बाधित हो गई हैं।
  - कार्यकर्त्ताओं ने चेतावनी दी है कि **अवैध रेत खनन** और **औद्योगिक परियोजनाओं** ने नदी के स्वास्थ्य को और अधिक खतरे में डाल दिया है।

ओलिव रिडले कछुए की नेस्टिंग साइट:

- नदी के मुहाने पर रुशिकुल्या समुद्र तट स्थित है, जो **ओलिव रिडले कछुओं** के घोंसले (Nesting) के लिये विश्व स्तर पर महत्त्वपूर्ण स्थल है।
  - प्रत्येक वर्ष, जनवरी से मार्च तक, हज़ारों कछुए सामूहिक घोंसले बनाने के लिये आते हैं - इस घटना को **अरिबाडा** के नाम से जाना जाता है।
- कार्यकर्त्ताओं को डर है कि बाँध के कारण बंगाल की खाड़ी से लवणता में वृद्धि होगी तथा मीठे जल की कमी के कारण मछली उत्पादन में कमी आएगी।
  - जलवायु परिवर्तन के कारण बढ़ते तापमान के कारण ओलिव रिडले कछुओं का लिंगानुपात बिगड़ रहा है, जिससे अधिक मादाएँ पैदा हो रहे हैं और प्रजातियों का अस्तित्व खतरे में पड़ रहा है।

डिएगो गार्सिया और चागोस द्वीप समूह

ईरान के साथ बढ़ते तनाव के बीच अमेरिका ने **डिएगो गार्सिया** में छह B-2 स्टील्थ बमवर्षक विमान तैनात किये हैं।

- **हिंद महासागर** में स्थित डिएगो गार्सिया **इस क्षेत्र में एकमात्र प्रमुख अमेरिकी बेस** है, जो एशिया, अफ्रीका और मध्य पूर्व में **सामरिक शक्ति प्रक्षेपण** को सक्षम बनाता है।

चागोस द्वीपसमूह और डिएगो गार्सिया

- **चागोस द्वीपसमूह:**
  - **स्थान:** यह **हिंद महासागर** में **मालदीव** से **500 किमी. दक्षिण में स्थित है** और इसमें **58 द्वीप** हैं।
  - **इतिहास: 18वीं** शताब्दी के अंत में **फ्राँसीसी** लोगों द्वारा **अफ्रीकी और भारतीय श्रमिकों** को **दास बनाकर नारियल के बागानों** में काम करने के लिये यहाँ लाया गया जिससे यह आवासित हुआ।
    - **वर्ष 1814** की पेरिस संधि के तहत, फ्राँस ने **मॉरीशस** सहित **चागोस द्वीपसमूह** को **ब्रिटेन** को सौंप दिया, जिससे इस क्षेत्र पर **ब्रिटिश नियंत्रण** की शुरुआत हुई।
    - **वर्ष 1965** में, ब्रिटेन ने **मॉरीशस** से **चागोस द्वीप समूह** को अलग कर **ब्रिटिश हिंद महासागर क्षेत्र (BIOT)** का निर्माण किया, जिसके बदले में मॉरीशस को 3 मिलियन पाउंड का अनुदान दिया गया।
  - **क्रियोल-भाषी चागोसियन** संबद्ध क्षेत्र के **मूल निवासी** थे, जिन्हें **डिएगो गार्सिया** पर **अमेरिकी सैन्य अड्डा** स्थापित करने के लिये **1960-70 के दशक** में जबरन विस्थापित कर दिया गया था।
    - वर्ष 1968 में मॉरीशस के स्वतंत्र होने के बावजूद, **चागोस द्वीपसमूह** पर **ब्रिटिश का नियंत्रण** रहा।
- **डिएगो गार्सिया:**
  - यह **कोरल एटोल** और **चागोस द्वीपसमूह** का सबसे बड़ा द्वीप है, जो **भूमध्य रेखा से 7 डिग्री दक्षिण में स्थित है**। इसे **वर्ष 1967** में **अमेरिका और ब्रिटेन** को पट्टे पर दिया गया था और **वर्ष 1986** में इसे एक सैन्य अड्डा बना दिया गया।
  - वर्ष 2024 में, **ब्रिटेन** ने **चागोस द्वीप समूह की संप्रभुता मॉरीशस को हस्तांतरित करने पर सहमति व्यक्त की,** जबकि **डिएगो गार्सिया पर सैन्य अड्डे का नियंत्रण 99 वर्ष के पट्टे** के तहत बरकरार रखा।
    - यह निर्णय वर्ष 2019 में **अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय (ICJ)** द्वारा **मॉरीशस के संप्रभुता** दावों का समर्थन करने वाले निर्णय के बाद लिया गया।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **खाड़ी युद्ध, इराक और अफगानिस्तान युद्धों** तथा 9/11 के बाद के अभियानों में इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है- जिससे हिंद-प्रशांत क्षेत्र का सामरिक महत्त्व उजागर होता है।

फ्लोराइड संदूषण

उत्तर प्रदेश के सोनभद्र के भूजल में **फ्लोराइड** की अधिकता के कारण सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट बढ़ गया है।

- **फ्लोराइड:** यह एक अत्यधिक प्रतिक्रियाशील तत्त्व है जो प्रकृति में तात्त्विक रूप में नहीं पाया जाता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

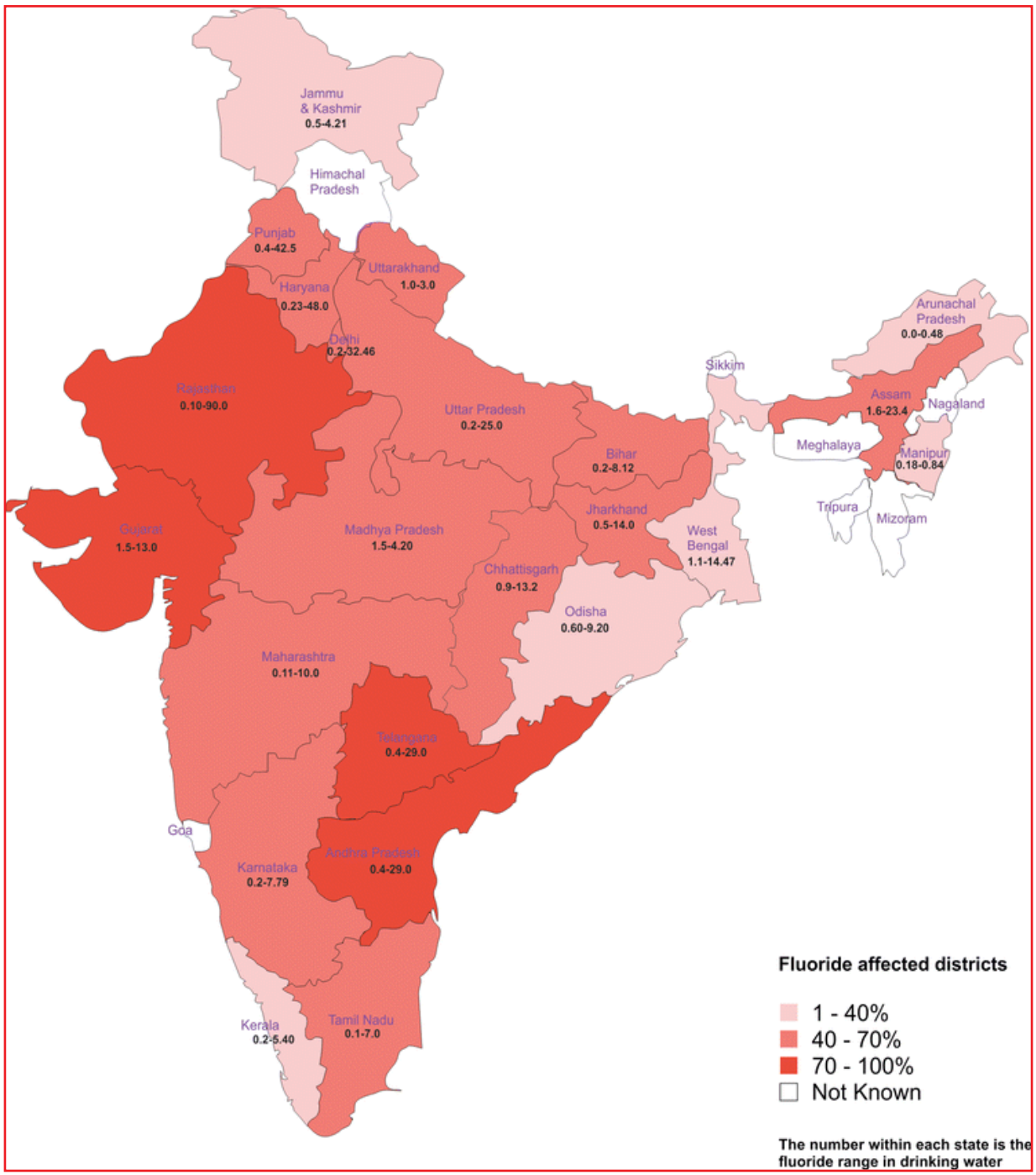

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- यह **भू-पर्पटी** में **0.3 ग्राम/किग्रा.** मात्रा में पाया जाता है तथा फ्लोरस्पार, क्रायोलाइट और फ्लोरापेटाइट जैसे खनिजों में फ्लोराइड (ऑक्सीकरण अवस्था -1) के रूप में पाया जाता है।

- **प्रमुख उपयोग:** इसका एल्युमीनियम उत्पादन में तथा **स्टील और ग्लास फाइबर उद्योगों में फ्लक्स** के रूप में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। इन्हें फॉस्फेट उर्वरकों, ईंटों, टाइलों और सिरेमिक के निर्माण के दौरान भी उपयोग में लाया जाता है।
  - फ्लोरोसिलिक एसिड, सोडियम हेक्साफ्लोरोसिलिकेट और सोडियम फ्लोराइड जैसे यौगिकों का उपयोग **नगरपालिका जल के फ्लोराइडीकरण** में किया जाता है।
- **स्वास्थ्य पर प्रभाव:** फ्लोराइड के दोहरे प्रभाव होते हैं, यह अल्प मात्रा में लाभदायक होता है **(दंत क्षय से सुरक्षा)**, लेकिन अधिक मात्रा में हानिकारक होता है, जिसके कारण **दंत फ्लोरोसिस** (मुख्य रूप से बच्चों में दाँतों के इनेमल का धब्बेदार होना) और **कंकालीय फ्लोरोसिस** (अस्थि/जोड़ों की समस्याएँ) होता है।
  - **भारतीय मानक ब्यूरो** के अनुसार, जल में फ्लोराइड का सुरक्षित स्तर 1 से 1.5 मिलीग्राम/लीटर (मिलीग्राम प्रति लीटर) है, इससे अधिक स्तर स्वास्थ्य के लिये खतरनाक माना जाता है।
- **भारत में फ्लोराइड नियंत्रण की योजनाएँ:** भारत ने 11वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान **राष्ट्रीय फ्लोरोसिस निवारण और नियंत्रण कार्यक्रम (NPPCF)** शुरू किया। इसके अतिरिक्त, **जल जीवन मिशन** का उद्देश्य सुरक्षित पेयजल सुनिश्चित करना है।

महाबोधि मंदिर

अखिल भारतीय बौद्ध मंच (AIBF) के नेतृत्व में बौद्ध भिक्षुओं ने **बोधगया के महाबोधि मंदिर (महाविहार)** में विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया है और **बोधगया मंदिर अधिनियम (BTA), 1949** को निरस्त करने की मांग की है।

अधिनियम के निम्नलिखित प्रावधान चर्चा में हैं:

- BTA ने **हिंदुओं और बौद्धों के बराबर प्रतिनिधित्व** वाली **आठ सदस्यीय प्रबंधन समिति** बनाई।
  - इसने **ज़िला मजिस्ट्रेट को पदेन अध्यक्ष** नियुक्त किया गया।
- चूँकि ज़िला मजिस्ट्रेट का पद पारंपरिक रूप से हिंदू बहुसंख्यकों का रहा है, इसलिये **समिति में कार्यात्मक रूप से हिंदू बहुसंख्यक** ही रहे।
  - बौद्ध संस्थाएँ लंबे समय से **महाबोधि मंदिर पर पूर्ण नियंत्रण की मांग कर रही हैं।**

महाबोधि मंदिर:

- **सम्राट अशोक** ने बोधि वृक्ष की पूजा की और **तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में महाबोधि मंदिर का निर्माण** कराया।
  - यह मंदिर **पाल राजवंश** के दौरान एक बौद्ध स्थल बना रहा और **629 ई. में चीनी यात्री ह्वेन त्सांग** ने भी यहाँ का दौरा किया था।
  - 13वीं शताब्दी में **बख्तियार खिलजी के आक्रमण** के बाद इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म का पतन हो गया।
- वर्तमान मंदिर **5वीं-6वीं शताब्दी ई. (उत्तर गुप्त काल)** का है; यह पूर्णत: ईंटों से निर्मित है।
  - **1590 में एक हिंदू भिक्षु ने बोधगया मठ** की स्थापना की और मंदिर को हिंदुओं के नियंत्रण में ले लिया।
  - स्वतंत्रता के बाद, **BTA (वर्ष 1949)** ने हिंदू प्रमुख से नियंत्रण एक **साझा प्रबंधन समिति को हस्तांतरित** कर दिया।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **स्थापत्य विशेषताएँ:** शिखर, वज्रासन (डायमंड थ्रोन), चैत्यगृह, आमलक, कलश, नक्काशीदार वेदिकाएँ बुद्ध प्रतिमाएँ, वोटिव स्तूप।
- **सात पवित्र स्थलों में अनिमेषलोचन चैत्य, रत्नचक्र, कमल तालाब, अजपाल निग्रोध वृक्ष, रत्नघर चैत्य** आदि शामिल हैं, ये बुद्ध के ज्ञान प्राप्ति के बाद के सात सप्ताह का प्रतीक है।

बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय

8 अप्रैल को **बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय** की पुण्यतिथि मनाई गई और 19वीं शताब्दी के दौरान भारतीय साहित्य, राष्ट्रवाद और **बंगाल** की सांस्कृतिक जागृति में उनके योगदान का स्मरण किया गया।

- **प्रारंभिक जीवन:** बंकिम का जन्म 27 जून 1838 को **पश्चिम बंगाल** के **नैहाटी** में हुआ। वह एक मेधावी छात्र थे और अपनी पढ़ाई पूरी करने के उपरांत ब्रिटिश सेवा में शामिल हो गए।
- **राष्ट्रवाद और साहित्य:** ***आनंदमठ*** (अंग्रेज़ों द्वारा प्रतिबंधित) जैसी कृतियों के माध्यम से, जिसमें **संन्यासी विद्रोह का वर्णन** है, बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
  - भारत का राष्ट्र गीत, **वंदे मातरम, बंकिम के आनंदमठ** से लिया गया है, जो स्वतंत्रता आंदोलन का प्रतीक बन गया।
- **प्रसिद्ध कृतियाँ: राजमोहन्स वाइफ (1864)** (भारतीय द्वारा अंग्रेज़ी में रचित पहला उपन्यास)। उनके उपन्यास **दुर्गेशनंदिनी (1865), कपालकुंडला (1866) और विषबृक्ष (1873)** में महिला अधिकार, बाल विवाह और जातिगत भेदभाव जैसे सामाजिक मुद्दों पर चर्चा की गई।
  - इसके अतिरिक्त, उनकी उल्लेखनीय धार्मिक रचनाओं में ***कृष्ण चरित्र*** भी शामिल है।
- **बंगाल पुनर्जागरण में भूमिका:** बंकिम ने साहित्यिक पत्रिका **बंगदर्शन (1872)** की शुरुआत की, जिसका **बंगाली राष्ट्रवाद** को बढ़ावा देने में अहम योगदान रहा।
  - बंगदर्शन का बंकिम का दृष्टिकोण शिक्षित और अशिक्षित वर्गों के बीच की विषमताओं को कम करना और बांग्ला अस्मिता को बढ़ावा देना था।
  - **बंगदर्शन** से अत्यधिक प्रभावित **रबींद्रनाथ टैगोर** ने बाद में पत्रिका का पुन: प्रकाशन शुरू किया और इसके माध्यम से राष्ट्रवादी लेखों का प्रसार किया।

विदेशी निधियों की वैधता पर सीमाएँ

गृह मंत्रालय (MHA) ने **पूर्व अनुमति** के माध्यम से प्राप्त **विदेशी निधियों** पर अपनी नीति को संशोधित किया है तथा इसकी वैधता को चार वर्ष तक सीमित कर दिया है, जबकि पूर्व की नीति के अनुसार निधियों का उपयोग तब तक किया जा सकता था, जब तक कि पूरी राशि व्यय नहीं हो जाती।

- **नवीन आदेश:** यह विनिर्दिष्ट करता है कि विदेशी अंशदान प्राप्त करने की वैधता अनुमोदन तिथि से तीन वर्ष होगी तथा उपयोग अवधि चार वर्ष होगी।
  - पहले से स्वीकृत आवेदनों के लिये, चार वर्ष की सीमा गृह मंत्रालय के नवीनतम आदेश की तिथि से लागू होगी, भले ही स्वीकृत परियोजना की समयावधि तीन वर्ष से अधिक हो।
- **समय सीमा का प्रभाव:** समय-सीमा का अनुपालन न करने पर **विदेशी अंशदान (विनियमन) अधिनियम, 2010 (FCRA)** का उल्लंघन माना जाएगा, जिसके परिणामस्वरूप दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 — SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस — SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स — SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप — SCAN ME

नोट:

- **FCRA पूर्व अनुमति:** FCRA के तहत, ऐसे संस्थान जो केंद्र सरकार के साथ पंजीकृत नहीं हैं (गैर-सरकारी संगठन- NGOs) को विदेशी अभिदाय/अंशदान स्वीकार करने के लिये पूर्व अनुमति लेनी होगी। यह अनुमति धन के उद्देश्य तथा स्रोत के लिये विशिष्ट है।
  - **संस्थाओं को सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1860, भारतीय ट्रस्ट अधिनियम, 1882,** या **कंपनी अधिनियम, 2013** जैसे कानूनों के तहत पंजीकृत होना चाहिये।
    - FCRA लेन-देन के लिये **भारतीय स्टेट बैंक, नई दिल्ली** में बैंक खाता होना अनिवार्य है।
  - इसके अतिरिक्त, **प्राप्तकर्त्ता भारतीय संगठन का मुख्य पदाधिकारी** दाता संगठन का हिस्सा नहीं होना चाहिये तथा **शासी निकाय के 75% सदस्य** विदेशी दाता या उसके परिवार से जुड़े नहीं होने चाहिये।

यूरेनियम संवर्द्धन की अपकेंद्रित्र प्रक्रिया

यूरेनियम संवर्द्धन का उपयोग **U-235 सांद्रता को वांछित स्तर तक बढ़ाने के लिये किया जाता है।**

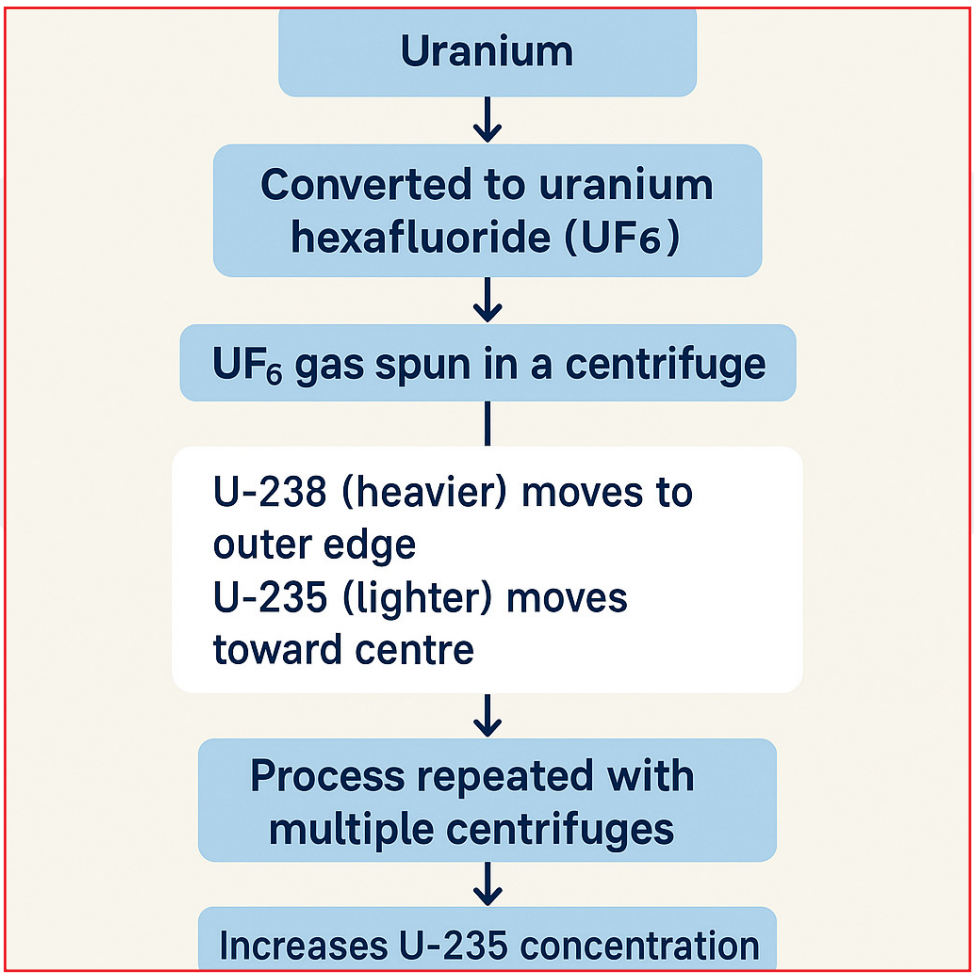

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **संवर्द्धन की आवश्यकता:** प्राकृतिक यूरेनियम में **99.3% U-238 और 0.7% U-235** होता है। **परमाणु रिएक्टरों को 3-20% U-235** की आवश्यकता होती है, जबकि **परमाणु हथियारों** को लगभग **90% U-235** की आवश्यकता होती है।
  - **20% से अधिक** संवर्द्धित यूरेनियम को **अत्यधिक संवर्द्धित** माना जाता है।
- **यूरेनियम संवर्द्धन की अपकेंद्रित्र (Centrifuge) प्रक्रिया:**
  - इस विधि में, यूरेनियम को सबसे पहले **यूरेनियम हेक्साफ्लोराइड (UF_6)** नामक गैस में परिवर्तित किया जाता है।
    - UF_6 यूरेनियम का **एकमात्र गैसीय रूप** है जो अपकेंद्रित्र पृथक्करण के लिये उपयुक्त है।
  - यूरेनियम के दो मुख्य समस्थानिक हैं **U-238 (भारी)** और **U-235 (हल्के और परमाणु रिएक्टरों/हथियारों में प्रयुक्त)**, जिनका **द्रव्यमान अंतर 1.27%** है।
  - जब UF_6 गैस को **अत्यंत उच्च गति (लगभग 50,000 rpm)** पर अपकेंद्रित्र (Centrifuge) के अंदर घुमाया जाता है, तो **भारी U-238 बाहरी किनारे पर चला जाता है** तथा **हल्का U-235 केंद्र के समीप** रहता है।
    - यह प्रक्रिया **अनेक अपकेंद्रित्रों (Centrifuges) में बार-बार की जाती है,** जिससे अंतिम उत्पाद में **U-235 की सांद्रता क्रमशः बढ़ती जाती** है।
- **अपकेंद्रित्र डिजाइन:**
  - अपकेंद्रित्र (Centrifuge) का **रोटर कक्ष हल्के, मज़बूत पदार्थों, जैसे कार्बन फाइबर,** से बना होता है, जो इसे बिना टूटे **उच्च दबाव और गति** को सहन करने में सक्षम बनाता है।

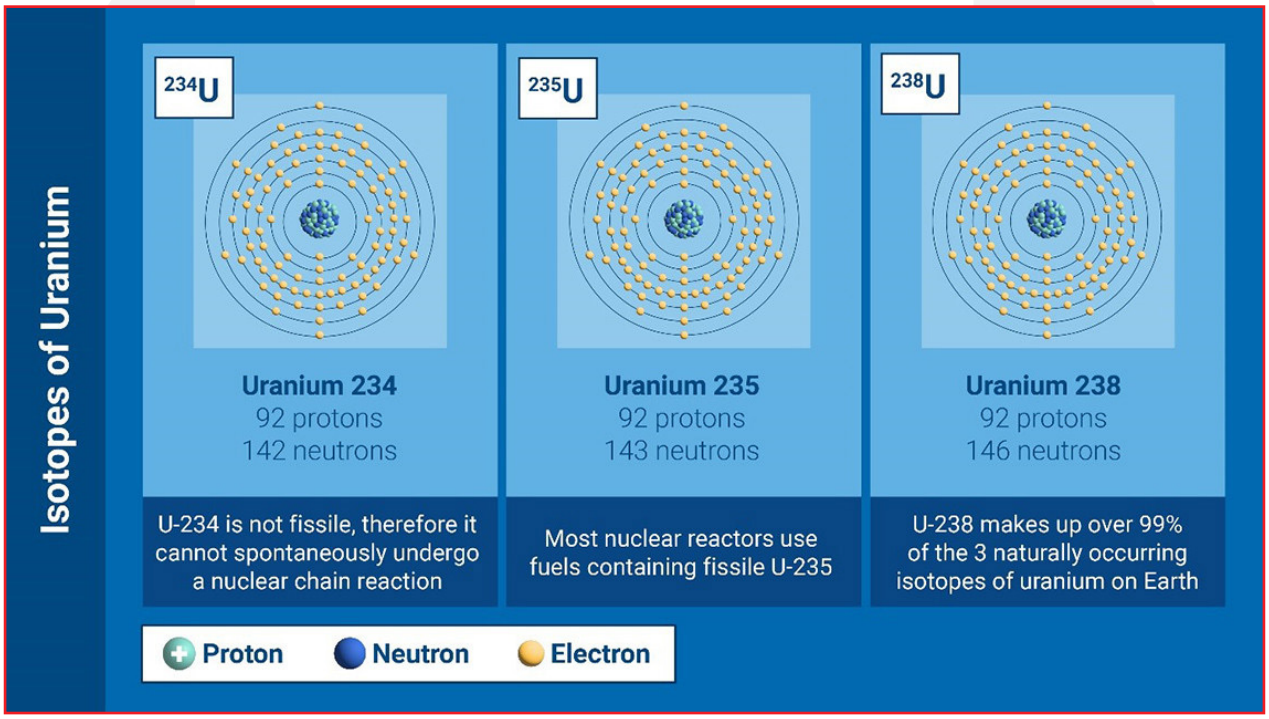

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

उद्योगों के लिये "ब्लू श्रेणी"

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) ने उद्योगों के लिये एक संशोधित वर्गीकरण प्रणाली शुरू की है, जिसमें आवश्यक पर्यावरणीय सेवाओं के लिये एक नई **"ब्लू श्रेणी"** शामिल है, जिसका उद्देश्य अपशिष्ट प्रबंधन और बायोमाइनिंग जैसे क्षेत्रों को प्रोत्साहित करना है।

- **वर्गीकरण पद्धति:** यह वर्गीकरण **CPCB के प्रदूषण सूचकांक (PI)** पर आधारित है, जो वायु, जल और अपशिष्ट प्रदूषकों को ध्यान में रखते हुए उद्योगों को उनकी प्रदूषण क्षमता के आधार पर वर्गीकृत करता है। श्रेणियों में **रेड (PI > 80), ऑरेंज (55 ≤ PI < 80), ग्रीन (PI < 25)** और ब्लू (आवश्यक पर्यावरणीय सेवाओं के लिये) शामिल हैं।
- **ब्लू श्रेणी:** इसमें लैंडफिल रखरखाव, बायोमाइनिंग और अपशिष्ट से ऊर्जा संयंत्र जैसे उद्योगों को शामिल किया गया है। पर्यावरण प्रबंधन हेतु प्रोत्साहन के रूप में उन्हें संचालन हेतु **सहमति हेतु दो वर्ष का विस्तार** दिया जाएगा।
  - **उच्च PI (97.6)** के बावजूद, **अपशिष्ट-से-ऊर्जा संयंत्रों** को उनके द्वारा प्रदान की जाने वाली आवश्यक पर्यावरणीय सेवा के कारण ब्लू श्रेणी में रखा गया है।
  - CBG (संपीड़ित बायोगैस) संयंत्र, अपने फीडस्टॉक के आधार पर, ब्लू श्रेणी की स्थिति के लिये भी पात्र हैं।
- **CPCB:** यह एक वैधानिक संगठन है, जिसका गठन जल (प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम, 1974 के तहत किया गया है। इसके अलावा, CPCB को वायु (प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम, 1981 के तहत शक्तियाँ और कार्य सौंपे गए हैं।
  - यह पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 के अंतर्गत पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को तकनीकी सेवाएँ प्रदान करता है।

प्रदूषण सूचकांक (PI)	औद्योगिक क्षेत्र की श्रेणी
PI ≥ 80	लाल (Red)
55 ≤ PI < 80	नारंगी (Orange)
25 ≤ PI < 55	हरा (Green)
PI < 25	सफेद (White)

कश्मीर में वसंत ऋतु का आगमन

कश्मीर की विशिष्ट कृषि-जलवायु परिस्थितियों में विविध प्रकार के स्थानिक पौधों, विशेषकर **वसंत ऋतु में खिलने वाले पौधों** की संवृद्धि होती है, जो घाटी की जैवविविधता और सांस्कृतिक विरासत की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं।

- **विशिष्ट कृषि-जलवायु परिस्थितियाँ:** कश्मीर की तुंगीय भिन्नता (1,600 मीटर से 4,500 मीटर) के कारण यहाँ विविध प्रकार के वसंत पुष्प खिलते हैं, जैसे ***Colchicum luteum*** (वीर कौम), ***Sternbergia vernalis*** (गौल टूर) और ***Viburnum grandiflorum*** (कुलमंश), जो यहाँ की अत्यधिक शीत ऋतु और मृदु वसंत के कारण फलते-फूलते हैं।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **पारिस्थितिक और सांस्कृतिक महत्त्व:** ये **वसंत ऋतु के फूल** फलों के पेड़ों के परागण के लिये **आवश्यक परागणकों** को सहायता प्रदान करके पारिस्थितिकी तंत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
  - इनका सांस्कृतिक महत्त्व भी है, क्योंकि इनका औषधीय उपयोग किया जाता है तथा कश्मीरी लोककथाओं में भी इनका विवरण है।
- **खतरे:** असंवहनीय विकास, वनोन्मूलन और मानवीय अतिक्रमण से इन वसंतकालीन फूलों को खतरा है।
  - जलवायु परिवर्तन के कारण फूलों के प्रतिरूप में बदलाव आ रहा है, जिससे समय से पहले फूल खिल रहे हैं और प्राकृतिक ऋतुनिष्ठ चक्र बाधित हो रहा है।
  - हालाँकि ये पुष्प महत्त्वपूर्ण हैं किंतु वसंत ऋतु में खिलने वाले फूलों के लिये कोई समर्पित संरक्षण कार्यक्रम नहीं हैं। वर्तमान में इनका संरक्षण **सलीम अली** जैसे राष्ट्रीय उद्यानों और **गुलमर्ग वन्यजीव अभयारण्य** जैसे वन्यजीव अभयारण्यों द्वारा किया जाता है।

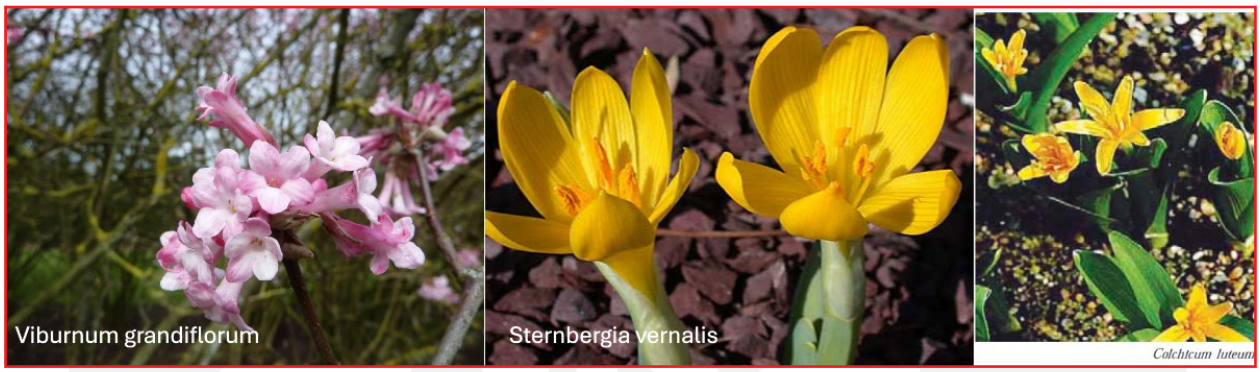

इंडिया स्किल्स एक्सेलेरेटर

कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय (MSDE) ने **विश्व आर्थिक मंच (WEF)** के सहयोग से **"इंडिया स्किल्स एक्सेलेरेटर (ISA)" पहल** का शुभारंभ किया।

- ISA एक राष्ट्रीय सार्वजनिक-निजी सहयोग मंच है जिसका उद्देश्य भारत के कौशल पारिस्थितिकी तंत्र में जटिल चुनौतियों का समाधान करने के लिये **अंतर-क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देना है, जिसमें नवाचार, ज्ञान साझाकरण और नीति सुधार** पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
- यह भारत के **जनसांख्यिकीय लाभांश** का समर्थन करती है तथा इसका उद्देश्य भारत को विश्व की **कौशल राजधानी** बनाना है।
- 65% संगठनों ने कौशल अंतराल को एक प्रमुख बाधा बताया है, इस पहल का उद्देश्य समावेशी अपस्किलिंग, रीस्किलिंग और शिक्षा को उद्योग की ज़रूरतों के साथ संरेखित करके इन अंतरालों को कम करना है।
- **वैश्विक संरेखण:** इस पहल में वैश्विक रोज़गार बाज़ार में प्रतिस्पर्द्धात्मकता बनाए रखने के लिये विश्व आर्थिक मंच की **'भविष्य की नौकरियों की 2025 रिपोर्ट'** से प्राप्त अंतर्दृष्टि के साथ संरेखित करने पर भी विचार किया गया है।

डायर वुल्फ

अमेरिका-स्थित **बायो-टेक्नोलॉजी** कंपनी (कोलोसल बायोसाइंसेज) ने दावा किया है कि उसने आनुवंशिक रूप से ऐसे **भेड़िये के शावकों (रोमुलस, रेमुस और खलीसी)** को तैयार किया है, जिनमें लंबे समय से विलुप्त हो चुके डायर वुल्फ (एनोसायन डायरस) के गुण मौजूद हैं।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

आनुवंशिक रूप से तैयार किये गए भेड़िये के शावक:

- वैज्ञानिकों ने **13,000 से 72,000 वर्ष** पुराने डायर वुल्फ जीवाश्मों से प्राप्त प्राचीन **DNA** का उपयोग कर सफेद कोट और मोटे फर जैसे गुणों की पहचान की।
- डायर वुल्फ के जीनोम की तुलना **आधुनिक कैनिडाए (जैसे भेड़िये, सियार, लोमड़ी)** से करने पर उन्हें **ग्रे वुल्फ के साथ 99.5% DNA** समानता मिली।
- **CRISPR** तकनीक का उपयोग करते हुए उन्होंने **ग्रे वुल्फ की कोशिकाओं में 20 जीन स्थलों** को संपादित किया, इन्हें **पालतू कुत्तों की अंडाणु कोशिकाओं** से मिलाया और **भ्रूणों को कुत्तों के गर्भाशयों** में प्रत्यारोपित किया।
  - 8 प्रत्यारोपणों में से **3 आनुवंशिक रूप से परिवर्तित शावकों** का जन्म 62 दिन की गर्भावस्था के बाद हुआ।
- **विलुप्त हो चुके ग्रे वुल्फ से भिन्नता:**
  - जीन-संपादित शावक **विलुप्त डायर वुल्फ के सटीक आनुवंशिक प्रतिरूप नहीं** हैं। ग्रे वुल्फ से **99.5% DNA समानता** होने के बावजूद, **लाखों बेस पेयर में अंतर** मौजूद हैं।
  - इस प्रयोग ने **पुन:निर्मित जानवरों को डायर वुल्फ** के रूप में वर्गीकृत किया है, जो **मॉरफोलॉजिकल स्पीशीज़ कॉन्सेप्ट** (morphological species concept) पर आधारित है, जो कि **सटीक आनुवंशिक या विकासवादी वंशावली पर नहीं, बल्कि शारीरिक समानता पर आधारित था।**

डायर वुल्फ

- **ये विशाल प्रागैतिहासिक कुत्तेनुमा जीव थे,** जो लगभग 13,000 वर्ष पहले विलुप्त हो गये थे।
- **दक्षिणी कनाडा और अमेरिका के मूल निवासी** ये जानवर **आधुनिक ग्रे वुल्फ** से बड़े होते थे, इनकी ऊँचाई लगभग 3.5 फीट, लंबाई 6 फीट से अधिक और वज़न लगभग 68 किलोग्राम तक होता था, और संभवत: **इनका कोट सफेद रंग** का होता था।
- **ये बाइसन और घोड़ों जैसे बड़े जानवरों का शिकार करते थे, ऐसा** माना जाता है कि इनके विलुप्त होने का कारण **शिकार की कमी और मानवीय हस्तक्षेप था।**

अंतर-संसदीय संघ की 150वीं सभा

लोकसभा अध्यक्ष ने **भारतीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल** के साथ **उज़्बेकिस्तान के ताशकंद** में आयोजित **अंतर-संसदीय संघ (IPU) की 150 वीं बैठक** में भाग लिया।

अंतर-संसदीय संघ (IPU)

- **वर्ष 1889** में स्थापित **अंतर-संसदीय संघ, संसदीय कूटनीति के माध्यम से शांति** को बढ़ावा देने वाला **राष्ट्रीय संसदों का वैश्विक संगठन** है।
  - इसका **मुख्यालय जिनेवा** में है, इसमें **182 संसद सदस्य** और **15 सहयोगी सदस्य (वर्ष 2025)** हैं।
  - **मुख्य रूप से सदस्यों के योगदान से वित्त पोषित**, इसका नारा है: **"फॉर डेमोक्रेसी। फॉर एवरीवन।"**
- **उद्देश्य:** इसका उद्देश्य **संसदों को जन आकांक्षाओं को पूरा करने के लिये सशक्त बनाकर** लोकतांत्रिक **शासन, संवाद** और **क्षमता निर्माण** को बढ़ावा देना है।
- **IPU असेंबली:** यह इसका प्रमुख वैधानिक निकाय है, जो **लोकतंत्र, मानवाधिकार, शांति और सतत विकास** पर प्रस्तावों पर चर्चा करने और उनका अंगीकरण करने के लिये **वर्ष में दो बार बैठक** आयोजित करता है।
- **150वें IPU संबंधी प्रमुख तथ्य:** भारत ने नारी शक्ति वंदन अधिनियम के माध्यम से समावेशी लोकतंत्र पर ज़ोर दिया, **'वसुधैव कुटुंबकम'** जैसे मूल्यों को बढ़ावा दिया, **उज़्बेकिस्तान, इज़रायल और कज़ाकिस्तान** के साथ **नियमित संसदीय आदान-प्रदान** का प्रस्ताव रखा एवं **ताशकंद** में **पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री** को श्रद्धांजलि अर्पित की।

जलवायु परिवर्तन पर भारत का पहला स्टेशन

भारत ने जम्मू-कश्मीर के **नत्थाटॉप** में **हिमालयी उच्च तुंगता वायुमंडलीय और जलवायु अनुसंधान केंद्र** का उद्घाटन किया है, जो **वैश्विक जलवायु विज्ञान** की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

हिमालयी उच्च तुंगता वायुमंडलीय और जलवायु अनुसंधान केंद्र

- **रणनीतिक अवस्थिति:** यह **केंद्र नत्थाटॉप** में समुद्र तल से **2,250 मीटर** की ऊँचाई पर स्थित है, जिसका निर्धारण इसकी **स्वच्छ वायु और न्यूनतम प्रदूषण** के कारण किया किया गया है।
  - जो इस केंद्र को **उच्च सटीकता वाले वायुमंडलीय और जलवायु माप** के लिये आदर्श बनाता है।
- **अनुसंधान क्षेत्र:** यह केंद्र मेघ निर्माण, **एरोसोल अंतर्क्रिया** और मौसम पैटर्न पर **अत्याधुनिक अध्ययन** की सुविधा प्रदान करेगा।
- **आइस-क्रंच:** इस उद्घाटन के साथ **भारत-स्विस संयुक्त अनुसंधान परियोजना,** आइस-क्रंच **(उत्तर-पश्चिमी हिमालय में हिम के न्यूक्लिएन कण और मेघ संघनन नाभिक गुण)** का शुभारंभ हुआ।
  - यह अध्ययन **आइस-न्यूक्लियेटिंग कणों (INP)** और **मेघ संघनन नाभिक** (ठोस/तरल रूप में सूक्ष्म निलंबित कण,) का अवबोधन करने पर केंद्रित है, जो इस क्षेत्र में जलवायु मॉडलिंग और वर्षा प्रतिरूप की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं।
- **महत्त्व:** इससे **जलवायु विज्ञान** के क्षेत्र में भारत का नेतृत्व सुदृढ़ होगा और इससे **वैश्विक जलवायु लक्ष्यों** को पूरा करने के प्रयासों में सहायता मिलेगी, जिसमें देश की **नेट-ज़ीरो उत्सर्जन (वर्ष 2070 तक)** के प्रति प्रतिबद्धता भी शामिल है।

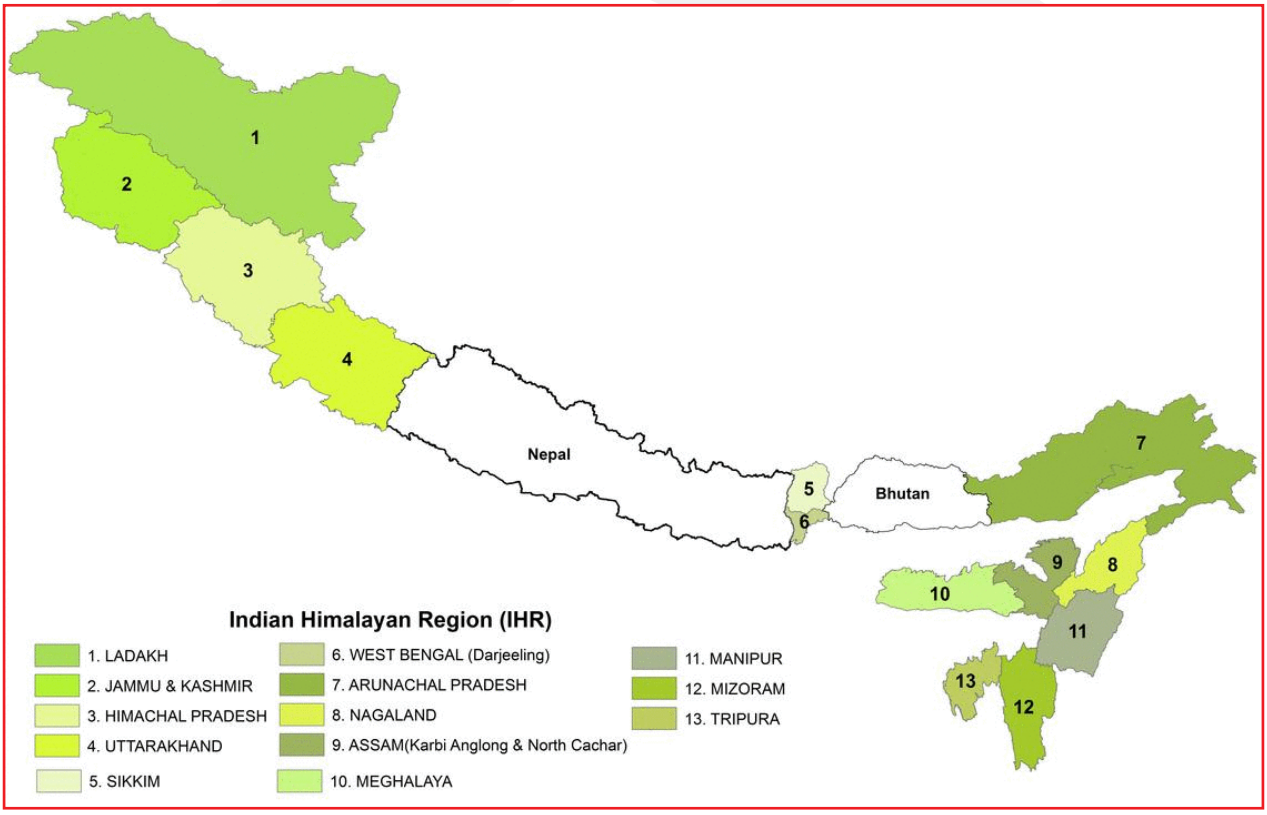

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

नौसैनिक अभ्यास इंद्र-2025

भारत और रूस के बीच **द्विपक्षीय नौसैनिक अभ्यास इंद्र-2025 का 14 वाँ संस्करण चेन्नई** में आयोजित किया गया।

इंद्र 2025

- यह **दो चरणों** में आयोजित किया गया:
  - **चेन्नई** में हार्बर फेज़, जिसमें **विशेषज्ञों का आदान-प्रदान, जहाज़ का दौरा और खेल** शामिल हैं।
  - **बंगाल की खाड़ी** में सी फेज़, जिसमें **सामरिक युद्धाभ्यास,** वायुरोधी संचालन और हेलीकॉप्टर लैंडिंग जैसे **उन्नत अभ्यास** शामिल हैं।
- इस अभ्यास में **पेचंगा, रेज्की, अलदार त्सिडेंझापोव** जैसे रूसी जहाज़ों और भारतीय युद्धपोतों - **राणा, कुठार और P-8I एयरक्राफ्ट** ने भाग लिया।

इंद्र अभ्यास

- यह **वर्ष 2003** से नियमित रूप से आयोजित किया जाने वाला **द्विपक्षीय नौसैनिक अभ्यास** है।
- इसका उद्देश्य **समुद्री खतरों का मुकाबला करना,** वैश्विक शांति और स्थिरता को बढ़ावा देना तथा संयुक्त अभियानों को मज़बूत करना है।
- यह **भारत-रूस रक्षा संबंधों** की पुष्टि करता है, **सामूहिक समुद्री सुरक्षा** को बढ़ाता है, तथा **नियम-आधारित समुद्री व्यवस्था** के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

भारत के अन्य संयुक्त नौसैनिक अभ्यास

अभ्यास	देश
मालाबार	भारत, अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया
वरुण	भारत, फ्राँस
ला पेरोस	भारत, ऑस्ट्रेलिया, संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्राँस, जापान और यूनाइटेड किंगडम
सी ड्रैगन	भारत, अमेरिका, जापान, कनाडा, दक्षिण कोरिया
कोंकण	भारत, यूनाइटेड किंगडम
AIME और IMDEX	भारत, आसियान देश
ब्राइट स्टार	भारत, 34 देश
SALVEX	भारत, अमेरिका
SLINEX	भारत, श्रीलंका
समुद्र शक्ति	भारत, इंडोनेशिया
अल-मोहद अल-हिंदी	भारत, सऊदी अरब
भारत - फ्राँस - UAE त्रिपक्षीय अभ्यास	भारत, फ्राँस, संयुक्त अरब अमीरात
भारत - फ्राँस - UAE त्रिपक्षीय PASSEX	भारत, फ्राँस, संयुक्त अरब अमीरात
KOMODO	भारत, संयुक्त (36 देश)
AUSINDEX	भारत, ऑस्ट्रेलिया
SIMBEX	भारत, सिंगापुर

दौलताबाद किला

महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजीनगर ज़िले में दौलताबाद किले में लगी आग के बाद **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** ने हुई क्षति का आकलन शुरू कर दिया है।

- **महत्त्व:** मूल रूप से **इसे देवगिरि (देवताओं की पहाड़ी)** कहा जाता था। **14वीं** शताब्दी में **मुहम्मद बिन तुगलक** ने जब अपनी राजधानी यहाँ स्थानांतरित की तो इसका नाम बदलकर दौलताबाद कर दिया गया।
  - यह स्थल **यादवों, तुगलकों, बहमनी, निजामशाही, मुगलों** और **हैदराबाद के निजामों** से पहले **मराठों** सहित कई राजवंशों की राजधानी रहा है।
  - यह एक **यूनेस्को-नामांकित विरासत स्थल** है जो अपने ऐतिहासिक, वास्तुशिल्प और पारिस्थितिकी महत्त्व के लिये जाना जाता है।
- **वास्तुकला की उत्कृष्टता:** दौलताबाद किला तीन स्तरों पर **अंबरकोट, महाकोट और कालाकोट** में खाइयों, बुर्जों तथा लोहे के नुकीली दरवाजों से घिरा हुआ है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **इसमें अंधेरी** नामक एक घातक सुरंग है , जिसका उपयोग आक्रमणकारियों को फंसाने और उन पर हमला करने के लिये किया जाता था।
- स्मारक एवं संरचनाएँ:
  - **चाँद मीनार (1435 ई.):** कुतुबमीनार के अनुरूप निर्मित इंडो-इस्लामिक शैली का विजय टॉवर।
  - किले के भीतर स्थित **भारत माता मंदिर, कुतुबुद्दीन मुबारक** के शासनकाल (1318 ई.) के दौरान पहले जामा मस्जिद था।
  - **चीनी महल (** एक भव्य महल) को औरंगजेब ने जेल में बदल दिया।
- **तोपखाना और तोपें:** यह किला **लगभग 288 तोपों से सुसज्जित** था इनमें एक उल्लेखनीय तोप **औरंगजेब की मेंढा** थी जिसे **किला शिकन (किला तोड़ने वाला)** भी कहा जाता था, जो सैन्य शक्ति का प्रतीक थी।

WMO द्वारा वर्ष 2024 की सूची से हरिकेन के नाम हटाना

विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO) ने वर्ष 2024 में होने वाली अपूरणीय क्षति के कारण चार हरिकेन बेरिल, हेलेन, मिल्टन और जॉन को अपनी अटलांटिक और पूर्वी प्रशांत हरिकेन सूचियों से हटा दिया है, जिससे संबंधित आघात और संवेदनशीलता के कारण उनका पुन: उपयोग अनुपयुक्त हो गया है।

- **बेरिल** अब तक का सबसे **प्रारंभिक श्रेणी-5 हरिकेन** (157 मील प्रति घंटे से अधिक की गति वाली पवनें) बन गया, जिसने **कैरीबियाई क्षेत्र** को बुरी तरह प्रभावित किया।
- **हेलेन और मिल्टन** के कारण **संयुक्त राज्य अमेरिका** में विनाशकारी क्षति हुई, जबकि **जॉन** के कारण **मैक्सिको** में गंभीर बाढ़ आई।
- WMO ने अटलांटिक में प्रतिस्थापन के रूप में **ब्रायना, होली और मिगुएल** को और पूर्वी प्रशांत क्षेत्र में जेक को चुना है। जब तक कि अत्यधिक प्रभाव के कारण उन्हें हटा न दिया जाए, चक्रवातों के नाम प्रत्येक छह वर्ष में प्रयुक्त किये जाते हैं।
- **भारत में चक्रवातों का नामकरण:** भारत बंगाल की खाड़ी और अरब सागर में आने वाले चक्रवातों के लिये एक बार की नामकरण प्रणाली (One-Time Naming System) का उपयोग करता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- जब वायु की गति **34 नॉट** या उससे अधिक हो जाती है, तो चक्रवातों को नाम दे दिया जाता है, तथा इन नामों का कभी भी पुन: उपयोग नहीं किया जाता, भले ही चक्रवात किसी अन्य क्षेत्र में चला जाए।
  - **भारतीय मौसम विभाग** तटीय देशों की ओर से **उष्णकटिबंधीय चक्रवात क्षेत्रीय निकाय** के साथ समन्वय में चक्रवातों का नामकरण करता है, जिसमें **13 देश** (भारत, बांग्लादेश, मालदीव, म्याँमार, पाकिस्तान, श्रीलंका, ओमान, थाईलैंड, ईरान, कतर, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और यमन) शामिल हैं।

अगस्त्यमलाई बायोस्फीयर रिज़र्व

सर्वोच्च न्यायालय ने **गैर-वानिकी गतिविधियों** और **अतिक्रमण** की पहचान करने के उद्देश्य से **केंद्रीय अधिकार प्राप्त समिति (CEC)** को **अगस्त्यमलाई भू-परिदृश्य** का विस्तृत सर्वेक्षण करने का निर्देश दिया है।

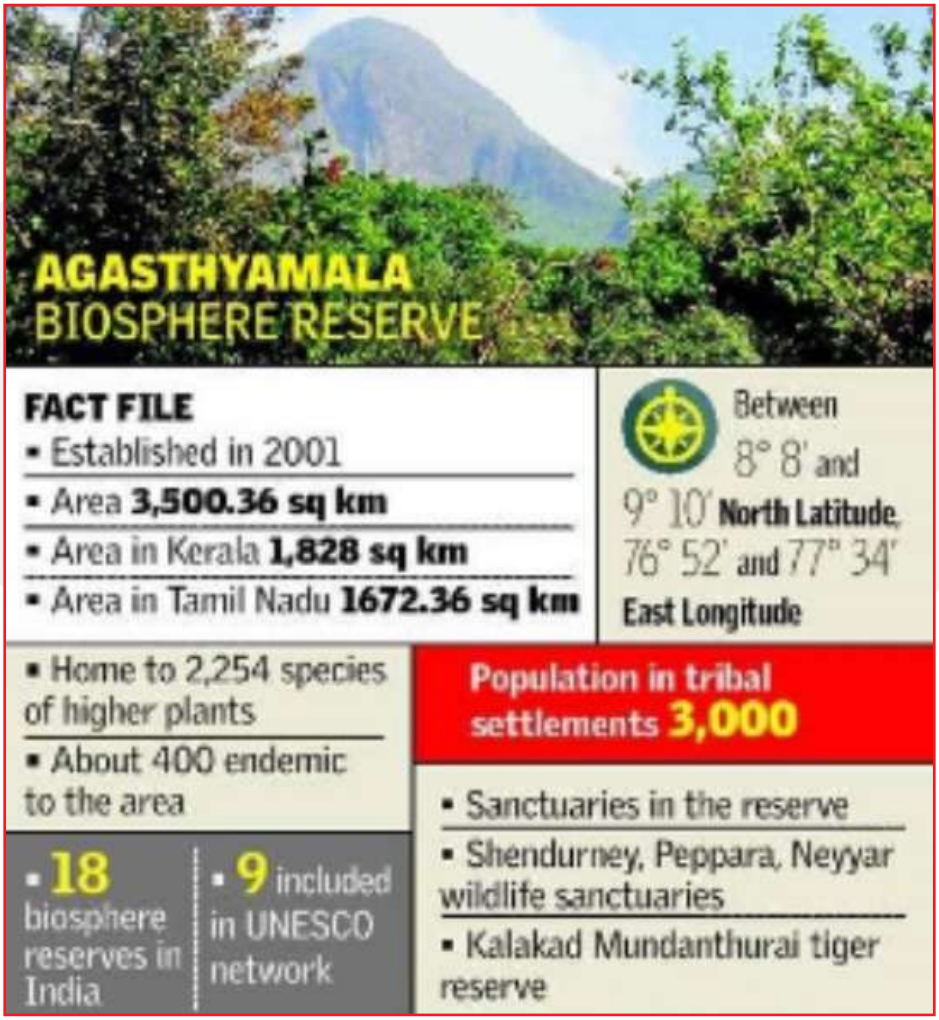

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- **सर्वेक्षण का उद्देश्य:** उन सभी गैर-वानिकी गतिविधियों की पहचान करना जो **वन संरक्षण अधिनियम, 1980** और **वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972** जैसे सांविधिक अधिनियमों का उल्लंघन हैं।
  - वन क्षरण की सीमा को उजागर करने के लिये तुलनात्मक वन आवरण डेटा उपलब्ध कराना।
- **सर्वेक्षण के अंतर्गत प्रमुख क्षेत्र:**
  - **पेरियार टाइगर रिज़र्व**
  - **श्रीविल्लीपुतूर ग्रिज़ल्ड गिलहरी वन्यजीव अभयारण्य**
  - **मेघमलई वन्यजीव अभयारण्य**
  - **तिरुनेलवेली वन्यजीव अभयारण्य**
- **अगस्त्यमलाई:** यह **UNESCO** द्वारा मान्यता प्राप्त 3,500 वर्ग किलोमीटर के बायोस्फीयर रिज़र्व का हिस्सा है।
  - यह पश्चिमी घाट के सुदूर दक्षिणी भाग में **तमिलनाडु और केरल तक विस्तृत** है।
  - नीलक्कुरिंजी फूल, जो 12 वर्ष में एक बार खिलता है, इसी भू-परिदृश्य में पाया जाता है।
  - इस क्षेत्र में **लायन-टेल्ड मेकाक**, **बंगाल टाइगर**, नीलगिरि मार्टन, नीलगिरि तहर, मालाबार स्पाइनी डोरमाउस, ग्रेट पाइड हॉर्नबिल, गौर (भारतीय बाइसन), **स्लॉथ भालू** पाए जाते हैं।
  - इस क्षेत्र में स्थानीय समुदाय, विशेषकर **कानी जनजाति** निवास करती है।

भारत में ओलिव रिडले कछुए

एक अध्ययन के अनुसार हिंद महासागर में पाए जाने वाले **ओलिव रिडले कछुए** विश्व के प्राचीनतम कछुओं में से हैं।

- **मुख्य निष्कर्ष:** हिंद महासागर के ऑलिव रिडले पूर्व में जलवायु में हुए परिवर्तनों के बावजूद जीवित बचे रहे, जबकि अटलांटिक और **प्रशांत महासागर क्षेत्र** के कछुए लगभग 300,000-400,000 वर्ष पहले उनसे अलग हो गए थे।
  - यह उस पूर्व मान्यता के विपरीत है जिसके अनुसार पनामा इस्तमुस के निर्माण के कारण मध्य अमेरिकी कछुए प्राचीनतम हैं।
- **ऑलिव रिडले (*Lepidochelys olivacea*):** यह ***सरीसृप वर्ग*** और ***चेलोनीडी कुल*** से संबंधित है, यह समुद्री कछुओं की सबसे छोटी प्रजाति है, जो अपने **जैतून अथवा भूरे-हरे रंग** और हृदयाकार आवरण से पहचानी जाती है।
  - ऑलिव रिडले सर्वाहारी होते हैं और अरिबाडा नामक सामूहिक नीडन क्रिया करते हैं, जिसमें अनेकों मादा कछुए एक साथ नीडन करती हैं।
    - वे प्रशांत महासागर से भारतीय सागर में 9,000 किमी. तक प्रवास करते हैं, दिसंबर से मार्च के बीच 1-3 बार नीडन करते हैं तथा प्रत्येक समूह में लगभग 100 अंडे देते हैं।
  - **प्रमुख नीडन स्थल: ओडिशा** का **गहिरमाथा** और **रुशिकुल्या** ओलिव रिडले कछुओं के लिये विश्व के सबसे बड़े नीडन स्थलों में से हैं। वर्ष 2024 में, इन नीडन स्थलों पर 1.3 मिलियन से अधिक कछुओं ने अंडे दिये, जो वर्ष 2023 में 1.15 मिलियन के पूर्व रिकॉर्ड से भी अधिक था।
    - भारत में अन्य महत्त्वपूर्ण नीडन स्थलों में ओडिशा में देवी नदी का मुहाना और अंडमान द्वीप समूह शामिल हैं।
  - **खतरे:** मत्स्यन के उपकरणों में बाईकैच, अवैध शिकार, पर्यावास का ह्रास और प्लास्टिक प्रदूषण। जलवायु परिवर्तन के कारण बढ़ते तापमान और समुद्र के जल स्तर में होने वाली वृद्धि से नीडन और आहार उपलब्धता सीमित हो जाती है।
  - **संरक्षण स्थिति: वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972** (अनुसूची 1), **IUCN रेड लिस्ट** (सुभेद्य), और **CITES** (परिशिष्ट I)

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

ओलिव रिडले कछुए

ओलिव रिडले' कछुए क्या हैं?

- ये कछुए **माँसाहारी** होते हैं और इनका ये नाम इनके **जैतून के रंग के कवच (पृष्ठवर्म)** के कारण पड़ा है।
- वे अपने **अद्वितीय सामूहिक नीडन** के लिये प्रसिद्ध हैं, जिसे **'अरिबदा' कहा जाता है,** जहाँ हज़ारों मादाएँ अंडे देने के लिये एक ही समुद्र तट पर एकत्र होती हैं।

पर्यावास:

- यह **प्रशांत, अटलांटिक और हिंद महासागर के उष्ण जल में पाए जाते हैं।**
- ओडिशा का **गहिरमाथा समुद्री अभयारण्य** समुद्री कछुओं के **विश्व के सबसे बड़े रॉकरी** (प्रजनन करने वाले पशुओं का एक समूह) के रूप में जाना जाता है।

संरक्षण की स्थिति:

- वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972: अनुसूची 1
- IUCN रेड लिस्ट: असुरक्षित
- CITES: परिशिष्ट I

- **ओलिव रिडले कछुओं के संरक्षण हेतु नई पहल:**
  - **ऑपरेशन ओलिविया:** प्रत्येक वर्ष, 1980 के दशक की शुरुआत में शुरू किया गया **भारतीय तटरक्षक बल का" ऑपरेशन ओलिविया"** ओलिव रिडले कछुओं की संरक्षित करने में सहायता करता है, क्योंकि वे नवंबर से दिसंबर तक **प्रजनन और घोंसले बनाने के लिये** ओडिशा तट पर एकत्र होते हैं।
    - यह अवैध मत्स्यन की गतिविधियों को भी नियंत्रित करता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

पनामा नहर

अमेरिका और पनामा ने एक नए **रक्षा और सुरक्षा समझौते का अधिकरण** पूरा किया है जिसका उद्देश्य **पनामा नहर** पर **चीन के बढ़ते प्रभुत्व को कम करना** है।

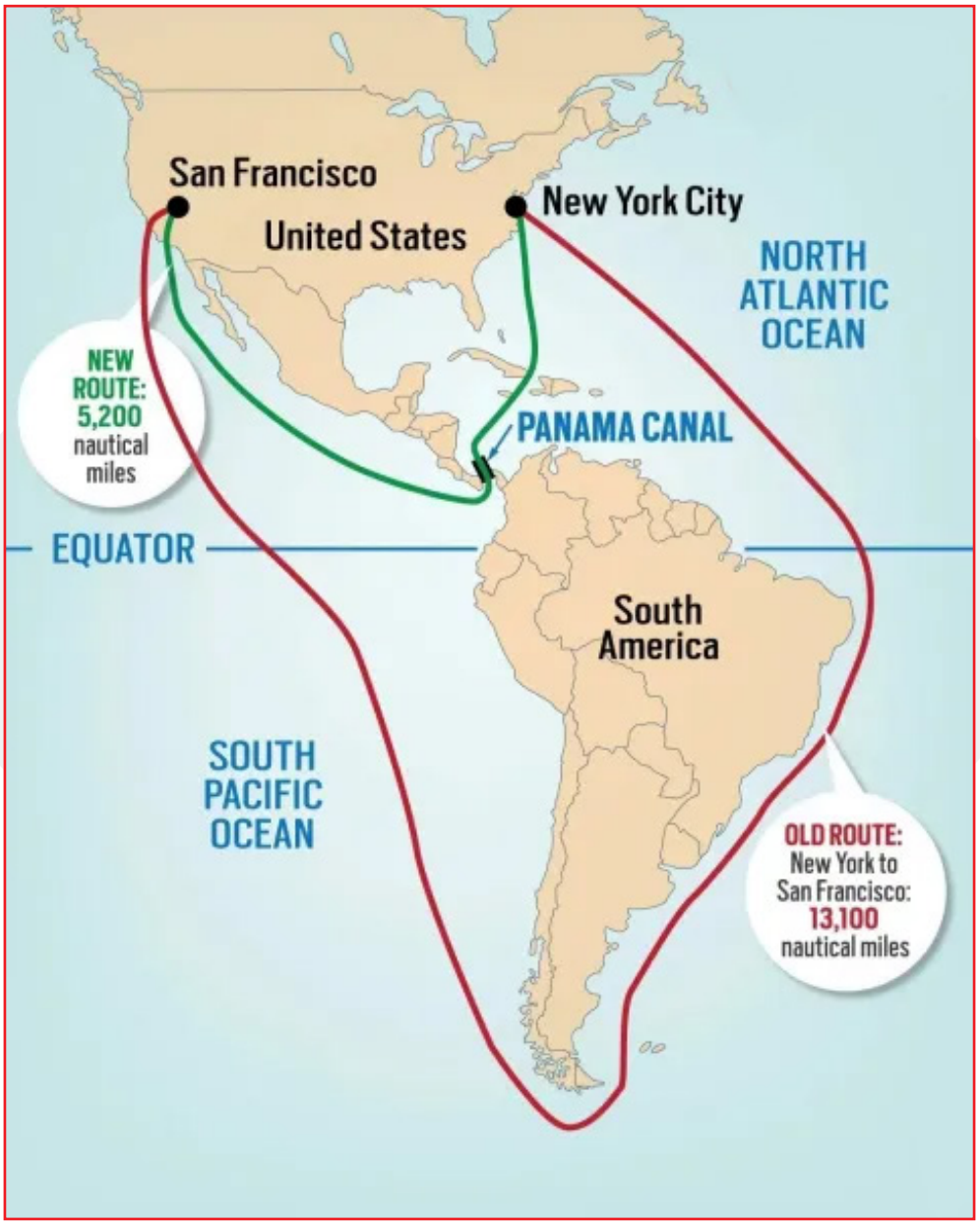

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- चीन **पनामा नहर पर दो प्रमुख बंदरगाहों** का संचालन करता है, जिससे वैश्विक नौ परिवहन पर चीनी प्रभाव के बारे में अमेरिका की चिंता बढ़ गई है, **हालाँकि पनामा चीन का नियंत्रण होने** से इनकार करता है।
- **पनामा नहर:** इस नहर का **निर्माण मूलत:** 1914 में हुआ था और इस पर **अमेरिका का नियंत्रण** था।
  - वर्ष 1979 में **नहर का नियंत्रण** पनामा नहर आयोग को सौंप दिया गया, जो अमेरिका और पनामा की एक संयुक्त एजेंसी थी, और अंतत: **वर्ष 1999 में पूर्ण नियंत्रण पनामा को सौंप दिया गया।**
- **सामरिक महत्त्व:** यह विश्व के **सामरिक रूप से दो सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कृत्रिम जलमार्गों** में से एक है, दूसरा **स्वेज नहर** है।
  - यह **पनामा** के संकीर्ण इस्तमुस के माध्यम से **अटलांटिक और प्रशांत महासागर को जोड़ता है,** जिससे अमेरिका के पूर्वी और पश्चिमी तटों के बीच की दूरी **लगभग 8,000 समुद्री मील कम हो जाती है।**
- **संचालन/कार्यप्रणाली:** यह जहाज़ों को एक महासागर से दूसरे महासागर तक ले जाने के लिये **जलपाश (Locks) और जल एलीवेटर** की प्रणाली के उपयोग पर आधारित है।
  - क्योंकि **प्रशांत महासागर अटलांटिक महासागर की तुलना में थोड़ा अधिक ऊँचा (~ 20 सेमी)** है इसलिये यह डिज़ाइन आवश्यक हो जाता है।
  - ये जलपाश **जलप्लावन (ऊँचाई बढ़ाने के लिये)** अथवा **अपवाहन (ऊँचाई में कमी के लिये)** कर संचालित होते हैं और जहाज़ों को ऊपर उठाने या नीचे उतारने के लिये जल लिफ्ट के रूप में कार्य करते हैं।

माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण तथा कल्याण अधिनियम 2007

सर्वोच्च न्यायालय ने माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों के भरण-पोषण तथा कल्याण अधिनियम, 2007 के तहत अपने बेटे को बेदखल करने की एक वरिष्ठ दंपति की याचिका को खारिज कर दिया।

- **MWPSC अधिनियम (वरिष्ठ नागरिक अधिनियम) के बारे में:** यह अधिनियम वरिष्ठ नागरिकों (60 वर्ष और उससे अधिक) को, जो अपनी आय या संपत्ति से अपना भरण-पोषण करने में असमर्थ हैं, **अपने बच्चों या कानूनी उत्तराधिकारियों से भरण-पोषण मांगने का अधिकार** देता है।
  - बच्चों या रिश्तेदारों का कानूनी तौर पर यह दायित्व है कि वे वृद्ध माता-पिता की सहायता करें ताकि वे सम्मानजनक जीवन जी सकें।
  - इस अधिनियम के अंतर्गत भरण-पोषण संबंधी मामलों की सुनवाई के लिये विशेष न्यायाधिकरण और अपीलीय न्यायाधिकरण स्थापित किये गए हैं।
  - **धारा 23(1)** के तहत , यदि कोई वरिष्ठ नागरिक इस शर्त पर संपत्ति उपहार में देता है या हस्तांतरित करता है कि **हस्तांतरितकर्त्ता बुनियादी देखभाल और सुविधाएँ** प्रदान करेगा, तो शर्त का उल्लंघन होने पर हस्तांतरण रद्द किया जा सकता है।
  - धारा 23(2) संपत्ति के हस्तांतरण के बाद भी उससे भरण-पोषण पाने का अधिकार सुनिश्चित करती है, बशर्ते कि नए मालिक को इस दायित्व की जानकारी हो।
- **घरेलू हिंसा अधिनियम बनाम वरिष्ठ नागरिक अधिनियम:** **घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम, 2005 (DV अधिनियम)** महिलाओं को संयुक्त घर में रहने का अधिकार देता है, भले ही उनके पास संपत्ति का कोई स्वामित्व न हो। लेकिन **वरिष्ठ नागरिक अधिनियम** वरिष्ठ नागरिकों को यह अधिकार देता है कि यदि उनके बच्चे या रिश्तेदार उनका भरण-पोषण करने में असफल रहते हैं या उन्हें संकट में डालते हैं तो वे उन्हें अपनी संपत्ति से बेदखल कर सकते हैं।
  - **घरेलू हिंसा अधिनियम द्वारा प्रदत्त सुरक्षा अभी भी प्रभावी है,** तथा महिलाओं के अपने घरों में रहने के अधिकारों को वरिष्ठ नागरिकों के अधिकारों के साथ सावधानीपूर्वक संतुलित किया जाना चाहिये।

न्यू पंबन ब्रिज

प्रधानमंत्री ने भारत के **पहले वर्टिकल लिफ्ट रेलवे समुद्री पुल, नए पंबनब्रिज का उद्घाटन किया,** जिससे रामेश्वरम और मुख्य भूमि भारत के बीच संपर्क बढ़ेगा।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- इसे रेल मंत्रालय के अधीन **रेल विकास निगम लिमिटेड (RVNL) द्वारा डिज़ाइन** किया गया है **और इसे 100 वर्षों से अधिक समय तक** चलने के लिये बनाया गया है।
- यह **पाक जलडमरूमध्य में 2.07 किमी** तक फैला है तथा इसने **1914 के पंबन ब्रिज** की जगह ली है।
- इसमें **72.5 मीटर का ऊर्ध्वाधर लिफ्ट स्पान** है जो जहाज़ के गुजरने के लिये **17 मीटर ऊपर** उठता है।
  - **इसे दोहरी पटरियों** के लिये डिज़ाइन किया गया , यह **भारी, तेज़ ट्रेनों** और सुचारू **रेल-समुद्री समन्वय** के अनुरूप है।
  - यह **गोल्डन गेट (अमेरिका), टॉवर (ब्रिटेन) और ओरेसंड (डेनमार्क और स्वीडन को जोड़ने वाले) पुलों** जैसे विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त पुलों को जोड़ता है।

- **इसे अशांत जल, चक्रवात और भूकंपीय गतिविधियों** का सामना करने के लिये बनाया गया है।
  - **वर्ष 1964 की सुनामी** के दौरान एक यात्री रेलगाड़ी पुराने पंबनब्रिज से **बह गई** थी, **हालाँकि पुल ने स्वयं इस आपदा को सहन** कर लिया था।
- **पुराने पंबन पुल** का निर्माण **वर्ष 1911** में शुरू हुआ था और **वर्ष 1914** में इसे यातायात के लिये खोल दिया गया था। यह **भारत का पहला समुद्री पुल** था जिसे व्यापार के लिये बनाया गया था।

फलों को पकाने वाले परिष्कारक

फलों का पकना पौधों में जरावस्था (Senescence) या उम्र बढ़ने की प्रक्रिया से जुड़ा हुआ है। इसमें रंग, आकार, स्वाद, शर्करा की मात्रा और अम्लता में परिवर्तन शामिल होता है, तथा यह **पकने वाले हार्मोन एथिलीन से प्रभावित** होता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

कृत्रिम फलों को पकाने वाले परिष्कारक (Ripening Agents):

- **कैल्शियम कार्बाइड:** यह **विषाक्त एसिटिलीन गैस** विमोचित करता है तथा इसमें **फास्फोरस** और **आर्सेनिक (एक कैंसरकारी पदार्थ)** हो सकता है, जो गंभीर स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न कर सकता है।
  - खाद्य सुरक्षा एवं मानक विनियम, 2011 के अंतर्गत **FSSAI द्वारा इसके उपयोग पर प्रतिबंध** लगा दिया गया है।
- **अनुमत पदार्थ:**
  - **एथिलीन गैस:** FSSAI द्वारा स्वीकृत 100 **ppm (प्रति मिलियन भाग)** तक; प्राकृतिक रूप से पकने में सहायक। इसे **नियंत्रित पकने वाले कक्षों** में प्रयुक्त किया जाना चाहिये और फलों के **सीधे संपर्क में नहीं आना चाहिये।**
  - **एथिफॉन: विखंडन पर एथिलीन मुक्त होती है** और विनियमित परिस्थितियों में कृत्रिम रूप से पकाने के लिये उपयोग किया जाता है।
  - **ईथरीय (Ethereal):** यह एक **एथिलीन-विमोचन यौगिक** है जिसका उपयोग **नियंत्रित परिस्थितियों** में किया जाता है।

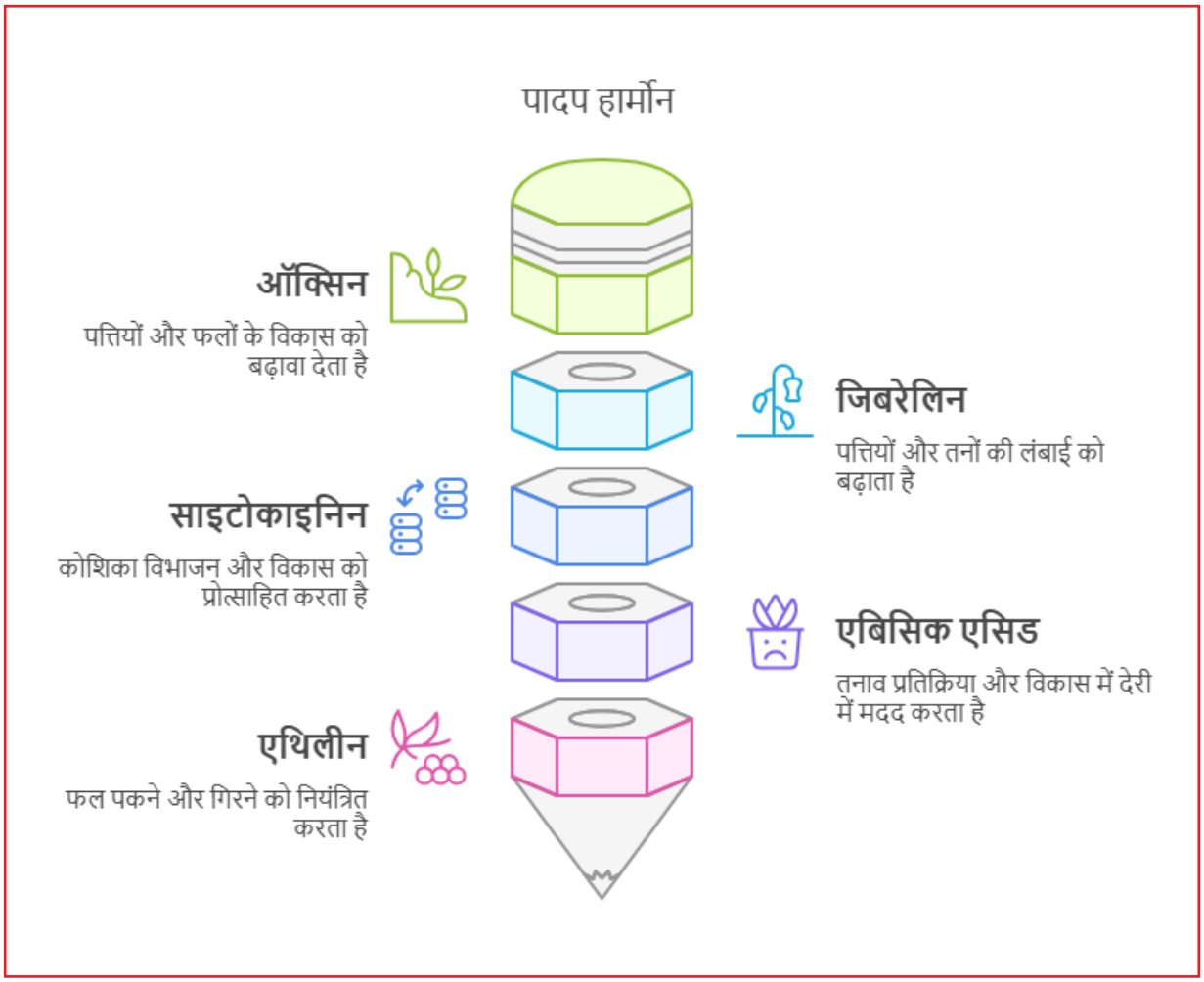

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

विषाक्त शैवाल प्रस्फुटन का सी लॉयन पर प्रभाव

कैलिफोर्निया के तट पर विषाक्त **शैवाल प्रस्फुटन** के कारण **सी लॉयन अथवा जल सिंघों की प्रवृत्ति अत्यधिक आक्रामक हो गई** है, जिसके कारण वे मनुष्यों पर हमला कर रहे हैं।

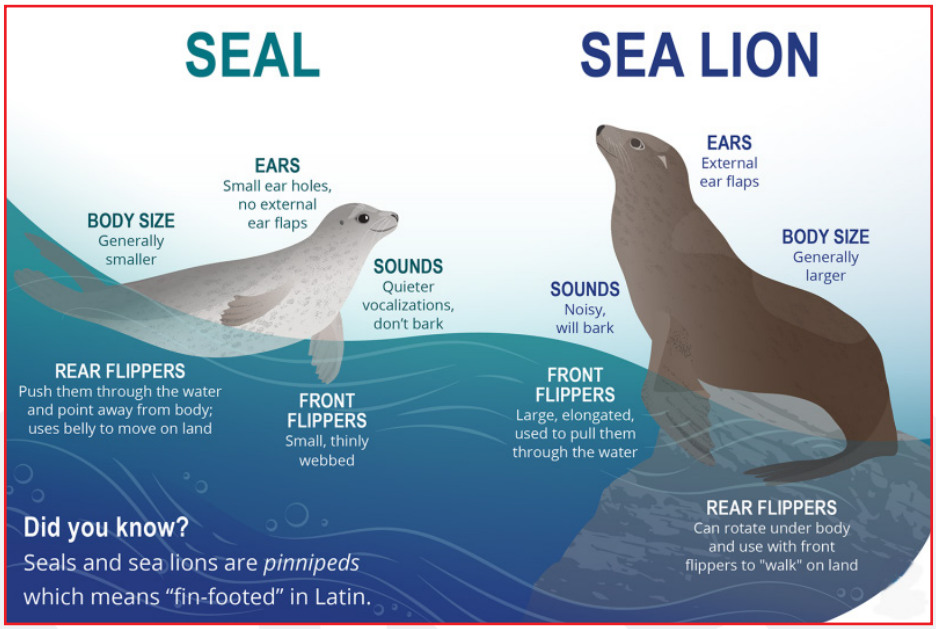

- **डोमोइक एसिड**, डायटम *Pseudo-nitzschia* द्वारा उत्पादित एक न्यूरोटॉक्सिन है जिसके कारण सी लॉयनों के मस्तिष्क के कार्य में परिवर्तन हो रहा है।
  - इसके कारण समुद्री स्तनधारी जीवों में **तनाव, माँसपेशियों में ऐंठन, मस्तिष्क क्षति और व्यवहार में आक्रामकता** जनित होती है।
- **डोमोइक एसिड खाद्य शृंखला** में प्रवेश कर समुद्री जीवों को नुकसान पहुँचाता है और **दूषित समुद्री खाद्य** के माध्यम से **मनुष्यों** के लिये **घातक खतरा** उत्पन्न करता है।
- ग्लोबल वार्मिंग के कारण तीव्र पवनों का **उत्स्रवण** होता है और **पोषक तत्त्वों से भरपूर जल ऊपर की और सतह पर आ जाता है**, जिससे शैवाल की वृद्धि तीव्र हो जाती है।
  - **प्रदूषक विसर्जन** और **वनाग्नि अपवाह** (उदाहरण के लिये, **लॉस एंजिल्स की वनाग्नि**) से **पोषक तत्त्व प्राप्त होते हैं** जिससे शैवाल को और अधिक पोषण प्राप्त होता है।
- **सी लॉयन:** सी लॉयन (सील और वालरस सहित) **समुद्री स्तनधारी** जीवों के समूह से संबंधित हैं **जिन्हें पिनिपेड समूह** (फिन फूटेड समुद्री स्तनधारी) कहा जाता है।
  - वे **बड़े समूहों** में पाए जाते हैं और अपनी तीव्र **उग्र आवाज़** के लिये जाने जाते हैं।
  - वे अधिकांशत: समुद्र में रहते हैं, लेकिन **आराम करने, संभोग करने और पपिंग (संतति को जन्म देना)** हेतु किनारे पर आते हैं।
  - वे अधिकतर **प्रशांत महासागर** में पाए जाते हैं।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

कैप्चा

CAPTCHA (Completely Automated Public Turing test to tell Computers and Humans Apart) एक चैलेंज-रिस्पॉन्स परीक्षण है जिसका उपयोग मानव उपयोगकर्त्ताओं से Bots को अलग करने के क्रम में ऑनलाइन सुरक्षा बढ़ाने और उपयोगकर्त्ता डेटा की सुरक्षा के लिये किया जाता है।

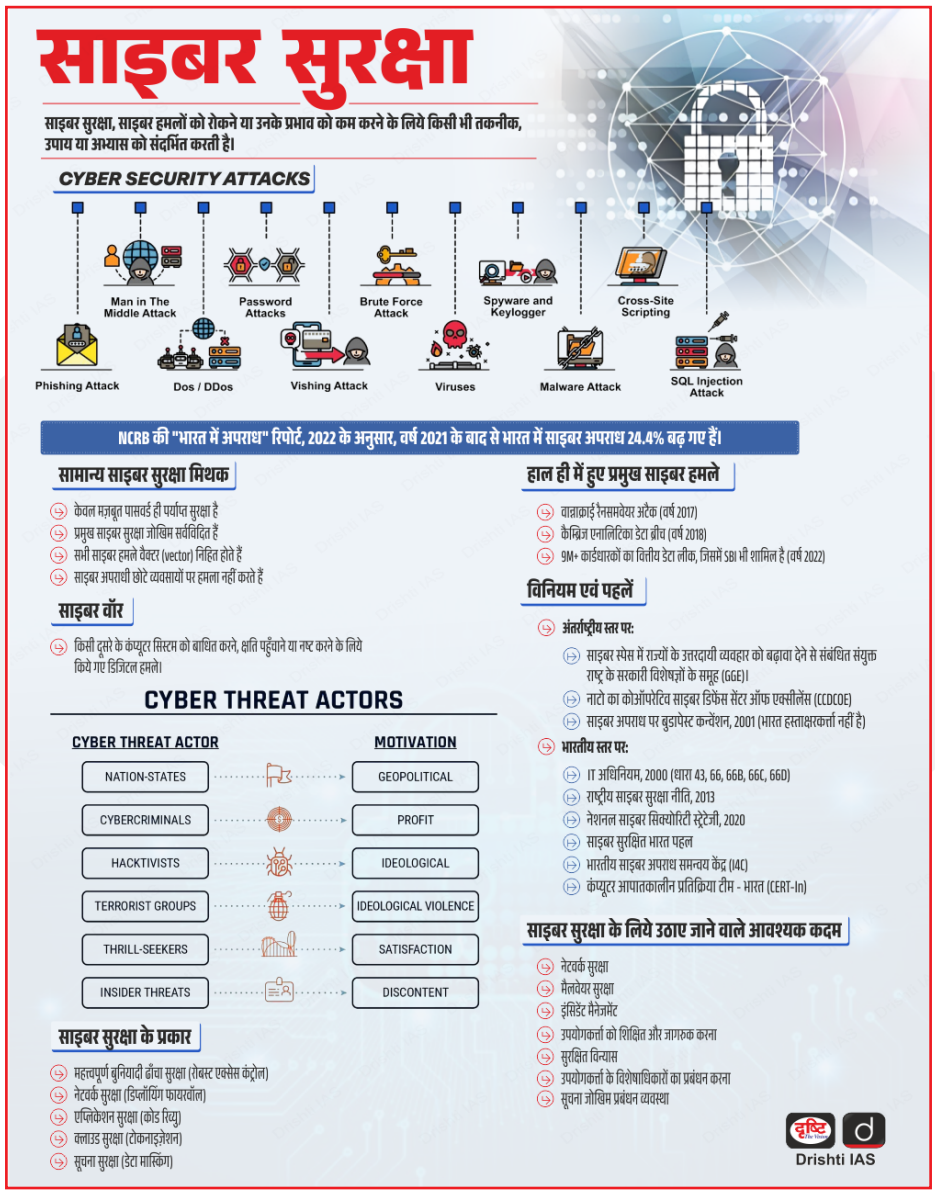

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- **बॉट्स (Bots)** स्वचालित सॉफ्टवेयर प्रोग्राम हैं जो **रिपीटेटिव ऑनलाइन** कार्य करने पर केंद्रित हैं।

कैप्चा:

- **उत्पत्ति:** इसे **लुइस वॉन आह्न** द्वारा 2000 के दशक की शुरुआत में बॉट्स को ब्लॉक करने के लिये विकसित किया गया, CAPTCHA **विकृत टेक्स्ट (वर्ष 2003)** से शुरू हुआ और यह **स्कैन्ड बुक वर्ल्डस का उपयोग करके reCAPTCHA (वर्ष 2009)** में विकसित हुआ और बाद में **Google द्वारा व्यवहार विश्लेषण का उपयोग करके अदृश्य reCAPTCHA (वर्ष 2014)** में विकसित हुआ। इसका **आधुनिक संस्करण इमेज पहचान, चेकबॉक्स और इंटरैक्शन ट्रैकिंग** के उपयोग पर केंद्रित है।
- **लाभ:** इससे **बॉट्स को ब्लॉक करने, फर्जी अकाउंट, स्पैम** और डेटा चोरी को रोकने के साथ यह सुनिश्चित होता है कि केवल मानव उपयोगकर्त्ता ही डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग कर सकें।
- **अनुप्रयोग:** CAPTCHA का उपयोग **लॉगिन, पंजीकरण, लेन-देन, खाता पुनर्प्राप्ति** और **सर्वेक्षणों में बॉट्स को ब्लॉक करने** तथा उपयोगकर्त्ताओं को सत्यापित करने के लिये किया जाता है। **reCAPTCHA बुक डिजिटलीकरण** में भी सहायक है।
- **हानियाँ:** इससे **डिसेबल्ड उपयोगकर्त्ताओं के लिये पहुँच में बाधा** उत्पन्न होने के साथ **मोबाइल उपयोगकर्ताओं** के लिये यह बोझिल हो सकता है। इसे उन्नत बॉट्स द्वारा दरकिनार किये जाने से उपयोगकर्त्ता अनुभव प्रभावित हो सकता है।
- **अन्य साइबर सुरक्षा उपाय:** अन्य उपायों में **टू फैक्टर ऑथेंटिकेशन (2FA)**, डिवाइस कोड के माध्यम से दूसरा सत्यापन स्तर, फिंगरप्रिंट या चेहरे की पहचान का उपयोग करके **बायोमेट्रिक सत्यापन, बॉट्स को ट्रैप करने के लिये हनीपॉट्स** और **व्यवहारिक बायोमेट्रिक्स** (जिसमें मनुष्यों को बॉट्स से अलग करने हेतु टाइपिंग या स्वाइप पैटर्न को ट्रैक किया जाता है) शामिल हैं।

सियाचिन दिवस

सियाचिन दिवस (13 अप्रैल) **ऑपरेशन मेघदूत** की स्मृति में मनाया जाता है। **वर्ष 1984** में इसी दिन भारत ने **सियाचिन ग्लेशियर** पर सफलतापूर्वक सैन्य नियंत्रण स्थापित किया।

- **सियाचिन:** **काराकोरम रेंज** में लगभग 20,000 फीट की ऊँचाई पर स्थित, यह इस रेंज का दीर्घतम ग्लेशियर है और समग्र विश्व में **सर्वाधिक ऊँचा सैन्यीकृत क्षेत्र** है। **काराकोरम का भाग साल्टोरो रिज**, सियाचिन ग्लेशियर के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है।
- **गिलगिट-बाल्टिस्तान से लेह और काराकोरम दर्रे** तक के मार्गों को नियंत्रित करने की दृष्टि से सियाचिन की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।
  - **वर्ष 1949** के **कराची समझौते** के तहत भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा को **NJ9842** नामक बिंदु तक निर्धारित किया गया, जिसके आगे दुर्गम भूभाग के कारण रेखा को अस्पष्ट छोड़ दिया गया, जिसमें विवरण दिया गया यह **"तदनंतर से उत्तर में ग्लेशियरों तक" निर्धारित है (सियाचिन, रिमो और बाल्टोरो ग्लेशियरों का उद्धरण करते हुए)।**
  - **वर्ष 1972** के **शिमला समझौते के बाद**, **नियंत्रण रेखा (LoC)** को औपचारिक रूप दिया गया, लेकिन NJ9842 से आगे के क्षेत्र को इसमें शामिल नहीं किया गया।
  - 1980 के दशक में पाकिस्तान ने **साल्टोरो रिज और सियाचिन** से आगे अपने दावे को वैध बनाने का प्रयास किया, जिसका उद्देश्य चीन से सीधा संपर्क और लद्दाख क्षेत्र पर रणनीतिक नियंत्रण हासिल करना था, जो भारत के लिये एक गंभीर खतरा था।
- **ऑपरेशन मेघदूत:** 13 अप्रैल 1984 को प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के नेतृत्व में भारत ने ऑपरेशन मेघदूत शुरू किया, जिसके तहत **बिलाफोंड ला और सिया ला** जैसे प्रमुख दर्रे सहित **सियाचिन ग्लेशियर** और **साल्टोरो रिज** पर नियंत्रण स्थापित किया गया।
  - इस ऑपरेशन से पाकिस्तान द्वारा नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास विफल रहा, जिससे लद्दाख क्षेत्र पर रणनीतिक निगरानी सुनिश्चित हो गई और शक्सगाम घाटी तक पाकिस्तान की पहुँच अवरुद्ध हो गई।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- ऑपरेशन मेघदूत में सैनिकों और रसद को हवाई मार्ग से पहुँचाया गया, जिसमें भारतीय वायुसेना के हेलीकॉप्टरों की अहम भूमिका थी। यह विश्व के उच्चतम युद्धक्षेत्र पर किया गया पहला सैन्य हमला था।

भारत के राष्ट्रपति को सिटी की ऑफ ऑनर पुरस्कार

भारत के राष्ट्रपति ने भारत और पुर्तगाल के बीच मज़बूत संबंधों और सद्भावना को स्वीकार करते हुए लिस्बन (पुर्तगाल) के मेयर से **'सिटी की ऑफ ऑनर'** प्राप्त किया।

- यह लिस्बन शहर द्वारा दिया जाने वाला **सर्वोच्च सम्मान** है, जो **समाज में योगदान या पुर्तगाल के साथ संबंधों को मान्यता देने** के लिये **मेयर द्वारा** दिया जाता है।
- वर्ष 2025 **भारत-पुर्तगाल राजनयिक संबंधों की 50वीं वर्षगाँठ** का प्रतीक है।

भारत-पुर्तगाल संबंध:

- **ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: भारत-पुर्तगाल** संबंध **वर्ष 1498 में वास्को डी गामा के कालीकट आगमन** के साथ शुरू हुआ।
  - **पुर्तगाल की 1974 की कार्नेशन क्रांति** के बाद पूर्ण राजनयिक सामान्यीकरण प्राप्त हुआ , जिसकी परिणति **वर्ष 1975 की गोवा संधि** के रूप में हुई।
- **सामरिक सहयोग:** पुर्तगाल ने **UNSC की स्थायी सदस्यता** और **NSG में प्रवेश के लिये भारत की दावेदारी का लगातार समर्थन** किया है। इसने **भारत-यूरोपीय संघ शिखर सम्मेलन** की भी पहल की, जिसका पहला आयोजन प्रधानमंत्री वाजपेयी के कार्यकाल में **वर्ष 2000** में लिस्बन में हुआ था।
- **आर्थिक और व्यापार संबंध:** वर्ष 2025 तक, भारत-पुर्तगाल **द्विपक्षीय व्यापार लगभग 1.5 बिलियन अमरीकी डॉलर** है, जो **वर्ष 2020 (951 मिलियन अमरीकी डॉलर) से 50% की वृद्धि** दर्शाता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **प्रवासी संबंध:** पुर्तगाल में लगभग **1.25 लाख भारतीय** रहते हैं, जिनमें **35,000 नागरिक और 90,000 भारतीय मूल के व्यक्ति** (PIO) शामिल हैं।
- **सांस्कृतिक और शैक्षिक सहयोग:** भारत-पुर्तगाल सांस्कृतिक संबंधों में लिस्बन विश्वविद्यालय में **भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद** (ICCR) की स्थापना और संबंधों की 500वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में संयुक्त टिकट जारी करना शामिल है।

नौवहन पर पहले वैश्विक कार्बन टैक्स को भारत का समर्थन

भारत और 62 अन्य देशों ने **संयुक्त राष्ट्र की शिपिंग एजेंसी, अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन** (IMO) द्वारा नौवहन उद्योग पर अधिरोपित **विश्व के पहले वैश्विक कार्बन टैक्स** के पक्ष में मतदान किया है।

- **वैश्विक नौवहन का उत्सर्जन:** वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में नौवहन उद्योग का लगभग **3%** का योगदान है और यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसे पूर्व में हुए वैश्विक जलवायु समझौतों जैसे **पेरिस समझौता** में शामिल नहीं किया गया था।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME | UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME | IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME | दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- **कार्बन कर ढाँचा:** यह कर ढाँचा वर्ष 2028 से प्रभावी होगा, जिसके तहत **5,000 सकल टन से अधिक भार वाले जहाज़ों** (जिनका अंतर्राष्ट्रीय नौवहन से उत्सर्जित कुल CO_2 में 85% का योगदान है) को या तो अधिक स्वच्छ ईंधन प्रौद्योगिकियों को अपनाना होगा अथवा उत्सर्जन सीमा के आधार पर उत्सर्जित CO_2 के प्रति टन पर **100 से 380 अमेरिकी डॉलर** का शुल्क देना होगा।
  - इस कर से **वर्ष 2030 तक 40 बिलियन अमेरिकी डॉलर** की धनराशि प्राप्त होने की उम्मीद है, जिसे समुद्री क्षेत्र को कार्बन मुक्त करने में पुनर्निवेशित किया जाएगा लेकिन इसमें व्यापक जलवायु अनुकूलन के लिये कोई प्रावधान नहीं किया गया है।
- **भारतीय नौवहन उद्योग:** भारत वर्ष 2047 तक विश्व के शीर्ष 5 पोत निर्माण देशों में शामिल होने की ओर अग्रसर है। वर्ष 2023 तक भारत के बेड़े में जहाज़ों की संख्या बढ़कर 1,530 हो गई, जो **जहाज़ रीसाइक्लिंग में विश्व स्तर पर तीसरे स्थान** पर है।
  - प्रमुख बंदरगाहों की कार्गो क्षमता **वर्ष 2014-15** में **871.52 मिलियन टन** थी जो **वर्ष 2023-24** में **87% बढ़कर 1,629.86 मिलियन टन** हो गई।

लंबी दूरी का ग्लाइड बम 'गौरव'

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) ने स्वदेशी रूप से विकसित **लंबी दूरी के ग्लाइड बम (LRGB) 'गौरव'** का सुखोई-30 MKI विमान से सफल परीक्षण किया है।

LRGB 'गौरव'

- **परिचय:** यह **स्वदेशी रूप से विकसित वायु-प्रक्षेपित परिशुद्धता-निर्देशित हथियार** है, जिसे दुश्मन की वायु रक्षा प्रणालियों की पहुँच से परे, **दूर स्थित भूमि लक्ष्यों पर सटीक हमला** करने के लिये डिजाइन किया गया है।
- **प्रमुख विशेषताएँ:**
  - **परास (Range): पिन-पॉइंट सटीकता के साथ लगभग 100 कि.मी.** और **30 कि.मी. से 150 कि.मी.** के बीच परिचालन सीमा का प्रदर्शन किया।
  - **वजन: पंख वाले संस्करण (Winged Version) 'गौरव'** का वजन **1,000 किलोग्राम है**, जबकि **बिना पंख (Non-Winged) वाले 'गौतम'** का वजन **550 किलोग्राम** है।
  - **नेविगेशन: इनर्शियल नेविगेशन सिस्टम (INS), उपग्रह मार्गदर्शन और डिजिटल नियंत्रण प्रणाली का उपयोग** करता है।
- **महत्त्व:** स्वदेशी रक्षा विकास के साथ संरेखित होकर भारत की **सटीक प्रहारक क्षमताओं** को बढ़ाता है।

ग्लाइड बम

- ग्लाइड बम एक **परिशुद्धता-निर्देशित बम** है, जो **वायुगतिकीय लिफ्ट** का उपयोग करके **बिना किसी शक्ति-संचालित प्रणोदन** के लंबी दूरी तक यात्रा करता है।
- इसे **GPS, इनर्शियल नेविगेशन सिस्टम (INS), या लेजर** जैसी प्रणालियों का उपयोग करके निर्देशित किया जाता है।

Su-30MKI

- सुखोई-30 MKI विमान एक **बहुउद्देश्यीय लड़ाकू विमान है** जिसे सुखोई डिजाइन ब्यूरो (रूस) और HAL द्वारा भारतीय वायुसेना के लिये संयुक्त रूप से विकसित किया गया है।

कवच 5.0

केंद्रीय रेल मंत्री ने हाल ही में कवच 5.0 के कार्यान्वयन की घोषणा की है, जिसका उद्देश्य ट्रेन सुरक्षा को बढ़ाना है। वर्तमान संस्करण (कवच 4.0) का पहले से ही भारतीय रेलवे में उपयोग हो रहा है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

कवच प्रणाली:

- भारत की स्वदेशी **स्वचालित ट्रेन सुरक्षा (ATP) प्रणाली** को लोको पायलट द्वारा कार्य करने में विफल होने पर ब्रेकिंग सिस्टम को **स्वचालित रूप से सक्रिय करके ट्रेन टकराव** को रोकने के लिये विकसित किया गया है ।
- **प्रौद्योगिकी: कवच प्रणाली** के तहत ट्रेनों की स्थिति पर निगरानी रखने के लिये पूरे ट्रैक की लंबाई में **रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन (RFID) टैग** लगाना शामिल है।
- इसके साथ ही तीव्र और कुशल डेटा संचरण सुनिश्चित करने के लिये पटरियों के साथ **ऑप्टिकल फाइबर केबल** बिछाना शामिल है।

भारतीय रेल:

- भारत में **विश्व का चौथा सबसे बड़ा रेलवे नेटवर्क** है जो **65,000 किलोमीटर से अधिक लंबा** है तथा अनुमान है कि **वर्ष 2050 तक वैश्विक रेल गतिविधि में इसका योगदान 40%** हो जाएगा, जिससे धारणीय परिवहन तथा गतिशीलता में इसके महत्त्व पर प्रकाश पड़ता है।

रेल सुरक्षा से संबंधित वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाएँ:

- ब्रिटेन में सिग्नल सुरक्षा, वास्तविक समय नियंत्रण तथा स्वतंत्र जाँच के लिये **ट्रेन सुरक्षा और चेतावनी प्रणाली (TPWS), ETCS** और **RAIB** का उपयोग किया जाता है।
- जापान में **स्वचालित ट्रेन नियंत्रण (ATC)** के साथ खराबी का पता लगाने के लिये **CATIS** तथा भूकंप के दौरान ट्रेनों को रोकने के लिये **EEWS** का उपयोग किया जाता है।

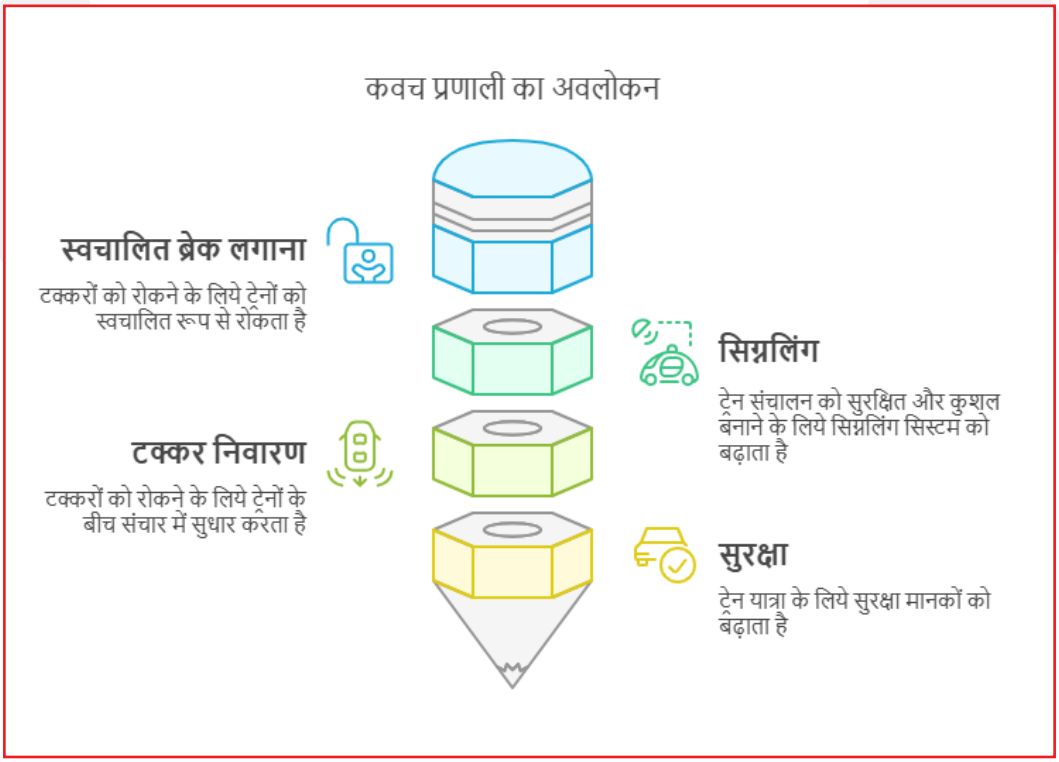

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य

राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) के अंतर्गत **चीता परियोजना संचालन समिति** ने पर्यावास का विस्तार करने के लिये **कुनो राष्ट्रीय उद्यान** और **गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य (मध्य प्रदेश)** से कुछ चीतों के स्थानांतरण को मंजूरी दी।

- **गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य:** यह राजस्थान की सीमा से सटे उत्तर-पश्चिमी मध्य प्रदेश में स्थित है और 368 वर्ग किमी में फैला हुआ है।
  - **इसमें सवाना, खुले घास के मैदान, शुष्क पर्णपाती वन** और नदी क्षेत्र का विविध पारिस्थितिकी तंत्र है, और इसे एक **महत्त्वपूर्ण पक्षी और जैवविविधता क्षेत्र (IBA)** के रूप में मान्यता प्राप्त है।
    - अभयारण्य की वनस्पति **खथियार-गिर शुष्क पर्णपाती वन** पारिस्थितिकी क्षेत्र की विशेषता है।
  - **चंबल नदी** इस अभयारण्य को दो भागों में विभाजित करती है, तथा **गांधी सागर बाँध** अभयारण्य के भीतर स्थित है।
  - अभयारण्य का पारिस्थितिकी तंत्र **केन्या के मासाई मारा** के समरूप है, जो अपने सवाना वन और प्रचुर वन्य जीवन के लिये जाना जाता है, जो इसे चीतों के लिये एक आदर्श आश्रय स्थल बनाता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट:

- **दीर्घकालिक चीता संरक्षण लक्ष्य:** गांधी सागर को व्यापक **मेटापॉपुलेशन रणनीति** का हिस्सा बनाने की योजना है, जिसका लक्ष्य मध्य प्रदेश और राजस्थान के कुनो-गांधी सागर परिदृश्य में 60-70 चीतों को संरक्षण प्रदान करना है।

चीता (Cheetah)

सामान्य नाम: एशियाई चीता

वैज्ञानिक नाम: *एसिनोनिक्स जुबेटस (Acinonyx jubatus)*

- *एसिनोनिक्स जुबेटस जुबेटस* (एशियाई चीता)
- *एसिनोनिक्स जुबेटस वेनाटिकस* (अफ्रीकी चीता)

विशेषताएँ:

- विश्व का सबसे तेज दौड़ने वाला स्तनधारी
- चीते अपनी क्षमता के बजाय गति के लिये जाने जाते हैं; जब ये अपने शिकार का पीछा करते हैं तो यह केवल **200-300** मीटर के लिये तथा **1** मिनट से कम अवधि का होता है।
- शेर, लकड़बग्घे और तेंदुए जैसे अन्य शक्तिशाली शिकारियों से प्रतिस्पर्द्धा से बचने के लिये चीते मुख्य रूप से दिन के दौरान शिकार करते हैं।

अफ्रीकी चीता बनाम एशियाई चीता:

- **अफ्रीकी:** हल्के भूरे और सुनहरे रंग की **त्वचा; एशियाई चीते से मोटी**
  - ***चेहरों पर धब्बों तथा रेखाओं की प्रधानता***
  - *पूरे अफ्रीका महाद्वीप में पाए जाते हैं*
  - ***IUCN रेडलिस्ट में स्थिति: सुभेद्य (Vulnerable)***
- **एशियाई:** अफ्रीकी चीतों से थोड़े छोटे
  - ***हल्के पीले रंग की त्वचा: शरीर के नीचे विशेष रूप से पेट पर अधिक बाल***
  - ***केवल ईरान में पाए जाते हैं;*** *देश द्वारा यह दावा किया जाता है कि अब यहाँ केवल **12** चीते शेष हैं।*
- **वर्ष 1952:** एशियाई चीता को **आधिकारिक रूप से भारत से विलुप्त** घोषित किया गया
  - ***IUCN रेडलिस्ट में स्थिति: घोर संकटग्रस्त (Critically Endangered)***

एशियाई चीता

अफ्रीकी चीता

भारत में चीतों का पुनर्वास:

- **राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) की 19वीं बैठक में MoEF-CC** द्वारा **"भारत में चीता पुनर्वास के लिये कार्ययोजना"** जारी की गई थी। (जनवरी **2022**)
  - *इसी तरह की एक कार्ययोजना सर्वप्रथम वर्ष **2009** में प्रस्तावित की गई थी।*
- सितंबर **2022** में **नामीबिया से आठ चीतों को भारत में पुनर्वास हेतु लाया गया।**
  - *इन आठ चीतों को **मध्यप्रदेश के कुनो-पालपुर राष्ट्रीय उद्यान** में स्थानांतरित किया जाएगा।*
- नामीबिया से भारत में चीतों का स्थानांतरण **विश्व भर में किसी बड़े मांसाहारी जानवर की पहली स्थानांतरण परियोजना है।**

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 — SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस — SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स — SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप — SCAN ME

नोट :